पदाथर
र म का दसूरा नाम

कस बब वस्तुओ क ू प म दखाइ दत ह?

पदाथर
र म का दसूरा नाम

हू या हया

अगर कोई गलती आपके नजर में आई तो
हमें फौरन बताइये। हम उसे सुधार लेंगे।

वषय-सूची
आमुख

भू मका
यह एक वज्ञा नक तथय ह क
वव हमार म स्तषक म अ स्ततव म आता ह
यह हमारी आख नही ह जो दखती ह, ब ल्क हमारा म स्तषक ह
हम अपन म स्तषक म हर रकार की आवाज को सुनत ह
सभी गध म स्तषक म होती ह
समस्त स्वाद म स्तषक म होत ह
स्पशर का बोध भी म स्तषक म घ टत होता ह
हम कभी अपन म स्तषक क भीतर क
वव क मूल तक नही पहुच सकत
दूरी की अनुभू त महज एक बोध ह
जो म स्तषक म होता ह
बाय दु नया क अ स्ततव क बना ही घ टत हो सकता ह सवदनाओ का ससार

कौन ह जो इन बोधो का अनुभव करता ह?

क्यों पदाथर के बारे में सचचाइ इतना महतवपूणर वषय है?
पदाथर क बार म हकीकत दखाता ह क अल्लाह एक परम सतव ह
मनुषयो क कायर्व्यापार भी अल्लाह स जुड ह
पदाथर की वास्तवक रकृत की समझदारी लोगो को आस्था की ओर ल जाएगी
पदाथर की वास्तवकता की समझदारी दुनयावी महतवाकाषाओ को दूर भगाती ह
वह सभाव्य वातावरण यद पदाथर की वास्तवक रकृत को रहस्य बनाकर न रखा जाए
पदाथर की वास्तवक रकृत को जानना यानी भौतकतावाद का खातमा

समय भी एक बोध है
समय एक अवधारणा ह जसका जनम होता ह एक षण की दूसर षण स तुलना करन पर
समय की सापषता समबनधी अवधारणा 'कुरान' म रकटत ह
"भूतकाल" की अवधारणा हमार मस्तषक म अकत सूचना स उतपनन होती ह
भूत और भवषय 'अदृशय' क समाचार ह
भागय क रत समपस होन का महतव

अननतता इवर की स्मृत में नगूढ है
हर बात 'मातृरथ' म अकत ह
भूत और भवषय वस्तुत: वतर्मान म ही अनुभव कए जात ह
मनुषय क लए इस पदाथर का महतव

पदाथर की वास्तवकता के वषय में उठाइ गइ आपतयों के उतर

नषकषर: सतय से बचा नहीं जा सकता

जनहोंने पदाथर का रहस्य जाना है, वे जबदर्स्त उतसाह से भर उठे है

आमुख

इस पुसतक में जो बताया गया है, वह एक महतवपूणर सचचाइ है, जसने कइयों को अचम्भत कर दया है और उनहोंने ने जीवन के बारे में अपने दृटकोण को बदल लया है। इस सचचाइ को संषेप में नमन रकार से बताया जा सकता है: " वे सारी घटनाएं और वस्तुएं-इमारतें, लोग, शहरें, कारें,

स्थल - जनसे हम अपने वास्त वक जीवन में ू बू होते है, यहां तक क, हम जो कुछ देखते है, पकडते है, स्पशर करते है, सूंघते है, चखते है और सुनते है- ये सारी चीजें हमारे म स्तषक में दृशयों और अनुभवों के ू प में अ स्ततव में आती है"।

हम यह सोचना सखाया गया ह क य बब और अनुभव हमार म स्तषक स बाहर एक ठोस वव स उतपनन होत ह, जहा पर भौत क वस्तुए वयमान होती ह। बहरहाल, वास्तव में, हम वास्त वक ू प से वयमान वस्तुओं को कभी नहीं देखते और वास्त वक वस्तुओं को कभी स्पशर नहीं करते। दूसरे शब्दों में, रतयेक भौ तक घटक, हम अपने जीवन में जनका अ स्ततव मानते है, वास्व में, हमारे म स्तषक में न मस मार एक दृशय होता है।

यह कोइ दाशरनक चतन नही ह। यह आधु नक वज्ञान वारा सध एक अनुभवातमक तथय ह। आज, आयु वस्ञान, जीव व ज्ञान, त र का वज्ञान या म स्तषक शोध सबधी कसी अनय ष र म वशषज्ञ कसी भी वज्ञा नक स यह पूछ क हम दु नया को कस और कहा दखत ह, उनका जवाब होगा क हम सारी दू नया को अपने म स्तषक में स्थत एक दृ ट केंर में देखते है।

यह तथय बीसवी सदी म वज्ञा नक ढग स सध हुआ ह, और भल ही आचयजनक लगता हो, यह बात इन दो र नो म जू र अत नरहत ह; "य द हमार जीवन हमार म स्तषक म न मस दृ टया ह, तो फर कौन इन दृ टयो का नमा ण करता ह? और कौन ह वह जो बना कसी आख क इन दृ टयो को दखता ह, उनका अनद उठाता ह और इनस उत जत और आन दत होता ह?" आप इन दोनो ही महतवपूणर र नो क उतर इस पुस्तक म पाएग।

पदाथरक पर का रहस्य वहदतुल वजूद नहीं ह

"पदाथर का वास्त वक सारततव" नामक वषय की कुछ लोगो वारा आलोचना की गयी ह। वषय क सारततव को गलत ढग स समझन वाल य लोग दावा करत ह क पदाथरक पर क रहस्य क ूप म जसकी व्याखया की जाती ह वह वहदतुल वजूद की शषा क समान ह। अनय सब बातो स पहल हम यह बताना चाहग क इस पुस्तक का लखक अहल सुननत क सधदात का सखती स पालन करन वाला ह और वहदतुल वजूद क दृटकोण की हमायत नही करता।

बहरहाल, यह भी याद रखा जाना चा हए क मुहीउदीन इब्न अल-अरबी समत कुछ अरणी इस्लामी ववानो न वहदतुल वजूद की हमायत की ह। यह सतय ह क बहुत स ऐस महतवपूणर इस्लामी ववानो न, जनहोन अतीत म वहदतुल वजूद की अवधारणा का ववरण रस्तुत कया था, इन पुस्तको म रापत कुछ वषयो पर वचार करक ऐसा कया। फर भी, इन पुस्तको म जस बात की व्याखया की गयी ह वह वहदतुल वजूद जसी नही ह।

वहदतुल वजूद क दृटकोण की हमायत करन वाल लोगो म स कुछ लोग एक रकार स रा तपूणरस रस्त थ और उनहोन कुरान और अहल सुननत क सधदात क वपरीत कुछ दाव कय। उदाहरण क लए उनहोन अल्लाह की रचना को पूरी तरह खा रज कर दया। बहरहाल, पदाथरक पर क रहस्य का वषय बताया गया तो न चत ूप स इस रकार का कोइ दावा नही ह। यह तबका स्पट करता ह क अल्लाह वारा सभी जीवो की रचना की गइ ह और यह क इन सतवो क मूल को अल्लाह दखता ह जब क लोग सफर अपन म स्तषको म बनन वाली इन सतवो की छ वयो को ही दखत ह।

पवस, मदान, फूल, लोग, समुर - सष प म हर वह चीज जस हम दखत ह और जसक बार म अल्लाह न कुरान म हम बताया ह क जो अ स्ततवमान ह और जसकी उसन शूनय स रचना की ह वह वास्तव म मौजूद ह। बहरहाल, लोग अपनी ञान रयो क ज रय इन जीवो की मूल रकृ त को दख, सुन या महसूस नही कर सकत। व जो दखत और महसूस करत ह व कवल उनक दमागो म रकट होन वाली र तया होती ह। यह एक वञा नक तथयह जो क जो क सभी स्कूलो मुखयतया च कतसा म पढाया जाता ह। यही बात उस लख पर लागू होती ह जस आप इस समय पढ रह ह; आप इसकी मूल रकृ त को दख या छू नही सकत। मूल वस्तु स आ रहा रकाश आपकी आखो की कुछ को शकाओ वारा वयुत सकतो म बदला जाता ह, जो क इसक बाद आपक म स्तषक क पीछ दृशय कर को सर षत होत ह। यही वह जगह ह जहा पर इस आलख की दृ ट की रचना होती ह। दूसर शब्दो म आप अपनी आखो क ज रय वह आलख नही पढ रह होत ह जो क आपकी आखो क सामन होता ह; दरअसल, इस आलख की रचना आपक म स्तषक क पीछ क दृषय कर म होती ह। इस समय जो आलख आप पढ रह ह वह आपक म स्तषक क भीतर "आलख की र त" ह। मूल आलख अल्लाह वारा दखा जाता ह।

नतीज क तौर पर यह तथय क पदाथर हमार म सतषको म न मस होन वाला र म ह पदाथर को ''खा रज" नही करता, ब लक पदाथर की मूल र कृ त क बार म हम जानकारी मुहया कराता ह : यह क कोइ भी वय त उसक मूल क साथ सबध नही बना सकता।

इस तथय क बार म 'आइ डय लजम, द फलोसफी ऑफ द म रकस एड द ू नचर ऑफ मटर' नामक पुसतक म इस र कार बताया गया ह :

हमसे बाहर पदाथर है, ले कन उस तक हम पहुंच नहीं सकते

... पदाथर को र म बतान का मतलब यह नही ह क उसका अ सततव नही ह। इसक ठीक वपरीत: भौ तक ससार को हम चाह दख या न दख उसका अ सततव ह। परतु हम उस अपन म सतषक की र त क ू प म या दूसर शबो म अपनी ञान रयो की वयाखया क ू प म दखत ह। लहाजा, हमार लए पदाथर का भौ तक वव र म ह।

बाहर क पदाथर को न कवल हम ब लक अनय सतव भी दखत ह। अललाह क फ रशत भी इस दु नया क हालात की जानकारी रखत ह :

जब (वह कोइ काम करता है तो) दो लखने वाले (केरामन कातेबीन) जो उसके दा हने बाएं बैठे है लख लेते है। कोइ बात उसकी जबान पर नहीं आती मगर एक नगाहेबान उसके पास तैयार रहता है (सुरा काफ: 17-18)

सबस अहम बात यह ह क अललाह सब कुछ दखता ह। उसन इस दु नया की उसक समसत ववरणो क साथ रचना की और उस उसकी सभी अवसथाओ म दखता ह। जसा क वह हम कुरान म बताता ह :

...और जान रखो क जो कुछ तुम करते हो खुदा जु र देखता है (सुरा अल-बकरा: 233)

(ऐ रसूल) तुम कह दो क हमारे तुमहारे दरमयान गवाही के वासते बस खुदा काफी है इसमें शक नहीं क वह अपने बनदों के हाल से खूब वा कफ और देखता रहता है (सुरा अल-इसरा: 96)

इस बात को नही भूला जाना चा हए क अललाह लौह महफुज नामक पुसतक म हर चीज का रकाडर रखता ह। फर अगर हम सभी चीजो को नही भी दखत तो भी लौह महफुज म रहती ह। अललाह बताता ह क वह "समसत पुसतको की जननी" कही जान वाली लौह महफूज म नमन ल खत आयतो क साथ हर चीज का रकाडर रखता ह :

बेशक ये (कुरान) असली कताब (लौह महफूज) में (भी जो) मेरे पास है लखी हुयी है (और) यकीनन बडे ू तबे की (और) पुरअज हकमत है (सुरा अज-जुखु फ: 4)

... तहरीरी याददाशत कताब लौह महफूज मौजूद है (सुरा काफ: 4)

और आसमान व जमीन में कोइ ऐसी बात पोशीदा नहीं जो वाजेह व रोशन कताब (लौहे महफूज) में (लखी) मौजूद न हो (सुरा एन-नमल: 75)

भू मका

जब आप खडकी स बाहर दखत ह तो आप सोचत ह क आप अपनी आखो स छ व दखत ह कयो क आपको इसी तरीक स सोचन क लए सखाया गया ह। ल कन, वास्त वकता म यह वसा नही ह जसा क वह काम करता ह कयोक आप अपनी आखो स दु नया को नही दखत। आप अपन म स्तषक म सृ जत छ व को दखत ह। यह न तो भ वषयवाणी ह और न ही दाशरनक अटकलबाजी ब ल्क व ञा नक सच चाइ ह।

इस अवधारणा को उस समय बहतर ढग स समझा जा सकता ह जब हम इस बात को महसूस करत ह क चाषु ष रणाली कस रकार स काम करती ह। आखो का काम र टना की को शकाओ को काम म लाकर रकाश को वयुत सकत म ूपात रत करना होता ह। यह वयुत सकत म स्तषक क दृशय कर म पहुचत ह। सकत उस दृशय को सृ जत करत ह जस आप खडकी स बाहर दखत ह। दूसर शब्दो म, जस दृशय को आप दखत ह उसकी रचना आपक म स्तषक म होती ह। आप अपन म स्तषक म छ व को दखत ह न क खडकी क बाहर क दृशय को। उदाहरण क लए, दा हनी तरफ दशा यी गयी तस्वीर म व्य त की आखो तक रकाश बाहर स पहुचता ह। यह रकाश आखो की को शकाओ क उस वयुत सकतो म ूपात रत करन क बाद म स्तषक क पीछ स्थत छोट स दृशय कर को जाता ह। यही व वयुत सकत ह जो म स्तषक म तस्वीर नमर्त करत ह। वास्तव म जब हम म स्तषक को खोलत ह तो हम कोइ तस्वीर दखन म समथर नही होत। फर भी, म स्तषक की क तपय रकार की चतना छ व क ूप म वयुत सकत रापत करती ह। म स्तषक छ व क ूप म वयुत सकतो को दखता ह, फर भी उसक पास कोइ आख, आख की को शकाए या र टना नही होती। तो, म स्तषक की चतना का सबध कस चीज स होता ह?

यही रन उस पुस्तक क बार म पूछा जा सकता ह जस आप इस समय पढ रह ह। आपकी आखो तक आ रहा रकाश वयुत सकतो म ूपात रत होता ह और आपक म स्तषक तक पहुचता ह, जहा पर पुस्तक क दृशय की रचना होती ह। दूसर शब्दो म, इस समय जस पुस्तक को आप पढ रह ह वह आपक बाहर नही ह, वह वास्तव म आपक भीतर ह, यह आपक म स्तषक क पीछ क दृशय कर म ह। चू क आप पुस्तक की कठोरता को अपन हाथो स महसूस करत ह इस लए आप यह सोच सकत ह क पुस्तक आपक बाहर ह। ल कन, कठोरता की यह अनुभू त म स्तषक म भी उतपनन होती ह। आपकी उग लयो क पोरो की नस आपक म स्तषक क स्पशर कर को वयुत जानकारी भजती ह। और जब आप पुस्तक का स्पशर करत ह तो आप उसकी कठोरता और सघनता को, पृठो की सरकन, आवरण की बनावट और पृठो क कनार की धार इन सबको अपन म स्तषक क भीतर महसूस करत ह।

बहरहाल, वास्त वकता म आप कभी पुस्तक की मूल रकृ त को स्पशर नहीं कर सकते। हाला क आप यह सोचत ह क आप पुस्तक का स्पशर कर रह ह पर यह आपका म स्तषक होता ह जो क स्पशर राय अनुभू तयो को दखता ह। इसक अ त रत, आप तो यह भी नही जानत क यह पुस्तक आपक म स्तषक क बाहर भौ तक वस्तु क ूप म अ स्ततवमान ह या नही। आप तो सफर अपन म स्तषक क भीतर पुस्तक की छ व की व्याखया करत ह। बहरहाल, आपको इस तथय स आव स्त नही हो जाना चा हए क लखक न इस पुस्तक को लखा ह, पृठो को कप यूटर वारा डजाइन कया गया ह और रकाशक वारा छापा गया ह। समय क साथ जन चीजो की व्याखया की जाएगी व आपक सामन यह स्पट कर दगी क इस पुस्तक क नमा ण क रतयक चरण म लोग, कप यूटर और रकाशक कवल ऐस

दृशय ह जो आपक म स्तषक म आत ह और आप यह कभी नही जान पाएग क आपक म स्तषक क बाहर उनका अ स्ततव ह भी या नही।

लहाजा, हम यह नषकषर नकाल सकत ह क हमारी दखी, सुनी और छुइ रतयक चीज सफरहमार म स्तषक म अ स्ततवमान रहती ह। यह वजा नक साषय स सतया पत वजा नक सचचाइ ह। महतवपूणर बदु ऊपर पूछ गय रन का उतार ह जस पूछन की ओर यह वजा नक सतय ल गया ह; कौन है वह जसके पास कोइ आंख नहीं है ले कन हमारे म स्तषकों की खडकी के ज रये दृशयों को देखता है और दृशयों का आनंद लेता है या उनसे उसकी उतसुकता में वृ धद होती है? इसकी व्याखया आग क पृठो म की जाएगी।

यह एक वजा नक तथय ह क वव हमार म स्तषक म अ स्ततव म आता ह

हम स्वीकार करत ह क वव की सभी व्य त गत वशषताओ का अनुभव हमारी जान रयो क ज रय कया जाता ह। उन अगो क ज रय हमार पास तक पहुचन वाली सूचना वयुत सकतो म ू पात रत होती ह और हमार म स्तषक क एक-एक हस्स इन सकतो को वल षत और ससा धत करत ह। उदाहरण क लए, अपन म स्तषक क भीतर व याखया करन वाली इस र र या क शु ू होन क बाद ही हम पुस्तक को दखग, स्रा बरी का स्वाद रा प त करग, फूल को सूघग, रशमी कपड की बनावट को महसूस करग या हवा म हलती प तयो को सुनग।

हम सखाया गया ह क हम अपन शरीर क बाहर कपड को छू रह ह, उस पुस्तक को पढ रह ह जो क हमस 30 स. मी. (1 फुट) दूर ह, उन पडो को सूघ रह ह जो हमस बहुत दूर ह या उन प तयो का हलना सुन रह ह जो क हमस बहुत ऊपर ह। बहरहाल, यह सब हमारी कल्पना म होता ह। य समस्त चीज हमार म स्तषक क भीतर घ टत हो रही होती ह।

इस बदु पर हम एक और आचयरजनक तथय स टकरात ह; और वह यह ह क वस्तुत: हमार म स्तषक क भीतर कोइ रग, आवाज या दृशय नही होत। हमार म स्तषको म जो कुछ भी पाया जा सकता ह वह ह वयुत सकत। यह दाशरनक अटकलबाजी नही ह। यह हमार अवबोधो क र कायो का महज वजा नक ववरण ह। अपनी पुस्तक *'मप ग द माइड'* म रीटा काटर उस तरीक को स्पट करती ह जस तरीक स हम वव को दखत ह। यह इस रकार ह :

> अपन खुद क रकार की सवग स नपटन क लए (जान रयो म स) हरक अतरस्थत ू प स अनुकू लत होती ह: अणु, तरग या दोलन। ल कन उतर यहा पर नही ह क्यो क अपनी आचयरजनक व वधता क बावजूद रतयक अग सारत: वही काम करता ह: वह उसक वशष रकार क सवग को वयुत धडकनो म बदल दता ह। कोइ धडकन धडकन होती है धडकन। वह लाल रंग या बीथोवेन के फफ्थ का पहला नोट नहीं होती - यह एक रकार से वयुत ऊ जा होती है। सचमुच, एक रकार की सवदनातमक आगत को दूसर स अलग करन की अपषा जान रया वास्तव म उनह और एक दूसर जसा बना दती ह।
>
> इसके बाद समस्त संवेदनातमक संवेग नयूरोनस फाय रंग, डो मनो-फशन क वारा सृ जत वयुत धडकनो की धारा क ू प म एक न चत रास्त क साथ-साथ कमोबश गर- वभदीकृत ू प म म स्तषक म रवश करता ह। जो कुछ घ टत वह बस यही ह। ऐसा कोइ उलटा ू पांतरक नहीं है जो क कसी चरण पर इस वयुत ग त व ध को वापस रकाश तरंगों या अणुओं में बदलता हो। कौन सी चीज एक धारा को दृशय और दूसरी को गध बनाती ह यह इस पर नभर करता ह क अपषा कृत कौन-स नयूरोनस उदीप त ह।[1]

दूसर शब्दो म वव (गध, दृशय, स्वाद आ द) क बार म हमारी समस्त अनुभू तया और अवबोध एक ही पदाथर म समा हत होत ह, जो वयुत सकत ह। यह हमारा म स्तषक ह जो इन सकतो को अथरवान बनाता ह, और इन सकतो की गध, स्वाद, दृशय, धव न या स्पशर क बोधो क ू प म व्याखया करता ह। यह आचयरजनक तथय ह क नम

मास स नमस म स्तषक यह जान सकता ह क कस वयुत सकत की व्याखया गध क ू प म और कसकी दृशय क ू प म करनी चा हए, और वह एक ही पदाथर को व भनन ञान रयो और अनुभू तयो म बदल सकता ह।

आइय अब हम अपनी ञान रयो और इसपर वचार कर क उनम स रतयक कस रकार स वव को दखती ह।

यह हमारी आख नही ह जो दखती ह, ब ल्क हमारा म स्तषक ह

अपनी दीषा की वजह स हम कल्पना करत ह क हम अपनी आखो स समूची दु नया को दखत ह। हम राय यह नषकषर नकालत ह क हमारी आख व खड कया ह जो वव क लए खुलती ह। बहरहाल, वञान हम यह बताता ह क हम अपनी आंखों के ज रये नहीं देखते। आखो क अदर की करोडो त र कीय को शकाए म स्तषक को सदश भजन क लए जममदार होती ह मानो नीच जान वाल कबल हो ता क "दखन" की र या हो। अगर हम हाइस्कूल म पढाइ गयी बातो का वलषण कर तो हमार लए दृ ट क यथाथर को समझना आसान हो जाता ह।

कसी वस्तु स र त ब बत होन वाला रकाश आख क लसो स होकर गुजरता ह और पुतली क पीछ र टना पर उलटी छ व का कारण बनता ह। र टनल रॉडस और कोनस वारा कय जान वाल कुछ रासाय नक सचालनो क बाद यह दृ ट वयुत आवग बन जाती ह। यह आवग फर त र का तर क सबधो क ज रय म स्तषक क पीछ भजा जाता ह। म स्तषक इस बहाव को साथर्क, र-आयामी दृशय म बदल दता ह।

उदाहरण क लए जब आप पाकर म बच चो को खलत हुए दखत ह तो आप अपनी आखो स बच चो और पाकर को नही दख रह होत ह, क्यो क इस दृशय की छ व आपकी आखो क समष नही ब ल्क आपक म स्तषक क पीछ नमरत होती ह।

हमन हाला क सरल-सा उदाहरण दया ह पर वास्तव म दृ ट की का यकी असाधारण सचालन होती ह। र काश नच त ू प स वयुत सकतो म ू पात रत होता ह और फर य वयुत सकत रगारग, चमकदार, र-आयामी वव को र कट करत ह। अपनी पुस्तक *'आइ एड र न: द फ जयोलॉजी ऑफ सीइग'* म आर. एल. रीगोरी इस महतवपूणर तथय को स्वीकार करत ह और इस अ वव सनीय ढाच को स्पट करत ह:

> हम आखो म छोटी-सी वू पत उलटी छ वया र दान की जाती ह और हम आस-पास की जगह म पृथक ठोस वस्तुओ को दखत ह। र टना पर उदीपन क पटनो स हम वस्तुओ क वव को दखत ह और यह कसी र कार का आचयर नही ह।[2]

य सभी तथय एक ही नषकषर की ओर ल जात ह। अपन पूर जीवन भर हम हमशा यह मानकर चलत ह क वव हमार बाहर वयमान ह। तथा प, वव हमारे भीतर है। हाला क हम यह मानकर चलत ह क वव हमार बाहर अ स्ततवमान ह, यह हमार म स्तषक क सबस छोट हस्स म ह। उदाहरण क लए, कसी कपनी का सीइओ अपन शरीर क बाहर कपनी की इमारत, पा कर्ग स्थल पर अपनी कार, समु र तट पर अपन मकान, अपनी छोटी नौका और व सभी लोग जो उसक लए काम करत ह, अपन वकील, अपन प रवार और अपन म रो क बार म सोच सकता ह। बहरहाल, य सभी चीज उसकी खोपडी म, उसक म स्तषक क छोट स हस्स म बनन वाल महज दृशय होत ह।

वह इस तथय स अवगत नही होता और अगर वह जानता भी ह तो वह इनक बार म सोचन की परवाह नही करता। अगर वह गवर क साथ अपनी नवीनतम मॉडल की लग जरी कार की बगल म खडा ह और हवा म उडकर धूल का कोइ कण या कोइ बारीक चीज उसकी आखो म पड जाती ह तो वह धीर स अपनी आखो को खुजला दता ह, आखो को खोलता ह और इस बात की तरफ गौर करता ह क उसक वारा दखी जान वली "भौ तक चीज" उलटी -पुलटी या एक कनार हो गयी ह। इसक बाद उस इस बात का एहसास हो सकता ह क वातावरण म दखी जान वाली भौ तक चीज स्थर नही ह।

यह बात जस चीज को रदशस करती ह वह यह ह क रतयेक स्री-पु ष अपने जीवन में अपने म स्तषक के भीतर हरेक चीज का साष ातकार करता है और उन वशट भौ तक पदाथो तक नहीं पहुंच पाता जनके बारे में माना जाता है क वे उनके अनुभवों का कारण बनते है। जन छ वयों को हम देखते है वे उन वस्तुओं की हमारे म स्तषक में बनने वाली र तयां है जनके बारे में हम मानते है क वे हमारे बाहर अ स्ततवमान है। हम कभी यह नहीं जान सकते क कस हद तक ये र तयां मूल से मलती-जुलती है या मूल का अ स्ततव भी है या नहीं।

जमसी के मनो वज्ञान के रोफेसर होइमर वोन डटफथर हालां क भौ तकवादी है, पर वे वैज्ञा नक वास्त वकता के बारे में इस तथय को स्वीकार करते है:

इससे कोइ फकर नहीं पडता क हम तकर को कस तरह रस्तुत करते है, प रणाम में कोइ प रवतस नहीं आता। हमारे सामने पूणर आकार में जो चीज सामने आती है और हमारी आख जो कुछ दखती ह वह "वव" नही ह। यह कवल उसकी छ व, सादृशय, र ष पण ह, जसका मूल क साथ जुडाव चचा क लए खुला ह।[3]

उदाहरण के लए, जब आप उस कमरे पर दृ टपात करते है जसमें आप बैठे है तो आप जो देखते है वह आपके बाहर स्थत कमरा नहीं ब ल्क उस कमरे की र त है जो आपके म स्तषक में वयमान है। आप कभी अपनी ज्ञानेंर यों से मूल कमरे को देखने में समथर नहीं होंगे।

आपक अधर म स्तषक म चमकती और रगीन छ व कस रकट हो सकती ह?

यहां पर एक और बंदु है जसकी उपेष ा नहीं की जानी चा हए; रकाश खोपडी से होकर नहीं गुजर सकता। वह भौ तक षेर जसमें म स्तषक स्थत है पूरी तरह से अंधेरे में है और संभवत: रकाश उसे भेद नहीं सकता। बहरहाल, इस अ वव सनीय सी रतीत होन वाली बाद क बावजूद इस पूणर अधर म चमकदार और रगीन वव कोदख पाना सभव ह। रंग- बरंगा राकृ तक सौंदयर, चमकदार दृशय, हरे रंग की समस्त आभाएं, फलों के रंग, फूलों की आकृ तयां, सूयर की चमक, व्यस्त सडक पर चलते लोग, यातायात में सरपट दौडती कारें, शॉ पंग मॉल में कपडे - इन सभी की रचना अंधेरे म स्तषक में होती है।

अपने सामने भूनी जा रही सीख की कल्पना की जये। आप लंबे समय तक बैठकर आग को देखते रह सकते है ले कन इस दौरान आपका म स्तषक कभी रकाश, चमक या आग की गमी के मूल से दोचार नहीं होता। उस समय भी जब आप उसके ताप को महसूस करते है और उसके रकाश को देखते है आपके म स्तषक के भीतर अंधेरा बना रहता है और वहां पर स्थर तापमान बना रहता है। यह गहरा रहस्य है क अंधेरे में वयुत संकेत रंग बरंगे, चमकदार दृशयों में बदल जाते है। गहन चंतन करने वाला कोइ भी व्य त इस आचयरजनक घटना से चमतकृत होगा।

रकाश की भी रचना हमार म स्तषक म होती ह

इस बात की चचा करते समय क दृ ट के बारे में वज्ञान ने कस चीज की खोज की है, हम इस बात का उल्लेख करते है क वह रकाश जसे क हम बाहर से रापत करते है, आंखों की को शकाओं की कुछ हलचलों को तेज करता है और ये हलचलें एक पैटनर का नमा ण करती है जससे हमारे चाषु स अनुभव का उदय होता है। बहरहाल, एक और बंदु पर हमें चचा कर लेनी होगी: रकाश जैसा क हम उसे देखते है, हमारे म स्तषक के बाहर नहीं रहता। जस रकाश को हम जानत और समझत ह वह भी हमार म स्तषक क भीतर नमस होता ह। बाय वव में जसे हम रकाश कहते है, जसे क हमारे म स्तषक के बाहर समझा जाता है, वह वयुत-चुंबकीय तरंगों और फोटोनस नामक ऊजा के कणों से मलकर बना होता है। जब ये वयुत-चुंबकीय तरंगें या फोटोनस रे टना तक पहुंचती

है तो रकाश जैसा क हम उसे महसूस करते है अ स्ततव में आना शु कर देता है। भौ तक शबावली में रकाश को इसी तरह से व णस कया जाता है:

"रकाश" शब का रयोग वयुत-चुंबकीय तरंगों और फोटोनस के लए कया जाता है। इसी शब का रयोग शरीर-रचना में उस समय की अनुभू त के लए कया जाता है जब आंख की रे टना पर वयुत-चुंबकीय तरंगें और फोटोनस रहार करते है। वस्तुगत और आतमगत दोनों शबाव लयों में "रकाश" व्य त की आंख में अ स्ततवमान ऊजा का एक ू प है, जससे वह व्य त दृ ट के रभावों के वारा रे टना के ज रये अवगत होता है।[4]

तदनुसार, रकाश उस रभाव क फलस्वू प अ स्ततव म आता ह जस कुछ वयुत-चुबकीय तरग और कण हमार भीतर उतपनन करत ह। दूसर शबो म, हमार शरीर क बाहर ऐसा कोइ रकाश नही ह जो हमार म स्तषक म दखन वाल रकाश को सृ जत करता ह। यहा कवल ऊजा ह। जब यह ऊजा हमार पास तक पहुचती ह तो हम रगारग, चमकदार और जगमगात वव को दखत ह।

रंग की उतप त भी हमार दमाग मं होती ह

जैसे ही हमारा जनम होता है वैसे ही हम रंग- बंरगे प रवेश के दशस करते है और रंगीन दु नया का दीदार करते है। तथा पत रमांड में कोइ एक रंग नहीं है। रंगों की रचना हमारे दमागों में होती है। उसके बाहर व भनन आयामों और आवृ तायों वाली केवल वयुत-चुबकीय तरंगें होती है। हमारे दमागों तक जो चीज पहुंचती है वह है उन तरंगों की ऊजा । हम इसे "रकाश" कहते है, हालां क यह वह रकाश नहीं है जसे क हम उजजवल और चमकदार के ू प में जानते है। यह तो महज ऊजा है। जब हमारा म स्तषक तरंगों की व भनन आवृ तयों का माप करके इस ऊजा की व्याखया करता है तो हम "रंगों" को देखते है। वास्त वकता में समुर नीला नहीं है, घास हरी नहीं है, मटी भूरी नहीं है और फल रंग- बरंगे नहीं है। वे वैसे इस लए नजर आते है क हम अपने दमागों में उनहें उसी तरह से देखते है। म स्तषक और चेतना के बारे में अपनी कताबों के लए र सधद डे नयल सी. डेनेट इस सावभौ मक ू प से स्वीकृत तथय का सारांश रस्तुत करते है:

आम समझदारी यह कहती है क आधु नक वज्ञान ने भौ तक वव से रंग को हटा दया है, उसकी जगह पर व भनन तरंग-दघयों के रंगहीन वयुत-चुंबकीय व करण को रख दया है।[5]

आर. ओनस्टीन और आर. एफ. थामपसन न *'द एम जग रन'* म उस तरीक क बार म बताया ह जस तरीक स रगो की रचना होती ह:

'रंग' जैसी कोइ चीज वव में अ स्ततवमान नहीं है; इसका अ स्ततव केवल देखने वाले की आंख और म स्तषक में ही है। वस्तुए रकाश की तमाम व भनन तरग दघयो को र त ब बत करती ह ल कन रकाश की इन तरगो का स्वय म कोइ रग नही ह।[6]

इस बात को समझन क लए हम वलषण करना होगा क हम रगो को कस रकार स दखत ह। सूयर का रकाश वस्तु तक पहुचता ह और रतयक वस्तु व भनन आवृ तयो की तरगो म रकाश को र त ब बत करती ह। अलग-अलग आवृ त का रकाश आख तक पहुचता ह। (याद रख क यहा पर र युत ''रकाश" शब वास्तव म वयुतचुबकीय तरगो और फोटोनस का उल्लख करता ह न क हमार दमागो म बनन वाल रकाश का।) रग क बोध की शु आत र टना की कोन को शकाओ म होती ह। र टना म कोन को शकाओ क तीन समूह होत ह, जनम स रतयक रकाश की व भनन आवृ तयो पर र त र या करता ह। पहला समूह लाल रग क र त सवदनशील होता ह, दूसरा नील रग क र त सवदनशील होता ह और तीसरा हर रग क र त सवदनशील होता ह। इन कोन को शकाओ

क वभनन स्तरो क उदीपनो क साथ दसयो लाख वभनन रग नमस होत ह। तथाप, कोन कोशकाओ तक पहुचन वाला खुद रकाश की रचना नही कर सकता। जॉन हॉपकनस मडकल यूनवसटी क जमी नथानस सपट करत ह, आखो की कोशकाए रगो की रचना नही करती:

कौन अकला एक यही काम कर सकता ह क रकाश को पकड ल और उसकी सघनता क बार म आपको कुछ बताय। यह आपको रग क बार म कुछ नही बताता।[7]

कोन कोशकाए उस जानकारी को अपन पगमटो क भरोस वयुत सकतो म ूपातरत करती ह, जस क व रगो क बार म रापत करती ह। इन कोशकाओ क साथ जुडी तरकीय कोशकाए इन वयुत सकतो को मसतषक क एक वशष षर तक ल जाती ह। वह स्थान जहा स हम अपन पूर जीवन भर रगो स भर वव को दखत ह वह मस्तषक का यह वशष भाग ह।

यह इस बात को रदशस करता ह क हमार दमागो क पर कोइ रग या रकाश नही ह। कोइ वह ऊजा ह जो क वयुत-चुबकीय तरगो और कणो की शक्ल म गत करती ह। रग और रकाश दोनो का ही अस्ततव हमार मसतषक म ह। हम वास्तव म लाल गुलाब को लाल क ूप म महज इसलए नही दखत क वह लाल ह। हमारी आखो तक पहुचन वाली ऊजा की हमार मसतषक की व्याखया हम यह दखन की ओर ल जाती ह क गुलाब लाल रग का ह।

वणाधता इसका सबूत ह क रगो की रचना हमार मसतषक म होती ह। रटना की एक छोटी-सी चोट वणाधता की ओर ल जा सकती ह। वणाधता स रभावत व्यत लाल और हर रगो क बीच फकरकरन म अषम होता ह। कसी बाय वस्तु म रग या ह या नही इसका कोइ महतव नही ह क्योक हम जस कारण स वस्तुओ को रगो स भरी दखत ह वह उनक रगीन होन म नहत नही ह। यह हम इस नषकषर की ओर ल जाती ह क व समस्त गुण जनक बार म हम मानत ह क उनका सबध वस्तु स होता ह, बाहरी वव म नही हमार मसतषक म होती ह। बहरहाल, चूक हम कभी अपन अवबोधो क पर जाकर बाहरी वव तक नही पहुच पान म सफल नही हो पाएग इसलए हम कभी पदाथो और रगो क अस्ततव को साबत करन म सफल नही होग। रसधद दाशरनक बकरल इस तथय को नमनलखत शबो क साथ स्वीकार करत ह:

अगर एक ही चीज कसी क लए लाल और गमरहो सकती ह और दूसरो क लए इसक वपरीत तो इसका मतलब यह ह क हम रात-धारणा क रभाव म ह और यह क "चीजो" का अस्ततव कवल हमार दमाग म होता ह।[8]

हम अपन मसतषक म हर रकार की आवाज को सुनत ह

सुनन की ररया भी चाषुष ररया की ही भात काम करती ह। दूसर शबो म, हम अपन मसतषक म आवाज को उसी ढग स सुनत ह जस ढग स हम अपन मसतषक म बाहरी वव क दृशय को दखत ह। कान हमार आस-पास की आवाज को पकडता ह और उनह कान क मधय भाग म पहुचाता ह। कान का मधय भाग धवन क कपनो को व्रधदत करक उनह कान क आतरक हसस तक पहुचाता ह। कान का आतरक हससा धवन क इन कपनो को उनकी आवृत और सघनता क आधार पर वयुत सकतो म ूपातरत करता ह और फर उनह मसतषक क पास भज दता ह। इसक बाद इन सदशो को रवण कर को भजा जाता ह जहा पर धवन की व्याखया की जाती ह। लहाजा, सुनन की ररया सारत: उसी तरह स रवण कर म सपनन होती ह जस तरह स दखन की ररया दखन की रया क कर म सपनन होती ह।

अतएव, मूल धव नयो का अ स्ततव हमार म स्तषक क बाहर नही होता, फर चाह हमार वारा धव न कह जान वाल भौ तक दोलन क्यो न पाय जात हो। धव न की य तरग हमार कान क बाहर या अदर नही अ पतु हमार म स्तषक क भीतर धव नयो म ू पात रत होती ह। जस क चाषुष र र या हमारी आखो क वारा सपनन नही होती उसी रकार स र वण र र या को हमार कान नही सपनन करत। उदाहरण क लए, जब आप कसी मर स बात कर रह होत ह तो आप अपन म स्तषक म अपन मर को दखत ह और उसकी आवाज को सुनत ह। आपक म स्तषक म दृशय क न मस होन पर आपको तीन-आयामो की गहन अनुभू त होती ह और आपक मर की आवाज भी गहनता की एक जसी अनुभू त क साथ सुनाइ पडती ह। उदाहरण क लए, आप अपन मर को स्वय स काफी दूर या अपन पीछ बठा हुआ दख सकत ह; इसी क अनुसार आप उसकी आवाज को महसूस करत ह मानो यह उसक पास स, आपक नकट स या आपक पीछ स आ रही हो। बहरहाल, आपक मर की आवाज बहुत दूर या आपक पीछ नही होती। यह आपक दमाग म होती ह।

आपक सुनी गइ धव न की मूल रकृ त की असाधारणता यही तक सी मत नही होती। म स्तषक वास्तव म लाइटू फ और साउडू फ दोनो होता ह। वस्तुत: धव न कभी म स्तषक तक नही पहुचती। अतएव, आपकी सुनी गइ धव न क आयाम क बावजूद आपक म स्तषक का आत रक हस्सा वास्तव म बहद शात रहता ह। बहरहाल, आप अपन म स्तषक म शोरगुल को सुनत ह, जस क आप आवाजो को सुनत ह। व इतन साफ होत ह क कोइ स्वस्थ व्य त उन ह कसी मु शकल या वू पण क बगर सुनता ह। आप अपन साउडू फ म स्तषक म आकस्रा की समफनी को सुनत ह; आप प तयो की धव न स लकर जट वमानो की धव न तक आवृ तयो और ड सबल क वृहत दायर म सभी धव नयो को सुन सकत ह। जब आप अपन पसदीदा गायक की सगीत सभा म जात ह तो समूच स्ट डयम म भरन वाली गहरी और भारी आवाज आपक म स्तषक की गहन खामोशी म न मत्त होती ह। जब आप स्वय ही जोर स गात ह तो आप अपन म स्तषक म आवाज सुनत ह। बहरहाल, अगर आप उसी ष ण टप रकाडर म अपन म स्तषक की धव न को रकाडर करन म सष म होत तो आप कवल खामोशी को सुनत। यह एक असाधारण तथय ह। म स्तष क तक पहुचन वाल वयुत सकतो को आपक म स्तषक म धव न क ू प म सुना जाता ह, उदाहरण क लए लोगो स भर स्ट डयम म सगीत सभा की आवाज।

सभी गध म स्तषक म होती ह

अगर कसी स यह पूछा जाय क उस अपन आसपास की गध का पता कस चलता ह, तो सभवत: उसका जवाब होगा "आप नाक स"। बहरहाल, यह जवाब सही जवाब नही ह, फर चाह कोइ ततष ण ही यह नषकषर नकाल क यह तो सच ह। यल यू नव सटी क त र का वज्ञान क रोफसर गोडस शफडर स्पट करत ह क यह गलत क्यो ह; *"हम सोचत ह क हम अपनी नाक स सूघत ह (ल कन) यह तो कुछ यह कहन जसा ह क हम अपन कान क बाहर क मास पड स सुनत ह।"*[9]

गध का हमारा बोध उसी हसाब स काम करता ह जस क हमारी दूसरी ज्ञान र या करती ह। वस्तुत: नाक का एकमार र कायर गध क अणुओ क लए अतररही चनल क ू प म काम करन की उसकी योग यता ह। व नला की तरह क उडनशील अणु या गुलाब की महक ए पथी लयम कह जान वाल नाक क हस्स क बालो म स्थत रसपटरो म आती ह और उनक साथ अत्र्र या करती ह। ए पथी लयम क साथ गध क अणुओ की अतर र या का प रणाम वयुत सकत क ू प म म स्तषक तक पहुचता ह। इसक बाद इन वयुत सकतो को म स्तषक वारा महक क ू प म लया जाता ह। इस रकार, व समस्त गध जनकी व्याखया हम अच छी या बुरी क ू प म करत ह, वाषपीशील अणुओ क साथ अतर र या क बाद म स्तषक म उतपनन महज अवबोध ही ह और य वयुत सकतो म ू पात रत हो गय होत ह। परफ्यूम की, फूल की, आपको पसद भोजन की, समुर की खुशबू - सष प म उन समस्त गधो जनह

आप पसद या नापसद कर सकत ह - को म स्तिषक म दखा जाता ह। बहरहाल, गंध के अणु वास्तव में कभी भी म स्तिषक तक नहीं पहुंचते। गंध के हमारे बोध में यह केवल वयुत संकेत है जो म स्तिषक तक पहुंचते है जैसा क धव न और र काश के साथ होता है।

तदनुसार, गध कसी वशष दशा म नही जाती क्यो क समस्त गधो को म स्तिषक क गध कर म दखा जाता ह। उदाहरण क लए, कक की गध कढाही स नही आती, ठीक उसी र कार स जस व्यजन की गध रसोइघर स नही आती। इसी र कार, लता-बल की गध बगीच स नही आती और आपस कुछ दूर पर स्थित समुर की गध समुर स नही आती। इन सभी गधो का बोध म स्तिषक क सब धत भाग म एक बदु पर होता ह। इस बोध कर क बाहर दाय या बाए, आग या पीछ की कोइ अवधारणा नही ह। हाला क र तयक बोध व भनन र भावो क साथ घ टत होता र तीत होता ह और यह व भनन दशाओ स आता जान पड सकता ह, वस्तुत: व सभी म स्तिषक क भीतर घ टत होत ह। म स्तिषक क गध कर म आन वाली गधो क बार म माना जाता ह क व बाहरी पदाथो की गध ह। बहरहाल, गुलाब की छ व दृशय कर म सृ जत होती ह और गुलाब की महक गध कर म सृ जत होती ह। अगर बाहर म कोइ सच च अथो म शुधद गध ह तो आप उसक मूल तक कभी भी नही पहुच सकत।

इस सच चाइ क महतव को महसूस करन वाल दाशर्निक जाजर बकर्ल कहत ह, *"शु आत म यह माना जाता था क रगो, दुगर्धो आ द का वास्तव म अ स्तितव ह, ल कन तदनतर इस तरह क वचारो का तयाग कर दया गया और यह दखा गया क उनका अ स्तितव कवल हमार सवदनो पर नभर्र करता ह।"*

यह समझन क लए क गध कवल एक सवदन ह, स्वनो पर वचार करना शष र द हो सकता ह। जब लोग स्व न दखत ह तो उसी र कार स जस क समस्त छ वया एकदम स यथाथर् ू प स दखायी पडती ह, गध भी उसी ू प म दखायी पडती ह मानो व मूल हो। उदाहरण क लए, अपन सपन म रस्टोरट जान वाला कोइ व्य त व्यजन सूची म दय गय व्यजनो की गधो क मधय अपन रा र भोज का चुनाव कर सकता ह; समुर कनार की यारा पर जान का स्वन दखन वाला कोइ व्य त समुर की व शट महक का एहसास कर सकता ह और नायाब बगीच का स्वन दखन वाला अपन सपन म शानदार खुशबुओ क आनद का अनुभव कर सकता ह। इसी र कार, कोइ अगर सपन म परफ्यूम की दुकान पर जाता ह और परफ्यूम का चुनाव करता ह तो वह व भनन परफ्यूमो की गधो क बीच एक-एक करक अतर करन म सष म होगा। सपन म हरक चीज इतनी वास्त वक होती ह क जब व्य कत जागता ह तो वह इस स्थि त स आचयर्च कत हो सकता/सकती ह।

दरअसल, वषय को समझन क लए स्वनो का परीष ण करना आवशयक नही ह। यहा तक क नायाब बगीच क उदाहरण की तरह क उल्लख म आय चरणो म स कसी एक की कल्पना करना पया प त होगा। अगर आप नायाब बगीच पर धयान क र त कर तो आप महसूस कर सकत ह मानो आप उसकी सुगध स अवगत हो, फर चाह वह वहा अनुप स्थि त क्यो न हो। खुशबू का एहसास म स्तिषक म हो रहा ह। अगर आप अपनी मा को अपन दमाग म उतारना चाहत ह तो आप उस अपन म स्तिषक म दख सकत ह, फर वह चाह आपक सामन नही ही बठी हो; इसी र कार आप लली की खुशबू की कल्पना कर सकत ह, फर चाह वह वहा न हो।

वा शगटन यू नव सर्टी क मनोवजा नक माइकल पोस्नर और त र का वजानी माकर्स रचल इस मुद पर टप पणी करत ह क बाय र रण क अभाव म भी दृशय और अनय इ रया काम करती ह:

> अपनी आख खो लय और एक दृशय आपकी आखो म अनायास छा जाएगा; अपनी आख बद की जय और उस दृशय क बार म सो चय और आप उसकी छ व को आखो म उतार सकत ह, न चत ू प स उतना जीवत, ठोस या पूणर दृशय तो नही जतना क आपन अपनी आखो स दखा था, ल कन तो भी वह ऐसा तो होगा जो क मूलभूत चा र र क वशषताओ को र द शर्त कर। दोनो ही मामलो म दृशय की छ व म स्तिषक म न मर्त होती ह। मूल चाषु ष अनुभवो स न मर्त होन वाली छ व को क ल्पत छ व स अलग करन क लए "अनुभू त" कहा जाता ह। र टना पर र काश क पडन और उसक सकत भजन क फलस्वू प अनुभू त न मर्त होती ह। सकतो को

मस्तषक म रसस्कृत कया जाता ह। लकन उस समय जबक इस रकार क सकतो को भजन क लए रटना पर कोइ रकाश नही पड रहा होता ह तो हम कस रकार स छव को सृजत करन म सषम होत ह?[10]

अपन दमाग म छव गढन क लए बाय रोत की कोइ आवशयकता नही होती। यही बात गध क बोध पर पूरी तरह स लागू होती ह। ठीक उसी रकार स जस क आप ऐसी गध स अवगत होत ह जो क वास्तव म आपक सपन या कल्पना म नही होती, आप इस बात को लकर आवस्त नही हो सकत क वास्तवक जीवन म जन वस्तुओ को आप सूघत ह व आपक बाहर अस्ततवमान ह भी या नही। फर अगर हम यह मान भी लत ह क य वस्तुए आपक बाहर अस्ततवमान ह तो भी आप मूल वस्तुओ स कभी भी सरोकार नही रख सकत।

समस्त स्वाद मस्तषक म होत ह

स्वादरय की व्याखया अनय ञानरयो की व्याखया की भात की जा सकती ह। स्वाद की अनुभूत जीभ और गल की छोटी रथयो क वारा होती ह। जीभ चार वभनन स्वादो, कडुव, खट, मीठ और नमकीन का पता लगा सकती ह। स्वाद रथया ररयाओ की एक शृखला क बाद सवदी सूचना को वयुत सकतो म ूपातरत करती ह और फर उनह मस्तषक को हस्तातरत कर दती ह। ततपचात, इन सकतो को मस्तषक वारा स्वादो क ूप म दखा जाता ह। जब आप कक, दही, नीबू या फल खात ह तो जस तरह क स्वाद का आपको अनुभव होता ह वह वास्तव म एक ररया होती ह जो क मस्तषक म वयुत सकतो की व्याखया करती ह।

कक की छव चीनी क स्वाद क साथ जुडी होगी, जसम स हर कुछ मस्तषक म घटत होता ह और अनुभूत की जान वाली हर चीज कक स जुडी होती ह जस क आप इतना पसद करत ह। वह स्वाद जसस क आप खूब भूख लगन पर अपन कक को खान क बाद अवगत ह, और कुछ नही बल्क वयुत सकतो क कारण आपक मस्तषक म उतपनन रभाव ह। आप कवल उस चीज स अवगत होत ह जसकी क आपका मस्तषक बाय ररण स व्याखया करता ह। आप कभी भी मूल वस्तु तक नही पहुच सकत; उदाहरण क लए आप कभी भी स्वय मूल चॉकलट को दख, सूघ नही सकत और उसका स्वाद भी नही जान सकत। अगर आपक मस्तषक की स्वाद तरकाए काट दी जाय, तो आपक वारा खायी जान वाली कसी भी चीज क स्वाद का आपक मस्तषक तक पहुचना असभव हो जाएगा और आप पूरी तरह स अपना स्वाद बोध खो दग। इस तथय को क जन स्वादो स आप परचत ह व असाधारण ूप स मूल रतीत होत ह, नचत ूप स आपको धोखा नही दना चाहए। यह पदाथरकी वञानक व्याखया ह।

स्पशरका बोध भी मस्तषक म घटत होता ह

स्पशरका बोध उन कारको म स एक ह जो क लोगो को ऊपर उल्लखत इस सतय स आवस्त होन स रोकत ह क दृशय, रवण और स्वाद क बोध मस्तषक क भीतर घटत होत ह। उदाहरण क लए, अगर आप कसी को यह बताय क वह अपन मस्तषक क भीतर पुस्तक दखता ह तो अगर वह सावधानीपूवरक नही सोचता तो कहगा, "म अपन मस्तषक म पुस्तक को नही दख सकता - दखो, म इस अपन हाथो स छू रहा हू।" या अगर हम कह "हम यह नही जान सकत क इस पुस्तक का मूल ूप बाहरी वव म भौतक पदाथरक ूप म अस्ततवमान ह या नही" तो पुन: सतही तौर पर सोचना वाला वही व्यत जवाब दगा, "नही, दखो, म इस अपन हाथ स पकड हुए हू और म इसकी कठोरता को महसूस करता हू - यह बोध नही बल्क अस्ततव ह जसकी क भौतक वास्तवकता ह"।

बहरहाल, यह एक तथय ह क इस तरह क लोग इस बात को समझ नही सकत या सभवत: व बस अनदखा कर जात ह। स्पशरका बोध भी उसी तरह से मस्तषक में घटत होता है जैसे क दूसरे समस्त बोध मस्तषक में घटत होते है। कहने का अथरयह क जब आप भौतक पदाथरको छूते है तो आपको मस्तषक में इस बात का बोध होता है क वह कठोर है या मुलायम, गीला, चपकने वाला या रेशमी है। आपकी उगलयो क पोरो स आन वाला

रभाव वयुत सकत क ू प म मस्तषक को सर षत होता ह और इन सकतो को मस्तषक म सपशरबोध क ू प म दखा जाता ह। उदाहरण क लए, अगर आप खुरदरी सतह का सपशरकर तो आप कभी भी यह नही जान सकत क वह सतह वास्तवकता म सचमुच खुरदरी सतह ह या नही या खुरदरी सतह की अनुभू त वास्तव म कसी होती ह। इसकी वजह यह ह क आप खुरदरी सतह क मूल स्वू प को कभी भी छू नही सकत। यह ञान क आप कसी सतह को छून वाल ह, कतपय ररण की आपक मस्तषक की व्याखया होता ह।

पयाल म चाय पी रहा व्यत नकट क मर स बात करत समय उस समय ततषण पयाल को रख दता ह जब वह अपना हाथ गमरपयाल स जला लता ह। बहरहाल, वास्तवकता म वह व्यकत पयाल की गमी को अपन दमाग म महसूस करता ह न क अपन हाथ म। वही व्यत चाय क पयाल की छव को अपन दमाग म उतारता ह और अपन दमाग म उसकी गध और स्वाद की अनुभू त करता ह। तथा प, यह व्यत इस बात को महसूस नही करता क वह चाय जसका वह आनद ल रहा ह वास्तव म उसक मस्तषक क भीतर का सवदन ह। वह मानकर चलता ह क गलास उसक बाहर वयमान ह और अपन मर स बात करता ह, जसकी छव उसक मस्तषक क भीतर पुन: उभरती ह। दरअसल, यह असाधारण मामला ह। यह मानयता क वह मूल गलास को छू रहा ह और मूल चाय को पी रहा ह, जो क पयाल की कठोरता और गमी और चाय क स्वाद और गध क उसक आभास स युतयुत जान पडती ह, उन बोधो की आचयरजनक सपटता और पूणरता को दशा ती ह जो क हमार मस्तषक क भीतर वयमान होत ह। इस महतवपूणरसतय को, जस पर सावधानी क साथ वचार कय जान की आवशयकता ह, बीसवी सदी क दाशरनक बटडररसल वारा व्यत कया गया:

> जहा तक सपशरबोध की बात ह तो जब हम अपनी उगु लयो स मज को सपशरकरत ह, जो क इलकरॉनो और रोटानो पर वयुत व्यवधान होता ह और यह आधु नक भौ तकी क अनुसार मज म इलकरॉनो और रोटानो की नकटता क वारा उतपनन होता ह। अगर यही व्यवधान हमारी उगली क पोरो म कसी और तरीक स उतपनन होता ह तो कसी मज क नही होन पर भी हम सवदनो का अनुभव होना चा हए।[11]

जो बात रसल यहा बतात ह और अतय धक महतवपूणरह। वस्तुत: अगर हमारी उगुली क पोरो को भनन तरीक स सवग रदान कया जाता ह तो हम पूरी तरह स भनन अनुभू तयो का बोध कर सकत ह। बहरहाल, जसा क आग चलकर वस्तार स बताया जाएगा, आज इस काम को यारक अनु पको क वारा कया जा सकता ह। एक वशष दस तान की मदद स कोइ व्यत बल्ली को थपथपान, कसी स हाथ मलान, अपना हाथ धोन या कठोर पदाथर का सपशरकरन क सवदन की अनुभू त कर सकता ह फर चाह इनम स कोइ भी चीज उपस्थत नही भी हो सकती। वस्तुत:, यह सच ह क इनम स कोइ भी सवदन वास्तवक वव की घटनाओ का र त न धतव नही करता। यह इस बात का एक और सबूत ह क मनुषयो वारा महसूस कय जान वाल समस्त सवदन मस्तषक क भीतर नमरत होत ह।

हम कभी अपन मस्तषक क भीतर क वव क मूल तक नही पहुच सकत

जसा क यहा रदशरत कया गया ह क हर वह चीज जनक बीच अपन जीवन म हम जीत ह, दखत ह, सुनत ह और महसूस करत ह, हमार मस्तषक क भीतर घटत होती ह। उदाहरण क लए, आरामकुसी पर बठ रहत समय खडकी की तरफ दखन वाला कोइ व्यत अपन मस्तषक म आरामकुसी की कठोरता और कपड की फसलन को महसूस करता ह। रसोइघर स आ रही काफी की गध का पता मस्तषक म चलता ह न क कुछ दूर पर स्थत रसोइघर म। उसक वारा खडकी स दख जान वाल समुर, चडयो और वृषो क दृशय मस्तषक म नमरत होन वाली छवया ह। काफी लान वाला दोस्त और काफी का स्वाद भी मस्तषक म अस्ततवमान रहता ह। सषप म, उसक रहन क कमर म बठकर खडकी स बाहर दखन वाला कोइ व्यत वास्तवकता म उसक रहन क कमर को दख

रहा होता ह और खडकी स दखा गया दृशय उसक दमाग क पदरपर दखा गया होता ह। कोइ मनुषय जस बात का उल्लेख "मेरा जीवन" के ू प में कर सकता है वह उन समस्त बोधों का संरह होता है जो क साथर्क ढंग से एक साथ रख दये गये होते है और म स्तषक के पदेर से देखे जाते है। हम कभी भी अपने म स्तषक से बाहर नहीं आ सकते।

हम कभी भी अपन म स्तषक क बाहर क वास्त वक भौ तक वव की सचची रकृ त को कभी भी नही जान सकत। उदाहरण क लए, हम यह नही जान सकत क हमार वारा दखी जान वाली हर रग की पतीा हरी ह या नही जसा क हम उस दखत ह। इसी रकार, हम कभी भी इस बात का पता नही लगा सकत क भोजनोपरात की मठाइ सचमुच म मीठी ह या इसक बार म हमारा म स्तषक बस ऐसा मान लता ह। उदाहरण क लए, अपन वारा पहल दख गय एक भूदृशय की कल्पना कीजए। वह भूदृशय आपक समष नही ह ल कन आप उस अपन म स्तषक म दख रह ह। वज्ञान ल खका रीटा काटर कहती ह क हम चहर या दृशय को दखत समय वास्तव म मूल को नही बल्क मूल की व्याखया या ऐस सस्करण को दखत ह जो क उसका पूरी तरह स पुन नर्मा ण होता ह। वह आग जोडती ह क इसस कोइ फकर नही पडता क इन र तयो को कतन अचछ स पुनरस्तुत कया जाता ह, व फर भी मूल स भनन या कमतर होगी। (रीटा काटर, *म पग द माइड*, यू नव सर्टी ऑफ क लफो नर्या र स, लदन, 1999, पृ 135)

यही बात उस समय लागू होती ह जब आप भूदृशय की ओर दखत ह। वास्तव म आपक दूर स भूदृशय की कल्पना करन और उस नकट स दखन क बीच कोइ फकर नही होता ह। लहाजा, जब आप कोइ दृशय दखत ह तो वास्तव म आप अपन म स्तषक म न मर्त सस्करण को दखत ह न क उसक मूल ू प को।

इस बात पर वचार करन वाला कोइ भी व्य त स्पट ू प स सतय को दखगा। इस रकार क एक व्य त जाजर बकर्ल न अपनी रचना *'मानव ज्ञान क सधदातो स समबध नबध'* म इस बात को स्पट कया ह :

> दृशय दखकर मर मन म रकाश और रगो क उनकी अनक ड रयो और आभाओ क वचार आत ह। स्पशर क वारा म सखत और मुलायम, गमर और सदर्, ग त और र तरोध का बोध करता हू ... र ाण श त मुझ गध बताती ह; स्वाद र थया स्वाद; और र वण रया धव न क बार म बताती ह ... और जसा क इनम स बहुत सी चीजो को एक दूसर क साथ दखा जाता ह इस लए उनका उल्लख भी एक साथ आता ह और व च चर्त भी एक ही चीज क ू प म होती ह। इस रकार, उदाहरण क लए साथ-साथ दखी जान वाली न चत रग, स्वाद, गध, आकृ त एक साथ अ स्ततवमान रहती ह और उनह एक वशष नाम स जाना जाता ह जस क सब का नाम; वचारो क अनय सरह पतथर, पड, कताब और इसी रकार की दूसरी इ रयर ाय चीज न मर्त करत ह...[12]

इन शब्दो म जो सच बकर्ल न व्यत कया ह वह यह ह : हम दमाग म अनुभूत कय जान वाल व भनन सवदनो की व्याखया क वारा कसी वस्तु को प रभा षत करत ह। जसा क इस उदाहरण म आया ह सब का स्वाद और गध, उसकी कठोरता और गोलाइ और उसक अनय गुणो स सब धत व सवदन जनह क हमार म स्तषक वारा सम रता म दखा जाता ह और हम इस सबका बोध सब क ू प म करत ह। बहरहाल, हमारा साबका कभी भी सब क मूल ू प स नही पड सकता हम कवल उसक बोध स दो-चार होत ह। हम जसको भी दख, सूघ सकत ह जसका स्वाद ल सकत ह, स्पशर कर सकत ह या सुन सकत ह वह हमार म स्तषक क भीतर की र तया होती ह।

इस बदु तक जन बातो की चचा की गयी ह जब हम उन पर वचार करत ह तो सतय अपनी पूरी स्पटता स सामन आ जाता ह। उदाहरण क लए:

○ अगर हम अपन म स्तषक क भीतर रग-बरग रकाशो और उनकी समस्त आभाओ स भरी सडक को दख सक जहा पर क वास्तव म कोइ रकाश नही ह तो हम नो टस बोड, लाइटो, स्रीट लाइटो और कार क हडलमपो की र त यो को दख सकत ह जो क हमार म स्तषक क भीतर वयुत सकतो स न मर्त होती ह।

○ चूक कोइ धवन मस्तषक म रवश नही कर सकती इसलए हम अपन रयजनो की आवाजो क मूल ू प को कभी भी नही सुन सकत। हम सफर उसकी र तयो को सुनत ह।

○ हम समुर की ठढक, सूरज की गमी को कभी नही महसूस कर सकत - हम सफर अपन मस्तषक म उनकी र तयो को महसूस कर सकत ह।

○ इसी रकार पुदीन क स्वाद क मूल ू प को कोइ भी जानन म सफल नही हो पाया ह। पुदीन क ू प म जस चीज का स्वाद हम रापत करत ह वह कवल मस्तषक म घटत होन वाला बोध ह। ऐसा इसलए ह क वह व्यत पुदीन क मूल ू प को नही छू सकता, वह उस सूघ नही सकता, उसका स्वाद नही ल सकता।

नषकषस:, जदगी भर हम नकल - धारणाओ क साथ जीत ह जो हम दखाइ जाती ह। हालाक, हालाक य र तया इतनी वास्तवक होती ह क हम कभी यह आभास नही होता क व र तया ह। उदाहरण क ू प म, अपना सर उठाओ और कमर म दखो। तुम दखोग क तुम एक ऐस कमर म बठ हो जो फनीचर स भरा सा ह। जब तुम उस आमचयर क हतथ को छूओग जसपर तुम बठ हो तो उसकी कठोरता को उसी तरह महसूस करोग जस क तुम वास्तवतक को छू रह हो। तुमह दखाए जा रह छायाचरो की वास्तवकता तथा उन छायाचरो की उतकृट कलातमकता तुमह तथा अरबो अनय लोगो को यह सतुट करन क लय पयापत ह क बब ' भौतक' ह। यहा तक क अधकतर लोग पढत ह क इस दुनया स समबधद हर सवदन उनक मस्तषक म उपजत ह कयोक यह हाइ स्कूल की जीव वज्ञान कषाओ म यह पढाया जाता ह लकन बब इतन ववासोतपादक होत ह क उनह यह मानन म भी कठनाइ होती ह क य सब बब उनक मस्तषक की कल्पना मार ह। इसकी वजह यही ह क हर बब कला क लहाज स बहुत वास्तवक तथा पूणर बनाया जाता ह।

कुछ लोग स्वीकार करत ह क बब मस्तषक म घटत होत ह, हालाक व दावा करत ह क बबो का मूल बाय ह। यह अलग बात ह क व कभी इसकी पुट नही कर सकत कयोक मस्तषक क बोध स कोइ भी बाहर नही जा सकता। हर कोइ मस्तषक म मौजूदा कोशका म जीता ह और कोइ भी उसक अलावा कुछ अनुभव नही कर सकता जो उसकी धारणाए दखाती ह। परणामस्वू प, कोइ यह कभी नही जान पाता क उसकी धारणा स पर कया घटत होता ह। इसलय यह कहना "बाहर मूल ह" एक अनुचत पूवधारणा होगी कयोक ऐसा कुछ भी नही ह जो एक साषय क ू प म हमारी मदद कर सक। इसक अलावा, अगर बाहर मूल ह भी तो, य ' मूल' फर मस्तषक म दख जायग जसका मतलब अवलोकनकता उसकी या उसक मस्तषक म पनपन वाल बबो स दोचार होगा। इस तरह य इन दावो का समथस नही कया जा सकता कयोक व उन "भौतक समकषो" तक पहुच नही पायग जनक बार म व सोचत ह क उनका अस्ततव ह।

हम इसपर भी जोर दना चाहए क वज्ञानक या तकनीकी वकास कुछ भी बदल नही सकता कयोक रतयक वज्ञानक खोज एव तकनीकी उननयन लोगो क मस्तषक म घटत होता ह और इस तरह स बाहरी दुनया तक लोगो की पहुच म कसी तरह मददगार नही होता।

बी रसल तथा एल वटीगस्टीन जस रमुख दाशरनको क इस वषय पर वचार इस तरह ह:

> उदाहरण क लय, एक नीबू वास्तव म अस्ततव म ह या नही और यह कस तरह अस्ततव म ह इसपर सवाल नही कया जा सकता और न ही इसकी जाच की जा सकती ह। एक नीबू म महज एक स्वाद होता ह जस जीभ महसूस करती ह, एक गध जस नाक महसूस करती ह, एक रग एव आकार जस आख दखती ह और कवल इनही वशषताओ की जाच या आकलन कया जा सकता ह। वज्ञान, भौतक दुनया को कभी नही जान सकता।[13]

दाशरनक जी बकल न स्पट कहा ह क हमारी धारणाए कवल हमार मस्तषक म अस्ततव म ह और जनह हम गलती स स्वत: ही बाय दुनया म अस्ततव रखन वाली मान लत ह:

हम पदाथो क अ स्ततव म महज इस लय ववास करत ह क्यो क हम उनह दखत और छूत ह और हमारी धारणाए उनह र त ब बत करती ह। हाला क, हमारी धारणाए सफर हमार म स्तषक क वचार मार ह। इस लय, बोध वारा सामन आन वाल पदाथर कुछ नही महज वचार ह और य वचार आवशयक ू प स और कही नही हमार म स्तषक म होत ह...चू क यह सब कवल हमार म स्तषक म रहता ह, इसका मतलब यह ह क जब हम रमाड और चीजो क अपन म स्तषक स बाहर अ स्ततव की कल्पना करत ह, हम र म का शकार होत ह। हमार आस पास की कसी भी वस्तु का अ स्ततव हमार म स्तषक स पर नही ह।[14]

इसक अलावा, लोगो क लय यह कोइ मायन नही रखती क एक व्य त जस चीज तक पहुच नही सकता, जस दख एव छू नही सकता वह अ स्ततव म ह या नही क्यो क भौ तक दु नया ह या नही इस बहस स पर एक इसान दु नया को अपन म स्तषक म ही दखता ह। एक व्य त पदाथर क वास्त वतक मूल तक कभी नही पहुच सकता। इसस भी आग हर व्य त क लय र त दखना ही पया प्त होता ह। उदाहरण क ू प म, रग बरग फूलो वाल बगीच म घूम रहा व्य त बगीच क मूल की ओर नही दख रहा होता ब ल्क उसकी र त को अपन म स्तषक म दख रहा होता ह। हाला क बगीच की यह र त या कापी इतनी वास्त वक होती ह क हर कसी को बगीच स वसा ही आनद मलता ह मानो यह वास्त वकता ह जब क वास्तव म यह कल्पना भर होता ह। अरबो लोग, अब तक यही मानत ह क व हर कसी वस्तु को उसक मूल ू प म दख रह ह। इस लय लोगो क लय "बाय" दु नया म ु च रखन का कोइ मतलब नही रह जाता।

दूरी की अनुभू त महज एक बोध ह जो म स्तषक म होता ह

कसी ऐसी सडक की कल्पना कर जो दुकानो, भवनो, कारो एव लोगो स लकदक हो .. जब आप इस तस्वीर को दखत ह तो यह यह वास्त वक लगती ह। यही कारण ह क अ धकतर लोग यह नही समझ पात क जो तस्वीर वह दख रह ह वह उनक म स्तषक की उपज ह और गलती स मान लया गया क सब कुछ वास्त वक ह। यह तस्वीर इतनी पूणता क साथ तयार की गइ ह क यह समझना नामुम कन हो जाता ह क जो तस्वीर व दख रह ह वह बाय दु नया की मूल नही ह। ब ल्क यह सब तो उनक म स्तषक म मौजूदा उसकी कोइ र त मार ह।

कसी तस्वीर को इतना र भावी एव सटीक बनान वाल ततवो म दूरी, गहराइ, रग तथा रोशनी शा मल ह। इन ततवो का इस्तमाल इतनी प रपकवता क साथ कया जाता ह क व म स्तषक क भीतर र आयामी, रगीन तथा उजजवल छ व बन जाती ह। जब कसी तस्वीर स असखय सूचनाए समबधद की जाती ह तो एक नइ दु नया ही सामन आती ह और हम इस सारी उर वास्त वक मानत रहत ह जब क यह सब हमार म स्तषक की उपज ह।

अब कल्पना कर क आप एक कार चला रह ह। स्टीय रग व्हील आपस हाथ भर की दूरी पर ह और आपस 100 मीटर या 300 फुट की दूरी पर र फक लाइट ह। आपक सामन वाली कार आपस लगभग दस मीटर या 30 फुट की दूरी पर ह। ष तज पटल पर पवत ह जो आपक अनुमान क अनुसार दूरी म कलोमीटर या मीलो दूर हो सकत ह। हाला क, सभी तरह क आकलन गलत होत ह। न तो कार और न ही पवत उतनी दूरी पर ह जतना की आप आकलन करत ह। वास्तव म पूरी तस्वीर कसी फल्म की रील की भा त दो दशाओ वाल र म म होती ह, म स्तषक म एक ही सतह पर। आख म र त ब बत होन वाली छ वया दो दशा वाली होती ह जस क हम टली वजन की स्र ीन पर नजर आती ह। ऐसी प र स्थ तयो म गहराइ एव दूरी की धारणा कस घ टत होगी।

जस दूरी की अनुभू त कहा जाता ह वह र आयामी दखन का एक तरीका भर ह। छ वयो म दूरी एव गहराइ का आभास भरन वाल ततव प रर षय, शड एव ग त ह। बोध का वह ू प जस दृ ट वज्ञान रवीम (स्प टयल) बोधकहता ह, एक अ त ज टल र णाली वारा मुहया कराया जाता ह। इस र णाली को कुछ इस तरह स समझा जा सकता ह: हमारी आखो तक पहुचन वाला दृशय वआयामी होता ह। कह सकत ह क यह ऊचाइ तथा चौडाइ को नापता ह। दो आख एक ही समय पर दो अलग अलग छ वयो को दखती ह जसका प रणाम गहराइ एव दूरी क ू प म सामन आता

ह। हमारी आखो तक पहुचन वाली छ व कोण एव रोशनी क लहाज स एक दूसर स अलग होती ह। म स्तषक इन दो अलग अलग छ वयो को हमार गहराइ एव दूरी क बोध क ू प म जोडता ह।

इस और बहतर तरीक स समझन क लय हम एक रयोग कर सकत ह। पहल, अपन दाय हाथ को अपन आग की ओर फलाय तथा अपनी तजसी उगली का पकड। अब पहल अपनी बायी और फर दायी आख को बद करत हुए इस उगली पर धयान करत कर। क्योक रतयक आख को अलग अलग दृशय दखत ह, आप उगली को थोडा सा इधर उधर होत दखग। अब आप अपनी दोनो आख खोल और अपनी दायी तजसी उगली पर धयान करत करत हुए अपनी बायी बायी उगली को अपनी आख क अधक स अधक नजदीक लकर जाय। आप नोट करग क नकटवती उगली दो छ वयो का नमाण करगी। यह इसलय क्योक नकट की उगली की एक अलग गहराइ सामन आयगी। अगर आप बारी बारी स अपनी आख को खोलग एव बद करग तो पता चलगा क आख क करीब वाली उगली, उस उगली की तुलना म अधक हलगी जो दूरी पर ह। ऐसा इसलय होगा क्योक रतयक आख को दखन वाल दृशय म अतर ह।

जब कोइ रआयामी फल्म बनाइ जाती ह तो इस तकनीक का इस्तमाल कया जाता ह। इसम दो अलग अलग कोणो स फल्माकत की गइ छ वयो को एक एक ही स्र ीन पर दखाया जाता ह। दशक इस तरह क वशष चशम पहनत ह जो रग को फल्टर करत ह और रोशनी का ु वीकरण करत ह। चशम क फल्टर दो दृशयो म स एक को फल्टर कर दत ह और म स्तषक इनह एक एकल रआयामी छ व म बदल दता ह।

वआयामी रटना म गहराइ का बोध ठीक वस ही होता ह जसी तकनीक कलाकार दशक को वआयामी तस्वीर म गहराइ को महसूस करान क लय इस्तमाल करत ह। गहराइ का आभास करान वाल कारक कइ ह जनम एक क ऊपर एक पदाथर को रखना, वातावरण का बोध, बुनावट म बदलाव, रखीय बोध, आयाम, ऊचाइ तथा ग त। उदाहरण क लय गहराइ का आभास करन क लय बुनावट म बदलाव बहुत मायन रखता ह। जस क हम जस फूलो स भर मदान म चलत ह वह वास्तव म एक ह। पास वाल ऊतक (टशयू) अधक व्यापक होत ह। इसलय टशयू पर मौजूद कसी पदाथर की दूरी का आकलन करना अधक आसान होता ह। इसक अलावा रआयामी दृशय क बोध म रोशनी एव छाया का भी अपना योगदान रहता ह।

हम कसी सफल कलाकार क चर की रशसा उसम मौजूदा गहराइ एव वास्त वकता क बोध क कारण ही करत ह। वह इसका नमाण छाया एव अनुदृशय क बलबूत पर करता ह।

अनुदृशय इस तथय का प रणाम ह क दूरस्थ वस्तु आकार म उस वस्तु की तुलना म छोटी नजर आती ह जो पास म ह, यह इस बात पर नभर करता ह दखन वाला कौन ह। उदाहरण क लय, जब हम कसी दृशय पर दखत ह, दूर क पड छोट नजर आत ह जबक नजदीक क पड बड। इसी तरह ऐसी तस्वीर जसकी पृठभूम म पवत हो, प वत छोट दखाय जात ह उस आदमी की तुलना म जो उनक आग मदान पर ह। रखीय अनुदृशय म, कलाकार समातार रखाओ का इस्तमाल करता ह। उदाहरण क ू प म, रल की पट रयो को ष तज म मलात हुए लबाइ एव गहराइ का रभाव पदा कया जाता ह।

चरकारो वारा अपनी प टग म इस्तमाल की जान वाली रणाली हमार म स्तषक म घ टत होन वाली छ वयो क लय भी सटीक ह। म स्तषक म गहराइ, रोशनी तथा छाया भी इस रणाली पर वआयामी स्पस म पदा की जाती ह। कसी तस्वीर म जतनी अधक बौरा होगा वह उतनी ही अधक वास्त वक लगगी और हमारी सवदनाओ को रभाव त करगी। हम ऐसा व्यवहार करत ह मानो वहा वास्तव म गहराइ और दूरी हो, जस वहा रआयाम ह। हालाक सभी तस्वीर एक सपाट सतह पर फल्म वगर की भा त होती ह। म स्तषक म कल्पना वल्कल (वजयुअल कॉटक्स) बहुत ही छोटा ह। दूरी, इस तरह दूरस्थ घरो, आसमान म चमकत सतारो, चरमा, सूयर, हवा म ग तमान जहाज तथा उडत पषी - य सब छोट सी जगह म भर होत ह। हम यह कह सकत ह क उस ग लास म जस आप हाथ बढाकर

पकड सकत ह और एक वमान म, जस आप दखग तो आप उस हजारो कलोमीटर ऊपर सोचग, तकनीकी ूप स दोनो क बीच कोइ दूरी नही ह; सभी एक एकल सतह पर ह, मस्तषक क सवदन कर म ह।

उदाहरण क ूप म षतज पर गुम होता जहाज वास्तव म आपस मीलो की दूरी पर नही ह। जहाज आपक मस्तष क म ह। खडकी जस आप दख रह ह, खडकी क समष एक लोक रय पड, आपक घर क सामन की सडक, समुर तथा समुर म मौजूद जहाज य सभी मस्तषक क दृशय कर म, वआयामी सतह पर ह। जस एक कलाकार दूरी क आभास को वआयामी कनवास पर आकार, रग, छाया एव रोशनी का इस्तमाल करत हुए रकट करता ह, अत: दूरी का सवदन मस्तषक म पनप सकता ह। नषकषर म, कसी वस्तु क दूर या नकट होन क तथय स हम मूख नही बनना चाहए क्योक दूरी एक सवदन ह, दूसरी अनय बातो की तरह ही।

आप कमर क अदर ह या कमरा आपक अदर?

लोगो क यह समझन क अनक कारण ह क दखन वाली छवया वास्तव म मस्तषक म बोध की जाती ह। इसका एक कारण यह ह क व अपन शरीर को भी छव म दखत ह। व इस गलत नषकषर पर पहुचत ह क "चूक म इस कमर म हू, कमरा मर मस्तषक म घटत नही हो सकता।" उनकी गलती यह भूलना ह क उनका शरीर भी एक छव ह। जस क हमार आसपास दखन वाली हर वस्तु हमार मस्तषक म मौजूद छव मार ह, इसलय हमारा शरीर भी मस्तषक म एक छव क ूप म ह। उदाहरण क ूप म एक आमसयर पर बठत हुए आप गदस स नीच क अपन पूर शरीर को दख सकत ह। यह छव भी वही बोधातमक रणाली पदा करती ह। जब आप अपन हाथ को अपन पर पर रखत ह तो आपको मस्तषक म एक गतबोधक अनुभव होता ह। इसका मतलब ह क आप अपन शरीर को मस्तषक म दखत ह और अपन शरीर को सपशर करन को मस्तषक म ही महसूस करत ह।

अगर शरीर मस्तषक म मौजूद एक छव ह तो कमरा आपक भीतर ह या आप कमर क भीतर? उचत जवाब यही होगा "कमरा आपक भीतर ह"। और आप कमर म अपन शरीर की छव उसी मस्तषक क जरय दखत ह।

हम इस एक उदाहरण क ूप म समझा सकत ह। मान ल क आपन लफ्ट क लय बटन दबाया। जब लफ्ट आइ तो ऊपरी मजल पर रहन वाला आपका पडोसी भी उसम था। आप लफ्ट म सवार होत ह। वास्तव म आप लफ्ट म ह या आपक भीतर घटत हो रही ह? सचचाइ यह ह: आपक पडोसी सहत लफ्ट तथा आपक शरीर - य सभी छवया आपक मस्तषक म घटत होती ह।

नषकषस: हम कसी क ''भीतर" नही ह। बल्क सबकुछ हमार ही भीतर ह; सबकुछ मस्तषक म घटत होता ह। सूयर, चरमा, तार तथा कइ मील दूर हवा म उडता हवाइ जहाज भी इस सचचाइ को पलट नही सकता। सूयर एव चरमा भी आपक हाथ की कताब की तरह कवल मार छवया ह जो मस्तषक क एक बहुत ही छोट स दृशय कर म घटत होती ह।

बाय दुनया क अस्ततव क बना ही घटत हो सकता ह सवदनाओ का ससार

एक तथय जो इस दाव को खारज कर दता ह क हमार वारा दखा जान वाला सवदनाओ का ससार एक भौतक तुलय ह, वह यह ह क हम मस्तषक म सवदनाओ क घटत होन क लय हम कसी तरह क बाय दुनया की जूरत नही ह। समयुलटर जस अनक रौयोगकीय वकास एव सपना भी इस सचचाइ क सबस महतवपूणर साषय ह।

वज्ञान लखक रीटा काटर अपनी कताब '*मपग द माइड*' म कहती ह, "दखन क लय आखो की जूरत नही होती।" उनहोन इस सबध म वज्ञानको क एक परीषण का वस्तार स उल्लख कया ह। इस रयोग म नरहीन रोगयो

म एक ऐसा डवाइस लगाया गया तो वी डयो तस्वीरो को कपायमान स्पदन म बदल दता था। मरीजो की आखो क बगल म स्था पत एक कमरा उनकी पीठ पर स्पदन को फला दता ह जसस उनह दृशय जगत स लगातार दृशय नवश मलता रहता ह। थोडी ही दर म रो गयो न इस तरह का व्यवहार करना शु कर दया मानो व वास्तव म ही दख सकत हो। उदाहरण क लय इन डवाइस म एक जूम लस भी लगा था ता क वस्तुओ को करीब स दखा जा सक। जब रो गयो को सू चत कय बना इस जूम को सचा लत कया गया तो उनम अपनी रषा की चाहत हुइ क्यो क वस तु की पीठ पर मौजूद छ व म अचानक वस्तार हुआ।[15]

जसा क इस रयोग म दखा गया ह हम उस समय भी सवदनाए पदा कर सकत ह जब क व बाय दु नया क पदाथरसमतुल्य क कारण नही होती। सभी ररको को कृ र म ू प स पदा कया जा सकता ह।

सपनो म अनुभव कया जान वाला "अनुभू तयो का ससार"

कोइ व्य त सभी सवदनाओ को उज्जवल बाय दु नया क अ स्ततव क बना भी महसूस कर सकता ह। इसका सबस बहतरीन उदाहरण स्वन या सपन ह। एक व्य त सपन दखत समय अपन बस्तर पर बद आखो क साथ लटा ह। इसक बावजूद वह व्य त उन अनक चीजो को महसूस करता ह जो उसकी या उसक वास्त वक जीवन म काम आ ती ह। उसका यह अनुभव इतना वास्त वक होता ह क सपना वास्त वक जदगी क अनुभव स अभद हो जात ह। इस कताब को पढन वाल हर व्य त न इस सचचाइ को अपन सपनो क माधयम स महसूस कया होगा। उदाहरण क लय, अपन बस्तर पर शात चत एव बहतर माहौल म लटा व्य त अपन सपनो म एक भीड भर स्थान म सकट की स्थ त म हो सकता ह। वह इस घटना को ठीक उसी तरह महसूस कर सकता ह मानो यह वास्त वक हो, खतर स डर कर कसी दीवार क पीछ छुपत हुए। यही नही सपन की छ वया इतनी वास्त वक होती ह क वह उस भय एव आशका को महसूस करगा मानो वह वास्तव म खतर म हो। हर आवाज क साथ उसका कलजा मुह को आयगा, डर स कापगा और उसका रदय तजी स धडकगा। उसका शरीर वह सब ग त व धया करगा जो सकट क समय एक सामानय शरीर करता ह। हाला क सपनो की इन घटनो का कोइ बाय समतुल्य नही ह। व सफर म स्तषक म घ टत होती ह।

सपन म कसी ऊची जगह स गरन वाला व्य त इस घटना को अपन समूच शरीर म महसूस करता ह, चाह वह अपन बस्तर पर बना कसी हलचल क लटा ही क्यो न हो। इसी तरह कोइ ठडी हवाओ का अनुभव भी सपनो म कर सकता ह। वह उसी क अनु प कपकपी महसूस करगा। हाला क इस तरह क मामलो म कही भी ठडी, सदर हवा नही होगी। यही नही इस तरह क सपन दखत समय अमुक व्य त भल ही गमी स भर कमर म क्यो न सोया हो वह उसी ठडक या सदर हवाओ को महसूस करगा जसा क वह अपन सपन म दख रहा होता ह।

जस कसी को यह ववास ह क वह अपन सपनो म भौ तक दु नया की वास्त वकता या मूल स व्यवहार कर रहा ह, वह अपन र त न चत हो सकता ह। वह अपना हाथ अपन दोस्त क कध पर रख सकता ह जब वह उस यह बताय, "वस्तु एक छ व ह ; दु नया क मूल स व्यवहार करना सभव नही ह।" आप उसक कध पर हाथ रख और कह,' क्या अब म एक छ व हू? क्या तुम अपन कध पर एक हाथ को महसूस नही करत हो? अगर ऐसा ह तो तुम एक छ व कस हो सकत हो? कस कारण स तुम ऐसा सोचत हो? चलो बास्फोरस तक चल; हम इसपर बातचीत कर सकत ह और तुम खुलासा करोग क तुम ऐसा क्यो सोचत हो?" गहरी नरा म उस दखन वाला सपना इतना स्पट ह क वह उतसाह क साथ कार का इ जन स्टाटर करता ह, धीर धीर ग त बढाता ह और पडल पर दबाव दता जाता ह। सडक पर जात समय पड एव सडक की लकीर कार की ग त क कारण ठोस नजर आती ह। वह बास्फोरस की साफ हवा म सास लता ह। ल कन मानो क उसी समय अलामर की घटी उसकी नीद तोड द जब क वह अपन दोस त

को यह बतान वाला हो क उस समय वह जो जी रहा ह वह एक सपना नही ह। क्या वह उसी व्यवहार म आप त नही करगा चाह वह सोया हो या जाग रहा हो?

लोग जब जाग जात ह तो समझत ह क इस षण तक उनहोन जो दखा वह एक सपना था। ल कन कुछ कारणो क चलत व यह सदह ही नही कर पात क "जगान वाली'' छ व (जस व "वास्त वक जीवन" कहत ह) स शु होन वाली जदगी भी एक सपना हो सकती ह। हाला क छ वयो को हम "वास्त वक जदगी" म जस दखत ह व सपनो म भी ठीक वसी ही होती ह। हम उन दोनो को म स्तषक म दखत ह। हम जागृत होन तक यह नही समझ पात क व छ वया ह। उसक बाद ही हम कहग, "मन अभी जो दखा वह एक सपना था।" तो हम यह इसकी पु ट कैसे करेंगे क कसी षण देखा गया दृशय एक सपना भर नहीं है? हम यह मानत ह क षण जसम हम जी रह ह, वास्त वक ह। हमारी इस मानयता का कारण बस यही ह क हम जागृत नही हुए ह। यह सभव ह क इस "जगान वाल सपन" स जागन क बाद हम इस तथय स प र चत हो। इसक अलावा हमार पास इसकी पु ट का कोइ और रमाण नही ह।

अनक इस्लामी ववानो न भी यह घोषणा की ह क हमार आस पास की दु नया एक सपना भर ह। और यह क जब हम ''एक बडी अगडाइ" क साथ इस सपन स जागृत होग, लोग यह समझन म सषम होग क व एक सपनो जसी दु नया म जीत ह। महान इस्लामी ववान मुहीउदीन इब्न अल अराबी को उनक जबरदस्त ञान क कारण शख अकबर (महानतम शख) क नाम स जाना जाता ह। उनहोन इस सबध म पगबर मुहममद (स.) की एक हदीस का हवाला दत हुए दु नया की तुलना सपनो स की ह:

> पगबर मुहममद (स.) न कहा ह, ''लोग सोत ह और उस समय जागत ह जब उनकी मौत हो जाती ह।" कहा जा सकता ह क जीत जी दु नया म दखाइ दन वाली वस्तुए उन वस्तुओ क समान ही ह जो नीद म सपन म दखाइ दती ह, इसका मतलब यही हुआ क उनका अ स्ततव कल्पनाओ म ह।[16]

> कुरान की एक आयत म कयामत क दन फर स जदा कए जान क बाद लोगो स यह कहन को कहा जाता ह:

> और (हैरान होकर) कहेगें हाए अफसोस हम तो पहले सो रहे थे हमें खवाबगाह से कसने उठाया (जवाब आएगा) क ये वही (कयामत का) दन है जसका खुदा ने (भी) वायदा कया था (सूरा यासीन: 52)

जसा क आयत म कहा गया ह, लोग कयामत क दन ऐस जागत ह मानो व एक सपन स जागृत हो रह हो। ठीक वस ही जस कोइ सपना दखत दखत बीच म ही जाग जाय, ऐस लोग वही सवाल करग क उनह कसन जगा दया। जसा क आयत म उल्लख कया गया ह, हमार चारो और की दु नया एक सपना भर ह और जो हर कोइ इस सपन स जागगा और जीवन क बाद की छ वयो को दखना शु करगा जो वास्त वक जीवन ह।

आभासी बनाय गय ससार

आधु नक रौयो गकी अनक महतवपूणर उदाहरण पश करती ह क कस तरह सवदी अनुभव उचच डरी की वास्तव कता का अनुकरण कर सकता ह, बना कसी बाय या भौ तक दु नया की मदद क। वशष ू प स, "आभासी वास्तव कता" या वचर्युअल रय लटी नामक रायो गकी इस वषय पर कुछ रोशनी डालती ह। इस रायो गकी का वकास हाल ही क कुछ वषो म हुआ ह।

सामानयत: आभासी वास्त वकता कपयूटर पर बनाइ गइ ए नमटड रआयामी छ वयो को दखान म मदद करती ह ताक कुछ उपकरणो की मदद स ' एक वास्त वक दु नया' बनाइ जा सक। व भनन ष रो म इस रायो गकी का इस्तमाल अलग अलग उदशयो क लय कया जाता ह। इस रायो गकी को "कृ र म वास्त वकता" या "आभासी दु नया" अथवा एक ''आभासी माहौल'' कहा जाता ह। आभासी वास्त वकता की सबस महतवपूणर चा र रक वशषता

यह ह क एक वशष डवाइस का इस्तमाल करन वाला यह ववास करता ह क वह जो दख रहा ह वह वास्त वक ह। इसस भी ज्यादा वह छ व पर फदा हो जाता ह। इस कारण स हाल ही म आभासी वास्त वकता की व्याख्या करन क लय एक नय शब्द "इम सव" (तल्लीनकारी) का इस्तमाल भी कया गया। इम सव का मतलब गहराइ स नमग न करन वाला ह। (उदाहरण क लय *इम सव वचयुअल रय लटी*)

आभासी दु नया क सृजन क लय जस उपकरण का इस्तमाल कया जाता ह वह एक हलमट (जसम एक स्र ीन होता ह जो छ वया मुहया कराता ह) ह। इसक अलावा इलकरा नक दस्तानो का एक जोडा भी होता ह (यह स्पशर का आभास दता ह)। हलमट म लगा एक डवाइस सर की हलचल एव कोण को नय र त करता ह ता क स्र ीन पर ऐसी छ व आय जो सर क कोण एव स्थ त क अनु प हो। कइ बार कमर क आकार क रकोठ की दीवारो एव फशर पर स्टी रयो तस्वीर र त ब बत होती ह। कमर म स गुजरन वाल लोग स्टी रयो ग लासज क मदद स खुद को अलग अलग जगहो पर दख सकत ह, जस कसी झरन क कनार, कसी पवस क शखर पर अथवा कसी समुर क बीच तरत जहाज क डक म धूप का आनद लत हुए। हलमट र आयामी तस्वीर पदा करता ह जो गहराइ एव स्पस का वास्त वक अनुभव लय होती ह। तस्वीर मानव आकार क समानुपात म उपलब्ध कराइ जाती ह जब क स्पशर की सवदना दस्तान जस अनय उपकरण उपलब्ध करात ह। इस तरह इस उपकरण का इस्तमाल करन वाला व्य त अपनी आभासी दु नया की वस्तुओ को छू सकता ह, उनह उठा सकता ह उनह इधर उधर कर सकता ह। ऐसी जगहो पर सुनी जान वाली आवाज भी सचची लगती ह जो कसी भी दशा स अलग अलग गहराइ एव मार ा म आती ह। कुछ एप लीकशस म एक ही तरह क आभासी वातावरण को दु नया क अलग अलग स्थानो पर कुछ लोगो को मुहया कराया जा सकता ह। अलग अलग दशो (यहा तक क अलग अलग महावीपो) क तीन लोग खुद को दूसरो क साथ एक पावरबोट म सवार होत दख सकत ह।

आभासी दु नया क सृजन म इस्तमाल कया जान वाला डवाइस ठीक वसा ही ह जसा क हमारी पाच सवदन इ रयो म ह। उदाहरण क ू प म, उपयोगकता वारा पहन गय दस्तान क भीतर एक र णाली क र भाव स अगु लयो को कुछ सकत दय जात ह जनह बाद म म स्तषक को भजा जाता ह। जब म स्तषक इन सकतो की र र या करता ह तो उपयोगकता को ऐसा लगता ह मानो वह कसी रशमी कालीन या गुलदान को स्पशर कर रहा ह। जब क न तो वहा कोइ रशमी कालीन ही होता ह और न ही कोइ गुलदान।

आजकल जस ष र म आभासी वास्त वकता का इस्तमाल कया जा रहा ह वह ह दवा। म शगन यू नव सटी म वक सत एक तकनीक क सहार च कतसकीय र शषु (वशषकर आपात सवाओ का स्टाफ) अपन र शष ण का एक भाग कृ र म आपर टग ू म म बताता ह। इस अनु र योग म कसी आपर टग ू प की छ वया कसी कमर क फशर एव दीवारो पर र त ब बत होती ह। इसी तरह क आपर टग टबल तथा रोगी की छ व कमर क मधय म उभरती ह। र आयामी ग लासज का इस्तमाल करत हुए च कतसकीय र शषु आभासी रोगी का आपरशन करता ह।

य उदाहरण बतात ह क कृ र म उदीपक का इस्तमाल करत हुए कसी व्य त को वास्त वक ल कन वास्तव म आभासी दु नया म रखा जा सकता ह। मौजूदा र ायो गकी की मदद स ऐसी छ व बनाइ जो सकती ह जो र भावी हो। सधदा तक ू प स कोइ कारण नही ह क यह र ौयो गकी एक ऐसी वास्त वकता का नमा ण कर जो वास्त वक दु नया स अ वभय हो। यह ु चकर ह क हाल ही म बनी कुछ फल्म इसी वषय स समबधद ह। उदाहरण क लय हालीवुड की फल्म "*म रकस*" जसम इसक दो हीरो क स्नायु तर को उस समय कप यूटर स जोड दया जाता ह जब क व सोफ पर लट होत ह। व एक दूसर को पूरी तरह स दूसरी जगहो पर दख सकत ह। एक दृशय म व एक तरफ तो खलो म भाग ल रह होत ह जब क दूसरी ओर अलग ही वशभूषा म भीड भरी गली स गुजर रह होत ह। हीरो जब अपन वास्त वक अनुभवो क र भाव क चलत कहता ह क वह यह नही मानता क तस्वीर कप यूटर वारा तयार ह, कप यूटर उस तस्वीर को स्थर कर दता ह। इसक बाद व्य त को यह समझ म आता ह क जस दु नया को वह मानता ह क यह वास्त वक ह, वास्तव म वह छ व मार ह।

नषकषरम, कृरम ररक की मदद स कृरम छवयो या दूसर शबो म एक कृरम दुनया का नमाण सभव ह। इसलय हम यह नही कह सकत क "जीवन छवया" जो हम हर समय दख रह ह वह वास्तवक बाय दुनया ह और यह क जसस हम व्यवहार करत ह वह "मूल" ह। हमारी सवदनाए हो सकती ह क कसी अलग ही रोत स आ रही हो।

सममोहन वारा व्यत एक महतवपूणर सचचाइ

यह दुनया कृरम उदीपक वारा बनाइ गइ ह। इसका रठ उदाहरण सममोहन की तकनीक ह। जब कसी व्यत का सममोहन कया जाता ह तो उस पूरी तरह स ववासोतपादक घटनाओ स दोचार होना पडता ह जस वास्तवकता स अलग करना असभव सा ह। सममोहत व्यत तस्वीर, लोगो तथा वभनन छवयो को दखता ह। वह अनक वस्तुओ को सुनता, सूघता एव उनका स्वाद रहण करता ह, जनम स कोइ भी उस कमर म नही होती। इस बीच, उस अनुभव क आधार पर वह खुश होता ह, दुखी होता ह, उतजत होता ह या चता या झल्लाहट महसूस करता ह। यही नही, सममोहत व्यत पर अनुभवो क रभाव को भौतक ूप स बाहर स दखा जा सकता ह। सममोहन की बहुत गहरी अवस्था म सममोहत व्यत म अनक रकार क लषण दख जा सकत ह जस क दल की धडकन तज होना, रतदाब बढना, तवचा का लाल होना, उचच ताप या मौजूदा ददर का नवारण आद।[17]

इसी तरह क एक सममोहन सबधी रयोग म, सममोहत व्यत को बताया जाता ह क वह एक अस्पताल म ह और उसक दसवी मजल पर एक रोगी गभीर अवस्था म ह। उस इस ववास क साथ सममोहत कया जाता ह क अगर वह रोगी क लय सही दवा लकर दौडता हुआ वहा जाय तो उस बचाया जा सकता ह। सममोहत व्यत सोचता ह क वह दसवी मजल की ओर दौडता हुआ जा रहा ह। इस बीच वह हापता ह और गहरी थकान क चलत सासो पर नयरण नही कर पाता। इसक बाद उस यह बताया जाता ह क वह ऊपरी मजल पर ह और दवा पहुचान म सफल रहा ह और यह क वह अब बस्तर पर आराम कर सकता ह। सममोहत व्यत तब आराम की मुरा म आता दखता ह।[18] ययप सममोहन क असर वाला व्यत अमुक स्थान एव वातावरण को ठीक वस ही महसूस करता ह मानो व पूरी तरह स वास्तवक हो। जबक उस बताय गय स्थान, लोग एव घटनाओ का कोइ अस्ततव नही होता।

एक अनय रयोग म सममोहन क रभाव वाल व्यत को बताया जाता ह वह हममाम म ह और जो बहुत गमर ह। इसस उस व्यत को पसीना आन लगता ह।[19]

यह हमारा धयान एक बहुत ही महतवपूणर बदु की ओर ल जाता ह। कसी व्यत को पसीना आय इसक लय कुछ परस्थतया होनी ही चाहए। सममोहन सबधी रयोग क दौरान हम जस वास्तवकता स ूबू होत ह वह यह क सममोहत व्यत को पसीना आता ह जबक शारीरक ूप स ऐसा कुछ नही होता जसक चलत उस पसीन आय। इसस स्पट होता ह क कसी वातावरण या स्थान को महसूस करन क लय उसका भौतक ूप म अस्ततव की भौतक आवशयकता नही होती। इसी तरह का रभाव कृरम उदीपक या सममोहन वधा स कया जा सकता ह।

रटन क सममोहन थरपी वशषज्ञ टरस वाटस न एक लख म उल्लख कया ह क सममोहन क दौरान कुछ व्यत अपन भूतकाल की घटनाओ को स्मरण करत ह और उनम उनही घटनाओ क अनुूप शारीरक बदलाव नजर आत ह। वाटस नशनल साइकोथरपस्ट ऐसोसएशन, द रोफशनल हनोथरपसस्ट सटर, हनोथरपी रसचर एसोसएशन तथा नशनल हनोथरपी एसोसएशन सहत अनक सगठनो क सदस्य ह। उनहोन उदाहरणा दत हुए कहा क अगर वह जस घटना को याद कर रहा ह वहा घुटन का माहौल ह तो सममोहत व्यत कुछ समय क लय सास

रोक भी सकता ह। यहा तक क सममो हत वय त अगर पूवर म मार गय तमाच को याद कर तो उसक चहर पर उसक नशान तक उभर सकत ह। वाटस इस कोइ रहसय नही मानत ब लक खुलासा करत ह क यह तो शरीर म ददर की अनुभू त की र त र या ह।[20]

सममोहन की र र या क दौरान दखन वाला एक और महतवपूणर उदाहरण यह ह क सममो हत वय त क शरीर पर पूवर क घाव तक फर स उभर सकत ह। उदाहरण क लय एक अनुसधानकता पाल थोरसन, सममो हत वय त क हाथ को कलम स छूता ह और उस बताया ह क यह एक गमर छदना ह। शीर ही उस सथान पर जहा उसन कलम रखी थी एक फफोला (जो दूसरी डरी क जलन म होता ह) नजर आन लगता ह। थोरसन न एनी ओ नामक व य त पर सममोहन का र योग कया और उसको बताया क उसकर बाह पर दबाव डालत हुए शबद "ए" लखा गया ह। हाला क ऐसा कुछ नही कया गया था ल कन उसक हाथ पर "ए'' क आकार म ला लमा नजर आन लगी।[21] इसी तरह अनुसधानकता एच बोरू तथा पी बुरोट न सममोहन क असर वाल एक वय त को बताया क उसकी बाह कट गइ ह। उनहोन दखा क उसकी बाह को एक प सल स छून भर स रत नकलन लगा।[22]

ज एच हडफील्ड न एक सममो हत मललाह को बताया क वह उसकी बाह पर लोह की एक गमर छड रखन जा रहा ह और उसकी बाह जल जायगी। हाला क उसन उसकी बोहको एक उगली स छुआ भर और उस ढक दया। छह घट बाद जब बाह को उघाडा गया तो उस ष रर म मामूली ला लमा तथा सूजन था। हडफील्ड न बताया क "अगल द न सूजन और बढ गयी तथा ऐस दखन लगी मानो सचमुच जलन का नशान हो।"[23]

सममोन क र योगो क दौरान मानव शरीर म होन वाल य बदलाव दखात ह क दृशय, आवाज, सपशर, अनुभव, ददर आ द की सवदनाए पदा करन क लय हम बाय दु नया की जू रत नही होती। उदाहरण क लय बाहरी दु नया म कसी तरह की लोह की गमर छड नही थी ल कन एक आदमी को यह बताया जाय तो उसकी बाह पर नशान उभर आता ह।

य र योग दखात ह क जब हम यह परीष ण करत ह क कोइ छ व कस बनती ह और र ायो गकीय वकास का अनुपालन करत ह तथा इस ञान म सममोहन जसी र णा लयो को भी शा मल करत ह तो कुछ वशष सच चाइया सपट हो जाती ह। इसान अपन जीवन भर यह मानता ह क वह एक ऐसी दु नया म रह रहा ह जो उसक शरीर स बाय ह। हाला क दु नया स जुडी हर वसतु कवल हमारी म सतषक वारा उन सकतो की वयाखया ह जो सवदन करो म पहुचत ह। दूसर शबदो म, हम अपन म सतषक म होन वाली दु नया स पर कसी दु नया स वयवहार नही कर सकत। हम कभी नही जान सकत क हमार बाहर कया घ टत होता ह या कया ह। हम यह दावा नही कर सकत क हमार म सतषक म पहुचन वाल सकतो का बाय दु नया म भौ तक अ सततव ह। यह सच चाइ वञान की उन कताबो म सथान बनान लगी ह जो हाइ सकूल स पढाइ जाती ह। समसया यही ह क लोग इस तथय की पूणर महता पर वचार नही करत।

कौन ह जो इन बोधो का अनुभव करता ह?

अब तक हमन यह सथा पत कया क हम जन तमाम चीजो का बोध करत ह वह हमार म सतषक म होता ह और यह क हम इन अनुभवो स गुजरन क लए कसी बाय जगत या पदाथर की कोइ आवशयकता नही ह। इस बदू पर हम एक सवाल स ु बु होत ह जस इस वषय क बार म थोडा भी ञान रखन वाला वय त पूछ सकता ह।

जसा क आप जानत ह हमारी आखो की को शकाओ स आन वाल वयुत सकत हमार म सतषक म तसवीरो म ु पात रत हो जात ह। मसाल क तौर पर, म सतषक अपन दृ ट कनर पर पहुचन वाल कुछ वयुत सकतो की वयाख या सूरजमुखी क फूलो स भर खत क ू प म करता ह। वासतव म, यह आख नही ह जो दख रही ह।

इस तरह यह हमारी आख नही ह जो दख रही ह। तो कया ह जो हमार म स्तषक क पछल हस्स म घुपप अधर म, कसी आख, दृ टपटल, ताल, दृ ट त रका या पुतली की कोइ आवशयकता महसूस कए बगर दृ ट का मजा लता ह?

या कौन ह जो (बना कसी कान की जू रत महसूस कए) अपन बहद करीब दोस्त की आवाज सुनता ह, और उस सुन कर खुश हो जाता ह, और जब उस नही सुन पाता तो उस याद करता ह जब क हमारा म स्तषक पूरी तरह साउड ु फ ह?

या हमार म स्तषक क अदर कौन ह जो बल्ली को सहलात समय, कसी हाथ, उग लयो या मासप शयो की जू रत महसूस कए बगर उसक मुलायम बालो को महसूस करता ह?

वह कौन ह जो गरम, ठडा और एकू पता, गहराइ और जसी अनुभू तयो का एहसास करता ह जब व म स्तषक स नकलती ह?

कौन ह वह जो म स्तषक क अदर (हाला क म स्तषक महक स मुत ह) नीबू, चमली, गुलाब, खरबूजा, तरबूज, नारगी, और भून हुए गोशत की सी महकती ह और र ल स आन वाली महक क कारण भूख का एहसास करती ह?

हमन अब तक इसकी चचा की क हम जन तमाम चीजो का लगातार बोध करत ह, कस उनका नमा ण मस्त षक क अदर होता ह। तब कौन ह जो म स्तषक म दृशयो को इस तरह दखता ह जस वह टली वजन दख रहा हो, और उनह दखत हुए उत जत, खुश, उदास, हताश हो जाता ह या खुशी, घबराहट या ज्ञासा महसूस करता ह? कौन उस चतना क लए जममदार ह जो तमाम दखी हुइ चीजो और तमाम महसूस की गइ चीजो की व्याखया करन म समथर ह?

म स्तषक म कौन सी चीज ह जसम चतना ह और जो जदगी भर अधर शात म स्तषक म उस दखाए गए तमाम दृशयो को दखन म सष म ह और जो सोचन म और नषकषो तक पहुचन म तथा अत म फसला करन म समथर ह?

यह साफ ह क पानी, ल पड और रोटीन, तथा अचत परमाणुओ का बना म स्तषक नही ह जो इन तमाम चीजो का बोध करता ह और चतना क लए जममदार ह। जू र म स्तषक स इतर कोइ सतव होना चा हए। भौ तकवादी होन क बावजूद ड नयल डननट अपनी एक कताब म इसपर सोच- वचार करत ह:

> मरा सचत चतन, और खास तौर पर आनद जसका मन एहसास कया, खुली धूप, रोशन ववाल्दी वाय लन, हल्कोर खाती टह नयो क साथ मल कर - साथ ही महज इन तमाम चीजो क बार म सोचन म मली खुशी - कस य तमाम हमार म स्तषक म हो रही महज कुछ भौ तक चीज ही हो सकती ह? कस हमार म स्तषक की वयुतरासाय नक घटनाए कसी र कार उन सकडो तरीक म बदल सकती ह जनम सगीत क साथ टह नया सजद म चली जाती ह। कस मर म स्तषक म सूचना र र म की घटना म सूरज की रोशनी की वह गरमाहट ह जस म अपन ऊपर पडती महसूस करता हू? या फर मर म स्तषक म कोइ घटना कस ... सूचना र र म की कसी अनय घटना का मरी बारीकी स उकरी म स्तषकीय छ व हो सकती ह? यह असभव लगता ह। ऐसा लगता ह जस य घटनाए जो मरी सचत सोच और अनुभव ह, मर म स्तषक म नही हो सकती ह, ब ल्क अवशय ही कही और हो रही ह। बशक य म स्तषक की घटनाओ क चलत घ टत या उतपनन हुइ, ल कन उसक अ त रत कुछ और ह, कसी और चीज की बनी ह, कसी भनन स्थल पर स्थत ह। हा, कयो नही?[24]

दूसरी तरफ, आर. एल. रीगोरी म स्तषक क पछल हस्स म स्थत सतव क अ स्ततव पर सवाल करत ह जो तमाम दृशय दखता ह:

यह कहन का एक रलोभन होता ह, जसस हम अवशय ही बचना चा हए, क आख म स्तषक म चर उतपनन करती ह। म स्तषक म चर इस दखन क लए कसी आत रक आख की आवशयकता दशा ता ह-ल कन इसका चर दखन क लए इस एक और आख की आवशयकता होगी...और इस तरह आखो और चरो क एक अतहीन रीर स या समार यण म यह आवशयकता चलती रहगी। यह असगत ह।[25]

पदाथर के अलावा कसी और के अ स्ततव पर यकीन नहीं करने वाले भौ तकवादी इस वशेष सवाल को नहीं समझ सकते। कस की है यह "आंत रक आंख", जो देखती है और देखी हुइ चीजों का बोध करती है और इस तरह की चीजों पर र त र या करती है?

नमन ल खत अश म कालर रीर ाम न बोधकता की शनाखत पर वज्ञान और दशस की इस महतवपूणर खोज की चचा करत ह:

यूना नयो क समय स दाशरनको न मशीन क अदर "भूत", ''आदमी क भीतर आदमी'' इतया द की अटकलबाजी की ह। म - म स्तषक का उपयोग करन वाला सतव कहा ह? कसक पास वास्त वक ज्ञान ह? या जसा क अ ससी क सट र ा सस न कहा, "हम जसकी खोज कर रह ह वह वही ह जो दख रहा ह।"[26]

हाला क बहुत स लोग "कौन ह वह सतव जो दखता ह? क सवाल का जवाब दत समय इस वास्त वकता क करीब चल जात ह, व इसक तमाम न हताथर स्वीकार करन म हच कचात ह। जसा क उपरोत मसालो म र द शस कया गया ह हमार म स्तषक क अ स्ततव की चचा करत समय, कुछ लोग "सामानय आदमी" की बात करत ह तो अनय "मशीन म भूत" की तरफ इशारा करत ह। कुछ ''म स्तषक का उपयोग कर रह सतव" की ओर इ गत करत ह तो कुछ "आत रक आख'' की चचा करत ह। इन तमाम शब्दाव लयो का उपयोग म स्तषक स इतर क सतव को इ गत करन म कया गय ह जसक पास चतना ह और सतव क पास पहुचन का माघयम। बहरहाल, भौ तकवादी अवधारणाए ढर सार लोगो को इस सतव की वास्त वक र कृ त समझन स रोक दती ह जो वास्तव म दखता और सुनता ह।

एकमार र ोत जो इस सवाल का जवाब दता ह, वह ह मजहब। कुरान म अल्लाह कहता ह उसन पहल आदमी को भौ तक ू प स बनाया और फर अपन बनाए आदमी म उसन "ू ह फूकी।"

जब तुमहारे परवर दगार ने फ रशतों से कहा क मै एक आदमी को खमीर दी हुयी मटी से (जो सूखकर) खन खन बोलने लगे पैदा करने वाला हूँ तो जस वत मै उसको हर तरह से दु स्त कर चुके और उसमें अपनी (तरफ से) ु ह फूँक दूँ तो सबके सब उसके सामने सजदे में गर पडना (सूरा अल- हर : 28-29)

फर उस (के पुतले) को दु स्त कया और उसमें अपनी तरफ से ु ह फूँकी और तुम लोगों के (सुनने के) लए कान और (देखने के लए) ऑंखें और (समझने के लए) दल बनाएँ (इस पर भी) तुम लोग बहुत कम शुर करते हो (सूरा अस्सजदा: 9)

दूसर शब्दो म, मानव जा त का उसक भौ तक शरीर स इतर एक और अ स्ततव ह। म स्तषक क अदर का वह सतव जो कहता ह क म स्तषक क अदर दृशय को "म दख रहा हू" और म स्तषक क अदर धव न को ''म सुन रहा हू" और जो अपन अ स्तत्व स अवगत ह, और जो कहता ह "म म हू'', अल्लाह स इसान को मला ू ह ह।

म स्तषक और अतरातमा रखन वाला कोइ भी व्य त इस समझ सकता ह: म स्तषक क अदर तमाम घटनाओ का दखन वाला सतव - इस तरह दखना जस पूरी उर कसी परद पर दख रहा हो - उसका ू ह ह।

पदाथर एकमार चीज ह जसका अ स्ततव ह, और मानव चतना म स्तषक म महज कुछ रासाय नक र त र याओ का फल ह - की बात करन वाला भौ तकवादी वचार इस मुद पर उलझन म फस ह। कसी भौ तकवादी स य र न करना उसक लए दककत वाली चीज हो जा सकती ह:

- दृशय हमार म स्तषक म बनता ह, ल कन कौन ह वह जो हमार म स्तषक म इस दृशय को दखता ह?
- अपन म स्तषक की आखो स अपन अपाटसट म नचली म जल पर रह रह अपन पडोसी को उस समय दखो जब वह तुमहार साथ नही ह। कौन ह जो इस क्य त क कपडो, उसक चहर की लकीरो, उसक बालो की सफदी, उसक लबो-लहजा, उसक बोलन और उसक चलन क ढग जसी बारी कयो को भी आपकी कल्पना म उकर दता ह?

कोइ भौ तकवादी इस तरह क सवालो का जवाब सतोषजनक तरीक स दन म असमथर होगा। इन रनो का एकमार उतर ह खुदा की तरफ स इसान को बखशी गइ ू ह। बहरहाल, भौ तकवादी पदाथर क अलावा कसी और चीज क अ स्ततव को नही मानत। इस वजह स इस कताब म पश की गइ सच चाइ ना स्तक भौ तकवादी वचार को जबरदस त चोट पहुचाती ह और एक ऐस वषय का नमा ण करती ह जसपर भौ तकवादी ज्यादातर चचा करन स इनकार करत ह।

कौन हमारी ू ह को इन दृशयो को दखन दता ह?

अब इस स्तर पर एक और सवाल ह जस पूछा जाना चा हए: हमारी ू ह हमार म स्तषक म दृशयो को दखता ह। लक न कौन ह जो इन दृशयो का सृजन करता ह? क्या हमारा म स्तषक खुद ही चमकदार, रगीन, साफ और सायादार दृशय बना लता ह और एक ननह स स्थान म वयुत सकतो क माधयम स सारी दु नया रच दता ह? म स्तषक मास का एक नम, मुलायम और पचदार टुकड स ज्यादा कुछ नही ह। क्या इस तरह का मास का कोइ सामानय टुकडा ब ना कसी दक्कत क उसस भी साफ तस्वीर पश कर सकता ह जो आधु नकतम रौयो गकी पर आधा रत कोइ टली वजन सट रदान करता ह? क्या मास क एक टुकड क अदर इतनी उच च को ट क दृशय बन सकत ह? क्या मास का यह नम टुकडा बना कसी शोर क ऐसा स्टी रयो रच सकता ह जो आधु नकतम रौयो गकी वाली कसी स्टी रयो हाइ-फाइ सस्टम स भी बहतर कस्म का हो? बशक डढ कलोरा म (चार पाउड) क मास क बन म स्तषक क ल ए इस कदर ब ढया दृशय बनाना असभव ह।

यहा हम एक दूसरी हकीकत पर पहुचत ह। हमार इदर्गादर की तमाम चीजो समत शरीर जो हमारा ह, हमार हाथ, हमारी बाह और चहर ष म सतव ह, हमार म स्तषक भी ष म ह। इस तरह हम नही कह सकत ह क यह मस्त षक जो खुद भी वास्तव म एक दृशय सवदना ह, इन दृशय सवदनाओ का नमा ण कर सकता ह।

बरस्ड रसल न अपनी कताब *द एबीसी ऑफ रल ट वटी* म इस सच चाइ को रखा कत कया ह:

> बशक, अगर सामानय ू प स पदाथर की क्याखया घटनाओ क एक समूह स कर, तो अवशय ही यह आख, आ प टक नवर और म स्तषक पर भी लागू होना चा हए।[27]

इस तथय को महसूस कर र ासीसी दाशरनक बगसन न अपनी कताब मटर एड ममरी म कहा क "वव छ वयो का बना ह, इन छ वया का अ स्ततव कवल हमारी चतना म ह; और म स्तषक उन छ वयो म स एक ह।"[28]

तब कौन वह सतव ह जो हमारी ू हो को इन तमाम सच चाइ और स्पटता क साथ य दृशय दखा रहा ह और इन तमाम बोधो क साथ तथा बना कसी क्यवधान क हम एक जीवन गुजारन दता ह?

जो सतव हमारी ू हो को तमाम दृशय दखा रहा ह, हम तमाम आवाज सुनन दता ह, और हमार आनद क लए तमाम स्वादो और गधो का सृजन करता ह, तमाम दु नया का मा लक और तमाम चीजो का सृजनकता , अल्लाह ह।

भौ तकवाद का सवा धक महतवपूणर वरोधाभासो म स एक: मानव चतना

भौ तकवादी दशस मानव चतना क र ोत की, अथा त मानव ू ह क गुणातमक अनुभवो की कभी व्याखया नही कर सकता। भौ तकवादी दशस क लए पदाथर ही एकमार चीज ह जसका अ स्तितव होता ह। कसी मानव की ू ह स जुडी खु बया, मसलन चतना, वचार, फसला करन की र र या, खुशी, उतजना, चाहत, लुतफ और फसला की व्याखया कभी भौ तकवादी अवधारणा म नही हो सकती। भौ तकवादी यह कहत हुए तजी स इस वषय स गुजर जात ह क "मानवीय चतना कवल म स्तषक की र याशीलता का प रणाम ह।" एक भौ तकवादी वञा नक र ा सस र क इस भौ तकवादी दाव का सार-सकलन इस रकार करता ह:

आपकी खु शया और आपक गम, आपकी याद और आपकी आकाष ाए, नजी पहचान और स्वतर इच छा का आपका बोध वास्तव म नवर को शकाओ और उनक सबधद अणुओ क एक वशाल सयोजन क व्यवहार स जयादा कुछ नही ह।[29]

बहरहाल, इस तरह क दावो का समथस वञान या तकर स नही कया जा सकता। भौ तकवादी पूवर ह ू ह की व शषताओ क बार म इस तरह की व्याखयाए करन की दशा म भौ तकवा दयो को ल गए ह। भौ तक जगत स इतर सतव की मौजूदगी की इस हकीकत को स्वीकार नही करन क लए व मानव ववक को पदाथर पर सी मत कर दत ह और य दाव करत ह क उनका रशता बु धद या तकर स नही ह।

हाला क वञान लखक जॉन होगस अवव्याखयावाद या रडकश नजम नामक भौ तकवादी सोच स सहानुभू त रखत ह, वह र ा सस र क क दाव म नमन ल खत समस्याओ को इ गत करत ह:

एक अथर म र क सही ह। हम लोग और कुछ नही, बस नयूरोन का ढर ह। ठीक इसी क साथ, त र का वञान अब तक बहुत हद तक असतोषकारी सा बत हुआ ह। नयूरोन क सदभर म म स्तषक की व्याख्या करन स कवाकर और इलकरोन क सदभो म उसकी व्याखया करन स जयादा लाभदायक नही ह। अनक वक ल्पक अवव्याखयावाद ह। हम और कुछ नही बस सवदन- व शट जीनो क ढर ह। हम कुछ और नही, बस र ाकृ तक चयन स उकर गए अनुकूलन क एक ढर ह। हम कुछ और नही, बस व भनन कायस्रारो क लए सम पस कप यूटशनल डवाइस ह। हम कुछ और नही, बस यौन नयोरोज क ढर ह। र क जसी तमाम अ धघोषणाएं समथसीय है, और सभी अपया प त है।[30]

बशक, य व्याखयाए पूरी तरह अपया पत ह और व न चत ू प स तकस्गत नही ह। वास्तव म कोइ भी चरम भौत कवादी इस सच चाइ स अवगत ह। आचयर नही, डार वन की वकालत करन वालो म अर णी थामस हकसल न भी कहा था क चतना की व्याखया नयूरोन की अत: र या स नही की जा सकती: "कैसे चेतना जैसी कसी इतनी उल्लेखनीय स्थ त उतेजनशील स्नाय वक ऊतक से आएगी, यह उतनी ही हास्यास्पद है जतना अलाउदीन के चराग के रगडने से जन का नकलना।"[31]

हकसल क समय स अब तक नयूरोन क माधयम स चतना की व्याखया करन म वफलता खतम नही हुइ। बहरहाल, इस मुद पर वञान की अपया पतता क चलत ऐसा नही हो रहा ह। इसक वपरीत, खास तौर पर 20वी सदी क अत म, त र का वञान क ष र म अनक वकास हुए और अनक रहस्यो की गुतथी सुलझाइ गइ। बहरहाल, इन न षकषो न दखाया ह क मानव चतना को कभी पदाथर तक सी मत नही कया जा सकता और वास्त वकता पदाथर स पर ह। जमसी क अर णी डार वनवादी-भौ तकवादी लखको म स एक होएमार वान डटफथर भी यह तथय स्वीकार करत ह क मौजूदा अपनाए गए तरीक मानव चतना की व्याखया नही कर सकत:

र ाकृ तक इ तहास और आनुवंशकीय वकास में अपने मौजूदा शोध के साथ यह स्पट है क हम इनका जवाब नहीं दे सकेंगे क चेतना, ू ह, बु धद और भावना क्या है। ऐसा इस लए क मनोवञा नक-चतना स्तर वह उच चतम स्तर ह जसपर कम स कम इस दु नया म र म वकास पहुच गया ह। इस लए, हाला क हम बाहर स र म वकास क दूसर चरणो और स्तरो को दखन म सषम ह, एक बार फर अपनी चतना की मदद स, उसस

ऊपर उठ कर, खुद चतना (या ू ह) स ु बु होन म असमथर ह। ऐसा इस लए क चतना स ऊपर का कोइ स्तर उपलब्ध नही ह।[32]

अम रकी दाशर्नक और ग णत क ववान व लयम ए. डोम्ब्स्की अपन लख "म स्तषक म पदाथर का ु पातरण करना" म उल्लख करत ह क मानव म स्तषक म नयूरोन की जव-रासाय नक र याशीलता और इसम लगन वाल मान सक र याओ को समझ लया गया ह, ल कन फसला करन, चाहत करन या तकर करन जस गुणो को "पदाथर म नयूनीकृत" नही कया जा सकता। डम्ब्स्की यह भी इ गत करत ह क चतना क मुद क वशषज्ञो न अवव्याखयावाद की ु टया महसूस कर ली ह;

... संज्ञानातमक वैज्ञा नक नमनतर तां रकीय स्तर के माधयम से इस उचच स्तर को समझने की आशा तज दी है ... इस तरह जहा भौ तकवाद क र त वचनबधदता बरकरार ह, ता रकीय स्तर, जो भौ तकवा दयो क लए ता कर्क स्तर ह, पर मानव बु धद की व्याखया करना अब गभीर सरोकार की चीज नही ह।[33]

वज्ञा नक वकास क दजर स इतर भौ तकवादी वव दृ ट स चतना की व्याखया करना असभव ह। जस जस मस्त षक क ब्योर आ रह ह, यह अ धका धक साफ होता जा रहा ह क म स्तषक पदाथर म अप रवतर्नीय ह। अगर उन ह मानव चतना की अवधारणा को समझना ह तो भौ तकवा दयो को अपन पूवार्ग्रहो को तज दना चा हए और अ त र त अनुसधान करना चा हए कयो क पदाथर क माधयम स चतना क असली अथर की व्याखया करना असभव ह। चतना ू ह की एक र या जस अल्लाह न इसान को अता कया ह।

भौ तकवा दयो क लए र न

यह कहना पूरी तरह अता कर्क ह क वचार, फसल, नणर्य र र या, या भावनाए (जस खुशी, उतजना, और नराशा) महज कसी मानव क म स्तषक म नयूरोन की अत: र या का प रणाम ह। जयादा गहराइ तक वचार करन वाल भौ तकवादी इस हकीकत स अवगत ह। र सधद भौ तकवादी, कालर रलल न वषो तक इस वचार का समथर्न कया क मानव चतना को पदाथर म प रव तर्त कया जा सकता ह। ल कन अपन क रयर क अ तम दनो म उनहोन नमन ल खत टपपणी की:

म स्तषक-शरीर सबध को एक सचचा पराभौ तक मुदा माना जाए या एक व्यव स्थत र ा त ह, यह मनोवज्ञा नक (और जब मानव समस्याओ क साथ नबटता ह तो नयूरोलो जस्ट) क लए एक समस्या नही ह कयो क यह भौ तकशास री क लए नही ह...एक भौ तक-रासाय नक र णाली क ू प म कस म स्तषक बोध करता या कसी चीज को जानता ह; या यह र म वक सत करता ह क वह ऐसा करता ह?[34]

रलल न एक एकल र न स इस वव की ओर धयान आक षर्त कया। नीच दजर व्याखया उन कुछ मुदो को उजागर करती ह जो भौ तकवादी ु ख की जच उधा टत करती ह, और इस लए जनह गहराइ स समझा जाना चा हए:

- यह कहना क वचार, उतजना और भावनाए नयूरोन क नतीज ह, यह दावा करना होगा क इस तरह की चीज अचत परमाणुओ क प रणाम या परमाणुओ क अवयवो जस क्वाकर या इलकरोन क प रणाम ह।
- अचत परमाणु खुशी या गम की भावनाओ को नही समझ सकत और ना ही व सगीत, स्वाद, अचछी दोस्ती या कसी मर क साथ गपशप का लुतफ ल सकत ह।
- अचत परमाणु डार वनवादी या भौ तकवादी नही हो सकत और कसी कताब को लखन क लए एकसाथ नही आ सकत।
- अचत परमाणु खुद को या ता रकीय को शकाओ को नही दख सकत जो कसी इलकरोन माइर ोस्कोप क नीच खुद का नमा ण करत ह और उनक शोधो एव अनुसधानो स वज्ञा नक हलो म पहुचत ह।

○ इस वत क्य क "चतना हमार म स्तषक क नयूरोन म ह" का मतलब ह? कसी अनय को शका की ही तरह नयूरोन भी को शका भी त, माइटोकाँ र या, डीएनए और राइबोजोम क बन ह। इस लए भौ तकवा दयो क अनुसार इन चीजो म चतना कहा अव स्थत ह? अगर व मानत ह क चतना नयूरोन और वयुत सकतो क बीच की रासाय नक र त र या का नतीजा ह, व गलती कर रह ह, क्यो क व ''चतना क साथ एक भी रासाय नक र त र या" की व्याखया नही कर सकत। ना ही व हम एक " वयुत तरग" दखा सकत ह जो कसी खास वोल्टज स्तर पर "सोचना" शुरू करता ह।

अगर भौ तकवादी इन मुदो क बार म गभीरता स सोचत ह, व महसूस करग क उनक समत तमाम लोग नयूरोन क समूह या परमाणुओ क ढर स भनन ह। भौ तकवादी होन क बावजूद म स्तषक वशषज्ञ वुल्फ सगर न इस हकीकत को यह कह कर स्वीकार कया क "र माड क वर मकारी पदाथर म 'कुछ' ह जो खुद का बोध 'म हू' क ूप म करता ह।"[35]

यह "कुछ" जसका जर वज्ञा नक करता ह वास्तव म ूह ह जस अल्लाह न इसान को अता कया ह। अपन पास ूह होन क चलत कोइ आदमी सोच सकता ह, खुश हो सकता ह, उत जत होता ह, नए वचार बनाता ह, या दूसरो क वचार का वरोध करता ह, या ग रमा, सममान, प यार, दोस्ती, वफादारी, नठा और इमानदारी जसी अवधारणाओ को जानता ह। मानव का नमा ण करन वाल नयूरोन और परमाणु सोच नही सकत, फसल नही कर सकत, दाशस क वचार पदा नही कर सकत या प यार और लगाव की भावनाओ को जान नही सकत।

भौ तकवादी जब अकल होत ह इस हकीकत को जानत ह और स्वीकार करत ह। ल कन अपन भौ तकवादी पूवर हो क चलत व इस चरम सतय को स्वीकार नही कर सकत। दूसरी तरफ महज भौ तकवाद क बचाव करन क लए व ज स सासत म खुद को डालत ह, और जन असगत वचारो को अपनात ह, वास्तव म उनह जयादा नुकसान पहुचाता ह। एक व्य त जो कहता ह क "हमार वचार परमाणुओ और नयूरोन क प रणाम ह" उस व्य त स भनन नही ह जो यह समझता ह क उसक सपन सच ह या उस व्य त की तरह ह जो प रयो की कहा नयो जसी ब सर-पर की दास्तान गढता ह और फर उनपर भरोसा करन लगता ह।

वास्तव म सच चाइ यह ह: मानव एक सतव ह जसक पास अल्लाह का दया हुआ ूह ह, और इस ूह स वह सोच और बोल सकता ह, खुश हो सकता ह, फसल कर सकता ह, सभ्यताए रच सकता ह और दशो की व्यवस्था चला सकता ह।

क्यो पदाथर क बार म सच चाइ इतना महतवपूणर वषय ह?

पदाथर का परम अ स्ततव नही ह और यह वास्तव म कुछ और का नही ब ल्क बोधो स न मस हुआ ह। यह उसी तरह उल्लखनीय तथय ह जस तरह क यह र माड शूनय स सृ जत कया गया, क अ स्ततव शाव त ह, औरयह क मौत क बाद शाव त जीवन क लए हम जदा कया जाएगा। अल्लाह न र माड की रचना अपार बारीकी क साथ पूरी तरह मुकममल और बना कसी ु ट क की ह। इसक अ त रत उसकी सृ ट इस कदर रृ टहीन ह क बहुत स लोग जो इस धरती पर रह, वह महसूस नही कर सक क यह र माड और जो कुछ भी व दख रह ह मथ या ह, और यह की उनका पदाथर की वास्त वकता स कोइ रशता नही ह।

इक्कीसवी सद म यह हकीकत और उजागर हो गइ क्यो क वज्ञा नक खोजो न न चत ूप स सा बत कर दया क हम वास्तव म कभी पदाथर क सपकर म नही ह। हाला क कुछ लोग अब भी इस हकीकत को स्वीकार करन स इनकार करत ह, यह ऐसी कोइ चीज नही ह जसको नजर अदाज कया जाए, उसकी अवहलना की जाए या उस

खा रज कया जाए। उसक वपरीत, पदाथर की वास्तवक रकृत को जानना कसी यथाथरवादी क लए एक महतवपूणर शतर ह। इस कारण स, यह उन लोगो क लए बहुत महतवपूणर ह जो इसक महतव को आतमसात करन क लए इस सवाल पर वचार करत ह। ऐस लोगो न जनहोन पदाथर की वास्तवक रकृत क बार म पढा ह कहत ह क व नही समझ पात क इस सवाल को इतना जयादा महतव कयो दया जाता ह। व यहा तक कहत ह क इसका कोइ रशता इमान स नही ह, और पूछत ह क कयो इमान क बार म हर चचा म इसकी एक जगह ह। बहरहाल, इस वषय का महतव अब जा हर ह। पदाथर की वास्तवक रकृत भौ तकवा दयो को डराती ह कयो क यह उनकी ववदृ ट को नट करती ह, और मुसलमानो क लए इस सचचाइ को समझना और लोगो को इसक बार म जानन म मदद करन की को शश करतना बहुत जू री ह।

यह जानकारी लोगो को इमान स जुड कुछ सवालो को समझन म मदद करती ह और इमान स जुड कनही अनय बातो की उनह भी अवशय ही समझाया जाना चा हए। पदाथर की वास्तवक रकृत क बार म वयाखया होन स इस दु नया की चीजो क साथ लगाव स लोगो का दल पाक हो जाता ह। व अपनी सोच को आ खरत की तरफ लगात ह, व एक खतरनाक गुनाह करन स बच जात ह और उन कुछ सचचाइयो को आसानी स आतमसात कर सकत ह जनह समझन स य गुनाह उनह रोकत ह। भौ तकवादी वव दृट वाला कोइ आदमी, या ऐसा कोइ वय त जसका लालन-पालन इस तरह की वव दृट क रभाव म हुआ ह कभी इस तरह क सवालो को नही समझ सकता क "अललाह कहा ह?", ''कया जननत और जहननुम का कोइ वजूद ह?", "ू ह और आ खरत की रकृ त कया ह?", "कया मौत क बाद भी कोइ जदगी ह?" ल कन यह बोध क पदाथर एक मथया ह, रा कृ तक ू प स इन सवालो का जवाब द दता ह, और लोगो को यह साफ तौर पर दखन म समथर बनाता ह क अललाह एक परम सतव ह।

जब लोग समझ जात ह क पदाथर कया ह, व मजबूती स महसूस करत ह क इस दु नया स बाधन वाली तमाम चीज - उनकी इच छाए, लालसाए और व तमाम चीज जनकी वजह स वह अललाह और कयामत को भूल जाता ह - छलावा और बकार ह। पदाथर की असली रकृ त क बार म जानकारी लोगो को इस दु नया की लालसाओ स बचाती ह। यह उनह पाक दली और अललाह स लगाव की तरफ ल जाती ह और उनह अललाह की जात क साथ दूसरो को शा मल करन क गुनाह स बचाती ह।

यह एक ऐसी सदी ह जसम लोग घमड, अहकार और हर तरह क अमानवीय एव अन तक वयवहार का रदशरन कया ह। बहरहाल, जब व महसूस करत ह क व खुद, और व भी जनकी तरफ उनकी नगाह ह, महज षम सतव ह तो उनकी हकडी और अहकार नर ता और सौमयता म बदल जाएगा।

य तमाम वकास ऐस माधयम होग जनस हम एक सुर षत एव सहज समाज पाएग जसम लोग बना कसी नीचता, खुदगजी और बरहम र तयो गता क रह सकग।

न चत ू प स इस हकीकत - क पदाथर स हमारा कोइ सपकर नही ह, और यह क पदाथर क बार म हम जो कुछ भी वचार बनात ह वह एक छ व ह - स ु बु होन का एक महतवपूणर नतीजा होगा: भौ तकवादी दशरन का वधवस।

अब हम यह तफसील स चचा करग क कस यह तथय इ तहास की महतवपूणर खोजो म स एक ह क पदाथर परम नही ह।

पदाथर क बार म हकीकत दखाता ह क अललाह एक परम सतव ह

इस हकीकत क न हताथर सवा धक महतवपूणर चीजो म स एक यह ह क अललाह एक परम सतव ह। भौ तकवादी दशरन क रभाव क चलत कुछ लोग सोचत ह क पदाथर परम ह। उनम स कुछ लोग मानत ह क अललाह

ह, ल कन जब व अल्लाह क वजूद की बात करत ह, और इसपर चचा करत ह क वह कहा ह, तो उनम अज्ञानता झलकती ह। मसाल क तौर पर, अगर उनस पूछा जाता ह "अल्लाह कहा ह,", व जवाब दग, "अपनी बु धद दखाओ; तुम नही दखा सकत। इसी तरह अल्लाह वास्तव म बु धद की तरह ह, ल कन तुम उस नही दख सकत।" दूसर कहत ह (बशक अल्लाह उसस इतर ह) क र डयो तरगो की तरह अल्लाह का एक र मकारी वजूद ह। बहरहाल, जो र मकारी वे खुद है, उनके पास की चीजें है। एक एकल परम सतव अल्लाह है। अल्लाह का वजूद सब को समट लता ह। मानव कसी भी तरह परम सतव नही ह, ब ल्क एक नव र छ व ह।

अल्लाह न इस हकीकत को इन शब्दो म ना जल कया ह:

खुदा ही वो जाते पाक है क उसके सवा कोइ माबूद नहीं (वह) जनदा है (और) सारे जहान का संभालने वाला है उसको न ऊँघ आती है न नींद जो कुछ आसमानो में है और जो कुछ जमीन में है (गरज सब कुछ) उसी का है कौन ऐसा है जो बगैर उसकी इजाजत के उसके पास कसी की सफा रश करे जो कुछ उनके सामने मौजूद है (वह) और जो कुछ उनके पीछे (हो चुका) है (खुदा सबको) जानता है और लोग उसके इल्म में से कसी चीज पर भी अहाता नहीं कर सकते मगर वह जसे जतना चाहे (सखा दे) उसकी कुसी सब आसमानों और जमीनों को घेरे हुये है और उन दोनों (आसमान व जमीन) की नगेहदाशत उसपर कुछ भी मु शकल नहीं और वह आलीशान बुजुग र मरतबा है (सूरा अल-बर ा: 255)

इमान की पूणसा म इस हकीकत को आतमसात करना, अल्लाह क साथ कसी और को शा मल करन की गलती और गुनाह स बचना और अल्लाह को एकमार परम सतव क ू प म स्वीकार करना शा मल ह। जो कोइ भी जानता ह क अल्लाह क सवा तमाम चीज एक मथया ह, वह यकीनी इमान (हकक-अल-यकीन) क साथ कहगा क सफर अल्लाह का वजूद ह और उसक सवा कोइ दूसरा माबूद (या ताकत वाला कोइ दूसरा सतव) नही ह।

भौ तकवादी अल्लाह क वजूद म यकीन नही करत, कयो क व उस अपनी आखो स दख नही सकत। ल कन उनक दाव उस वत पूरी तरह खोखल हो जात ह जब व पदाथ र की वास्त वक र कृ त जानत ह। जब कोइ इस सचचाइ स ु बु होता ह क उसक अपन वजूद म मथया की वशषता ह और यह आतमसात करता ह क कोइ सतव जो एक म थया ह, उस सतव को दखन म समथ र नही होगा जो परम ह। जसा क कुरान म उजागर कया गा ह इसान अल्लाह को नही दख सकता, ल कन अल्लाह उस दखता ह।

उसको आँखें देख नहीं सकती और वह (लोगों की) नजरों को खूब देखता है (सूरा अल-अनाम: 103)

न चत ू प स हम इसान अपनी आखो स अल्लाह क वजूद को नही दख सकत, ल कन हम जानत ह क वह हमार भीतर-बाहर, हमार सोच और हमार वचार को पूरी तरह जानता ह। इस कारण स अल्लाह खुद को " (तुमहारे) कान और (तुमहारी) आँखों का कौन मा लक है (सूरा यूनुस: 31)" क ू प म जा हर करता ह। हम अल्लाह की जानकारी क बगर एक लफ्ज नही बोल सकत, हम एक सास नही ल सकत। इस लए हम जो करत ह, अल्लाह को उसकी जानकारी ह। यह कुरान म उजागर कया गया ह:

बेशक खुदा से कोइ चीज पोशीदा नहीं है (न) जमीन में न आसमान में (सूरा आले-इमरान: 5)

यह बहुत महतवपूण र ह क अल्लाह हर पल हमारी नगरानी करता ह, हम दखता ह और हम सुनता ह। इस चीज को महसूस करन वाला कोइ अगर अल्लाह को अपनी आखो स नही दखता, तब भी जानता ह क अल्लाह को हर पल उसकी जानकारी ह। इस वजह स, चाह वह जो भी कर, वह जानता ह क अल्लाह उस दख रहा ह। नतीजतन वह धयान रखता ह क ऐसा कुछ नही कर जसस अल्लाह उसस नाराज हो जाए और वह कुछ करन, बोलन और सोचन म एह तयात बरतगा। कुरान म यह उजागर कया गया ह क हम जो कुछ करत ह अल्लाह उसस नजदीक होता ह; क वह हम दखता ह और उसस कुछ भी परदा नही ह।

तुम (चाहे) कसी हाल में हो और कुरान की कोइ सी भी आयत तलावत करते हो और (लोगों) तुम कोइ भी अमल कर रहे हो जब तुम उस काम में मशगूल होते हो, हम तुमहें देखते रहते है और तुमहारे परवरदगार से जरा भी कोइ चीज ओझल नहीं रह सकती, न जमीन में और न आसमान में, और जरेरसे छोटी और उससे बडी कोइ चीज नहीं है जो रोशन कताब लौहे में महफूज में नहीं है (सूरा यूनुस: 61)

जू र अल्लाह जो परवरदगार ह इसान क तमाम पहलुओ को जानता ह जस उसन एक मथया क ू प म रचा ह। यह अल्लाह क लए बहुत ही आसान सी चीज ह। ल कन कुछ लोग अपनी अज्ञानता म इस समझना मु शकल महसूस कर सकत ह। बहरहाल, अपनी जदगी गुजारत हुए हम जब कोइ नशानी दखत ह, हम समझत ह क यह "बाय जगत" ह, हमस सबस नजदीग कोइ नशानी नही ह, यह साफ तौर पर अल्लाह ह। इस आयत "और बेशक हम ही ने इंसान को पैदा कया और जो खयालात उसके दल में गुजरते है हम उनको जानते है और हम तो उसकी शहरग से भी जयादा करीब है (सूरा काफ: 16)" का राज इसी तथय म छपा ह। ल कन जब कोइ वय त सोचता ह क उसका शरीर पदाथरस न मस ह, वह इस महतवपूणरहकीकत को आतमसात नही कर सकता; ऐसा इस लए होता ह क वह सोचता ह उसस करीबतरीन चीज उसका शरीर ह। मसाल क तौर पर, अगर वह वय त अपन अ स्ततव का बोध म स्तषक क ू प म करता ह, वह यह स्वीकार नही करगा क उसक शहरग स नकटतर कोइ सतव ह। बहरहाल, जब वह इस तथय को मानता ह क पदाथरजसी कोइ चीज नही ह, और यह क हर चीज म स्तषक क अदर क उसक अनुभव की एक अनुकृ त ह, तो बाहर, अदर, दूर, और नकट का कोइ अथरनही ह। उसका शहरग, उसका म स्तषक, हाथ, पाप, उसका घर और उसकी कार जस वह अपन स बाहर सोचता ह, यहा तक क सूरज, चाद और तार जनक बार म वह सोचता ह क व बहुत दूर ह, सभी एक ही धरातल पर ह। अल्लाह उसकी चारो तरफ ह और वह नरतर उसक करीब ह।

अना द स अनत तक अल्लाह क इसानो क नकट होन की बात इस आयत म भी उजागर की गइ ह: "(ऐ रसूल) जब मेरे बनदे मेरा हाल तुमसे पूछे तो (कह दो क) मै उन के पास ही हूँ..." (सूरा अल बर ा: 186) एक दूसरी आयत म इसी हकीकत मो उजागर कया गया ह, " तुमहार परवरदगार न लोगो को (हर तरफ स) घर रखा ह" (कुरान, 17:60)। इसक बावजूद लोगो न यह सोच कर अपनी गलती का सल सला जारी रखा ह क उनक नकटतर चीज व खुद ह। बहरहाल, हम खुद क जतन नकट ह, अल्लाह उसस कही जयादा हमार नजदीक ह। इन आयतो म इस हकीकत पर एक बार फर जोर दया गया ह क मानव स सबस नजदीक अल्लाह ह: तो क्या जब जान गले तक पहुँचती है और तुम उस वत (की हालत) पडे देखा करते हो
और हम इस (मरने वाले) से तुमसे भी जयादा नजदीक होते है ले कन तुमको दखाइ नहीं देता (सूरा अल-वाकया: 83-85)। दरअसल मृतयुशया पर पडा या अस्पताल म पडा कोइ वय त सोच सकता ह क उसक सबस नजदीक उसक बस्तर क करीब मौजूद डाकटर ह, उसकी मा ह जो उसस ल पटी ह, या उसक दोस्त ह जो उस छू रह ह और उसका हाथ थाम ह। ल कन जसा क इस आयत म कहा गया ह क उस वत कसी और स जयादा अल्लाह उसस नजदीक ह। इसक अलावा अल्लाह सफरइस खास हालत म ही नही, उस वजूद म आन क पहल पल स उसक सबस नजदीक रहन वाला अकला सतव ह। ल कन चू क इसान अपनी आखो स उस नही दख सकता, इस हकीकत स वह नादान रहता ह।

यह हकीकत क अल्लाह कसी दक या आकाश स नही घरा ह ब ल्क वह तमाम चीजों को अहाता कए हुए ह, यह एक दूसरी आयत मं बताया गया ह:

खुदा ही की है (क्या) पूरब (क्या) प चम बस जहाँ कहीं कबे की तरफ ू ख करो वही खुदा का सामना है बेशक खुदा बडी गुनजाइश वाला और खूब वा कफ है (सूरा अल- बर ा:115)

एक और आयत म अल्लाह इस हकीकत को इस तरह पश कया ह:

वह वही तो है जसने सारे आसमान व जमीन को छह: दन में पैदा कए फर अर्ष(के बनाने) पर आमादा हुआ जो चीज जमीन में दा खल होती है और जो उससे नकलती है और जो चीज आसमान से ना जल होती है और जो उसकी तरफ चढती है (सब) उसको मालूम है और तुम (चाहे) जहाँ कहीं रहो वह तुमहारे साथ है और जो कुछ भी तुम करते हो खुदा उसे देख रहा है (सूरा अल-हदीद: 4)

इन तमाम का मतलब यह ह क अल्लाह एक ह, पाक और परम ह। अपन इल्म स अल्लाह और तमाम अनय चीजो मानव को अहाता करता ह जो छम सतव ह। इस हकीकत को नमन ल खत आयत म भी रखा कत कया गया ह:

तुमहारा अल्लाह एक है, उसके सवा कोइ माबूद नहीं है। उसका इल्म सब को अहाता कए है। (सूरा ताहा: 98)

एक और आयत म अल्लाह लोगो को खबरदार करता ह क वह नाफरमानी नही कर:

देखो ये लोग अपने परवर दगार के ू बू हा जर होने से शक में (पडे) है सुन रखो वह हर चीज पर हावी है। (कुरान, 41:54)

मनुषयो क कायर्व्यापार भी अल्लाह स जुड ह

अल्लाह न छम सतव क ू प म मनुषय को बनाया जसक पास उसस स्वतर कोइ श त या इच छा नही ह। इस वास्त वकता को इस आयत म व्यत कया गया ह :

ले कन अल्लाह की मजी होने तक तुमहारी कोइ मजी नहीं होगी...(सुरा फु स्सलात: 30)

कुछ लोग इस तथय स अनजान ह। व यह तो स्वीकार करत ह क अल्लाह न उनह बनाया ल कन सोचत ह क व जो काम करत ह वह उनस जुडा हुआ ह। बहरहाल, मनुषयो वारा सपा दत कया जान वाला र तयक कायर अल्लाह की आज्ञा स कया जाता ह। उदाहरण क लए, पुस्तक रचन वाला कोइ व्य त उस अल्लाह की आज्ञा स लखता ह; र तयक वाकय, र तयक वचार और र तयक प रच छद की रचना इस लए होती ह क अल्लाह की ऐसी मजी होती ह। अल्लाह न इस महतवपूणर सध दात को कइ आयतो म व्यत कया ह; इन आयतो म स एक ह, "... अल्लाह ने तुमहें और तुम जो करते हो दोनों की ही रचना की है?" (सुरत अस्-सफात : 96)। इन शब्दो म " ... जब तुमने फेंका तो यह अल्लाह था जसने फेंका...(सुरत अल-अनफाल: 17) अल्लाह बताता ह क हमार वारा कया जान वाला र तयक काम उसस जुडा काम होता ह।

दूसरी आयतो म अल्लाह पगबर को इमान वालो स जकात लन का नदश दता ह ल कन उसी आयत म आग वह स्पट करता ह क यह वास्तव म वही ह जो जकात लता ह:

(ऐ रसूल) तुम उनके माल की जकात लो (और) इसकी बदौलत उनको (गुनाहो से) पाक साफ करो और उनके वास्ते दुआए खैर करो क्यों क तुमहारी दुआ इन लोगों के हक में इतमीनान (का बाइस है) और खुदा तो (सब कुछ) सुनता (और) जानता है क्या इन लोगों ने इतने भी नहीं जाना यकीनन खुदा बनदों की तौबा कबूल करता है और वही खैरातें (भी) लेता है और इसमें शक नहीं क वही तौबा कबूल करने वाला बडा मेहरबान है। (सुरत अत-तौबा: 103-104)

महान इस्लामी आ लम मुहीउदीन इब्न अल-अरबी स्पट करत ह क हमार कायर अल्लाह स ताल्लुक रखत ह:

जहा तक उतसाह की बात ह उनस न:सृत होन वाल कायो क र ोत उनक वजूदो म नही पाय जात। यह अकला अल लाह ह जो क उतसाह और वस्तुओ को नरतर स र य रखता ह। अगर वव म आभासो को छोडकर कुछ नही ह तो इसका मतलब यह ह क वास्त वकता म एक अ स्ततव को छोडकर बाकी कुछ भी नही ह। आतमा

और पदाथर चुन हुए जीवो और नधा रत तथयो स मलकर नही बन ह। व खुदाइ कायो, सवश तमान खुदा क व भनन ूपो स मलकर बन ह। इसी रकार, सी मत या अनत कही जान वाली चीज और कुछ नही ब लक दो भनन बदुओ स दखी जान वाली अकली हकीकत ह।[36]

जसा क मुहीउदीन इब अल अरबी बतात ह, यह अललाह ही ह जो क रतयक कायर का सृजन करता ह और कता कू ह म यह बात बठा दता ह क यह वह सवय ह जो क उस काम को अजाम द रहा ह। अललाह न रतयक ूह म इस बोध को इतन यथाथरक ढग स बठा दया ह क उदाहरण क लए पतथर फकन वाला कोइ वय त वासतव म यह सोचता ह क वह इस सवय फक रहा ह। बहरहाल, एक वय त जसका अ सततव छाया ह फकन क कायर को सपा दत नही कर सकता, ल कन अलला‍ह उस यह एहसास करवाता ह क मानो वह इस कायर को कर रहा हो। अलला‍ह की रचना म आचयरजनक पूणरता क फलसवू प कोइ वय त इस अनुभू त का सघनतापूवरक बोध करता ह और वासतव म सोचता ह क वह पतथर उठाय हुए ह, जोर स फकन क लए अपनी भुजा को पीछ खीचता ह और उस फक दता ह।

मनुषय रतयक षण अलला‍ह पर नभरर होकर जीता ह और वह इस जान या न जान या वह इस सवीकार कर या न कर, पर ह वह अलला‍ह क अधीन। अलला‍ह न इस इस आयत म फरमाया ह :

और आसमानों और जमीन में (मखलूकात से) जो कोइ भी है खुषी से या जबरदसती सब अलला‍ह के आगे सर बसजूद है और (इसी तरह) उनके साए भी सुबह व शाम (सजदा करते है)। (सुरा अर-राअद : 15)

आप जस कसी को भी जानत ह, जो क इस वव म वतरमान म रहता ह या वगत म रहा ह, फर वह चाह जहा रहा हो, उसक पास चाह जो कुछ रहा हो या इसस कोइ फकर नही पडता क वह कतन हठ स इनकार करता रहा ह, यह वासत वकता या कसी क लए भी नही बदलती। रतयक मनुषय अलला‍ह की इचछा क अधीन ह, रतयक वय त इवर की आतमा की सास स सृ जत की जा रही छाया ह। इस जानन वाला कोइ भी अपनी सपदा, ञान, पदवी या खया त क लए रशसा को सवीकार करन को असभव पाता ह; न ही वह समाज म अपनी जगह या मुकाम या अपन पश म सफलता क लए क लए चाटुका रता को सवीकार कर सकता ह। इसक बावजूद अभी भी जो दभी ह व इस वसतुत: पूरी तरह स श तहीन ह। अलला‍ह क यह बता चुकन क बाद क वह वय त जो क यह सोचता ह क उसन पतथर फका ह, वासतव म उसन उस नही फका ह ब लक यह क यह अलला‍ह सवय ह जसन इस सवय फका ह, कसी क लए भी यह सोचना गहन अञान ह क कसी मानवीय सफलता क लए उस र य पान का अ धकार ह।

इस रकार स अलला‍ह रतयक मनुषय की परीषा लता ह और उस र शषण रदान करता ह। आज जो इस जा हर सी वासत वकता को समझ या सवीकार नही सकत, व जब कयामत क दन जदा कए जात ह तो उसक सचची रोशनी म सब कुछ दखत और समझत ह क उनकी सवय की श त कुछ भी रापत नही कर सकती:

जो लोग अपन परवर दगार स का फर हो बठ ह उनकी मसल ऐसी ह क उनकी कारसता नयाँ गोया (राख का एक ढर) ह जस (अनधड क रोज हवा का बड जोरो का झोका उडा लगा जो कुछ उन लोगो न (दु नया म) कया कराया उसम स कुछ भी उनक काबू म न होगा यही तो पलल दजर की गुमराही ह। (कुरान, 14 : 18)

अलला‍ह अकली ऐसी सता ह जसक पास सभी चीजो क ऊपर अ धकार ह :

जो चीज आसमानों में है और जो चीज जमीन में है (सब) खुदा ही की तसबीह करती है उसी की बादशाहत है और तारीफ उसी के लए सजावार है और वही हर चीज पर का दर है (सूरा अत-तगाबुन: 1)

पदाथर की वासत वक र कृ त की समझदारी लोगो को आसथा की ओर ल जाएगी

व लोग जनह यह एहसास हो जाएगा क व अपन पूर जीवन भर अपनी आतमाओ को दखायी गयी छ वयो को दखत रह ह, यकीनी तौर पर यह ववास करग क यह अल्लाह ही ह जसन क उनकी आतमाओ और इन नबा ध छ वयो दोनो की ही रचना की ह। कुछ लोगो वारा अ डयलपन क साथ पदाथरक रहस्य को स्वीकार करन स इनकार करन का कारण अल्लाह की महानता की गु ता पर वचार करन और अपनी स्वय की अ कचनता को स्वीकार करन की उनकी अ नचछा होता ह। फर चाह य लोग इस स्वीकार करना नही भी चाह तो भी यह नवर्वाद सतय ह क स्वगर म और पृथवी पर रतयक चीज अल्लाह की ह और अल्लाह की मजी स रकट हुइ ह। एकमार पूणर सता अल्लाह की ह। अल्लाह वारा बनाय गय दूसर जीव पूणर सता नही ब ल्क आभास ह। अल्लाह वारा बनायी गयी रकट चीजो को दखन वाला व्य त अल्लाह की रचना को ही दखता ह।

जब लोग इस ञान क महान रहस्य को आतमसात कर लत ह, तो व चतना की काफी स्पटता रापत कर लग और उनकी आतमा पर छाया धुध का पदा उठ जाएगा। इस समझन वाला रतयक व्य त मुत ू प स अल्लाह क आग सर नवाएगा, उसस मुहबत करगा और उसस डरगा। इसक अलावा, गवर और आतमसतोष की मानव अनुभू तयो का स्थान दीनता और वनर ता की अनुभू तया ल लगी। यही वह चीज ह जस अल्लाह अपन बदो स चाहता ह। इस आचयर्जनक तथय को समझन वाल लोग अलग दृ ट बदु स चीजो की ओर दखग और पूरी तरह स भनन रकार का जीवन जयग। व समु चत ढग स अल्लाह की श त को स्वीकार करग और उस रकार क व्य तयो स स्वय को दूर कर लग जनका वणर्न इस आयत क वारा कया गया ह:

> और उन लोगों ने खुदा की जैसी कर दानी करनी चा हए थी उसकी (कुछ भी) कर न की हालाँ क (वह ऐसा का दर है क) कयामत के दन सारी जमीन (गोया) उसकी मुठी में होगी और सारे आसमान (गोया) उसके दा हने हाथ में ल पटे हुए है जसे ये लोग उसका शरीक बनाते है वह उससे पाकीजा और बरतर है। (सुरत अज-जुर: 67)

पदाथर की वास्त वकता की समझदारी दु नयावी महतवाकाष ाओ को दूर भगाती ह

अभी तक हमन जस चीज का वणर्न कया ह वह सवा धक गहन सतयो म स ह जनह क आपन अपन समूच जीवन म सुना ह। हमन दशा या ह क समूचा भौ तक वव वास्तव म छाया ह और यह क यह अल्लाह क अ स्ततव, उसकी रचना और इस तथय को समझन की बु नयाद ह क वह परम श त ह। इसक साथ ही हमन वञा नक ू प स अकाटय तथय को रद शर्त कया ह क कस मनुषय असहाय ह और अल्लाह की कलाकारी कतनी चमतका रक ह।

यह ञान लोगो को यह मानन को ववश करता ह क व अल्लाह को हर हाल म मान। यही वह मुखय वजह ह क कुछ लोग इस सतय स बचत ह।

यहा स्पट की जा रही चीज उतनी ही सतय ह जतनी क भौ तकी का नयम या रासाय नक सूर। आवशयक होन पर मनुषय सवा धक मु शकल ग णतीय समस्याओ को हल कर सकता ह और तमाम बहुत ज टल मामलो को समझ सकता ह। बहरहाल, जब इनही लोगो को यह बताया जाता ह क पदाथर मानव म स्तषक म नमर्त होन वाला आभास ह और यह क उनका इसस कोइ सबध नही ह तो इस समझन की उनकी कोइ इचछा नही होती। यह समझन की अषमता का अ तशयो तपूणर मामला ह कयो क यहा पर चचा म आया वचार इस र न क उतार स अ धक मु शकल नही ह, "दो गुन दो कया ह?" या "आपकी उर कया ह?'', अगर आप त र कातर क कसी वञा नक या रोफसर स पूछ क व वव को कहा पर दखत ह तो व आपको जवाब दग क व उस अपन म स्तषको म दखत ह। आप इस तथय को हाइ स्कूल की जीव वञान की कताबो म भी पा सकत ह। ल कन इस

तथय क बावजूद क यह साफ-साफ जाहर ह क इस तथय स जुडी जानकारी क भौतक वव को हम अपन मसतषको म दखत ह और मनुषयो क लए इस जानकारी स उतपनन परणामो की अनदखी की जा सकती ह। यह भारी महतव की बात ह क सवाधक महतवपूणर और वजानक ू प स सतयापत तथयो म स एक इतनी सावधानी क साथ लोगो की आखो स छपा रहता ह।

लोग सभी वजानक तथयो को आसानी स सवीकार करत ह लकन फर भी इस सवीकार करन स इतना डरत ह इसका बुनयादी कारण यह ह क पदाथर क बार म सच को जानना मूलत: उस तरीक को बदल दगा जस तरीक स हर कोइ जीवन की तरफ दखता ह। व लोग जो क यह ववास करत ह क पदाथर और सव परम सतााए ह, एक दन यह पाएग क हर वह चीज जसक लए उनहोन काम कया ह और जसकी इस वचार स हफाजत की ह - उनक जीवनसाथी, उनक बचच, उनकी सपदा, यहा तक क सवय उनका वयतततव - सब कुछ रम ह। लोग इस वासतवकता स बहुत भयभीत रहत ह और इस नही समझन का बहाना करत ह फर चाह व समझत कयो न हो। व दृढनचय क साथ इस तथय को खारज करन का रयास करत ह, जसक बार म समझना यहा तक क राथमक सकूल क बचच क लए भी बहुत आसान होता ह। इस वरोध क पीछ कारण यह होता ह क व उस चीज को खोन स डरत ह जो क इस दुनया म उनह मला होता ह।

अपन सवामतव वाली चीजो, अपन बचचो या वव क असथायी आकषरणो, पदाथर की रमपूणर रकृत स आसत कसी वयत क लए इनह खोन का भय बना रहता ह। जस षण इस रकार का वयत असलयत को समझ जाता ह उसी षण वह अपनी सवाभावक मौत स पहल मर जाता ह और वह अपन सवामतव वाली चीजो और अपनी आतमा का तयाग कर दता ह। इस आयत म,"और अगर वह तुमसे माल तलब करे और तुमसे चमट कर माँगे भी तो तुम (जू र) बुखल करने लगो।" (सुरा मुहममद : 37), अललाह बताता ह क मनुषयो का उस समय कस रकार स तुचछतापूणर और ववष भरा बताव होता ह जब वह उनक सवामतव वाली चीजो को उनस मागता ह।

लकन जब कोइ वयत पदाथर की वासतवक रकृत क बार म जान लता ह तो वह समझ लता ह क उसकी आतमा और उसक सवामतव वाली चीज पहल स ही अललाह स सबधत ह। अगर वह जानता ह क दन क लए या दन स बचन क लए कुछ भी नही ह तो वह मरन स पहल अललाह क समष सवय और अपन सवामतव को समपरत होन दता ह। इमानदार आसतको क लए यह खूबसूरत और सममानजनक चीज और अललाह क नकट जान का रासता ह। व लोग जो क अललाह पर यकीन नही करत या जनका ववास कमजोर ह इस सुदरता को सवीकार नही कर सकत और हठ क साथ इस वासतवकता को खारज करत ह।

जनक पास फकटरया, कशतया या जमीन ह, जो मसतषक म छवया ह, बकार क लए परशान होत ह

इस खड म हम एक लापरवाह फकटरी मालक क मसाल पर चचा करग जसन पूरी जदगी रइस होन की लालसा म गुजारी, और जो अपनी जवानी स ही यह सोचत हुए दन-रात काम करता था क अपन खून-पसीन स वह सभी चीज हासल कर लगा। यह मसाल हम एक बहुत ही महतवपूणर सचचाइ दखाएगी।

जस आदमी की हम चचा कर रह ह वह एक अधड उर का ह। उसक दो बचच ह, एक लडका और एक लडकी जनह वह अचछ सकूल म भजता ह। उसक पास कइ कार ह, एक कशती ह, अनक घर ह और कुछ जमीन भी ह। यह आदमी सोचता ह क उसक पास हर वह ह जसकी इस दुनया की जदगी म कामना की जाती ह। वह सोचता ह क उसन हर वह चीज पा ली ह जस कोइ आदमी पाना चाहता ह। उसन दौलत क अलावा काफी इजजत भी पाइ ह। हर कोइ उस जानता ह, उस ऐस आदमी की तरह मानता ह जसकी इजजत ह और समाज म एक ुतबा ह। यह खयाल उसक उन नौकरो का भी ह जो सुबह म उसक यहा काम करत ह, शोफर का ह जो उसक लए कार का दरवाजा खोलता ह, सकयुरटी गाडर का ह जो कपनी की इमारत म उसक घुसन क वत बडी इजजत स उसका

अ भवादन करत ह, उन कमचा रयो का ह जो उस वत तक अदब स खड रहत ह जब वह फकटरी म रवश कर अपन दफ्तर म चला नही जाता। ऊच ओहदो पर उसक अनक गहर दोस्त और प र चत ह। हर दन वह इस मी टग स उस मी टग क बीच भागता फरता ह; वह कइ बोडर और सोसाइ टयो का सदस्य ह, और कइ का अधयष भी। दन भर म वह सकडो लोगो को आदश दता ह। बक और नजी तजोरी म उसक पास ढर सारा धन, शयर और बाँड ह क उस गनना उसक लए आसान नही ह। समय समय वह उसम इजाफा करता जाता ह और इसम उस बहुत आनद आता ह; उस अपन ऊपर नाज ह और वह खुद को शाबासी दता ह। जो चीज उस खास तौर पर सुकून और आतमव वास का एहसास दती ह वह यह तथय ह क उसन अपनी कडी महनत स सभी कुछ कमा लया, और उसन वह सब पा लया जस हा सल करन क लए उसन अपनी सारी जदगी लगा दी।

एक दन जब वह अपन दोस्तो क साथ कशती की सर कर रहा था, कोइ उसक पास आया और उसस कहा, *"इस पल आप जो कुछ भी यहा दखत ह - इन तमाम लोगो को, कशती को, समुर को, फकट रयो को, मकानो को, कमचा रयो को जो आपक एक हुकम पर कूदन लगत ह - तमाम क तमाम आपक म स्तषक म ह। आपको नही पता क इनक मूल का अ स्ततव आपक म स्तषक क बाहर ह या नही। अगर आपक म स्तषक म रवश करन वाली त र काओ को काट दया जाए, यह कशती, इसपर सवार य लोग, उनकी आवाज और बात-चीत, समुर की यह महक, आप फलो क जस रस की चुस्की ल रह ह उसका मजा, सष प म तमाम चीज एक पल म खतम हो जाएगी। य तमाम चीज और व चीज भी जनह आपन अपनी पूरी जदगी म हा सल कया, आपक म स्तषक म ह। आपक मकानो, कारो, क शतयो, फकट रयो और कप नयो म और उन चीजो म कोइ फकर नही जनक मा लक आप सपन म ह। यह अपन नजी वमान म यूरोप जान क सपन जसा ह और सुबह जागन क बाद आपको पता चलता ह क कोइ वमान नही ह, और आप यूरोप म नही अपन बस्तर पर ह। अगर आप एक दन इस नीद स जागग जस आप अपनी जदगी कहत ह; कस आप सु न चत करग क आप कसी बल्कुल अलग जगह पर नही होग जहा आप इस जदगी स जुडी छ वयो को दख रह ह?"*

रइस इस बात पर बडी तीखी र त र या जताएगा। अगर य सार तथय उस तमाम वज्ञा नक सबूतो क साथ सीध-सीध कहा जाए तो वह उनह समझन क बावजूद इस हकीकत को कबूल नही कर पाएगा। यह स्वीकार करना क उसक पास जो कुछ ह वह कसी सपन जसी फतासी ह का मतलब होगा क वह सारी जदगी कसी र म क पीछ भागता रहा। तब हर वह चीज जसक लए आदमी की तारीफ की जाती ह, हर वह चीज जो उस गवर और एक ह सयत का एहसास कराती ह, एक र म ह। उसकी हालत उसी आदमी जसी ही अपमानजनक और उपहासजनक हो जाएगी जो सपन म रइस और अपनी काल्प नक दौलत पर इतराता फरता ह। जब हमारी मसाल का यह रइस सच चाइ को आतमसात करन क बाद अपनी कपनी म जाता ह उस कमचा रयो की ओर स दखाइ जा रही इज्जत पर घमड नही होगा। ऐसा इस लए क उस अब मालूम ह क व लोग जो उस इज्जत का इजहार कर रह ह और उसक सामन झुक रह ह, उसक म स्तक म अनुकृ त मार ह। या जब य बात उस बताइ जाती ह, वह अपन महमानो क सामन कशती का आडबर नही कर सकगा क्यो क उस मालूम ह क कशती और उसपर मौजूद महमान दोनो उसक म स्तषक म छ वया भर ह।

जब उस बताया जाता ह क पदाथर एक र म ह और भौ तक अ स्ततव क साथ उसका कोइ सबध नही हो सकता, एक दन पहल खरीद गए खत का खयाल उसक दमाग म आएगा। इस मामल म उसन बल दर बल जो धन गन और वडर को दए, तमाम साजोसामान क साथ जो खत खरीदा, खरीदारी क वत अगल-बगल क इलाको का जो सवर्स ण कया गया - तमाम का अ स्ततव सफर उसक म स्तषक म ह। यह बल्कुल ऐसा ही ह क उसन पछली रात कोइ सपना दखा जसम उस कोइ बडा ठका मला। उसन उसस ढर सारा धन कमाया। जब वह जागा तो कुछ भी बाकी नही था, और वह जस हकीकत समझता था, वह बस एक सपना था।

अगर यह मामला ह, तो वह अब कशती म नही ह। कशती उसक अदर का एक आभास ह। जब वह सोचता ह क वह नवीनतम स्टाइल म सज-धज अपन मकान म रवश करन जा रहा ह, वास्तव म वह एक बड बाग का दरवाजा खोलता ह और अपन मस्तषक म कसी मकान म रवश करता ह। मकान, उसक साजो-सामान, बाग और बाग का दरवाजा उसक मस्तषक म ह।

अगर वह क्यत इसस अवगत ह क उसस कया कहा जा रहा ह, वह यह महसूस करगा क इस पल उसक पास जो कुछ भी ह, मूल ू प स छम सतव ह। य तमाम चीज छवया ह जस अल्लाह उस दखा रहा ह। अल्लाह न उन ह रचा ह। उसका इमतहान लन क लए अल्लाह न उसकी जदगी और चीजो क आभास रच जनक बार म वह सोचगा क वह उसका मालक ह। लकन यह भूल कर वह अहकारी हो गया, इन चीजो को नट कर दया और शान बघारन लगा तथा दूसरो को अपन स नीच समझन लगा क अल्लाह न उस य चीज दी ह और इन आभासो की दौलत स उस नवाजा ह। फर उसन अपनी जदगी बकार म एक मथया सपनो की दुनया क पीछ भाग कर खतम की। लकन एक दन वह महसूस करता ह क वह रमो का शकार हो गया ह और अपनी जदगी बरबाद कर रहा ह, क इन चीजो म स कसी का भी कोइ परम अस्ततव नही ह और यह क बस अल्लाह का ही वजूद ह।

एक आयत म अल्लाह उन लोगो का धयान आकषस करता जनहोन समूच इतहास म हकीकत कबूल करन स इनकार कर दया और जो यह दखावा करत ह क उनह कुछ नही मालूम ह:

> और जन लोगों ने कुर अखतयार कया उनकी कारस्तानयाँ (ऐसी है) जैसे एक चटयल मैदान का चमकता हुआ बालू क पयासा उसको दूर से देखे तो पानी खयाल करता है यहाँ तक क जब उसके पास आया तो उसको कुछ भी न पाया (और पयास से तडप कर मर गया) और खुदा को अपने पास मौजूद पाया तो उसने उसका हसाब (कताब) पूरा पूरा चुका दया और खुदा तो बहुत जल्द हसाब लेने वाला है (सूरा अन-नूर: 39)

जसा क हम इस आयत म दखग, अल्लाह न मुनकरो की तुलना मरीचका स की ह। जब य लोग खुद को इन मरीचकाओ स जोड लत ह और पात ह क व उनस कसी मदद की उममीद नही कर सकत, तो यह समझत ह क मरीचकाए वास्तवक नही ह और यह क अकल अल्लाह ही एकमार परम वास्तवकता ह।

लोग कयो इस हकीकत स इतना डर ह और ऊपर की मसाल क आदमी की तरह इस मानना नही चाहत, इसकी एक वजह यह ह क उनक पास जो कुछ भी ह, उनकी इज्जत, उनकी दौलत एक पल म खतम हो जाएगी। यहा हम आपका धयान एक बदु की तरफ आकषस करग: हम यहा यह नही कह रह ह क "हर चीज जो उस क्यत क पास ह, मौत क बाद पीछ छुट जाएगी और उसक कोइ काम नही आएगी।" यह कह कर क "हर चीज जसका वह आदमी मालक ह एक आभास ह", वह आदमी एक तरह स उन चीजो को खो दता ह जो जदा रहत हुए उसक पास थी। जब वह दखता ह क उन चीजो न उस दककत दी और दुखी बनाया जनक लए उसन जदगी भर मशककत की, और इस ररया म उसन अनय लोगो को पछाडन की कोशश की, तो वह महसूस करता ह क य तमाम चीज छलावा ह। एक आयत म कुरान उजागर करता ह क नाफरमानी करन वाल लोग छलावा म जीत ह। जायदाद क साथ लोगो का लालच भरा लगाव एक आयत म इस रकार बताया गया ह:

> दुनया में लोगों को उनकी पसंदीदा चीजें (मसलन) बीवयों और बेटों और सोने चांदी के बडे बडे ढेर और उमदा उमदा घोडों और मवेशयों ओर खेती के साथ उलफत भली करके दखा दी गइ है ये सब दुनयावी जनदगी के (चनद रोजा) फायदे है और (हमेशा का) अचछा ठकाना तो खुदा ही के यहां है (सूरा आल-इमरान: 14)

एक दूसरी आयत म यह उजागर कया गया ह क इस दुनया की एक जदगी एक तमाशा ह, वत की बरबादी ह और एक छलावा ह:

> जान रखो क दुनयावी जंदगी महज खेल और तमाषा और जाहरी जीनत (व आसाइश) और आपस में एक

दूसरे पर फर करना और माल और औलाद की एक दूसरे से ज्यादा खवा हश है (दुनयावी जनदगी की मसाल तो) बा रश की सी मसाल है जस (की वजह) से कसानो की खेती (लहलहाती और) उनको खुश कर देती थी फर सूख जाती है तो तू उसको देखता है क जदर हो जाती है फर चूर चूर हो जाती है और आ खरत में (कुफ्फार के लए) सखत अजाब है और (मो मनों के लए) खुदा की तरफ से ब खषश और खुशनूदी और दुनयावी जनदगी तो बस फरेब का साजो सामान है (सूरा अल हदीद: 20)

जब लोग महसूस करत ह क य आभास, जनक बार म उनह गुमान था क इस जदगी क दौर उनकी म ल्कयत ह वास्तव म एक र म ह, व समझत ह क उनहोन बकार म मशक्कत की और परशान हुए, और यह क उनहोन अपना वत रायगा कया। ऐस लोग भी ह जो अपनी म ल्कयत की पहरदारी करत ह, और इन चीजो क लए गुस्सा हो जात ह और दूसरो को गा लया दत ह, झल्ला जात ह और मज पर मुक्क बरसात ह। ल कन जब व पात ह क वास्त वक भौ तक वस्तुओ क साथ उनका कोइ रशता नही ह, व श मन्दा होत ह और उनह बहुत अफसोस होता ह क व ऐस कसी आदमी की तरह ह जो सपन म दूसर लोगो पर हमल करता ह, गुस्सा होता ह और उनपर चीखता-च ल्लाता ह। व तुरत ही समझ जात ह क उनह इस तरह स सलूक करना चा हए जो अल्लाह को खुश कर। इस हकीकत को आतमसात करन वाल इमान वाल कहत ह:

(ऐ रसूल) तुम उनसे कहो क मुझे तो मेरे परवर दगार ने सीधी राह या न एक मजबूत दीन इबराहीम के मजहब की ह दायत फरमाइ है बा तल से कतरा के चलते थे और मुशरेकीन में से न थे (सूरा अल-अनाम: 162)

यह अहम ह क इस महतवपूणर बदु को कभी नही भूला जाए: इसका कोइ मतलब नही क अपनी जदगी क कस मुकाम पर कोइ आदमी इस हकीकत को समझ पाता ह, यह कभी दर नही कही जा सकती। वह उसी वत जदगी को दखन का तरीका बदल सकता ह और इस उसूल क मुता बक जदगी क तरीक को बदल सकता ह; वह र मो क ल ए नही, ब ल्क अल्लाह क लए जीना शु कर सकता ह। अल्लाह अपन बदो को हमशा माफ फरमाता ह।

व लोग एक मजबूत जाल म फस गए ह जो धूतर्ता स बहाना करत ह क उनह इस हकीकत की जानकारी नही ह, और इस तथय को स्वीकार करन स इनकार कर दत ह क अल्लाह एक ह और परम ह। अल्लाह इस हालत का ज र करता ह:

मगर (हां) ये वे लोग है जनके लए आ खरत में (जहननुम की) आग के सवा कुछ नहीं और जो कुछ दु नया में उन लोगों ने कया धरा था सब अकारत (बबा द) हो गया और जो कुछ ये लोग करते थे सब म टयामेट हो गया (सूरा हूद: 16)

अगर कोइ आदमी अभी इस हकीकत म स्वीकार नही करना चाहता और यह मान कर खुद को छलना पसद करता ह क वह जन चीजो का मा लक ह, व परम चीज ह, तमाम बात कयामत क दन साफ हो जाएगी जब उस फर स ज दा कया जाएगा। उस दन, जसा क इस आयत म कहा गया ह, उसकी "नगाह साफ है" (सूरा काफ: 22), और वह हर चीज क बार म जयादा साफ जानकारी पाएगा। ल कन अगर वह अपनी इस दु नयावी जदगी को र ामक ल षयो क पीछ भागत हुए काटगा, वह तमनना करगा क वह इस दु नया म कभी जदगी नही गुजारी होती। वह यह कहत हुए खतम हो जाएगा, "काश, मौत ने (हमेशा के लए मेरा) काम तमाम कर दया होता (अफसोस) मेरा माल मेरे कुछ भी काम न आया (हाय) मेरी सल्तनत खाक में मल गयी।" (सूरा अल हक्का: 29)

जो पदाथर की वास्त वक र कृ त दखत ह शखी छोड दत ह

कुछ लोग जो इस सीधी सादी सचचाइ स अवगत होत ह, परशान हो जात ह। जब व समझत ह क उनकी फकट रया, मकान, कार, जायदाद, बचच, बी वया, रशतदार, और सामा जक ह सयत सभी म स्तषक म अनुभव कए

जान वाल र म ह, उनकी बबसी और उनकी बकसी अल्लाह क सामन खुल जाती ह। व समझ जात ह क व खुद और जो कुछ भी उनक पास ह, यहा तक क यह समूचा र माड एक र म ह और व खुद कुछ नही ह। जो कुछ बचता ह वह ू ह ह जस वह "म" कहत ह। चू क यह अल्लाह ह जसन उनह ू ह अता फरमाया, अगर उनहोन पहल अल्लाह पर यकीन नही भी कया जो तो अब उनह अल्लाह पर यकीन करना चा हए और उसक सामन सर झुकाना चा हए।

जक कोइ आदमी इन तथयो को आतमसात करता ह, उसम शान, घमड और आतमसतोष की जगह नर ता और नभरता का एक एहसास आ जाता ह। अगर इस तरह क आदमी को दु नया की तमामतर दौलत और यहा का सबस अहम ु तबा भी सौप दया जाए तो भी उसम शान और घमड नही आएग। वह नही भूलगा क वह सफर उन ही छ वयो का अवलोकन कर रहा ह जनह अल्लाह न उस अता कया ह, और वह कसी र म म नही पडगा। यह उदात वास त वकता तमाम महतवकाष ाओ, घमड और दखावा, और इसक साथ ही वष, नफरत और गुस्सा जसी नकारातमक अनुभू तयो को खतम कर दगी। जो जानत ह क हर चीज एक र म ह, व एक-दूसर क साथ गदस-काट र तयो गता म नही उलझग या कसी अनय क खलाफ दुभा व या नफरत नही पालग। एक ऐस माहौल म जहा हर कोइ सफर अल्लाह क मातहत होगा, हर तरफ नर ता, आतमसमपण, उलफत, लगाव और अतरगता होगी।

इस लए, कसी आदमी क लए यह अतयत अनु चत होगा क वह सच चाइ नही जानन का बहाना कर और इसस डर तथा इसस भाग। हा, इमान क बगर कोइ आदमी इस सच चाइ स डर सकता ह कयो क अगर वह इन तथयो को स्वीकार करता ह तो वह अल्लाह क वजूद को मानन क लए भी बाधय हो जाएगा। ल कन इमान वाल खुशी और जोश क साथ इस तथय को गल लगाए क पदाथर एक र त बब ह जस अल्लाह उनक म स्तषक म अनुभव कराता ह और यह क एकमार परम अल्लाह ह। कसी इमान वाल क लए अल्लाह स दूर हटना कोइ मतलब नही रखता। जब हकीकत सामन ह, उस कबूल नही करना, और आभासो एव र आयामी र कटन स छला जाना जारी रखना बमतलब होगा। इमान वाल सच चाइ स नही डरत, ब ल्क वास्त वकता की खूबसूरती और गहराइ क बार म सोचत ह और ख याल करत ह क अल्लाह की बऐब कलाकारी कतनी जबरदस्त ह।

वास्त वकता स उनको खतरा ह जो महतवाकाष ाओ स इस दु नया स बध ह

जब कसी आदमी को उसकी उपल ब्धयो क लए पुरस्कार दया जाता ह तो वह अपन म स्तषक म इस पाता ह। पुरस्कार वतरण क वत जो उसकी तारीफ करत ह, वास्तव म उसक म स्तषक म लोगो का अ वभा व होता ह।

कोइ आदमी इस पुरस्कार वतरण को अपन म स्तषक क छोट परद पर दखता ह। वह कसी भी तरह आ डटो रयम म लोगो क र ोत, पुरस्कार या खुद आ डटो रयम स नही जुडा होता ह। य चीज उसक म स्तषक म होती ह। यह ऐसा ह जस अपन पुरस्कार पान का दृशय कसी वी डयो कसट पर दख रहा हो।

यह कारण ह क कयो लोग खौफ क साथ इस वास्त वकता स बचत ह। जब महतवाकाष ाओ की डोर स इस दु नया स बध लोग समझत ह क समाज म उनका ु तबा और ओहदा, उनको मलन वाल पुरस्कार, उनक बक खात, कशत या, जमीन-जायदाद, और उनकी तारीफ करन वाल लोग सभी उनक म स्तषको म अ वभा व ह, उनह गुस्सा आता ह। व तमाम अहकार क साथ इस हकीकत को स्वीकार करन स परहज करत ह कयो क व महसूस करत ह क इसका मतलब होगा उनकी शान-शौकत, नाम और जायदाद कसी मोल क नही ह। ल कन चाह कतना भी वह इस हकीकत स बचन की को शश कर, व हकीकत को बदल नही सकत क उनहोन अपनी सारी जदगी अपनी खोपडी क अदर गुजारी।

चंताएं और क ठनाइयां स्व नल आभासों की तरह है

कइ लोग ऐसा महसूस करत ह क कुछ बात म स्तषक म कसी अदृशय छाया की तरह घ टत हुआ करती ह, परतु व यह भूल जात ह क यही बात हर प र स्थ त म सच ह। तथा प, हमारा समस्त मानव-जीवन -- सारा का सारा जीवन -- वाकइ हमार म स्तषक म एक छायातमक र ती त क ू प म स्फु रत होता ह। उदाहरण क लए, कोइ व्यापारी जो दवा लया हो चुका होता ह, अपन कायर्स्थल और कमर्चा रयो की छ व अपन म स्तषक म ही अ कत होता दखता ह। व सार बच दए गए साजो-सामान और व धन जो उस रापत हुए -- सब क सब उसक म स्तषक म ही अ कत बमब ह। जब वह व्य त अपना धन खो दता ह तो वास्तव म वह उस धन को महज एक आभास क ू प म खोता ह। जो व्य त अपना कारोबार खो चुका ह, जसकी सारी समपदाएँ लुट गइ ह, उसका कारखाना और धन-समपदा का खो जाना कवल एक र ती त ह, एक अनुभू त ह, जो सफर् उसक दमाग म घ टत हुइ ह। या कोइ ऐसा व्य त जसकी कार चुरा ली गइ ह, उसक लए भी कार का दृशय बस उसक दमाग स ओझल हो गया ह। अब वह उस कार-जसी दृशयमान वस्तु को नही दख सकता जस वह अपना समझता था; परतु यह सच ह क पूरी जनदगी म एक ष ण क लए भी उस दृशय की मूल छ व स कभी भी उसका सरोकार नही रहा था।

कवल वस्तुओ क साथ यह बात लागू नही होती; अपन पूर जीवन म व्य त जन क ठनाइयो का अनुभव कया करता ह, वह भी बस उसक म स्तषक म ही होती ह। उदाहरण क लए, एक ऐस व्य त क बार म वचार कर जो कसी ऐस दश म रह रहा हो जहाँ आत रक कलह मची हुइ ह। हर ष ण वह मौत क खतर म जी रहा होता ह और हर पल वह दुशमन स नको क हमलो का सामना कर रहा होता ह; परतु सचचाइ यह ह क वह अपन ही म स्तषक क दायर म दुशमन स नको का आभास पा रहा होता ह। जो व्य त कसी झडप म घायल हो गया ह या जसन अपनी बाँह गँवा दी ह, वह अपन म स्तषक म ही अपनी वह भुजा गँवाता ह और वह ददर् का सारा एहसास भी उसक दमाग म अ कत एक र ती त ह। उस दुशमनो वारा जो धम कयाँ दी गइ ह, अपमान और चुनौती की जो बात सुनाइ गइ ह, व उसक अपन ही दमाग म ू पा कत होनवाली धव नयो का आभास मार ह।

अत:, क ठनाइया, डर और चताए उतपनन करन वाली घटनाएँ बस हमार म स्तषक म र चत बमब मार ह। वह व्य त जो इन बमबो क वास्त वक स्वभाव को जानता ह वह अपन आप को क ठनाइयो स घरा पाकर व्य थत नही होता और न ही कोइ गला-श कवा करता ह। य द घोर आर ामक और खतरनाक दुशमन भी उस घर ल तो वह यह समझगा क वह अपन म स्तषक म उभर हुए एक र म क समष खडा ह और कोइ भी डर या नराशा उसपर हाबी नही हो पाएगी। वह यह जान रहा होता ह क हर एक वस्तु इव र वारा र चत एक छायातमक र ती त ह, और इव र न उनह कसी उदशय स रचा ह। चाह जो भी सामन आ जाए, वह इव र क र त अपनी आस्था और समपर्ण क साथ शात बना रहता ह। कुरान की कइ आयतो म इव र न यह र क टत क या ह क जो आस्थावान ह, उनह कभी दु:ख और भय नही व्यापगा :

> जो लोग कहते है, "इव र ही हमारा स्वामी है" और फर सीधे मागर् पर चल पडते है, उनहें कभी भय नहीं व्यापेगा और न ही वे शोक-संतप त होंगे। (सूरा अल-अहकाफ : **13**)

जो व्य त यह जानगा क अपनी तमाम जनदगी म उसन जो कुछ भी घ टत होत दखा ह, और हर एक

धव न जो उसनी सुनी ह, व इवर वारा उसक म स्तषक म र चत बमब मार ह तो वह भयभीत या व्यथर च तत हुए बना अपन 'र टा' की अनत कु णा म ववास रखगा, जसन उस और इन बमबो को सरजा ह।

वह संभाव्य वातावरण य द पदाथरकी वास्त वक र कृ त को रहस्य बनाकर न रखा जाए

जो लोग यह जानत ह क वास्त वक पदाथर स उनका कोइ भी समपकर नही ह, और व बस इवर वारा उनक समष रस्तुत कए गए आभासी बमबो क सामन खड ह, उनकी पूरी की पूरी जीवन-शली, जीवन और जीवन-मूल्यो क र त उनकी समस्त अनुभू त ही बदल जाएगी। यह एक ऐसा प रवतर्न होगा जो वय त क और सामा जक दोनो ही पहलुओ स काफी उपयोगी सध होगा; क्यो क जो कोइ भी इस सच को समझ लगा वह इवर वारा 'कुरान' म रकट कए गए महान न तक मूल्यो क अनुसार अपना जीवन-यापन करगा।

व लोग जो इस ससार को बहुत अह मयत नही दत और जो जानत ह क पदाथर एक र म ह, उनक लए जो महतव की बात बत जाती ह वह ह आधया तमक। जो यह जानता ह क इवर उस र तपल दख-सुन रह ह, और जो यकीन करता ह क इस लोक क बाद क जीवन म उसक रतयक कमर का लखा-जोखा पश कया जाएगा, वह स्वभावतः न तक ू प स प वर जीवन जएगा। इवर न क्या आदश दया ह, कन- कन बातो का नषध कया ह, इस बात की उस बडी फर रहगी। समाज का हर व्य त एक-दूसर क र त रम और आदर की भावनाओ स भर जाएगा तथा अच छ और नक काम करन क लए सब एक-दूसर स र तस्प धा करत मलग। एक-दूसर क बार म अपनी नणर्यातमक राय बनान क लए लोग नए मूल्यो स काम लग। भौ तक वस्तुओ का महतव ही खतम हो जाएगा और, अतः, लोगो का मूल्याकन उनक सामा जक राग- तब क बजाय न तक च रर और पावनता की कसौटी पर होन लगगा। लोग ऐसी चीजो क पीछ नही भागग जनका र ोत ही र म ह, ब ल्क व सतय की साधना म नरत होग। हर कोइ अपना आचरण इस दवाब स मुत होकर करगा क उसक बार म दूसरो की राय क्या ह; ब ल्क उनका एकमार सवाल होगा यह क उनक काम स परमव र को रसननता हो रही होगी या नही। अ धकार, समपदा, ह सयत और तब क गुमान स पनपन वाल घमड, अकड, और अहमनयता की जगह व वनर ता और र भु- नभरता की भावनाओ स भर उठग। अतएव, लोग अपनी स्वच छा स 'कुरान' म उपद शत अच छ न तक गुणो क उदाहरणो क अनुसार जीन लगग। आ खरकार, इन प रवतर्नो स वतर्मान समाज की अनक समस्याओ का सदा-सदा क लए अत हो जाएगा।

गुस्सल, आर ामक, जरा-जरा स स्वाथर पर उता लोगो की जगह ऐस लोग दखग जो यह जानत होग क हर दृशयमान वस्तु बस एक माया ह। व इस तथय स वा कफ हो जाएँग क अपनी र ोध भरी र त र याओ और चल्ल -पो स व बड बवकूफ नजर आत ह। लोगो और समाजो क बीच कल्याण और ववास की भावनाओ का राज होगा और हर कोइ अपन-अपन जीवन और अ धकारो स सतुट नजर आएगा। अत: य कुछ ऐस वरदान ह जो इस छप

हुए यथाथर वारा व्यक्तयो और समाजो को रापत होग। इस यथाथर को जानना, उसपर वचार करना, उस अपन जीवन म अपनाना एक ऐसी बात ह जसस मानव-जीवन म और कइ अचछी बातो का समावश कया जा सकता ह। अत: जो कोइ इन अचछाइयो को पाना चाहत ह उनह इस सचचाइ पर ठीक स वचार करना चाहए और इस समझन की चटा करनी चाहए। एक आयत म अल्लाह की वाणी ह :

तुमहारे रभु की ओर से तुमहारे पास सपट अंतदृरटयाँ भेज दी गइ है। जो कोइ भी सपट देखता है, अपने ही भले के लए ऐसा करता है। जो कोइ भी आँखें मूँदे बैठा है, अपना ही बगाड रहा है ... (सूरा अल-अनाम : **104**)

पदाथर की वास्तवक रकृत को जानना यानी भौतकतावाद का खातमा

भौतकतावाद का दशरन एक ऐस वव का दृटकोण ह जो इस बात स बहुत ही खौफजदा ह क यह पदाथरक जगत हमारी चतना क र त दशाइ गइ एक आभासी झलक ह, और हम यह कदाप नही जान सकत क हमार मस्तषक स बाहर की परध म सचमुच कुछ ह भी या नही। इस बहतर ढग स समझ पान क लए हम भौतकवाद की सामानय परभाषा पर गौर करनी चाहए। भौतकतावादी लखो म भौतकवाद की परभाषा कुछ इस तरह दी गइ ह :

भौतकतावाद वव की अंनतता और अनवरतता को स्वीकार करता है, और मानता है क इसे इवर ने नहीं रचा है और यह समय और स्थान की दृट से असीम है। 37

इसायकलोपीडया लॅूरस क 8व खड म, भौतकतावादी वचार-दशरन को इस रकार परभाषत कया गया ह :

भौतकतावाद वह सधांत है जो पदाथर के अलावा अनय कसी भी सतव का अस्ततव नहीं मानता। यह आदशरवाद की वरोधी वचारधारा है जसमें यह कहा गया है क यथाथर का सार और सतव चेतना वारा सृजत की गइ है।

जसा क हम इस सषपत परभाषा स समझ सकत ह, भौतकवादी दशरन पदाथर को एकमार पूणर अस्ततव क ूप म दखता ह और यह मानता ह क पदाथर स अलग कसी भी वचार या वस्तु की कोइ सता नही ह। भौतकवादी दशरन चतना क अस्ततव को नही मानता बल्क मानव-चतना को मस्तषक क कायर-व्यवहारो क परणाम क ूप म दखता ह। (इस भौतकवादी दाव क खोखलपन पर हम "मानव-चेतना : भौतकवाद की सबसे महतवपूणर बडमबना" शीषरक खड म वचार कर चुक ह)। इस पूरी पुस्तक म जन बातो का वलषण कया गया ह उनका एक महतवपूणर अभराय इस सतय को झलकाना ह क भौतकतावादी वचार-दशरन पूरी तरह अमानय ह। ऐसा इसलए क आज क जमान म यह बल्कुल सपट हो चुका ह क जस हम पदाथर कहत ह वह हमार मस्तषक पर अकत एक छाप ह;

यह सा बत कर पाना हमार लए बल्कुल असभव ह क हमार मस्त षक स बाहर उन छापो का कोइ भौ तक र तू प ह। वह इस लए क्यो क अपन म स्तषक स बाहर नकल पाना और वस्तुओ क भौ तक र ोत स समपकर कर पाना हमार लए असभव ह। इन दो वाक्यो म समा हत इस तथय को य द हम समझ सकत ह तो न तो पदाथर बचता ह और न पदाथरवाद। य द हम ऐसा भी मान ल क हमार बोधो, हमारी अनुभू तयो, का म स्तषक स बाहर कोइ भौ तक र तू प भी मौजूद ह, तो भी यह जानकर क हम कभी भी उन र तू पो को नही पा सकत, पदाथर क बार म ऐसा कोइ वचार खडा करना और उस अपनी जीवन-दृ ट बनाना फजूल लगता ह जसका अ स्ततव ही स नदग ध हो।

पदाथर क पीछ छुप इस महतवपूणर रहस्य क बल्कुल स्पट होत हुए भी य द भौ तकवादी वचारधारा क समथरक इस नही मानत या इस तथय स बाधा महसूस करत ह तो उसका मूल कारण यह ह क उनह अपन वचार-दशरन क खातम का डर सता रहा होता ह। इ तहास क समपूणर कालखड म पदाथर की र कृ त क वणरन स भौ तकतावा दयो को बडी असु वधा होती आइ ह; यहाँ तक क य द अनय भौ तकवादी ऐसी तथयपूणर कताबो को पढ तो भी व गफलत क शकार हो जात ह। उदाहरण क लए, ूस की रतर जत र ा त क नताओ म स एक, व्ला दमीर आइ. ले नन, न लगभग एक शताब्दी पूवर ल खत अपनी पुस्तक *"मॅटीर य लजम ऐंड इमपी रयो- र ट सजम"* म अपन अनुया ययो को यह चतावनी दी:

> हम सबकी सवदना म न हत वस्तु नठ यथाथर स य द आप एकबार इकार कर दग तो समझ ली जए क आप नठावाद क खलाफ अपना हर ह थयार गँवा बठग, क्यो क आप फसलकर वषय नठतावाद और इस वचारधारा क दायर म आ जाएँग क इव र रमाणय नही ह -- और नठावाद आ खर यही तो चाहता ह। एक भी चंगुल जाल में पडा क च डया फँसी। और हमार य सार 'मॅ शस्ट' (Machist) आदशरवाद क शकज म पड जाएँग, अथा त एक सूषम और म र त रकार क नठावाद क चगुल म। उसी षण स व उस शकज म जा पडग जस षण व यह मान बठग क "सवदना" बाहरी जगत का बमब न होकर कोइ खास "ततव" ह। यह कसी की सवदना नही ह, कसी का वचार नही, कसी की चतना नही, कसी की इच छा नही। 38

इन वाक्यो स यह लग जाता ह क इस तथय स भौ तकवा दयो को कतनी असु वधा होती थी। ल नन को इस बात का बडा डर था और इस बात को वह स्वय अपन और अपन कॉमरडो क दलो- दमाग स मटा डालना चाहता था। परतु आज क भौ तकवादी तो ल नन स भी कही अ धक मुसीबत म ह, क्यो क पछल 100 सालो म भौ तकवाद की नरथरकता और भी मजबूती और स्पटता स स्था पत हो चुकी ह। जस अतीत म महज दाशरनक अटकल या एक वचारधारा मान लया गया था, आज पदाथर की वही अ-वास्त वकता इ तहास म पहली बार अकाटय और वज्ञा नक रमाणो पर आधा रत सच चाइ बनकर सामन खडी ह। वज्ञान लखक लंकन बानेरट न कहा ह क इस सभावना की ओर जरा इशारा कर दन स भी भौ तकवादी च तत और भयभीत हो उठत ह :

दाशरनको वारा समस्त वस्तु नठ यथाथर को आभासो का एक 'छाया-जगत' बना दन स, वैज्ञा नक लोग मानव की

ऐन रक संवेदना की चौंका देने वाली सीमाओं को जान गए है। 39

तुकी और समस्त वव म इस मुद स दो-चार हुए हर भौ तकवादी क डर और उसकी चता का हम स्पट सकत मल जाता ह। उदाहरण क लए, वकासवाद क सधात क पतन क कारण तुकी क भौ तकवादी बड गभीर पशोपश म पड ह, क्यो क इसी सधात को उनहोन अपन वचार-दशस का आधार बना रखा था। अब उनकी समझ म यह बात भी आन लगी ह क उनहोन तो डा वसवाद स भी बडा सहारा खो दया ह -- पदाथवाद। इस लए व अब यह कहन लग ह क उनकी समझ स यह वषय एक ऐसा गभीर खतरा ह जसस उनक पूर सास्कृ तक ताना-बाना क ही छनन- भनन हो जान का डर ह।

सच कहा जाए तो इस बात स 'कुरान' म मानवजा त क समष अल्लाह वारा रकट की गइ एक र तज्ञा की ओर सकत मलता ह :

> कहो : "सतय का पदापण हो चुका है और असतय ओझल हो चुका है। असतय ओझल हो जाने के लए ही बना है।" (सूरा अल-इर : **81**)
>
> अच छा यह होगा क असतय के खलाफ हम सतय को र षे पत करें और वह (सतय) उसे काट डालता है और वह (असतय) गायब हो जाता है। अननत अफसोस तुमहारे लए, उसके लए जसका तुम चर ण करते हो। (सूरा अल-आन बया : 18)

भौ तकवाद और व सब लोग जनहोन इ तहास क पूर काल-र म म इसका समथस कया ह, पदाथर का इस्तमाल अल्लाह स बगावत करन क एक औजार क ूप म करत ह -- उस अल्लाह स जसन शून्य स उन सबकी रचना की, उनह जीवन र दान कया और उनक रहन क लए यह र माड सरजा। ऐस थोथ और बतुक सवाल करक क "य द पदाथर का अ स्ततव ह तो उसम इव र कहाँ ह?", व इव र क अ स्ततव को नकारत ह और भरसक को शश म जुट रहत ह क अनय लोग भी इव र को नकार द। आज व इस बात क गवाह ह क उनका एक महतवपूणर सहारा ही वनट हो चुका ह। यहाँ व णस यथाथर न उनक वचार-दशस को जड स उखाड फका ह, और अब आग बहस की कोइ गुजाइश ही नही रह गइ ह। जस पदाथर क भरोस उनक वचारो, उनक जीवन-अ स्ततव, उनक दपर और अस्वीकार का महल खडा था, एक ष ण म वह महल ही भडभडा कर गर पडा ह।

इ तहास क पूर कालर म म भौ तकवा दयो न इकार की एक वरासत छोडी ह, अस्वीकृ त क तरीक सखा गए ह। उदाहरण क लए, आज क बहुत स भौ तकवादी ल नन क उपरोत शबो का हवाला दत ह और अपन सहयो गयो को इस यथाथर क बार म न पढन-सुनन की हदायत दत ह। परतु इस तथय स उनक र यासो पर पानी फर चुका ह क आज वज्ञान न पदाथर की र कृ त को पूरी तरह न कवल स्पट कर दया ह ब ल्क इटरनट जसी टक्नोलॉजी का इस्तमाल करक इन तथयो को ससार म दूर-दूर तक र सा रत करना भी आसान हो गया ह। लोग आज इस यथाथर

क बार म पढ-सुन रह ह और इसक बार म सीख-समझ रह ह। जन लोगो न हाल-हाल तक भौतकवाद को सबस उपयुत वव-परदृशय समझकर उसका दामन थाम रखा था, व ही अब पदाथरक वास्तवक सतय और इस ससार क जीवन क बार म जानकर हरत म ह। यह एक बडा ही वकर जाल ह जस इवर न अववासयो क लए फलाया ह। इसस कोइ फकरनही पडता क पूर इतहास क रम म इन अववासयो न सचच धमरक मागरपर चाह जतन भी जाल बछाए हो, और इवर की सता स इकार करन क लए चाह जतन भी भौतक पुतल खड कए हो, अपनी बारी आन पर इवर न एक ऐसा वातावरण तयार कर दया ह जहाँ उनक पुतल उनक हाथो स छीन लए जाएँग और व स्वय को अपन ही फदो म फँस दखग। अल्लाह न यह रकट कया ह क कस तरह उनहोन पूर इतहास क रम म अववासयो क बछाए फदो का जवाब दया ह :

... वे अपनी बसात बछा रहे थे और अल्लाह अपनी, परंतु अल्लाह बसात बछाने वालों में सबसे तेज है। (सूरा अल-अनफल : 30)

लोगो को यह आभास दकर क व पदाथरक रोत क समपकरम ह, अल्लाह न भौतकवादयो को गहन गतरम गरा डाला ह और उनह इस रकार लजजत कया ह जसाक पहल कभी नही दखा गया। जो वस्तुए खालस रम स नमस ह उन सबको उनहोन नरपष सता मान लया -- अपनी धन-समपदाए, पद और उपाधया, व समाज जनम व जीत ह या यू कह क पूर ससार को। और इनही वस्तुओ म अपना यकीन जमाए हुए व स्वय को अल्लाह स भी आला मान बठ ह। अपनी धृटता म फूल हुए व अल्लाह स ही बगावत कर बठ ह और इनकार पर इनकार कए जा रह ह। ऐसा करत हुए उनकी सारी ताकत बस पदाथरपर कनरत होती ह। परनतु व अज्ञान की ऐसी गहन गतरम डूब हुए ह क उनह कभी इतना भी एहसास नही होता क अल्लाह पदाथरऔर उन सबको घर बठ ह। 'कुरान' म अल्लाह न उस अनतम दशा का वणरन कया ह जो इन काफरो को उनक अज्ञान क फलस्वरूप रापत होन वाली ह :

या वे तुमहें मूखरबनाने की कामना लए बैठे है? मगर मूखरतो वे स्वयं है जो आस्थाहीन है। (सूरा अतूर : 42)

भौतकवादयो को अभी भी इस बात का अहसास नही हुआ ह क कदम-दर-कदम व इतहास म अबतक की अपन अपनी घोरतम पराजय की दशा म आग बढ रह ह। उदाहरण क लए, जब उनह यह पता चल गया क सभी रकार क बमब मस्तषक म अकत बोध मार ह तो भी व इस बात पर गर नही कर रह क इस तथय क फलस्वरूप उनकी पूरी मानयता का आधार ही डगमगा जाएगा। अपन शोध क अत म जब कसी भौतकवादी वज्ञानक को यह पता चलता ह क वस्तुए सचमुच पदाथरक ततवो स बनी हुइ नही ह, जसक वह मानता आया था, तो इस रकार वह अपन ही हाथो भौतकवाद पर रहार कर रहा होता ह। एक आयत म, इवर न यह बात रकट की ह क काफर लोग बना जान-समझ आखरकार उसी जाल म फस चुक होग जस उनहोन खुद ही तयार कया ह :

और इसी तरह हर शहर में हमने वहां के सबसे बडे कुकर्मियों को नियत कर रखा है। वे अपने ही खिलाफ बिसात बिछा रहे होते है, अगचेर उनहें यह मालूम नहीं है। (सूरा अल-अनाम : 123)

निस्संदेह, इस सचचाइ का अनुभव होन स बढकर किसी भी भौतिकवादी क लिए और जयादा बुरा कया हो सकता ह! यह सचचाइ कि उसक पास जो कुछ भी ह वह महज एक माया ह, उसक ही शबदो म, जीवित रहत हुए मौत की सजा पान क बराबर ह।

इस वास्तविकता क मदनजर बच जात ह सिर्फ व और इवर। इस आयत म अल्लाह न इस तथय की ओर इशारा किया ह कि हर कोइ उनकी मौजूदगी म अकला ह:

वह इनसान जिसे मैने रचा है, उसे मेरी मौजूदगी में अकेला छोड दो" (सूरा अल-मुदतथर : 11)

अनय अनक आयतो म भी इस उल्लिखनीय यथाथर को रकट किया गया ह :

तुम हमारे पास बिल्कुल अकेले ही आए हो, जैसे हमने रथम-रथम तुमहारी रचना की थी और वे तमाम चीजें जो हमने तुमहें रदान की थीं, तुम पीछे छोड आए हो। (कुरान, **6:94**)

पुनुतथान के उस दिवस में हर कोइ उसके पास अकेला ही आएगा। **(**सूरा मरयम: **95**)

ततपचात, व जो अिववासी ह, उन तमाम चीजो को विनट होत दिखग जिनह उनहोन अल्लाह स भी जयादा अहम मान लिया था -- व चीज जिनह व इस ससार म मौजूद समझ रह थ, जसिक उनकी समपदाए, बाल-बचच और आस-पास की सभी चीज। निम नािकत आयत म इवर न इसी सतय को रकट किया ह :

देखो वे कैसे एक-दूसरे के खिलाफ असतय-भाषण कर रहे है और कैसे जिनहें उनहोंने स्वयं आिवषकृत किया था, उनका साथ छोड चुके है। (सूरा अल-अनाम : **24**)

21वी सदी वह िनणायक िबनदु ह जबिक यह यथाथर समस्त िवव म रसािरत हो उठगा और धरती स भौितकवाद का नामो-िनशान िमट जाएगा। अतीत क लोग किन बातो म और कयो िववास करत थ यह बात उतनी महतवपूणर नही ह। महतवपूणर ह यह कि सतय का दशर्न पा लन क बाद इस रोका नही जाना चािहए और उस सतय को समझन म बहुत जयादा िवलमब भी नही िकया जाना चािहए जिस मरत दम तक हर किसी को पूरी तरह समझना ही पडगा। हम यह नही भूलना चािहए कि सच स बच िनकलन का कोइ मागर नही ह।

समय भी एक बोध है

इस पुस्तक म इस िबनदु तक आत-आत यह बात िवस्तारपूवर्क समझा दी गइ ह कि पदाथर्, जिस एक िनरपष सता मान लिया गया था, वास्तव म एक रतीित स बढकर कुछ भी नही -- एक िबमब जिस हर वयिक्त अपन

म सतषक म दखता ह। यह भी दशा या जा चुका ह इवर क र त रम और भय क वकास, आधया तमकता और न तक सगुणो क रसार और भौ तकवाद क पराभव क लए यह सतय कतना महतवपूणर ह।

पदाथर क ही समान एक और अवधारणा ह जस भौ तकवा दयो न अननत और नरपष माना ह -- समय। परनतु पदाथर की ही तरह, समय भी एक बोध ह और वह अननत नही ह कयो क एक षण वशष म उसकी रचना की गइ थी। यह सचचाइ जो क अब वजा नक रमाणो स पुट हो चुकी ह, कुरान की कइ आयतो म रक टत ह।

समय एक अवधारणा है जसका जनम होता है एक षण की दूसरे षण से तुलना करने पर

समय एक ऐसी अवधारणा ह जो पूरी तरह हमार एहसासो और उन एहसासो क बीच हमार वारा की गइ तुलनाओ पर नभर ह। उदाहरण क लए, इस षण आप यह पुसतक पढ रह ह। मान लया क इसस पूवर आप अपन कचन म कुछ खा रह थ। आप ऐसा समझत ह क जब आप खा रह थ तब और इस षण क बीच एक अतराल ह, और इसी अतराल क बोध को आप "समय" का नाम दत ह। वासत वकता यह ह क वह षण जब आप कचन म कुछ खा रह थ, आपक जहन म एक सूचना बनकर बठ गया ह, और आप इस षण की तुलना उसी सहजी हुइ सूचना स करत हुए इस समय का नाम दत ह। य द आप यह तुलना ना कर तो समय का बोध भी जाता रहगा और आपक लए जो एकमार पल बच जाएगा वह होगा वतरमान का पल।

उदाहरण क लए, हाइ सकूल का दीषानत समारोह कसी क जहन म बसा हुआ एक यादगार होता ह। सनातक होन क बाद स घ टत होनवाली अनय घटनाओ स समब नधत सूचना-रृखलाओ की वतरमान पल स तुलना करक वह वय त समय क बार म एक धारणा बना लता ह और अपनी समृ त म स चत सूचना क आधार पर ही वह समय क कम या जयादा होन का नधा रण कर लता ह। परनतु कम या जयादा की यह अनुभू त पूणरत: उसक म सतषक म ह और उसका जनम होता ह तुलना करन क कारण।

इसी रकार, जब कोइ कसी वय त को जमीन पर गरा दी गइ कलम को उठात और उस टबुल पर रखत हुए दखता ह तो वह एक तुलना कर लता ह। व षण जब दखन वाल न उस वय त को टबुल पर कलम रखत हुए दखा था, उस झुकत हुए, कलम उठात हुए, टबुल की ओर बढत हुए दखा था व सब उसक म सतषक म सूचनाओ क ूप म अ कत हो गए थ। इनही सूचनाओ क साथ जब उस वय त वारा टबुल पर कलम रख जान क कायर की तुलना की जाती ह तो समय का बोध उतपनन होता ह।

र सध भौ तक वद जू लयन बारबर न समय की प रभाषा कुछ इस रकार दी ह :

> समय और कुछ नहीं ब लक वसतुओं की बदलती हुइ सथ तयों का एक माप है। पेंडुलम झूलता है, घडी के कांटे आगे बढते है। 40

सषप म कहा जाए तो समय मस्तषक में स्मृत के ूप में छुपी हुइ कतपय सूचनाओं से बना हुआ है; बल्क यह कहा जाए क इसका जनम बमबों की परस्पर क तुलना से होता है। यद कसी व्यत क पास स्मृत ही न हो तो उसका मस्तषक इस रकार क वलषण भी नही कर सकगा और तब उस समय का भी कोइ बोध नही होगा।

समय एक बोध है : इस समबनध में वैञानकों के वचार

आज क युग म यह वञानक ूप स मान लया गया ह क समय एक अवधारणा ह जसका जनम होता ह हमार वारा गतयो और परवतसो म नचत रमक व्यवस्थापन करन क फलस्वूप। इस दृटकोण को जनम दन वाल चनतको और वञानको क रासगक उदाहरणो स हम इस वषय को और अधक स्पट करना चाहग।

भौतकवद जूलयन बारबर न अपनी पुस्तक *"द एंड ऑफ द टाइम"* (समय का अत), जसम उनहोन अननतता और समय-शून यता जस वचारो का परीषण कया ह, क जरय वञानक जगत म घोर हलचल मचा कर रख दी। उनहोन कहा क "समय एक बोध ह" इस वचार को स्वीकार कर पाना बहुत स लोगो को कठन रतीत होता ह। *"डस्कवर"* परका म रस्तुत बारबर क एक साषातकार क हवाल स, समय क एक बोध होन क वषय म नमनलखत टपपणया पश की गइ:

> बारबर कहत ह, "मुझ अभी भी यह स्वीकार करन म दक्कत महसूस होती ह". परनतु इस रमाड को समझन क लए सामानय बुध कभी भी ववसनीय मागदशक नही रही ह -- पदाथर वञानी तभी स हमार बोध को रमत करत आ रह ह जबक पहल पहल कोपरनकस न यह बताया था क सूरज धरती क चक्कर नही लगाता। सबस बढकर तो यह बात ह क अपनी धुरी पर घूमती यह पृथवी जब इस शूनयाकाश म लगभग 67,000 मील रत घट की रफतार स धडधडाती हुइ भाग रही होती ह तो भी हम गत का तनक भी आभास नही होता। बारबर की दलील है क समय गुजरने के बारे में हमारा बोध उतना ही मूखतापूणर है जतना क 'फ्लैट अथर सोसायटी' की मानयता। 41

जसा क हमन दखा, इस रसध भौतक वञानी न स्पट कया ह क समय को नरपष मान लना गलत ह, और आधुनक भौतकी की खोजो स भी यह बात स्पट हो चुकी ह। समय नरपष नही ह; यह एक वषयनठ बोध ह जसकी अनुभूत अलग-अलग घटनाओ म अलग-अलग ढग स होती ह।

वचारक, नॉबल पुरस्कार वजता तथा आनुवशकी वञान क सुरसध राधयापक रांसस जॅकब न अपनी पुस्तक *"ले ज यू डेस पॉसबुल"* (सभव और वास्तवक) म यह सभावना व्यत की ह क समय उल्टी दशा म भी चल सकता ह :

> पीछ की ओर चलन वाली फल्मो न हमार लए यह कल्पना करना सभव बना दया ह क एक ऐसी दुनया भी

हो सकती ह जसम समय का रवाह पीछ की ओर जा रहा हो। एक ऐसी दु नया जसम दूध कॉफी स अपना पड छुडात हुए पयाल स बाहर उछलकर भगोन म वापस जा रहा हो; एक ऐसी दु नया जसम रकाश कसी रकाश-रोत स न नकलकर दीवार स नकल रहा हो जस कस 'रॅप' (गु तव कनर) म जमा कया जा सकगा एक ऐसी दु नया जसम असखय जलकणो क आचयजनक सहयोग स पानी स बाहर उछाला जाकर पतथर का एक टुकडा इनसान की हथली पर आकर फसल गर। फर भी उस दु नया म, जहा समय ऐस वरोधाभासी लषण दशा रहा हो, हमार मसतषक का रकायर और हमारी समृतयो वारा सूचनाओ क सरहण का तरीका भी उलटी दशा म ही कायर करन लगगा। अतीत और भवषय क लए भी यही सच ह और दु नया हम वसी ही दखती रहगी जसीक वह आज दख रही ह। 42

चूक हमारा मसतषक वसतुओ को एक सुवयवसथत तरतीब दकर अपना कायर करता ह, अत: हम यकीन नही कर पात क कोइ दु नया वसी भी हो सकती ह जसा क ऊपर वणस कया गया ह। हम सोचत ह क समय सदा आग की ओर ही बढता ह। परनतु यह नणरय तो हमारा मसतषक लता ह और अत: यह पूणस: एक सापष वषय ह। यद हमार मसतषक म सूचनाओ का रम पीछ की ओर चरत की जा रही कसी फलॅशबक फलम की तरह उलटी दशा म सयोजत कया जाता तो समय भी हम वसा ही रतीत होता। वसी परसथत म हम अतीत का बोध भवषय क ूप म और भवषय का बोध अतीत क ूप म करन लगग, और हमार लए जीवन की अनुभूत वतसान अनुभूत स बलकुल वपरीत हो जाएगी।

वासतव म हम यह नही जान सकत क समय कस आग बढता ह अथवा यह आग बढता भी ह या नही। इस बात स पता चलता ह क समय कोइ नरपष सतय नही ह बलक हमार अनदर एक रकार का बोध मार ह।

समय एक बोध ह, यह तथय 20वी सदी क महानतम भौतक वजानी अलबटर आइंसटीन वारा उनकी पुसतक *"जेनरल थयोरी ऑफ रलेटवटी"* (सापषता क सामानय सधानत) म रमाणत कया गया था। अपनी पुसतक *"द युनवसर ऐंड डॉ. आइंसटीन"* म लंकन बनेट न य बात कही ह:

नरपष 'आकाश' (सथान) क साथ-साथ, आइसटीन न नरपष समय की अवधारणा को भी खारज कर दया -- इस अवधारणा को क एक अपरवतसशील अननत और वववयापी समय-रवाह ह जो अनाद अतीत स नकला ह और अननत भवषय तक चलता चला जाएगा। 'सापषता क सधानत' पर छाए हुए रहसयमयता क आवरण का एक मुखय कारण यह ह क लोग यह मानन को तयार नही ह क रग क बोध की तरह समय का बोध भी एक रकार का आभास ह। जस तरह आकाश पदाथरक वसतुओ की एक सभावय वयवसथा ह, ठीक उसी तरह समय घटनाओ की एक सभावय वयवसथा ह। समय की वषयनठता क बार म सबस अचछी वयाखया सवय आइसटीन क शबो म : "कसी वयत क अनुभव घटनाओ क एक रृखला क ूप म वयवसथत कए हुए-स लगत ह। इस रृखला म व ऐकक घटनाए जनह हम याद कर पात ह व "पहल" और "बाद"

क रम म सुनयोजत की हुइ लगती ह। अत: इस रकार उस क्यत क लए एक 'वशट समय' या एक वषयनठ समय का अस्ततव हुआ करता ह। अपन आप म यह मापय नही ह। परनतु म घटनाओ क साथ सखयाओ का तालमल बठा ल सकता हू -- इस तरह क सखया जतनी बडी होगी वह पूववती घटनाओ की तुलना म बाद वाली घटनाओ स उतना ही अधक समबनधत होगी। 43

आइसटीन क इन शबो स हम यह समझ सकत ह क समय क आग बढन समबनधी अवधारणा एक सशतर दशा ह।

जसा क बनर की पुस्तक म उधृत ह, आइसटीन न स्वय ही इस बात का उल्लख कया ह क "स्थान (आकाश) और समय हमारी अत:ररणा क अग ह जस चतना स वस ही अलग नही कया जा सकता जस क रग तथा आकार-रकार क बार म हमारी अवधारणा को।" 44

"जनरन थयोरी ऑफ रलटवटी" क अनुसार, समय नरपष नही ह। उन घटना-रृखलाओ स अलग जनक आधार पर हम समय को मापत ह, इसका कोइ भी आतम-नभर अस्ततव नही ह।

समय की सापषता को समझन म स्वन हमार लए बहुत ही महतवपूणर हो सकत ह। अपनी सुषुपतावस्था म हम ऐस घटना-रमो का अनुभव पात ह जो मानो कइ दनो तक चल रह हो जबक हकीकत यह ह क हम महज कुछक मनट या कुछ पल का एक सपना दख रह होत ह।

इस और सपट करन क लए, आइए हम एक उदाहरण पर वचार कर। हम एक खास तौर पर तयार कए गए कमर क बार म सोच जसम एक खडकी ह और उस कमर म हम कुछ समय गुजारत ह। कमर म एक घडी भी ह जसस हम समय गुजरन का अनदाज लगा सकत ह। खडकी स हम नचत अतराल पर सूरज को उगत और डूबत दख सकत ह। कुछ दनो क बाद जब हमस पूछा जाता ह क हम उस कमर म कतन समय तक रह तो हमारा उतर उस घडी म दख गए समय और इस बात पर अनुमानत होगा क सूरज कतनी बार उदत और अस्त हुआ। उदाहरण क लए, हम इस सगणना पर पहुचत ह क हमन उस कमर म तीन दन गुजार। परनतु जस क्यत न हम उस कमर म रखा, वह यद यह बताए क वास्तव म हम उस कमर म सफर दो दन रह, क जस सूरज को हम खडकी स दखत थ उस कृरम तरीक स रस्तुत कया गया था और वह घडी भी तज चल रही थी, तो ऐसी स्थत म हमारी काल-गणना का कोइ अथर ही नही रह जाएगा।

इस उदाहरण स यह पता चलता ह क समय कस गत स गुजर रहा ह, इस समबनध म हमारा ज्ञान उन सनदभो पर आधारत होता ह जो उसका बोध करन वाल क्यत क सापष बदल रह होत ह।

यह इस बात का भी उदाहरण ह क कस रकार अलग-अलग प र स्थ तयो म एक ही व्य त समय को लमबा या छोटा समझ सकता ह। एक अनय उदाहरण : कोइ व्य त जो अपन भाइ क ऑपरशन कष स बाहर आन क इतजार म ह, उसक लए एक घटा कइ घटो क बराबर हो जाता ह, परनतु वही इनसान जब अपन कसी पसदीदा काम म मशगूल हो तो उस पता ही नही चलता क समय कस तजी स गुजर गया।

आइस्टीन न अपनी पुस्तक "जनरल थयोरी ऑफ रल ट वटी" म वज्ञा नक री त स यह तथय स्था पत कया ह : समय जस दर स गुजर रहा होता ह उसम कसी पदाथर/व्य त की ग त और गु तव कनर स उसकी दूरी क हसाब स प रवतर्न होता ह। य द ग त बढगी तो समय घटगा, सकुडगा, धीर-धीर बढगा और ऐसा लगगा की न्ष र यता का बदु करीब आ चुका ह।

आइए हम इस आइस्टीन वारा ही वचा रत एक रयोग स समझ। मान लया क दो जुडव भाइ ह। उनम स एक इसी दु नया म रह जाता ह जब क दूसरा लगभग रकाश की ग त स यारा करत हुए अत रष की सर पर चल पडता ह। जब वह अत रष स वापस आएगा तो उस पता चलगा क उसका जुडवा भाइ उसक मुकाबल जयादा बूढा हो चुका ह। इसका कारण यह ह क वह भाइ जो अत रष की यारा पर चला गया था, उसक लए समय का रवाह मनद हो गया था। यही उदाहरण समय की 99 र तशत ग त स अत रष की यारा पर नकल एक पता और धरती पर रह गए उसक पुर क रसग म लागू कया जा सकता ह। आइस्टीन क अनुसार, य द उस समय पता की उर 27 साल और पुर की उर तीन साल रही हो तो जब 30 पा थर्व वषो क बाद पता इस धरती पर लौटगा तो उसकी उर 30 साल और पुर की उर 33 साल की हो चुकी रहगी। 45

समय की सापष ता का समबनध कवल घडी क तज या मनद चलन स नही ह। इसका मूल इस तथय म न हत ह क हर पदा थर्क र णाली -- अपन कणीय स्तर स लकर परमा णवक स्तर तक -- ग त की अलग-अलग दरो पर र याशील होती ह। एक ऐस वातावरण म जहा समय की ग त मनद होगी, व्य त क दल की धडकन, को शकीय वभाजन क दर और म स्तषक क रकायर म भी मनदता आएगी। ऐसी प र स्थ त म वह व्य त अपन रोजमरा क कायर्कलाप बना यह जान करता चला जाएगा क समय की ग त मनद हो गइ ह।

समय की सापेष ता समबनधी अवधारणा 'कुरान' में र क टत है

जसा क हमन पछल पननो म व णर्त कया ह, समय नरपष सतय नही ह; आधु नक वज्ञान क ष र म हुइ नवीनतम खोजो स यह बात अब न चत ू प स पुट हो चुकी ह क यह एक सापष बोध ह। आचयर की बातह क वज्ञान वारा 20वी शताब्दी म खोज गए इस तथय का रकटीकरण 'कुरान' म आज स 1400 वषर पूवर कया गया था।

उदाहरण क लए, अनक आयतो म यह सकत दया गया ह क जीवन बहुत ही छोटा ह। लगभग 60 साल का एक मानव-जीवन इतना छोटा माना गया ह मानो दन का एक घटा।

उस दवस में जब वह तुमहें बुलाएगा, तुम उसका गुणगान करते हुए रतयुतर दोगे और सोचोगे क तुम वहां बहुत ही अलप काल तक ठहरे थे। (सूरा अल-इर : 52)

जस दवस में हम उन सबको एकसाथ एकरत करेंगे -- जब यह लगेगा क वे दन के एक घंटे से अधक वहां नहीं ु के थे – वे एक-दूसरे को पहचान लेंगे। (सूरा यूनुस : 45)

अनय आयतो म यह रकट कया गया ह क लोग जतना समझत ह, समय उसस कही जयादा छोटा ह:

वह कहेगा : "तुम कतने समय तक धरती पर रहे?" वे जवाब देंगे : "हम वहां एकदन या दन के कुछ हससे तक ु के थे। उनसे पूछो जनहें गनती आती है!" वह कहेगा : "तुम वहां बस कुछ पल ठहरे थे, काश क तुम जान पाते!" (सूरा अल-मुमीनन : **112-114**)

कुरान की अनय आयतो म कहा गया ह क समय अलग-अलग आयामो म अलग-अलग दर स गुजरता ह। उदाहरण क लए, यह बात रकट की गइ ह क अललाह की नगाह म जो एक दन ह वह हजार सालो क बराबर ह। (सूरा अल-हज : 47)। अनय आयतो म भी ऐसी बात कही गइ ह :

फरशते और 'चेतना' एक दन में उसके करीब पहुंचते है जोक पचास हजार सालों जतना लमबा है। (सूरा अल-म'आरज : 4)
वह समसत कायो को सवगर से धरती की ओर नदेशत करता है। फर ये सब पुनः उसके पास वापस लौट जाएंगे, उस दवस में जसकी अवध तुमहारे पैमाने के हसाब से हजार सालों की होगी। (सूरा अस-सजदा : 5)

'कुरान' म रयुत अनक आयतो की कथन-शली स यह साफ झलका दया गया ह क समय एक रतीत ह, बोध ह। उदाहरण क लए, अललाह कतपय अनुयाययो (गुफा क सहचर) क बार म बतात ह जनह उनहोन 300 वषो स भी अधक समय क लए गहन नरा म सुला दया था। बाद म जब अललाह न उनह जगाया तो उन लोगो को लगा क व बहुत ही कम समय क लए सोए थ। व अनुमान ही नही लगा सक क व कतन समय तक नीद म थ।

इसलए कइ सालों तक हमने उनहें एक गुफा में सुलाकर उनके कानों को रवण-शूनय बना दया। फर यह जानने के लए क उनमें से कौन सा दल अपने वहां ु कने के समय की सही गणना कर सकता है, हमने उनहें जगाया। (सूरा अल-काफ : **11-12**)

जब हमने उनहें जागृत कया तो ऐसी सथत थी क वे एक-दूसरे से सवाल कर रहे थे। एक ने पूछा: "तुम कतने समय से यहां रहे हो?" उनहोंने कहा : "हम यहां एक दन या दन के एक अंश भर रहे"। उनहोंने कहा : "तुहारा रभु ही बेहतर जानता है क तुम यहां कबतक रहे ...." (सूरा अल-काफ : 19)

नीच उधृत आयत म जस सथत को सकतत कया गया ह, वह इस बात का एक महतवपूणर रमाण ह क समय एक मनोव ञानक बोध ह :

या वह जोक एक वनट शहर से होकर गुजरा? उसने पूछा : "भला अललाह इसे फर से जनदगी कैसे दे सकते है जबक यह मर चुका है? अललाह ने उसे सौ साल तक मृत बने रहने दया और फर उसे नइ जनदगी दी। तब अललाह ने पूछा: "तुम यहां कबतक ्के रहे?" उसने जवाब दया : "मै यहां एक दन या दन के एक अंश तक ठहरा"। अललाह ने कहा : "ऐसा नहीं! तुम यहां सौ साल तक रहे। अपने खाने-पीने के सामान देखो। क्या वे सड-गल नहीं गए है? और अपने गधे को तो देखो -- ताक हम तुमहें समसत मानवजात के लए अपना चन बना सकें। उन हडयों को देखो -- क कैसे हम उनहें फर से खडा करते है और उनहें मांस-मजजा का परधान पहनाते है।" जब यह सारी बात उसके समष सपट हो गइ तो उसने कहा : "अब मै यह जान गया हूं क अललाह हर वसतु के ऊपर सवसामथयशाली है।" (सूरा अल-बकरा: 259)

जसाक हम दख चुक ह, इन आयतो स यह सपट हो जाता ह क समय सापष ह, नरपष नही। अथात समय बोधकता क बोध क अनुसार बदलता रहता ह। इसका ऐसा कोइ ठोस असततव नही ह जोक बोधकता स पर अपन आप म टका रह सक।

समय का सतय हमें भागय के सतय के बारे में बताता है

जसाक हमन समय की सापषता क ववरण और उसकी ओर सकतत करन वाली आयतो स समझा ह, समय कोइ ठोस अवधारणा नही ह बलक एक ऐसी चीज ह जो हमार बोध म हुए परवतस पर नभर ह। उदाहरण क लए, कोइ ऐसा काल-खड जस हम लाखो-लाख साल की अवध का मान रह हो, अललाह क नजरय स बस एक पल मार ह। हमार लए जो 50 हजार साल का दौर ह वह गरएल तथा फरशतो क लए एक दन स जयादा कुछ नही।

भागय या नयत सबधी अवधारणा को समझन क लए यह वासतवकता बहुत ही महतवपूणर ह। भागय समबनधी अवधारणा यह ह क अललाह न भूत, भवषय और वतसान की हर एक घटना को 'एक ही षण' म रच डाला ह। इसका यह अथर ह क सृट रचना-काल स लकर 'नयत दवस' तक की हर एक घटना अललाह की नजर म पहल ही घटत और समापत हो चुकी ह। बहुतर लोग भागय या नयत समबनधी इस यथाथर को नही समझ सकत। व यह नही समझ सकत क जो घटनाए अभी घटत भी नही हुइ ह, व अललाह को कस मालूम ह या यह

क भूत और भ वषय की बात भला कस अल्लाह की नजर म पहल ही घ टत हो चुकी ह। य द हम अपन दृ टकोण स सोच तो जो बात अभी तक नही हुइ ह व ऐसी घटनाए ह जो अभी तक घ टत नही हुइ ह। ऐसा इस लए ह क्यो क इ वर न हम एक समय क सापष जीन क लए रचा ह और हम तबतक कुछ नही जान सकत जबतक हमार जहन -- हमारी स्मृ त -- म उसकी सूचना अ कत न हो जाए। चू क हम इस ससार म एक अ ग न-परीष ा क मुकाम पर ह, अत: इ वर न हम उन चीजो की स्मृ त ही नही दी ह जनह हम "भ वषय की घटनाए" कहा करत ह। अत: हम यह जान ही नही सकत क भ वषय क गभर म क्या ह। परनतु अल्लाह स्वय इस समय या स्थान क दायर स बध हुए नही ह, क्यो क उनहोन स्वय ही इन चीजो की रचना की ह। इसी कारण, इ वर क लए क्या अतीत, क्या वतर्मान और क्या भ वषय -- सब एक बराबर ह। उनक दृ ट स हर चीज पहल ही घ टत हो चुकी ह। उनह कसी भी कायर क प रणाम क लए इतजार करन की जू रत नही ह। कसी भी घटना का आ द और अत एक ही पल म उनक लए अनुभवगमय ह। उदाहरण क लए, फराओ का अत कस होगा, यह बात इ वर को उसस भी पूवर मालूम था जब उनहोन हजरत मूसा को उसक पास भजा भी नही था, या जब हजरत मूसा पदा भी नही लए थ और यहा तक क मर (इ जप ट) नामक राज्य भी नही बना था -- और फराओ क अत समत य तमाम बात इ वर की नगाहम एक ष णमार म ही घ टत हो गइ। एक और बात यह ह क इ वर क लए अतीत क स्मरण जसी कोइ बात नही ह। भूत और भ वषय दोनो ही अल्लाह क सामन वतर्मान ह, हर चीज एक ही ष ण म मौजूद ह।

य द हम अपन जीवन क बार म इस तरह वचार कर मानो वह एक फल्म की रील हो तो हम उस मानो ऐस दख रह होत ह क जस हम कोइ वी डयो कसट दख रह हो जसम फल्म की ग त आग की ओर खसकाइ न जा सक। परनतु इ वर की नजर स, वह इस पूरी फल्म को एक ही ष ण म पूरी समरता स दख रह होत ह। आ खर उनहोन ही तो इस रचा और इसक सार वस्तार सु न चत कए! जस हम कसी ूलर का आ द, मधय और अत एक ही ष ण म दख सकत ह, वस ही हम जस समय क साप ष जी रह होत ह उसक आ द, मधय और अत समत उसकी समपूणर इयता को इ वर एक ही नगाह म माप लत ह। परनतु मनुषय उन घटनाओ का अनुभव सफर तभी पा सकता ह जब अल्लाह वारा मुकरर तकदीर क घ टत होन का वत आता ह। ससार म हर कसी की नय त का यही एक रास्ता ह। इस लोक या उस लोक म हर कोइ जस रचा गया ह, जनह रचा जाएगा, उनकी जनदगी एक खुली कताब की तरह अल्लाह की नजर क सामन ह। इ वर न अपनी स्मृ त स असखय मानव-रा णयो क साथ-साथ सभी सचतन वस्तुओ -- रहो, पड-पौधो और वस्तुओ -- का रारब लख दया ह। व बना लुप त और वनट हुए अ कत रहग। नय त का यह यथाथर इ वर की असीम महानता, उनकी श त और सामथ्यर क राकटयो म स एक ह। तभी तो परमातमा को "सरष क" (अल-हा फज) कहा जाता ह।

"भूतकाल" की अवधारणा हमारे म स्तषक में अं कत सूचना से उतपनन होती है

हम जो सकत रा पत होत रहत ह उनक आधार पर हम यह सोच लत ह क हम भूत, वतर्मान और भ वषय जस अलग-अलग काल-खडो म जी रह होत ह। परनतु (जसा क पहल बताया जा चुका ह), भूत या अतीत समबनधी हमरी अवधारणा का एकमार कारण यह ह क हमारी स्मृ तओ म अनक बात स चत ह। उदाहरण क लए, जस

षण रायमरी स्कूल म हमारा दाखला हुआ था वह हमार जहन म बसी हुइ एक यादगार ह और इसीलए हम अतीत की एक घटना क ू प म इस याद कर पात ह। परनतु भवषय की घटनाए हमारी स्मृत म नही ह। यही कारण ह क हम उनह ऐसी वस्तुओ क ू प म जानत ह जनक बार म हम कुछ भी ञात नही ह या ऐसी बात जनका अनुभव भवषय म उनक घटत होन पर होगा। परनतु जस तरह अतीत का अनुभव हम अपन नजरय स मला ह, वस ही भवषय का भी मलगा। तथाप, चूक य घटनाए हमारी स्मृत क दायर म नही रखी गइ ह, हम उनका ञान नही हो सकता।

यद इवर भवषय की बातो को हमारी स्मृत म डाल द तो भवषय हमार लए अतीत बनकर रह जाएगा। उदाहरण क लए, एक तीस साल क व्यत की स्मृत म तीस साल की याद और घटनाए सचत ह और इसी कारण स वह सोचता ह क उसक पास तीस साल का अतीत ह। यद उस व्यत की स्मृत म तीस साल स लकर सतर साल तक की भावी घटनाए डाल दी जाती तो फर इस तीस साल क व्यत क लए उसक अबतक क तीस साल और तीस स लकर सतर साल तक का "भवषय" बस अतीत बनकर रह जाएग। ऐसी स्थत म भूत और भवषय दोनो ही उसकी स्मृत म होग और दोनो ही उसक लए भोग हुए अनुभव बन जाएग।

चूक इवर न हमारी सृट इस रकार की ह क हम घटनाओ को एक सुनचत रृखला क ू प म दख-समझ -- इस तरह मानो समय का रवाह अतीत स भवषय की ओर जा रहा हो -- अत: व हम भवषय की कोइ सूचना नही दत और न ही हमारी स्मृत म इसका कोइ ञान भरत ह। भवषय हमार जहन म नही ह परनतु अल्लाह की चरनतन स्मृत म मानव जात क समस्त अतीत और भवषय समाहत ह। जसाक हमन पहल कहा, यह मानव जीवन को इस रकार दखन क समान ह मानो एक फल्म क अनदर उसका पूरा-पूरा वणस और समापन हो चुका हो। जो व्यत फल्म की रील को आग नही बढा सकता, वह अपन जीवन को एक-एक करक बढत हुए रम क ू प म दख रहा होता ह। उसका यह सोचना रम स भरा ह क जो रम अभीतक वह नही दख पाया ह, उसम भवषय का समावश ह।

भूत और भवषय 'अदृशय' के समाचार है

आयतो म अल्लाह न इस सचचाइ की झलक दखाइ ह क जो कुछ भी गुपत, अदृशय, अनदखा और अनजाना ह उस जानन वाल अल्लाह स्वय ह:

> कहो : "हे अल्लाह! स्वगर और धरती के रजनक, दृशय और अदृशय के ञाता, तुमहारे सेवकों के बीच कौन कहां भटक गया था, तुम ही हो वह जो इन बातों का फैसला करेगा।" (सूरा अज-जुमार : **46**)
>
> कहो: "मृतयु, जससे तुम भागे फर रहे हो, नस्संदेह तुमहें आ घेरेगी। उसके बाद तुम वापस कर दए जाओगे उसके पास जो ञाता है दृशय और अदृशय वस्तुओं का और वह तुमहें बताएगा क तुमने कया कमर कए।" (सूरा अल-जुमु'आ : **8**)

उसने कहा : "हे आदम! उनहें उनके नाम बताओ।" जब उसने उनके नाम बताए, तो उस (अल्लाह) ने कहा : "क्या मैने तुझसे नहीं कहा था क मै स्वगो और धरती की अदृशय बातों को जानता हूं, और जानता हूं वह जो तूने जनाया है और वह जो तूने छुपा रखे है?" (सूरा अल-बकरा : 33)

आमतौर पर "गुपत" शब स हमारा अभराय ऐसी बातो स होता ह जो भवषय स समबनधत अनजानी बात ह। व लोग जो अतीत म अपना जीवन बता चुक ह और जो लोग भवषय म अपना जीवन जएग -- व दोनो ही इवर की नगाह म ह। तथाप, इवर अपनी दृट म समाहत कुछ ञान लोगो क जहन म भी भर दत ह और उस ञात बना दत ह। उदाहरण क लए, जब 'कुरान' म अल्लाह न अतीत क बार म अपना ञान रदान कया तो उनहोन पगमबर मुहममद स कहा (अल्लाह उनह आशीवाद द और शात रदान कर) क यह उस 'अदृशय' का समाचार ह:

यह कुछ उस 'अदृशय' के समाचार है जो हम तुमहारे सामने रकट करते है। आज से पहले इनहें न तो तुम जानते थे और न ही तुमहारे ये लोग। अत: दृढ बनो। आखरी सुसमाचार उनके लए है जो अपना कतव्य नभाते है।" (सूरा हुद : 49)
यह 'अदृशय' का समाचार है जो हम तुमहारे सामने रकट कर रहे है। तब तुम उनके साथ नहीं थे जब वे उनहोंने अपनी योजना सुनचत की और अपने षडयंर का ताना-बाना तैयार कया।" (सूरा यूसुफ : **102**)

अल्लाह न पगमबर मुहममद को (अल्लाह उनह आशीवाद द और शात रदान कर) कुछ ऐसी बातो का भी ञान दया जो उस समय तक घटत नही हुइ थी और जो भवषय क समबनध म 'अदृशय' क समाचार थ। उदाहरण क लए, मकका का अधरहण (कुरान, 48:27) तथा नास्तको क ऊपर यूनानयो वारा रापत वजय (कुरान, 30: 3-4 जसी घटनाओ का खुलासा मुहममद साहब (अल्लाह उनह आशीवाद द और शात रदान कर) क सामन उनक घटत होन स पूवरही कर दया गया था। पुनुतथान और रलय क दवस (जो उस समय क लोगो क लए अदृशय स रापत समाचार थ) क सकतो क बार म पगमबर (अल्लाह उनह आशीवाद द और शात रदान कर) वारा कही गइ बात यह रमाणत करती ह क इन बातो का ञान उनह इवर स रापत हुआ था।

कुरान म इस बात की व्याखया की गइ ह क अदृशय क समाचार पगमबर तथा कुछ रधालु भतो को दए जात ह। जसक, जोसफ (यूसुफ) क समष यह रकट कया गया था क उसक भाइयो वारा उसक लए बछाया गया जाल व्यथर सध होगा (कुरान, 12: 15) और हजरत मूसा की मा क सामन भी यह बात रकट की गइ थी क उसका बटा फराओ क नमस चर स बच नकलगा और एक इवर-दूत बनगा।

अतत:, व तमाम चीज जनह हम भूत और भवषय का नाम दत ह, अल्लाह की नजर म छुप हुए अदृशय क समाचार ह। जनह भी इवर चाहता ह, जस समय भी चाहता ह, इनम स कुछ ञान उनक जहन म डालता ह

और इस रकार उनह वह परमवर कुछ अदृशय बातो स अवगत करा दता ह। दूसरी ओर, व घटनाए जनह दखा जा सकता ह, उनह लोग अतीत की घटनाओ क ू प म प रल ष त मानत ह।

भाग य के र त सम पस होने का महतव

यह तथय क अतीत और भ वषय दोनो ही अल्लाह की नजरो म पहल स ही रच दए गए ह, और यह क उसकी दृ ट म सबकुछ घ टत हो चुका ह और मौजूद ह, एक बहुत ही महतवपूणर सतय को रकट करता ह। हर कोइ पूणस: अपन भाग य क र त सम पस ह। जस कोइ व्य त अपन अतीत को नही बदल सकता, वस ही वह अपन भ वषय को भी नही बदल सकता; कयो क अतीत की ही तरह भ वषय भी घ टत हो चुका ह। भ वषय की हर बात तय हो चुकी ह -- घटनाए कब और कहा घ टत होगी, वह कया खाएगा, कन लोगो स बात करगा, कन बातो पर चचा करगा, कतना धन कमाएगा, उस कौन सी बीमा रया घरगी, और कब, कहा और कस वह एक दन मर जाएगा -- य सभी बात अल्लाह की नजर म पहल स मौजूद ह और उनकी स्मृ त म अनुभूत हो चुकी ह। परनतु यह ज्ञान उस व्य त की स्मृ त म अबतक नही ह।

अत: व लोग जो भ वषय को लकर खनन ह, हताश, उत जत और च नतत ह, व नाहक ही परशान हो रह ह। जस भ वषय को लकर व उतन च नतत और परशान ह वह तो पहल ही घ टत हो चुका ह, और व चाह जो कर ल, व इन बातो को बदल नही सकत।

इस बदु पर आकर यह उल्लख कर दना बहुत ही जू री ह क भाग य क समबनध म र मत ज्ञान पालन स बचना बहुत आवशयक ह। कुछ लोग इस बात का गलत अथर नकालत हुए यह सोचत ह क जो कुछ भी नसीब म लखा ह वह होकर ही रहगा, अत: उनह करन क लए बचा ही कया ह? हाला क यह सच ह क हम जन बातो का अनुभव कर रह होत ह व हममर भाग य म तय ह। हमार वारा कसी भी घटना का अनुभव पाए जान स पूवर वह अल्लाह की नजर स गुजर चुका ह और उनकी नगाह म उसक सार ववरण 'मातृर थ' (लौह महफूज) म लख जा चुक ह। परनतु अल्लाह हर कसी को यह चतना भी दत ह क वह चाह तो चीजो को बदल सकता ह और अपन नजी नणय, अपनी नजी पसनद स कायरकर सकता ह। उदाहरण क लए, जब कोइ व्य त जल पीन की अ भलाषा रखता ह तो वह यह नही कहता क "अगर कस्मत म होगा तो पी लूगा" और बना कुछ कए बठ जाता ह। इसक बदल, वह उठता ह, ग लास लता ह और पानी पीता ह। वास्तव म, वह पहल स तय कए गए ग लास म पहल स तय की गइ मारा म पानी पी रहा होता ह। परनतु चू क उसन रयास कया ह, अत: वह समझता ह क वह अपनी इच छा-श त स कायरकर रहा ह। अपन पूर जीवन म वह जो कुछ भी करता ह, उन सब बातो म वह ऐसा ही समझ रहा होता ह। कोइ व य त जो इवर और उनक वारा नधा रत भाग य क र त सम पस ह उसम और उस व्य त म जो इस सचचाइ को नही समझ पाता, यह अनतर ह : जसन स्वय को इवर क समष सम पस कर दया ह, यह जानता ह क वह जो कुछ भी कर रहा ह वह इवर की इच छा क अनुसार ह भल ही उसका 'कता ' वह स्वय हो। दूसरा व्य त र मत होकर यह मान लता ह क सबकुछ उसन अपनी ही बु ध और ताकत स की ह।

उदाहरण हतु, वह व्यत जसन स्वय को अल्लाह क सामन समपर्स कर दया ह, जब उस पता चलता ह उस एक बीमारी न घर लया ह, वह समझता ह क वह व्याध उसकी कस्मत म थी और वह इवर म अपनी आस्था रखता ह। वह सोचता ह क चूक यह बीमारी उसक भागय म अल्लाह की मजी स ह, अत: इसम भी कुछ भला होगा। परनतु इसका यह मतलब नही क वह कोइ उपाय कए बना बठा रह जाता ह, यह सोचकर क अगर स्वस्थ होना कस्मत म लखा ह तो वह अपन आप हो जाएगा। इसक वपरीत, वह हरसभव सावधानी बरतता ह, डॉक्टर क पास जाता ह, अपन आहार-वहार पर धयान दता ह और दवा भी लता ह। परनतु वह यह नही भूलता क डॉक्टर, उपचार, दवा और उसका स्वस्थ होना या ना होना सब उसक रारब्ध की बात ह। वह जानता ह क य सारी बात इवर की स्मृत म ह और तब भी थी जब वह इस दुनया म आया भी नही था। 'कुरान' म अल्लाह न रकट कया ह क मानव जन बातो का भी अनुभव कर रहा होता ह, वह सबकुछ एक रथ म पहल ही लखा जा चुका ह :

> धरती पर या तुमहारे अनततस में ऐसा कुछ भी नहीं घटत होता जसे घटत होने देने से पहले हमने एक रंथ में अंकत नहीं कया हो। अल्लाह के लए यह बडा ही सरल है। ऐसा इसलए है ताक तुम उन वस्तुओं का शोक न मनाओ जनहें तुम नहीं पा सके और जो चीजें तुमहें हासल है उनपर गुमान न करने लगो। अल्लाह कसी भी अभमानी और शेखी बघारने वाले इनसान को पसनद नहीं करता।" (अल-हदीद : 22-23)

इसी कारण, भागय म यकीन करन वाला कोइ भी व्यत अपन साथ घटत होन वाली बातो स सतपत और व्यथत नही होगा। इसक वपरीत, इवर क रत अपन समपर्ण म उसका अटूट ववास होगा। व्यत क साथ जो भी घटत होना ह, वह इवर न पहल स तय कर दया ह और हम यह आज्ञा दी ह क हमपर जो बीत हम उनक कारण शोक न कर, और उन वरदानो स सतुट रह जो हम रापत हुए ह। मनुषयो वारा जन सकटो का अनुभव कया जाता ह और साथ ही वह धन-समपदा जो उनह रापत ह, इवर वारा पूवर्नधारत ह। य सभी चीज हमार रभु वारा हमार लए तय की गइ ह ताक लोगो की परीषा ली जा सक। जसाक एक आयत म रकटत ह : "....अल्लाह की आज्ञा एक पहले से तय नणर्य है।" (सूरा अल-अहजब : 38)

एक अनय आयत म, अल्लाह न यह रकट कया ह क: "हमने सभी चीजों की रचना एक समुचत माप से की है"। (सूरा अल-कमर : 49)

कवल मानव मार नही, बल्क सभी चतन-अचतन वस्तुए, सूरज, चाद, पहाडो और पड-पौधो क लए भी इवर वारा एक तकदीर मुकरर कर दी गइ ह। उदाहरण क लए, एक राचीन कलातमक गुलदस्ता का टूट जाना भी भागय वारा नचत षण म ही हुआ ह। जब उस गुलदस्त को बनाया जा रहा था तो यह तय हो चुका था क इस सदयो पुरान गुलदस्त का उपयोग कौन करगा और साथ ही यह भी क उस कस घर क कस कोन म जगह दी जाएगी,

इसक साथ और कौन सी वस्तुए रखी जाएगी। गुलदस्त का रग और ूपाकार सब उसक रारब्ध म लख दया गया था। इवर की स्मृत म यह भी ज्ञात था क कस दन, कस घडी, कतन मनट पर, कसक वारा और कस उस तोड डाला जाएगा। वह रथम षण जब उस गुलदस्त को बनाया गया था, वह रथम पल जब इस बचन क लए खडकी पर रखा गया था, वह पहली घडी जब उस घर क कोन म सजाया गया था, वह षण जब वह टूट कर बखर गया; सषप म कहा जाए तो सदयो पुरान उस गुलदस्त क जीवन का हर षण इवर की दृट म एक ही समय मौजूद था। हालाक उस गुलदस्त को तोडन वाल व्यत को भी पल भर पहल यह नही मालूम था क वह उस तोड डालन वाला ह, परनतु इवर की दृट म उस षण का अनुभव हो चुका था। इसी कारण इवर मानव स यह कहत ह क व उन चीजो क लए दुखी न हो जो उनह रापत नही हो सक। जो चीज उनह रापत नही हो सकी व अपन भागय क कारण उनक पास आन स वचत रह गइ और इस व बदल नही सकत। जो कुछ भी भागय म घटत होता ह, उसस लोगो को सबक लना चाहए और यह दखना चाहए क इसस उनह क्या लाभ मला ह, कौन सा उदशय पूरा हुआ ह? उनह इवर की असीम कुणा, नयाय और दया की याचना करनी चाहए, जसन उनक भागय को रचा ह और जो अपन सवको की सदव रषा करता ह।

जो लोग इस महतवपूणर सतय की उपषा करक अपना जीवन बतात ह, व हमशा चनतत और भयभीत बन रहत ह। जस यह क उनह अपन बचचो क भवषय की चनता सताती ह। व ऐस सवालो स परशान रहत ह: व कौन स स्कूल म जाएग? व कौन सा व्यवसाय चुनग? क्या उनका स्वास्थय ठीक रहगा? उनका जीवन कसा होगा? परनतु व्यत क जीवन का हर पल इवर की दृट म तय हो चुका ह -- तभी स जबक वह एक कोशका का राणीमार था और तबतक जबक वह लखना-पढना सीख जाता ह, जब ववयालय की परीषा म वह अपना पहला रनपर हल करता ह तब स लकर अपन जीवन भर वह जस कसी कमपनी म काम करगा, कौन स दस्तावजो पर उसक हस्ताषर होग और कतनी बार, तथा कहा और कस उसकी मृतयु हो जाएगी -- य सभी चीज इवर की स्मृत म नगूढ ह। उदाहरण क लए, ऐन इसी वत कोइ चतना अपनी ूणावस्था म ह, और वही रायमरी स्कूल और ववयालय म भी। व सब बस एक ही षण म इवर की स्मृत म मौजूद ह -- साथ ही व षण भी जब वह अपना पतीसवा ज्नमदन मना रहा होगा, जब पहल-पहल वह अपन काम पर गया होगा, वह षण जब मरन क बाद वह फरशतो को दखता ह, जब उस दफनाया जाता ह, और नयाय दवस का वह षण जब वह परमातमा को अपना लखा-जोखा दगा।

अत: एक ऐस जीवन क बार म चनतत और भयातुर होना व्यथर ह जसका हर षण पहल ही परमवर की स्मृत म जया जा चुका ह, अनुभव कया जा चुका ह और जो अभी भी उनकी स्मृत म अकत ह। कोइ व्यत चाह जतना भी रयास कर ल, चाह वह जतना भी चनतातुर हो ल, उसक बचच, जीवन साथी, दोस्त और सग-समबनधी वही जीवन जएग जो इवर की दृट म मौजूद ह।

जब ऐसी बात ह तो वह व्यत जसक पास बुध और अत:करण ह और जो इस यथाथर को समझता ह वह

स्वय को वनरतापूवक इवर और उनक वारा रचत रारब्ध क आग सपपस हो जाता ह। वस्तुत: हर कोइ इवरक र त पहल ही स समपरत ह और उस रभु की दासता रहण करन क लए ही रचा गया ह। वह इस चाह या न चाह कनतु उस इवर वारा रच दए गए भागय क र त समपस होकर ही जीना पडता ह। यद कोइ क्यत अपन भागय स इनकार करता ह तो भी इसलए क्योक इनकार करना ही उसका नसीब ह।

जो स्वचछा स इवर क र त समपस होत ह व इवर की कृपा और दया तथा स्वगररापत करन की आशा कर सकत ह; व इस लोक तथा परलोक दोनो म सुरषा और रसननता क साथ एक कल्याणमय जीवन जएग। ऐसा इसलए कयोक वह क्य त जो यह जानत हुए स्वय को इवर क आग समपस कर दता ह क इवर वारा रचत भागय स बहतर उसक लए और कुछ भी नही हो सकता, उसक लए शोक और चनता का कोइ रन ही नही रह जाता। हालाक वह क्यत हरसभव रयास करगा कनतु वह जानगा क य रयास भी उसक रारब्ध म अकत थ और वह चाह जो भी कर ल, उस भागय क लख को बदलन की शत नही ह।

आस्थावान क्यत इवर वारा रचत भागय क र त समपस होगा। उसक साथ जो कुछ भी घटत होगा, वह उनक घटत होन क उदशय को समझना चाहगा, सावधानी बरतगा और हालात बहतर बनान क रयास करगा। परनतु उस इस ततव-ञान स तसल्ली मलगी क यह सबकुछ भागय क अनुसार ही फलत होत ह और इवर न उसक लए जो सवाधक लाभदायक ह, उसका वधान पहल ही स कर रखा ह। इसक एक उदाहरण क ूप म, 'कुरान' म जकब वारा अपन बचचो की सुरषा क लए उठाए गए कदमो का जर कया गया ह। अपन पुरो को दुट लोगो क इरादो स आगाह करन क लए जकब न अपन पुरो को हदायत दी क व अलग-अलग दरवाजो स नगर म रवश कर परनतु उसन उनह यह भी याद दलाया क इस बात स अल्लाह वारा नधारत भागय पर कोइ असर नही होन वाला ह।

> उसने कहा: "मेरे बचचों! तुम सब एक ही दरवाजे से रवेश मत करना। अलग-अलग दरवाजों से जाना। परनतु मै तुमहें अल्लाह से कतइ नहीं बचा सकता, क्योंक नयाय और कहीं से नहीं सफर अल्लाह से आता है। मै उनहीं में अपना भरोसा रखता हूं और जो कोइ भी भरोसा रखे, अकेले अल्लाह में ही भरोसा रखे।" (सूरा यूसुफ : 67)

लोग चाह जो मजी हो कर सकत ह परनतु व अपनी नयत को बदल पान म कभी भी कामयाब नही हो सकग। यही बात इस आयत म रकट की गइ ह :

> तब उसने, उस वपत के बाद, सुरषा भेजी, तुमहारी एक टोली को चैन की नींद मयस्सर हुआ जबक दूसरी टोली चनता भरे वचारों से आरानत हो गइ क्योंक वे अल्लाह की हकीकत के सवा अनय खयालों में डूब गए -- उन खयालों में जनका समबनध 'अञान की बेला' से था – यह कहते हुए क "क्या इस मामले में हमारा

कोइ भी नणरय है?" कहो: "मामला पूणरस: अल्लाह का होता है। जो बातें वे तुमहारे सामने रकट नहीं करना चाहते उनहें वे अपने ही अनदर छुपाए हुए है, और कह रहे है: "काश यद इस मामले में हमारा कोइ भी जोर चलता तो इस जगह हममें से कोइ भी नहीं मारा जाता"। कहो: यद तुम अपने घरों के भीतर भी होते तो भी वे लोग जनके लए हतया का फरमान जारी कर दया गया है, अपनी मौत के मुकाम पर गए होते। ताक अल्लाह यह परख सके क तुमहारे दलों में कया छुपा है और तुहारे हृदय के वकारों को साफ कर सके। अल्लाह को मालूम है क तुमहारे हृदय में कया है। (सूरा अल-इमरान : 154)

इस आयत म इस बात का उल्लेख कया गया ह क अगर कोइ वयत मृतयु स बचन क लए अल्लाह वारा नयोजत कसी कायरस बच नकलना भी चाह, परनतु यद उसकी मौत उसक भागय म लखी ह तो वह कसी न कसी तरह मरगा ही। यहातक क मौत स बचन क लए अखतयार कए गए तरीक भी उसक भागय म ही अकत होत ह और जो कुछ भी भागय म बदा ह उस हर कसी को भोगना ही पडता ह। और इस आयत म इवर मनुषय क सामन यह रकट करत ह क उनक भागय म लखी गइ बातो का उदशय उनकी परीषा लना और हृदय को सवचछ बनाना ह। कुरान म कहा गया ह क हर कसी की मौत अल्लाह की नजर म तयशुदा ह और गभरम शशु का पदापरण भी इवर की आजा स ही होता ह :

अल्लाह ने तुमहें धूल से नमरस कया और फर वीयरकी एक बूंद से और फर तुमहारी जोडयां बनाइं। अल्लाह के जाने बना कोइ भी सरी गभरधारण नहीं कर सकती या कसी शशु को जनम दे सकती है। और कोइ भी राणी एक 'रंथ' में अंकत रारबध के बना न तो जयादा जीवत रह सकता है न कम। अल्लाह के लए यह आसान है। (सूरा फातर : 11)

नमनलखत आयतो म यह रकट कया गया ह क वयत अपन जीवन म जो कुछ भी करता ह वह वाकय-दर-वाकय अकत ह और व सवगरम जन सुखो को भोगत ह व भी पहल ही भोग जा चुक सुख क वषय ह। जसाक हमन पहल ही कहा ह, सवगरका वासतवक जीवन हमार लए भवषय म ह। परनतु व जो सवगरम ह उनक वातालाप और आननद इवर की समृत म इसी षण वयमान ह। हमार जनम लन स भी पूवर, इस लोक और परलोक म मानव जात का भवषय एक ही षण म इवर की दृट म अनुभव कया जा चुका ह और वह अनुभव इवर की ही समृत म सचत ह।

उनहोंने जो कमर कए वे रंथ में अंकत है।
बडा या छोटा हर बात अंकत है।
वे जो सजग लोग है, सवरसषम सावरभौम रभु के सतसंग में
सवगरक उयानों और सरताओं के मधय रतठत आसनों पर वराजमान है।
(सूरा अल-कमर : 52-55)

कुरान की इस कथन-शली स हम यह समझ सकत ह क इवर की दृट म समय एक ऐ ेकक षण ह और उनक लए अतीत और भ वषय नाम की कोइ चीज नही ह। जसा क हमन दखा, ऐसी बहुत सी घटनाए जो हमार लए भ वषय म घ टत होन वाली ह उनह कुरान म बहुत पहल बीत चुकी घटनाओ क ू प म दखा गया ह। ऐसा इस लए ह कयो क अतीत और भ वषय दोनो का ही सृजन इव र वारा एकल षण म कया गया ह। अत: कोइ घटना जो भ वषय म घ टत होन वाली ह, वह वास्तव म पहल ही घ टत हो चुकी ह, कनतु यह बात न समझ पान क कारण हम उनका दशस भ वषय क ू प म करत ह। उदाहरण क लए, क तपय आयतो म जहा मनुषय वारा अल्लाह क समष लखा-जोखा दन की बात कही गइ ह, उस सुदूर अतीत की एक घटना क ू प म समझा गया ह :

और तुरही बजाइ गइ, और वे सब के सब जो स्वगर में है और जो धरती पर वे मूर्च्छत हो जाते है, सवाय उनके जो अल्लाह की मजी से बच जाते है। फर यह दूसरी बार बजाइ जाती है, और देखो वे कैसे उठकर इंतजार कर रहे है! और धरती अपने र भु के रकाश से चमक उठी, और रंथ तैयार है, पैगमबरों और गवाहों को बुलाया जा चुका है, और सतय की तुला पर उनके बीच न णय कया जाता है, और उनके साथ कोइ छल नहीं कया जाता। हर व्य त ने जो कमर कए उसका पूरा मुआवजा उसे दया जाएगा। अल्लाह उनके कमो को बेहतर जानता है। वे जो अ ववा सी थे, अपने दल-बल के साथ दोजख में धकेल दए जाएंगे और जब वे वहां पहुंचेंगे और उसके दरवाजे खोल दए जाएंगे तो उनके र हरी उनसे कहेंगे : "कया तुमहारे ही बीच से कोइ संदेशवाहक तुम हारे पास नहीं आया और तुमहारे परमातमा के संकेत उसने पढकर नहीं सुनाए और इस मलन- दवस की चेतावनी उसने तुमहें नहीं दी?" वे कहेंगे : "हां, सचमुच वे आए थे परनतु दंड का नणय अ ववा सयों के खलाफ बल्कुल सही दया गया है।" उन हें कहा जाएगा: "नरक के वार में र वेश करो और अननत काल तक वहीं रहो, सदा-सदा के लए। अ भमा नयों का यह नवास-स्थल कतना बुरा है!" और वे जो अपने र भु से डरेंगे [तथा उसका आदर करेंगे] उनहें दल-बल के साथ स्व गक उयान की ओर भेज दया जाएगा और जब वे वहां पहुंचेंगे, और उनहें वार खुले मलेंगे, इसके संरष क उनसे कहेंगे : "शां त वराजे तुझपर! तुमने नेक काम कए है। आओ, इसमें र वेश करो, अननत काल तक, सदा-सदा के लए।" (सूरा अज-जुमार : **68-73**

ऐस ही कुछ और उदाहरण इस र कार ह :

और एक सारथी और एक साषी के साथ हर आतमा वहां पहुंची। (सूरा काफ : २१)
और जननत के टुकडे-टुकडे कर दए जाते है ता क उस दन वह नाजुक बन जाए। (सूरा अल-हकका : 16)
और चूं क वे धैयवान और दृढ बने रहे, अत: अल्लाह ने उनहें स्व गक उयान और रेशमी प रधान बखशा। उननत संहासनों पर स्वगर में वर ां त करते हुए, वहां उनहें न तो सूरज की बहुत गमी मली और न ही अतय धक शीत। (सूरा अल-इनसान : **12-13**)
और सबके वारा नहारे जाने के लए नरक का पूरा प रदृशय खोल दया जाता है। (सूरा अन-ना जयत : **36**)

परनतु उस दन वे जो आस्थावान है, ना स्तकों पर ठहाके लगाते है। (सूरा अल-मुत फफ फन : 34)
और पा पयों ने उस आग को देखा और उनहें लगा क वे उसमें गरने ही वाले है और उससे बच नकलने का उनहें कोइ मागर नहीं म ला। (सूरा अल-काफ : **53**)

उपरोत आयतो म मृतयु क बाद हम जन घटनाओ का अनुभव रापत करग उनका वणस इस रकार कया गया ह मानो व पहल ही घ टत हो चुक। ऐसा इस लए कयो क अल्लाह हमारी तरह समय क सापष बनधन म जकड हुए नही ह। अल्लाह न इन सभी घटनाओ का ताना-बाना समय-शूनयता म रचा ह परनतु मानवो न उनह प रणा मत कया ह, उनह भोगा ह और उन घटनाओ को अजाम दया ह। नमन ल खत आयत म यह रकट कया गया ह क हर रकार की घटना, चाह वह छोटी हो या बडी, अल्लाह की नजर क दायर म ही घ टत होती ह और उनक र थ म अ कत ह :

मेरे जाने बना तुम कसी भी कायर में संलग न नहीं होते और न ही कुरान का ही पाठ कर पाते हो या अनय कोइ भी कायर धरती पर या स्वगर में, एक छोटा से छोटा कतरा भी तुमहारे र भु से ओझल नहीं हो सकता। और न ही उससे छोटा या उससे बडा ऐसा कुछ भी है जो क एक "सुबोध रंथ" में अं कत नहीं है। (सूरा यूनुस : **61**)

अनंतता इव र की स्मृ त में नगूढ है

कुछ लोग जो इस तथय को भली-भा त नही समझत क पदाथर वास्तव म हमार म स्तषक म आकार रहण करन वाला एक जट ल बोध ह, व र मत हो जात ह और गलत नषकषर नकाल लत ह। उदाहरण क लए, कुछ लोग पदाथर क र म होन समबनधी वयाखयाओ का अथर यह नकालत ह क पदाथर होता ही नही ह। दूसर लोगो क खयाल म, हाला क पदाथर एक र म क ू प म होता ह परनतु सफर तभी जब हम उस दख रह होत ह; और जब हम नही दख रह होत तो उसका अ स्ततव नही होता ह। इनम स कोइ भी धारणा सही नही ह।

सवर थम तो यह कहना गलत होगा क पदाथर का अ स्ततव नही ह या य लोग-बाग, पड-पौध या पषी ह ही नही। इन सभी चीजो का अ स्ततव ह और उनह अल्लाह न बनाया ह। परनतु जसा क हम इस पुस्तक क रारमभ स ही कहत आ रह ह, अल्लाह न इन सभी चीजो को एक बमब या बोध क ू प म सृ जत कया ह। कहन का आशय यह ह क उनह रच दन क बाद अल्लाह न उनह ठोस और स्वतर अ स्ततव नही रदान कया। उनम स हर एक की रचना हर ष ण होती आ रही ह।

हम चाह उनह दख या ना दख, य सभी चीज इव र की स्मृ त म शाव त ह। व तमाम चीज जो हमस पहल अ स्ततव म थी और हमार बाद भी अ स्ततव म रहगी, एक ही एकल पल म उनह इव र वारा रच डाला गया ह। जसा क पछल अधयाय म बताया जा चुका ह, समय भी एक आभास ह; इव र न ही समय की रचना की और व

उसस र तब नधत नही ह। अत: जो बात हमार ल ए भ वषय म घ टत होगी व इवर की दृ ट म एक षणमार म रची जा चुकी ह और व अभी भी वयमान ह। परनतु हम उनह अभी नही दख सकत कयो क हम समय स र तब नधत ह।

ठीक उसी तरह, जस क हम उन बातो का अनुभव भ वषय म रापत करग (और जो भ वषय म हमार सामन रकट होगी) और व हर षण इवर की नजर म मौजूद ह, अतीत की चीज भी समापत नही हुइ ह और इवर की नगाह म मौजूद ह। उदाहरण क ल ए, जब आप अपनी मा क गभरम एक ू ण क ू प म थ, जब आपन पढना -लखना सीखा, जस षण आपन सकूल की अपनी पहली र ग त रपोटर अपन हाथ म थामी, या वह षण जब आपन पहल-पहल कार राइव की, वह समय जब आपन एक अधड म हला को बस म अपनी सीट दी और वह आपकी ओर दखकर मुसकुराइ और ऐसी ही बहुत सी बात जनका आपन अपन अतीत म अनुभव कया, और साथ ही व सार षण जनका अनुभव आप भ वषय म करग, अभी इसी षण इवर की समृ त म मौजूद ह और अननत काल तक मौजूद रहगी।

मान लया क राह चलत आप एक पतथर को ठोकर मारत ह : वह समय जब आप उस ठोकर मारग पहल स मुकरर था और आपक जनम लन स भी पहल आपक भाग य म लख दया गया था। यह सचचाइ क पतथर का वह टुकडा कसी बड चटान स टूट ग रा था, और वह रतयक चरण जब उसम षरण और दरार पडी थी -- य सारी की सारी बात आपक वारा उस पतथर को ठोकर मार जान स भी पहल स अललाह की नगाह म मौजूद रही थी।

कूडदान म पडी हुइ एक मरी हुइ ततली या पड स आपक सर पर आ गर एक सूख पत क रसग म भी य ही बात सच ह। जब वह ततली महज एक कॅटर पलर थी तब स लकर उस घडी तक जब क वह अपन कोकून स बाहर नकली, जब उसक पख सूख गए और जब वह इस कूडदान म गर गइ -- यह सबकुछ उसक रारबध म बदा था। अललाह की नजर म, वह ततली जो जी वत थी और वह ततली जो मर गइ दोनो ही वयमान ह और सदा रहगी।

हर बात 'मातृरं थ' में अं कत है

जसा क हमन पछल खड म वसतार स बताया, अललाह न एक ही एकल षण म उस हर घटना, हर राणी का सृजन कया जन ह हम अतीत या भ वषय की अनुभू त मानत ह। कुरान म यह बात रकट की गइ ह क मनुषय तथा अनय हर राणी की नय त "मातृरथ" म नगूढ ह।

> और सतय ही यह मातृरं थ में अं कत है, हमारी उप सथ त के समष, उचच र तठा और ववेक से समपनन। (सूरा अज-जुखु फ : 4)

.... हमारे पास सबकुछ संर षत रखने वाला रंथ है। (सूरा काफ : 4)
न चत ू प से स्वगर में या धरती पर ऐसी कोइ भी नगूढ वस्तु नहीं है जो क एक 'सुबोध रंथ' में अं कत ना हो। (सूरा अन-नमल : 75)

अनय आयतो म, अल्लाह न कहा ह क स्वगर म और धरती पर जो कुछ भी होता ह वह इस र थ म अ कत ह।

वे जो ना स्तक है, कहते है: "वह नयत समय कभी नहीं आएगा।" कहो : "मेरे र भु की सौगनध! वह जू र आएगा!" वह अदृ ट का ञाता है जससे स्वगर में या धरती पर कण भर भारी भी कुछ ओझल नहीं हो सकता, और न ही उससे बडा या छोटा ऐसा कुछ भी है जो क 'सुबोध रंथ' में अं कत नहीं है। (सूरा साबा : 3

इस र कार इन आयतो म यह र कट कया गया ह क जबस इस सृ ट को रचा गया, हर जड और चतन पदाथर, हर घटना, अल्लाह वारा र चत ह और इस लए व सब उसकी र ञा क दायर म ह। दूसर शब्दो म, यह सबकुछ अल्लाह की स्मृ त म ह। 'मातृ र थ' सवसरष क (अल-हा फज) क ू प म अल्लाह का र ाकटय ह।

भूत और भ वषय वस्तुत: वतसान में ही अनुभव कए जाते है

चू क अल्लाह की दृ ट स समय का कोइ अ स्ततव नही ह, अत: हर चीज एक षणमार म ही घ टत होती ह, अथा त "वतसान" म। व तमाम घटनाए जनह हम अतीत और भ वषय स जोड दत ह, अल्लाह क लए वतसान ह। उनकी दृ ट म हर ची ज बल्कुल साफ और जीवनत ह, जसा क हम बोध नही हो सकता। उदाहरण क लए, र भुदूत जोना को अभी-अभी समुर म डाला जा रहा ह, जोसफ को उसक भाइ-बनद अभी-अभी कुए म डाल रह ह, वह कारागार म अपना पहला भोजन र हण कर रह ह और कारागार स नकल रह ह। इसी ष ण मरी ग र यल स वाता लाप कर रही ह, इसा मसीह का जनम हो रहा ह। अभी इसी ष ण र भुदूत नूह (नोआ) अपनी नौका म पहली कील ठोक रह ह और अपन प रवार क साथ उस नौका म बठकर र भु वारा नधा रत स्थान पर चल जा रह ह। हजरत मूसा की मा पानी की धार पर पालना डाल रही ह, हजरत मूसा "झाडी" म इव र स र थम र ाकटय पा रह ह, व समुर को फाडकर अपन अनुया ययो को लए चल जा रह ह। इसी ष ण फराओ और उसकी सना समुर पार करत हुए उसम डुबोए जा रह ह और मूसा खर स वाता लाप कर रह ह, खर अनाथ बचचो की ढह चुकी दीवार की मरममत कर रहा ह। जन लोगो न धुल-कुरनन स अपनी सुरष ा क लए अवरोध बनान क गुजा रश कीव इस ष ण भी उसकी नजर क सामन ह और उसकी नजर क सामन ही धुल-कुरनन एक दुगर की रचना कर रहा ह जस 'नयाय दवस' स पूवर भदा नही जा सकता था। इसी ष ण इव रदूत अर ाहम अपन पता को चतावनी द रह ह, ना स्तको की मू तया तोड रह ह और उनपर जो आग फकी गइ उसस अर ाहम को शीतलता मल रही ह।

पगमबर मुहममद (इवर उनह आशीवाद द और उनह शात रदान कर) अभी इसी षण गरयल स राकटय पा रह ह, और उनह मसजद अल-हराम स मसजद अल-अकसा ल जाया जा रहा ह। अभी इसी षण 'अज क लोग वनट कए जा रह ह। सवगरक नवासी अपन सहासनो पर आूढ परसपर बातचीत म सलगन ह। नरक क नवासी आग म झोक जा रह ह और घोर पीडा स तडप रह ह जसस उनह कही कोइ छुटकारा नही मल रहा।

अललाह इन तमाम बातो को अभी, इसी षण, इतनी सुसपटता स दख-सुन रह ह जसकी हम कलपना भी नही कर सकत। इवर धवन का रवण ऐसी 'रकवसी' पर कर सकत ह जसपर हम कुछ सुन भी नही सकत, औरव उन चीजो क दख सकत ह जनह हम नही दख सकत। व सभी घटनाए, व समसत धवनया, जनह हम दख-सुन सकत ह या नही दख-सुन सकत ह, व सब क सब अललाह क समष पूरी सुसपटता स अनुभवगमय ह। इनम स कसी भी वसतु का कभी षय नही होता बलक सतत ूप स व अपन पूर वसतार म अललाह की समृत म नहत ह।

आपक जीवन की तमाम घटनाओ क साथ भी यही सच ह। उदाहरण क लए, आपक दादाजी न जस भवन की नीव रखी थी उसका नमाण अभी हो रहा ह। इस घर म अभी आपक पता का जनम हो रहा ह। जब पहल-पहल आपन बोलना सीखा था, वह पल भी अभी घटत हो रहा ह। जो भोजन आप आज स दस साल बाद खान जा रह ह उस "वसतुत:" आप अभी खा रह ह।

इन सभी उदाहरणो स हमार सामन जो सतय रकट होता ह वह यह ह : कोइ भी षण, कोइ भी घटना, असततव की कोइ भी वसतु न कभी समापत हुइ ह, न होगी। जसक टलवजन पर हमार वारा दखी जा रही फलम एक फलमसरप पर रकॉडर की जाती ह और उसम कइ रम होत ह, और जब हम कोइ रम नही दख रह होत ह तो इसका यह अथर नही होता क वह ह ही नही, उसी तरह स वह भी वयमान ह जस हम "अतीत" और "भवषय" का नाम दत ह।

एक बात ऐसी ह जस अचछी तरह समझ लना जूरी ह : इनम स कोइ भी बमब सवन या समृत की तरह नही ह। व सब क सब उतन ही सपट ह जस क आप उनह इसी पल रतयष दख रह हो। सबकुछ जीवनत ह। चूक इवर न हम य बोध रदान नही कए ह अत: हम उनह अतीत क ूप म दखत ह। और जब कभी भी व चाह, हम उन घटनाओ को दख पान क लए समुचत बोध रदान करत हुए इवर हम व नजार दखा सकत ह। व चाह तो हम उन सब बातो का अनुभव रदान कर सकत ह।

इन उदाहरणो स यह दखा जा सकता ह क अललाह क लए भूत और भवषय दोनो एक समान ह। इसी कारण अललाह की नगाह स कुछ भी छुपा नही ह, जसा क इस आयत म कहा गया ह:

(लुकमान ने अपने बेटे से कहा) : "मेरे बेटे! भले ही कोइ वसतु सरसों के दाने के बराबर छोटा हो और वह

कसी चटान में छुपा हो, या स्वगर या धरती के कसी भी स्थान पर, अल्लाह उसे ढूंढ नकालेंगे। अल्लाह सवर्व्यापी, सवर्ज्ञ है।" (सूरा लुकमान : 16)

जो स्वगर में है वे यद चाहें तो इवर उनहें अतीत का दशर्न वैसे ही करा सकते है जैसे क वह घटत हुआ था

यद स्वगर म रह रहा अल्लाह का कोइ सवक चाह तो अल्लाह उस सासारक घटनाओ का वस ही दशर्न करा सकत ह जस क व घटत हुए ह। (नस्सदह अल्लाह बहतर जानता ह) उदाहरण क लए, यद स्वगर म रहन वाला कोइ व्यत अल्लाह क समष यह इचछा जाहर कर क वह अपन मर हुए कुत को जीवत दखना चाहता ह, या अपन उस घर को पहली स्थत म दखना चाहता ह जसम आग लग गइ और जो वनट हो गया, या वह पानी म डूब जान स पूवरक 'टाइटनक' को दखना चाहता ह तो अल्लाह उस व नजार पहल स भी अधक स्पटता क साथ दखा सकत ह। जस क इस तरह क टाइटनक समुर म अपनी राह बनाता कस बढा चला जा रहा ह, उसक इदर्गदर की मछलया, मुसाफरो की वही बात, व ही सार शब्द जो उनहोन सचमुच बोल होग। अथवा कसी पुरानी महान सभ्यता को उसक चरमोतकषर पर दखा जा सकता ह। यद कोइ व्यत "इका" सभ्यता म अभुच रखता हो, वह चाह तो उस सभ्यता क कसी कालखड का दृशय दख सकता ह। क्योक हर घटना उसी मूल सुस्पटता क साथ अल्लाह की स्मृत म सतत मौजूद ह और जो व्यत कसी घटना को दखना चाहगा उस सबकुछ वसा ही दखगा जस क वह अपन मूल ूप म घटत हुइ थी।

एक आयत म अल्लाह न यह रकटत कया ह क स्वगर्लोक म लोगो क पास व सब चीज होगी जनकी व कामना करग:

...... वहां तुमहारे पास वे सब चीजें होंगी जनकी कामना तुमहारे अंतःकरण में होगी। वहां तुमहें वह हर वस्तु मलेगी जो तुम मांगोगे। (सूरा फुस्सलत : **31**)

यद स्वगर क नवासी चाहग तो अल्लाह उनह हर सासारक बमब का दशर्न करा सकत ह जनह दखकर उनह दुख रापत होगा परनतु जसस व रसनन भी हो उठग। यह एक महान वरदान ह जस अल्लाह न स्वगर क अपन काबल बनदो क लए महफूज कया ह।

मनुषय के लए इस पदाथर का महतव

यह पदाथर मनुषय क लए बहुत ही महतवपूणर ह क्योक दनभर म हमपर जो भी गुजरता ह, भल ही शाम ढलत-ढलत हम उन बातो को भुला चुक हो, हम जस तरह अपन कमर करत ह, हमारी ु झान और हमार दलो-दमाग म उभरत हुए वचार -- य सब कभी भुलाए नही जा सकत और अल्लाह की नगाह म व सदा कायम रहत ह।

उदाहरण क लए, अपन दोस्त क साथ गपशप करता इनसान उस भुला दता ह; उसक लए यह खास महतवपूणर नही होता, परन तु उसक गपशप क व षण अल्लाह की नजर म अषुणण बन रहत ह। या य द कसी क्य त क मन म मुसलमानो क र त कोइ नकारातमक वचार ह तो वह वचार, वह षण जब वह वचार उसक मन म आया, उसक चहर क हाव-भाव और उसन जन वाकयो का रयोग कया था, व सब क सब अल्लाह की नजर म हमशा कायम ह। या आतम-तयाग की वह भावना जो कोइ क्य त अपन कसी मर पर अ भ स चत करता ह, भल ही वह खुद भूखा रह गया हो, वह भी अल्लाह की नजर म, उस पल क तमाम हालातो क साथ, कायम रहगी। व रवृ तया और वचार जो रकट कए गए थ, अ वनाशी रहग। या कोइ क्य त जो कसी क ठन प र स्थ त म अल्लाह क नाम पर धीरज सजोए रखा था और परशान करन वाल को भी मृदुल शबो स सबो धत करता आ रहा था, उन सब बातो स प रल ष त उसका उतकृट न तक क्यवहार कभी नट नही होगा ब ल्क अननत-अननत काल तक अषुणण बना रहगा। और उस 'नयाय- दवस' म अल्लाह उन सभी नक और बद कामो क लए उसस सवाल करग। व काम भी जनह लोग करक भूल चुक ह, अ वस्मृत रहग, अप रव तर्त बन रहग। कुछ लोग तो इस बात स हरत म पड जाएग क उनक कमो क लखा-जोखा क लए जो कताब उनह थमाइ गइ ह, उसम सबकुछ बड वस्तार स लखा ह,और व कह उठग :

> रंथ को एक सु न चत स्थान पर रखा जाएगा और बुरे कमर करने वालों को तुम उसमें अंकत बातों से भयभीत होते देखोगे। वे कहेंगे : "अफसोस है हमारे लए! कैसी कताब है यह जसने छोटे या बडे कसी भी कायर को इसमें अंकत कए बना नहीं रहने दया?" उनके सारे कारनामे वहां दखेंगे और तुमहारा रभु कसी के साथ छल नहीं करेगा।" (सूरा अल-काफ : 49)

इस लए, जो कोइ भी क्य त इस यथाथर को जान गया ह उस यह कभी नही भूलना चा हए क उसक सार वचार, उसक सार कारनाम, सदा-सदा क लए अल्लाह की स्मृ त म कद हो चुक ह और व वहा सदा कायम रहग। सावधान रह वह और डर उस नयाय दवस स।

पदाथर की वास्त वकता क वषय म उठाइ गइ आप तयो क उतर

हाला क पदाथर की वास्त वकता का वषय बहुत ही जयादा सीधा-सपाट तथा समझन म सरल ह परनतु फर भी कुछ लोग, भनन- भनन कारणो स, इस एकमार सभा वत उतर को स्वीकारन स परहज करत ह और इस न समझ पान का स्वाग भरत ह।

बहुतर लोग जनहोन यह पहली समझ ली ह, "पदाथर क पीछ छुप रहस्य" क बार म जानन क र त उनहोन असाधारण उतसाह रद शस कया ह और यह दशा या ह क कस रकार इस बात न उनकी जनदगी और वचार-धारा को बदल कर रख दी ह। बहुत स लोग इस वषय की गहराइ म जान क लए रयासरत ह तथा इस और भी बहतर ढग स समझ पान क लए अपनी जज्ञासाए रकट कर रह ह। ऐस लोगो की क तपय टप प णयो को आप " जनहोंने पदाथर का रहस्य जाना है, वे जबदस्त उतसाह से भर उठे है" नामक अधयाय म पढ सकग।

परनतु अनय दूसर लोग पूर अ डयलपन क साथ इस असाधारण सतय स मुह मोड बठ ह और इस खा रज करन की गरज स अनको आप तया उठान म लग ह। परनतु जो कोइ भी इस बात स इनकार करता ह, उस वज्ञा नक री त स यह दखलाना होगा क बमबो और धव नयो का सृजन हमार म स्तषक क अनदर नही होता ह। परनतु तुरा यह क वज्ञा नको, त र का वज्ञान क रा धयापको, म स्तषक वशषज्ञो, मनोवज्ञा नको, मन च कतसको या जीवव ज्ञान क व्याखयाताओ -- सष प म कह तो कसी क भी वारा -- उठाइ गइ आप तयो म इस बात स इनकार नही कया गया ह क हमार बोध हमार म स्तषक क अनदर ही आकार पात ह। ऐसा इस लए क्यो क यह वज्ञा नक ू प स रमा णत तथय ह।

बावजूद इसक, कुछ लोग शब्जाल फलाकर या अ तशयतावादी वज्ञा नक री तयो स पदाथर क वषय को ढक दना चाहत ह। व उस स्वत: सध सतय की उपष ा करन की चटा करत ह जसकी शु आत ही इस कथन स होतीह क "चूं क बमबों का आकार-र हण हमारे म स्तषक के अनदर होता है ..." इसक सबस स्पट उदाहरण ह उन वज्ञा नको वारा दए गए उतर जनस यह पूछा जाता ह क क्या सचमुच छ वया हमार मनो-म स्तषक म उभरती ह।

वज्ञा नको म स एक का उतर होता ह: "नहीं, छ वयों का सृजन म स्तषक के अनदर नहीं होता, ब ल्क आनेवाले संकेत कसी दृशयानुभू त के र त न धतव के ू प में आकार र हण करते है"।

आइए, हम दख क सच को नकारन क लए वज्ञा नक महोदय न कौन-सा तरीका अ खतयार कया ह। यह पूछ जान पर क क्या बमब म स्तषक क अनदर आकार लत ह, पहल तो व एक नचयातमक "नही" म जवाब दत ह। फ र उसक बाद व यह कह बठत ह क सकत कसी र त नधयातमक बमब को आकार दत ह जसक कारण हम जस दख रह ह उस दख पात ह। अत: वास्तव म कह तो वह उपरोत र न का सकारातमक जवाब द रहा होता ह। इसम कोइ सनदह नही क म स्तषक म बनन वाला बमब एक "र त नधयातमक बमब" ह। हमार दमाग म

सचमुच का टबुल या आकाश या सूरज नही समा सकता। अत: बना हुआ बमब एक र त न ध-ू प बमब ह। दूसर शबो म कह तो वह बमब एक र त ल प ह। जब हम कहत ह क हम "ससार को दख" सकत ह तो यथाथरू प म हम एक "र त न ध यातमक ससार" या उसकी "र त ल प" या "काल्प नक ससार" को दख रह होत ह। य अ भव्य त या एक ही बात को अलग-अलग ढग स कहन क तरीक ह। यह पूछ जान पर क हम जस अपन म स्तषक म दख रह होत ह, क्या वह एक र त न ध यातमक ससार ह, एक अनय वज्ञा नक यह उतर दता ह: " बल्कुल नहीं, हम जसे अपने म स्तषक में देख रहे होते है, वह संसार की एक र त ल प है"। दूसर शबो म, पहल तो वह सवाल को खा रज कर दता ह परनतु बाद म और भी पहलीनुमा व्याखया क साथ घुमा- फराकर यही कह रहा होता ह क सचमुच हम अपन म स्तषक क अनदर ही दखत ह। तो यह ह कुछ वज्ञा नको वारा अ खतयार कया गया गर-इमानदार तरीका, जनह डर ह क य द व इस सच को स्वीकार कर लग तो उनह पदाथर को भी तयागना पडगा जो क उनकी राय म एकमार वयमान वस्तु ह।

कुछ अनय ऐस भी ह जो इस बात स इनकार कर पान म स्वय को असमथर पात ह क छ वयो की रचना हमार म स्तषक क अनदर होती ह परनतु चू क व ऐसा कहन स हचकत ह क "हा, म समपूणर वव को अपन म स्तषक क अनदर दखता हू", अत: व कुछ और भी जयादा घुमावदार उतर दत ह। "म स्तषक केवल अपने अनदर आनेवाले संकेतों की रोसे संग करता है तथा स्नाय वक अ भ र याओं को आदे शत करता है और इस र कार हम देख और सुन पाते है"। परनतु फर भी हर हालत म असली सवाल यही रहता ह क म स्तषक वारा समपूणर 'रोस सग' कर लए जान क बाद छ वया कहा बनती ह? इस वज्ञा नक वारा दया गया उतर कोइ उतर तो हुआ नही। यह तो बस छ व क बनन स पहल क चरण का एक स ष प त खाका खीचा गया ह। म स्तषक सकतो का र र मण (रोसस ग) करता ह परनतु उसक बाद वह उन सकतो को वापस आखो या कानो क पास नही भज दता ह। अतएव, आख नही दख रही होती ह और न ही कान सुन रह होत ह। तो फर र र मण करन क बाद म स्तषक उन आनवाल सकतो का क्या करता ह? र र मत सूचना को सहज कर कहा रखा गया? कहा जाकर उस बमबो और धव नयो म बदल दया गया? वह कौन ह जो इस सूचना का बमब या धव न क ू प म बोध कर रहा होता ह? जब इन वज्ञा नको स इस तरह क सवालो क जवाब दन को कहा जाता ह तो इस सच चाइ को स्वीकार करन स बचन क लए व लमब-चौड ज टल ववरण दना र ारमभ कर दत ह। वास्तव म, आचयर तो यही ह क ऐस सुस्पट सतय क लए कही कोइ ववाद करन की भी जू रत ह।

तथा प, वषय पर आप त उठान या उसकी उपष ा करन क य सार तरीक बहुत ही दुबल् और असमथर ह। जबतक इन पननो म व णस सतय क वषय म आप त करन वाला कोइ व्य त वज्ञा नक तथयो क साथ इस बात का खडन करन नही आ जाता क हमार सार बोधो का जनम हमार म स्तषक क अनदर ही होता ह, तबतक उसक कथनो का कोइ मूल्य नही होगा। यह सच चाइ ह क बमब तथा हमारी समस्त इ्न रय- वषयक अनुभू तयो क ू पाकार की रचना हमार म स्तषक क अनदर होती ह। परनतु इस अवधारणा को अच छी तरह र हण कर चुका कोइ व्य त भी इस बात स इनकार कर सकता ह क उन बमबो क रच यता इवर ह। वह कह सकता ह क "म इस वषय पर

सोचना भी नही चाहता" या यह क "यह मानन म मुझ असु वधा हो रही ह क म कभी वास्त वक पदाथर को नही दख सकता" या यह क "मर जीवन का फर तो कोइ मायन-मतलब ही नही रहा"। वह व्य त इस बात स बडा ही भौचक महसूस कर सकता ह इवर क सवा और कसी भी वस्तु का अ स्ततव नही ह। परनतु फर भी वह यह नही कह सकता क वह जो कुछ कर रहा ह, उस अपनी ही आखो स दख रहा ह, या यह क वह जो कुछ दख रहा ह उसका वास्त वक स्वू प उसस बाहर कही वयमान ह। क्यो क ऐसा होन का कोइ वज्ञा नक रमाण या आधार नही ह और न कभी हो सकगा। जो भी हो, घोर स घोर भौ तकवादी भी यह स्वीकार करत ह क सार बमब हम अपन म स्तषक क अनदर ही दखत ह।

यह अधयाय मुखयत: उन लोगो वारा उठाइ गइ आप तयो का जवाब दन क लए सम पस कया जा रहा ह जनह इस सतय को स्वीकारन म हचक हो रही ह। इन आप तयो और दय गए जवाबो को पढकर आपको लगगा क न ठा क साथ और बना कसी पूवा रह क जाच करन पर य जवाब बल्कुल रमाणय ह।

आप त : "जब आप कसी बस को अपनी ओर आते देखते है तो आप एक ओर हट जाते है ता क बस कहीं आपको कुचल न दे। इसका यह अथर है क बस का अ स्ततव है। य द बस का अ स्ततव केवल आपके म स्तषक में है तो फर आपको रास्ते से एक ओर हट जाने की जू रत क्यों है?"

उतर : मुद की बात यह ह क इस तरह क सवाल करन वाल लोग यह समझन की गलती करत ह क "बोध" की अवधारणा का समबनध कवल हमारी दृ ट स ह। सच चाइ यह ह क हर रकार की सवदना -- जस स्पशर, समपकर, कठोरता, ददर, गमी , ठढक और गीलपन -- की अनुभू त भी मानव क म स्तषक म ही होती ह। उदाहरण क ल ए, जब कोइ बस स नीच उतरता ह तो दरवाज पर लगी ठढी धातु की उस जो अनुभू त होती ह वह वास्तव म मस्त षक म होन वाली "ठढी धातु की अनुभू त" ह। यह एक सुस्पट और सु वज्ञात तथय ह। जसा क हम पहल ही जान चुक ह, स्पशर की अनुभू त का जनम अगु लयो क अर भाग स रा पत स्नाय वक सकतो क माधयम स मस्त षक क एक खास रभाग म होता ह। यह अनुभू त आपकी अगु लयो को नही हो रही होती। तथा प, जब कवल दरवाज पर लगी धातु क स्पशर की अनुभू त का नही ब ल्क बस वारा कसी को टककर मार दन का र न ह - अथा त दूसर शब्दो म जब स्पशर की सवदना बहुत ही तज और ददर्नाक होन वाली ह -- तो उनह लगता ह क ऐसी स्थ त म यह तथय लागू नही होता। परनतु ददर और तीर आघात का बोध भी म स्तषक म ही होता ह। वह व्यत जस बस न टककर मार दी ह, उस तीर वदना का अनुभव अपन म स्तषक म ही करता ह।

इस बात को भली-भा त समझ पान क लए बहतर होगा क हम अपन स्वनो क बार म वचार कर। कोइ व्य त यह सपना दख सकता ह क उस बस न टककर मार दी ह और जब उसकी आख खुलती ह तो वह स्वय को एक अस्पताल म पाता ह। फर वह यह दखता ह क वह अपा हज हो गया ह या उस भयकर ददर हो रहा ह। स्वन म वह अस्पताल क अनदर इन सभी बमबो, धव नयो, अनुभू तयो को, ददर और कठोरता, रकाश और रगो को बडी ही स्पटता और व शटता क साथ दखता ह। य सब चीज उतनी ही सहज और वव सनीय लगती ह जतनी वास्तव क जगत म। उस स्वन दखन वाल व्य त को य द उस ष ण टोका जा सकता क यह सबकुछ महज एक सपना ह तो

कया वह मान लता? परनतु फर भी वह जो कुछ दख रहा ह, एक र म ह। बस, असपताल, और यहातक क वह जस शरीर को दख रहा ह उसका यथाथर जगत म कोइ भी भौ तक र तू प नही ह। उनका कोइ भौ तक र तू प न होत हुए भी वह यही अनुभव कर रहा होता ह क एक 'सचमुच की बस' न उसकी 'सचमुच की दह' को कुचल दया ह।

तो इसी रकार भौ तकवा दयो की इन आप तयो म कोइ दम नही ह जनक तहत व इस रकार की बात कया करत ह क "पदाथर सचमुच होता ह, यह आप तब मान लग जब कोइ आपको मार या पीटगा", "पदाथर क अ सततव क बार म आपका सदह जाता रहगा जब कोइ आपक घुटन पर एक लात जमा दगा", "जगली कुत को दखत ही आप दौड भागत ह", "जब आप कसी बस स टकराएग तो आपको रतीत होगा क यह आपक म सतषक म ह या कही और" या यह क "अगर ऐसी बात ह तो भारी र फक क बीचोबीच मोटर क रासत पर खड हो जाइए"। कसी कुत क काट खान स उपजन वाला ददरया कसी स लगन वाला जननाटदार तमाचा इस बात का रमाण नही ह क आपका पदाथर स साबका पड गया ह। जसा क हम दख चुक ह, य सब बात बना कसी भौ तक र तू प क सवन म भी घ टत होती ह। इसक अलावा, कसी रबल अनुभू त क होन स इस तथय को नही नकारा जा सकता क वह रबल अनुभू त भी हमार म सतषक म ही अ कत हुइ ह। यह वजा नक रमाणो स अचछी तरह सपट कया जा चुका तथय ह।

कुछ लोग ऐसा कयो सोचत ह क मोटर-व पर तजी स दौडती हुइ कोइ बस या उस बस वारा की गइ कोइ दुघरटना इस बात क जवलत रमाण ह क हमारा साबका पदाथर क भौ तक अ सततव स पड चुका ह? इस लए कयो क इसस समब नधत बमब इतन वासत वक ू प म दखा और अनुभव कया जाता ह क हम धोख म आ जात ह। उनक इ द- गदर क बमब, उदाहरण क लए, मोटर-व का प रदृशय और उसकी गहनता, उनक रग-ू प, आकार और शड तथा गध और धव न की सुसपटता, कठोरता इतया द समसत बात मलकर पूर बमब को इतना तकरसगत बना डालती ह क कोइ भी धोख म आ जाए। इस सुसपटता क कारण कुछ लोग भूल ही जात ह क वासतव म व कवल 'बोध' ह। परनतु म सतषक म बनन वाला बमब चाह जतना भी पूणर और नदष हो, उनस यह सचचाइ नही बदल जाएगी क फर भी व महज 'बोध' या आभास ही तो ह। सडक पर चलत हुए अगर कसी को कार स टककर लग जाए, या कोइ वय त भूकमप स धराशायी हुए कसी भवन क मलब म दब जाए, आग की लपटो म घर जाए या फर सी ढयो स ढुलक पड, तो भी इन तमाम बातो का अनुभव वह अपन म सतषक म ही कर रहा होता ह और घटनाओ क यथाथर स उसका कोइ साबका नही पडा ह।

जब कोइ कसी बस क नीच आ पडता ह तो उसक म सतषक म न हत बस उसक म सतषक म ही न हत शरीर को कुचल रही होती ह। यह सचचाइ इस बात स भी नही बदलती क इस दुघरटना क कारण वह वय त मर जाता ह या उसक शरीर क चथड उड जात ह। य द वय त वारा अपन म सतषक म रापत कए गए कसी अनुभव का अत मृतयु स होता ह तो इसका अथर यह ह क इवर न उन बमबो को समट लया ह और उनक बदल व अब उस व य त को 'इसक बाद' क प रदृशय दखाएग। जो लोग नठापूवरक वचार करन पर भी इस 'अब' क सतय को

समझन म असफल रह ह व नचत ही मृतयु क बाद उस सतय को समझग।

आप त : "ठीक है क मै सभी वस्तुओं को अपने मन में नहार रहा हूं परनतु आ खर मै उनहीं चीजों को देख रहा हूं जो वास्तव में बाहर उप स्थत है."

उतर : हम इस समस्त ससार का आभास अपन मनो-म स्तषक म पात ह,यह तथय वज्ञान वारा नचयातमक ू प स स्था पत कया जा चुका ह और ववकपूवक सोचन वाला कोइ भी व्य त इसका खडन नही कर सकगा। परनतु लोग जस बात को समझन स चूक जात ह वह यह ह : य द हम सभी वस्तुओ का बोध अपन म स्तषक म पात ह तो हम अपन म स्तषक स बाहर वस्तुओ की उप स्थ त क बार म कस आव स्त हो सकत ह? यह सनदह वा जब ह : हम कभी आव स्त नही हो सकग क जन वस्तुओ का बोध हम म स्तषक क अनदर हो रहा ह उनका सचचा भौ तक र तू प भी उप स्थत ह। हम ऐसा इस लए कभी नही कर सकत क्यो क हम अपन दमागी दायर स बाहर कभी जा ही नही सकत क हम यह दख सक क बाहर क्या मौजूद ह। अत: यह दावा करना असभव ह क हमार म स्तषक क बमब वाकइ बाहरी जगत की वस्तुओ क र तू प ह। कोइ भी व्य त -- चाह वह इस बात का दावा करन वाला व्य त हो या कोइ स्नायु रोग वशषज्ञ अथवा दमाग का सजन या दाशनक या और कोइ -- ऐसा एक भी नही जो अपन म स्तषक क र ागण स बाहर नकल कर यह दख सका हो क बाहर क्या ह।

अपन जीवन क बार म सारी बातो का ज्ञान मनुषय म स्तषक को र ापत होन वाल वयुतीय सकतो स मलन वाल 'बोध' क आधार पर ही पाता ह। दूसर शब्दो म कह तो हम हमशा एक ऐस ससार म रहत ह जो हमार म स्तषक क ही अनदर ह। आकाश म वचरण करत पषी, गली क उस छोर पर ओझल होती-सी वह कार, हमार कमर क अनदर की वस्तुए, हमार हाथो म पडी कताब, हमार दोस्त-अहबाब, रशतदार और सबकुछ -- य सब हमार म स्तषक को र ापत होनवाली र त लप यातमक छ वया ह। म स्तषक क अनदर समाए इस जीवन क चौखट स बाहर कोइ जा ही नही सकता। वज्ञान और तकनीक भी ऐसा करन म हमारी कोइ मदद नही कर सकत। क्यो क एक वज्ञा नक भी य द कोइ आ वषकार करगा तो वह आ वषकार उसक म स्तषक क बमब क दायर म ही होगा। इस कारण, बाहरी जगत को दखन क लए वह जस कसी यर का नमा ण करगा वह उसक म स्तषक क ही दायर म रहगा।

हाला क यह सच पूणरू प स स्पट ह फर भी कुछ लोग यह वचार रखत ह क उनक वारा दख गए बमबो का यथाथ स्वू प बाहरी जगत म वयमान ह। व "पदाथ" म व वास करत ह (हाला क उनहोन पदाथ को कभी दखा तक नही ह) और इस बात की उपषा करत ह क पदाथ उनक वारा दख गए र म को दए गए नाम क सवा और कुछ भी नही ह। कसी भी व्य त क लए यह जान पाना असभब ह क पदाथ वाकइ दखता कसा ह क्यो क कोइ भी व्य त कसी वस्तु क मूल स्वू प क ू-ब-ू कभी हो ही नही सका। आदम स लकर अबतक कसी भी इनसान न कभी कसी धव न का मूल स्वर नही सुना, न ही कोइ मूल प रदृशय दख पाया और न ही मौ लक गुलाब

की खुशबू ही कसी को मल सकी।

हम यह भी धयान रखना चाहिए क जो कोइ भी ऐसा दावा करता ह क हमार बोध स पर भी एक भौतक ससार ह, उस उस ससार को दखन क लए आख चाहिए और जब भी वह बाहरी जगत उसकी आखो स होकर गुजरगा, वह वयुतीय सकत म बदल जाएगा। फर व वयुतीय सकत मसतषक क अनदर बमबो की रचना करग। परणामसवूप, अभी भी वह वयत जस ससार को दख रहा होगा वह उसक मसतषक क अनदर का ससार होगा। यद उस वयत क मसतषक की ओर जान वाली शराओ को काट दया जाए तो तथाकथत "बाहरी" ववव का परदृशय भी अचानक गायब हो जाएगा। अत: ऐसी परसथत म, उस वसतु पर अडन का कया तुक ह जसका मौलक सवूप हम कभी दख ही नही सकग और यद वह मौलक सवूप कही हो भी तो हमार लए वह अथहीन ह।

आपत : "पदाथर मेरे मसतषक से बाहर है। जब कोइ चाकू फसल कर मेरे हाथ को काट डालता है और उससे जो रत बह नकलता है वह कोइ बमब नहीं होता। और सबसे बढकर मेरा दोसत मेरे साथ है और जो कुछ हुआ उसका वह गवाह है।"

उतर : वसतुत:, पछल दृटानत म इस आपत का उतर दन का रयास कया जा चुका ह। तथाप, इसपर एक बार पुन: वचार कर लना समीचीन होगा।

जो लोग इस रकार की बात कहा करत ह तो व इस तथय की उपषा कर दत ह क कवल हमारी दृट नही बलक सपशर, रवण, और राण जसी अनुभूतया भी हमार मसतषक म ही घटत होती ह। इसलए व यह कहत ह क "हालाक म चाकू को अपन मसतषक म दखता हू कनतु बलड की धार एक सचचाइ ह। जरा दखए क कस रकार इसन मर हाथ को काट डाला ह"। परनतु उस वयत क हाथ म महसूस हो रहा ददर, रत की तपश और गीलापन तथा अनय सभी रकार क बोध उसक मसतषक म ही हो रह होत ह। इस सचचाइ स कोइ बात नही बदलती क उसका दोसत भी वहा मौजूद था, कयोक उस दोसत की छव भी मसतषक क उसी दृशय कनर म आकार रहण करती ह जहा चाकू न आकार रहण कया ह। वह वयत सवन म भी ऐसी ही अनुभूत रापत कर सकता ह क कस उसका हाथ कट गया, कस ददर महसूस हुआ, खून नकलन का दृशय और उसकी तपश। सवन म वह उस दोसत को भी दख सकता ह जसन उसक हाथ को कटत दखा था। परनतु फर भी सवन म उसक मर की उपसथत इस बात का रमाण नही होती क उसका मर वाकइ भौतक ूप स वहा उपसथत था।

जब वह सवन म अपना हाथ काट रहा था, उस समय यद कोइ उसक पास आता और उसस कहता क "जो कुछ तुम दख रह हो, वह कवल एक आभास ह। वह चाकू वासतवक नही ह, तुमहार हाथ स टपकता खून और उस ददर की अनुभूत भी वासतवक नही ह। य सब कवल ऐसी घटनाए ह जनह तुम मार अपन मसतषक क दृशय-पटल पर दख रह हो", तो वह वयत इस बात पर आपत करगा और कह उठगा : "म एक भौतकवादी हू। म ऐस

दावो म यकीन नही करता। म अभी जो कुछ भी दख रहा हू उन सबम एक भौतक यथाथर ह। क्या तुम यह खून नही दख रह?"

जो लोग इस जद पर अड ह क पदाथर सचमुच हमार बाहर वयमान ह व ऐस ही क्यत की तरह ह जनपर अभी हमन वचार किया ह। व जस आभासी जगत म जी रह होत ह वहा य ही शब र तगु जत होत ह क "ये सारी वस्तुएं एक बोध है और तुम कभी भी इन बोधों के मौलक रोत तक नहीं पहुंच सकोगे और न ही कभी यह जान सकोगे क ये मौलक पदाथर सचमुच कहीं है भी या नहीं"। परनतु फर भी व बड ही जोशो-खरोश क साथ इस सच का वरोध करत ह।

परनतु हम यह कभी न भूल क अपना हाथ काट लन वाला कोइ भी क्यत यह नही कहता क "यह तो बस एक बमब ह"। वह बना कुछ कए-कराए बठ नही जाता। क्योक इवर न ऐस रभावो का सृजन किया ह क उस बमब को दखन वाल क्यत को उनका पालन करना होता ह। उदाहरण क लए, हाथ काट लन वला क्यत अपन घाव पर कुछ डालता ह, पटी बाधता ह या डॉक्टर क पास जाता ह। परनतु य सारी र र याए भी मस्तषक क अनदर एक बमब क ूप म ही घटत होती ह। व बाधी गइ पटया, व रयुत की गइ दवाए व सब मस्तषक क अनदर आकार रहण करती छवया मार ह।

आपत: "यह कहना क हमारे मस्तषक के अनदर आभासत होने वाली वस्तुएं एक रम है, क्या इस्लाम की शषाओं के अनुूप है?"

उतर : कइ मुसलमानो क वचार स पदाथर क रम होन की मानयता इस्लाम स मल नही खाती और व कहत ह क वगत समय क धामरक ववानो न इस बात का खडन किया ह। परनतु वस्तु-स्थत ऐसी नही ह। बलक इसक वपरीत, हम यहा जो कुछ कह रह ह वह कुरान की आयतो क अनुूप ही ह। कुरान म रकटत वषयो - जस स्वगर और नरक, समय-शूनयता, अननतता, पुनुतथान और परलोक इतयाद -- क बार म एक सुनचत ञान पान क लए कुरान की ऐसी कइ आयतो का बहुत ही जयादा महतव ह जनम यह अथर नहत ह क पदाथर एक रम मार ह।

इसम कोइ सनदह नही क अगर कोइ क्यत इस वषय स अनजान ह तो भी वह नठापूवक अपन धमर का पालन कर सकता ह। वह अपन पूर दल स अल्लाह वारा कुरान म रकट की गइ बातो क र त आस्थावान हो सकता ह। परनतु हम यहा पर यह स्पट करना चाहग क इन तथयो को जान लन स अल्लाह क र त उस क्यत की आस्था और रगाढ तथा नचयातमक हो जाएगी। इस्लाम धमर क कइ वगत ववानो न पदाथर क बार म इसी दृटकोण स वचार किया ह। परनतु यद उनक वचारो का व्यापक रसार न हो सका तो इसका कारण था : 1. उनक समय म वञानक जानकारयो का स्तर इतना ऊचा नही था क इन वषयो का वलषण किया जा सकता, तथा

2. ऐसी ु झानो का होना जसस इस वषय को सही अथर म लन की सभावना न क बराबर थी।

पदाथर की वास्त वक रकृत क बार म व्याखया करन वाल इस्लाम धमर क उन ववानो म स एक थ इमाम रबानी जनह मु स्लम जगत म स दयो तक सममान रापत होता रहा और जनह "मु स्लम कॅलडर क अनुसार 10 वी शताब्दी का महानतम सुधारक" कहा गया था। अपनी पुस्तक "लटसर" (खत) म इमाम रबानी इस वषय पर अपनी व्यापक टपपणी रस्तुत करत ह। अपन एक खत म इमाम रबानी कहत ह क इवर न इस समस्त सृ ट की रचना आभास क स्तर पर की ह:

मैने ऊपर इन वाक्यों का इस्तेमाल कया है : "इवर की सृ ट ऐनरक अनुभू तयों और बोध के दायरे में है।" इसका अथर यह है क "इवर की सृ ट एक ऐसे दायरे में है क उस दायरे में ऐनरक अनुभू तयों और बोध के सवा कहीं कोइ अ स्ततव या स्था यतव नहीं है" 46

गहन जाच-परख क बाद इमाम रबानी सावधानीपूवर्क इस बात पर भी जोर दत ह क हम जस ससार को दखत ह, अथा त वह सब कुछ जो वयमान ह, उनह आभासी स्तर पर रचा गया ह। बोध क इस स्तर स बाहर जो कुछ व यमान ह वह ह 'इवर का अ स्ततव'। वास्तव म कह तो यह "बाहर" की अवधारणा एक प रकल्पत अवधारणा ह, क्यो क कसी भी बोध का न तो कोइ का यक अ स्ततव होता ह और न ही वह जगह घरती ह। इमाम रबानी इसकी व्याखया करत हुए कहत ह क वस्तुओ (या उस पदाथर कह ली जए) का बाहर कोइ अ स्ततव नही ह:

बाहर और कुछ नहीं, सफर इवर का अ स्ततव है .... संभवत: सवश त मान इवर की यह समस्त सृ ट बोध के दायरे में ही अपना स्था यतव पाती है .. उसी रकार जैसे पदाथर का बाहरी जगत में कोइ अ स्ततव नहीं है। बाहर की दु नया में वह रंगहीन ू प से मौजूद है ... और अगर उसका कोइ न चत आकार भी है तो वह भी केवल आभासी स्तर पर ही है। धनयवाद हो इवर का क उसका स्था यतव केवल उस एक स्तर पर ही है। ऐसा नहीं है क यह कहीं कसी अनय धरातल पर उप स्थत है और उसका आभास कसी अनय धरातल पर हो रहा हो। बाहर इसका कोइ संकेत है ही नहीं जहां उसे देखा जा सके.. 47

प रणामस्वू प, जसा क इमाम रबानी क स्पट वलषण स प रल ष त ह, चाह हम वज्ञान क नज रय स दख या स्वय अपनी ही तकर्शीलता स सोच-समझ, हम इस नषकषर पर पहुचत ह क हम जो कुछ भी दख रह होत ह उसका कोइ वास्त वक भौ तक र तू प भी ह या नही हम यह कभी नही जान सकत। हम तो बस अपन म स्तषक म आरो पत छ व को नहार सकत ह।

मु ह दन इब्न अल-अरबी नामक महान इस्लामी ववान भी यह ववास करत ह क वह एकमार चीज जसका

नचयातमक अ स्ततव ह, वह ह इव र जसन समस्त र माड की रचना आभासी स्तर पर की ह।

अपन ञान की गहनता क कारण उनह "महानतम स्वामी" (शख अल-अकबर) क नाम स जाना जाता था और अपनी पुस्तक " ववक का ततव" (फसूस अल- हकम) म उनहोन र कट कया ह क यह ससार इव र वारा र क टततव का एक छाया-ू प अ स्ततव ह:

मै कहता हूं क आपको यह बखूबी समझ लेना चा हए क जो कुछ भी अ स्ततव में है, अथवा इस वव का हर पदाथर इव र से उसी तरह समब नधत है जैसे मनुषय से छाया। अत: ऐसी प र स्थ त में इव र के सवा हर वस्तु उसकी छाया मार है। ... इसमें कोइ संदेह नहीं क यह छाया सफर हमारे बोध में न हत है। 48

मु ह दन इब अल-अरबी उन लोगो को सपट जवाब दत ह जो यह मानकर चलत ह क उनका इव र स अलग और एक स्वतर अ स्ततव ह:

जैसा क मै आपको समझा चुका हूं, यह वव महज एक अवधारणा है। इसका कोइ वास्त वक अ स्ततव नहीं है। इसीको र म कहते है। आपने यह सोच रखा है क यह संसार कोइ ऐसी चीज है जो अनत नरहत ू प से वयमान है। यह क इसका अ स्ततव स्वयं इसपर नभर है। परनतु ऐसी कोइ बात नहीं है। कया आप यह नहीं देखते क छाया का जनम उसे बनाने वाले से होता है और चूं क यह उससे जुडा हुआ है, अत: उसे उसके नमा ता से अलग करके देख पाना कतइ असंभव है। तो जब ऐसी बात है तो आपको समझना चा हए क आप बस एक स्वन है। आप जस कसी वस्तु का बोध करते है और आप जस कसी वस्तु के बारे में यह कहते है क वह "इव र से अलग है" या "यह मै नहीं हूं" वह भी एक स्वन ही है। जो कुछ भी अ स्ततव में है, वह एक स्वन के दायरे में अ स्तत ववान है। केवल इव र ही है जो अ स्ततव के ततव-ू प में मौजूद है। 49

जसा क मु ह दन इब अल-अरबी क कथनो स सपट ह, मनुषय एक ऐसी कृ त ह जसक पास इव र वारा उछ्वस त आतमा नाम की वस्तु ह जो क इव र का र कट स्वू प ह। इव र ही वह सवस्व ह जो अ स्ततव म ह और मनुषय मार एक स्वन ह। यह सवा धक महतवपूणर सतय ह और य द हम इसस उल्टी बात म ववास करत ह तो हम एक गभीर भूल कर रह ह।

उपरोत दो ववानो क अलावा, इस आचयरजनक सतय का उघाटन मौलाना जामी न भी कया ह जस उनहोन कुरान क सकतो स र हण कया और अपनी तकश त का इस्तमाल करत हुए अपन इन शबो म र कट कया ह : "र मांड में जो कुछ भी है वह और कुछ नहीं, बस एक र ती त है। यह दपश में बनने वाले र त बमब या एक छाया की तरह है।"

जसा क हमन दखा, इस्लाम धमरक महान चनतको न इस सचचाइ का पूणरस्पटीकरण कर दया ह और अत: यह कहना मुनासब नही होगा क इस अवधारणा का 'कुरान' या 'सुनना' स कोइ वरोध ह, या यह क इस्लाम वचारधारा म इस खारज कर दया गया ह। इसस भी बढकर, हम यह नही भूलना चाहए क यह एक वज्ञानक ूप स रमाणत तथय ह जसस कोइ भी इनकार नही कर सकता, क हम जो कुछ भी दखत ह वह हमार मस्तषक म घटत होता ह। चूक अतीत क समय म इस समबनध म कोइ वज्ञानक जानकारी नही थी अत: यह स्वाभावक ह क इस्लाम क कुछ ववानो न इसपर जयादा बहस नही की। इसक अलावा, कुछ खास वचारधारा क लोगो न 'पदाथरएक रम ह' इस तथय को बडा ही वकृत ढग स वणर्स कया ह और इस रकार धमरक नयमो को तोड-मरोड कर रख दया ह। इन वकृत और नठाहीन वचारो क कारण इस्लाम क कुछ ववानो न तो खतर की चतावनी भी दी। परनतु ऐसी टपपणया सतय स दगर मत ह और उपरोत टपपणयो स उनकी कोइ तुलना नही की जा सकती।

हकीकत तो यह ह क इमाम रबानी न पदाथरकी अवधारणा पर बहस करत हुए सतय स भटक जान वाल उन 'दाशनको' का उल्लख भी कया ह और इस बात पर जोर दया ह क व जो कुछ कह रह ह वह उन लोगो क वकृत वचारो स कही भनन ह। अपनी पुस्तक 'खत' म व लखत ह:

जब मै इस संसार को "काल्पनक" कहता हूं तो इसका यह अथरनहीं है क इसे कल्पना से गढा और संवारा गया है। नस्संदेह, इसका वास्तवक अथरयह है क इवर ने इस संसार को बोध या रतीत के स्तर पर रचा है। ... कसी काल्पनक वस्तु का सचचा अस्ततव या स्वूप नहीं होता। इसकी तुलना हम कसी बनदु के तेजी से घूमने के कारण बनने वाली परध से कर सकते है। उस परध का अस्ततव तो दखता है परनतु उसका कोइ स्वूप वास्तव में है नहीं।

दूसरी ओर, कुछ सनकी कस्म के लोगों की जमात में शामल दाशरनक एक अलहदा खयाल सामने ला रहे है। उनके कहने का मतलब यह है क यह संसार कल्पना से गढा-संवारा गया है। इन दोनों ही बातों में बडा ही फकरहै। 50

जसा क इमाम रबानी न स्पट कया ह, राचीन रीस क कुछ रमत वचारको न कहा ह क "पदाथरएक ऐसी रतीत ह जस खुद हमन बनाया ह।" वज्ञानक और ताकक दृट स यह एक दोषपूणर वचारधारा ह और सचच धमरस इसका कोइ वास्ता नही हो सकता। हम शु स ही जोर दकर यह बात कह रह ह क सचचाइ यह ह क "पदाथरइवर वारा रचत एक रतीत ह।"

आपत: "यद हर चीज एक रम है तो हम इवर की कतपय वशेषताओं की व्याखया कैसे कर पाएंगे?"

उतर : कुछ लोगो की मानयता ह क य द हम पदाथर की सचची रकृत को स्वीकार कर लग तो इवर क अनक नामालकरणो का पटाष प हो जाएगा, और यह क य द पदाथर महज एक रम ह तो उनम स कुछ नामोपा धयो की व्याखया करना ही असभव हो जाएगा। एकबार फर, यह एक भूल ह जसका कारण ह गहराइ म जाकर न सोचना और इस वषय की रकृत को समझन स चूक जाना।

पहली बात तो यह क कोइ भी वचार या ताकत इवर क कसी भी वभूषण पर पदा नही डाल सकता। कोइ भी वज्ञा नक खोज इनम स कसी भी नामालकरण क राकटय पर अकुश नही लगा सकता। पहली बात यह क वह इ वर ही ह जनहोन इन सचचाइयो को जनम दया ह। व अपन ही बनाए हुए नयमो और पदाथो स बध हुए नही ह। अत: ससार की कोइ भी श त या ससार का कोइ भी ज्ञान इवर क कसी भी राकटय का समापननही कर सकत। ऐसा सोचना भी इवर की असीम श तमानता को समझन स चूक जाना ह।

इसक अलावा, इन लोगो क वचार क ठीक वपरीत, यह तथय क पदाथर हमार मनो-मस्तषक म व्यापत आकार स बढकर और कुछ नही ह, इस बात का एक महतवपूणर रमाण ह क इवर क वभूषणो का रकटीकरण सावदर्शक और सावरकालक ह; क्योक - एक फल्म की तरह - बोध क स्तर पर उभरन वाला बमब अपन आप रकट नही हो सकता, बल्क कोइ ह जो उस उघा टत कर रहा ह -- एक रटा जो इन बमबो को अस्तितव दता ह।

यह तथय क यह बमब स्थायी और अषुणण ह, इस बात का स्पट रमाण ह क हमारा वह 'सृटकता' सतत सृट -रचना म तल्लीन ह। वस्तुत: एक आयत म कहा गया ह क यह धरती और आकाश (या यू कह क यह ससार) स्थर और अपरवतसशील नही ह, उनका अस्तितव इवर की सृट-रचना क कारण ह और जब वह सृट-रचना ुक जाएगी तो ससार भी थम जाएगा:

धरती और स्वगर पर बडी मजबूत पकड है उस परमेवर की। उसीने थाम रखा है उनहें ओझल होने से। और य द वे ओझल हो जाएं तो कोइ भी उनहें रोक नहीं सकता। नस्संदेह, वह बडा ही धैयवान है, सदा षमाशील। (सूरा फातर : 41)

कुरान क सूरा 27, आयत 64 म, इवर न यह रकट कया ह क व ही "सृट को जनम देते और उसका पुनसृजन करते है"। एक अनय आयत म व इस तथय की ओर धयान दलात ह क हर षण लोगो की सृट हो रही ह:

"कय वे साझा देवताओं में अपने कृतय बनाते है जो कुछ भी नहीं रच सकते, बल्क स्वयं ही रचत है?" (सूरा अल-अराफ : 191)

दूसर शब्दो म, हम जन छवयो को दखा करत ह, उनकी स्थायी और अखडत रकृत का कारण यह नही ह

क उनका एक सु न चत भौ तक अ स्ततव ह ब ल्क यह क इवर सतत ू प स उनकी रचना कर रह होत ह। अत हम जो कुछ भी दखत या अनुभव करत ह उनम इवर की अनवरत सृ ट का रकटीकरण हर पल दखा जा सकता ह।

इस रकार, यह सतय इस ससार म इवर क नामालकरणो क राकटय को और भी सपट कर दता ह। उदाहरण क लए, जो वय त यह जानता ह क जब वह कसी बगीच म जाता ह तो सभी फल, फूल और पौध वास्तव म उसक म स्तषक म रस्तुत कए गए बमब ह तो वह इस बात का समरण करगा क इवर ही सवर दाता (अल-रजजाक) ह, जसन उस वय त को अपनी असीम कृपाओ और सौनदयो का वरदान दया ह और इन बमबो को उसक समष रकट कया ह। एक ऐसा वय त जसक पास एक आलीशान घर ह और जो उस घर क फनी चर, उसम टगी दुलभ कलाकृ तओ, सोन और चादी की वास्त वक रकृ त को जानता ह -- या दूसर शबो म, यह समझता ह क व सब उसक म स्तषक म अ कत बमब ह -- वह कभी भी अपनी समप त को लकर शखी नही बघारगा। पगमबर सोलोमन की तरह, वह उन सबम इवर को दखता ह जो महादाता (अल-वहाब) ह, जसन उसक समष उन सम पदाओ क सौदयर को रकट कया ह और उनक माधयम स उस समृध बनाया ह। या फर जब कोइ कसी अनय व य त को इवर क अ स्ततव और उसकी एकमवता क बार म बतात हुए यह कहता ह क सवगर और नरक की अपनी रचनाओ क साथ कवल वही 'नरपष ू प स अ स्ततववान' ह तो इस रकार वह इवर की उस नामोपा ध का बोध कर रहा होता ह क वही ह वह जो सचचा मागर उघा टत करता है (अल-हदी)

हम इस बदु पर यह समरण करना चा हए क वजा नक तथो क अनुसार हर वय त अपन म स्तषक क अनदर ही बमबो को दखता ह, उनस सयुत धव नयो को सुनता ह और उनकी भौ तक खू बयो को समझता ह। अपनी जान्न रयो क ज रय हम यह कभी नही जान सकत क हमार म स्तषक स पर कया ह या हमार म स्तषक स बाहर उनका कोइ वास्त वक र तू प ह भी या नही। परनतु हम यह न चत ू प स जान सकत ह क कोइ एक श त ह जसक कारण हम इन छ वयो को दख सकत ह, इन धव नयो को सुन सकत ह और जसन इन तमाम चीजो को कारण और रभाव (कायर और प रणाम) क समबनध-आधार पर रचा ह। वही श त इवर ह। य द उसन हमार लएइन बमबो की रचना नही की होती तो यह ससार उतपनन नही होता। इस ू प म, इवर की सृ ट और उसक वभूषणो का राकटय सतत ू प स होता रहता ह। उदाहरण क लए, इवर इस पुस्तक क पाठको क लए, इसक रगीन च रो स हत इस पुस्तक क शबो की सतत रचना कर रह ह।

यह हम एक र टा (अल-खलीक) क ू प म इवर की वभू त क दशस कराता ह। अभी इस षण म, इवर इस ससार क खरबो लोगो को खरबो छ वयो क दशस करा रह ह। यह रतयक छ व अ वराम, पूरी समरसता क साथ, एक-एक बारीकी म रग भरत हुए रची जा रही ह। रतयक वय त को य बमब बलकुल दोषर हत प रपूणसा क साथ दखाए जा रह ह। जब हम इस वलष णता क बार म सोचग तो हम इवर की अननत श त क दशस राप त होग और हम समझ सकग क वही ह ससार का एकमार अ धनायक।

यह बतात हुए क पदाथर की रचना आभासी स्तर पर की गइ ह, इमाम रबानी हम समझात ह क इवर क

नामालकरण भी बोध क स्तर पर ही रकट होत ह:

.... परम महमामय परमेवर ने जब भी चाहा, जैसे भी चाहा ....अपनी परपूणर शतमता से अनस्ततव के दायरे में सभी नामालंकरणों के स्वूपों से नामों को अस्ततव दया और उसने उसे संवेदना और बोध के स्तर पर रचत कया। इस संसार की स्थरता बाहरी स्तर पर नहीं है बल्क संवेदना और बोध के स्तर पर। यहांतक क बाहरी अस्ततव में भी कुछ भी स्थायी नहीं है। ऐसा कुछ नहीं है जो परम शतमान इवर के अस्ततव और वभूषण से परे वयमान है 51

जो कोइ भी इस यथाथर को समझता ह उसक लए अपनी सफलता, धन-समपदा और अपनी पदवयो क मद म चूर हो पाना असभव होगा, कयोक हर पल, हर जगह वह यह जान रहा होता ह क इवर की वभूतयो का ही राकटय हो रहा ह और यह क वह एक ऐस बमब को रहण कर रहा ह जस इवर न ही उसक रत रचा ह। वह कस भूल जाएगा क इवर क समष वह कतना तुचछ और अभावरस्त ह।

वह तो नमनाकत आयत म रकटत 'नचयातमकता क सच' या 'हक-अल यकीन' म ववास करता ह:

"हे मनुषय! इवर की आवशयकता तुमहें एक तुचछ दीन की तरह है जबक इवर कसी भी आवशयकता से परे परम समृध है, रशंसा के योगय है। (सूरा फातर : 15)

आपत : "यह तो एक पुराना वचार-दशस है जसे कभी आदशवादयों ने उछाला था"

उतर : चूक कुछ लोग पदाथर की सचची व्याखया स परशानी का अनुभव करत ह, अत: पदाथर एक रम ह जसकी अनुभूत हमार मस्तषक म होती ह, इस सतय की तुलना व अतीत क कुछ वचार-दशसो स करन लगत ह। परनतु वजान क षर म हुए वकासो स यह स्पट हो चुका ह क यह एक वजानक सतय ह, न क कवल कोइ दाशरनक अनुमान। अत: ऐस लोगो क रयास व्यथर ह।

इसक अतरत, अनय कसी कालखड म अनय कनही वचारको न कसी वचारधारा का समथस कया ह, इसस नइ वचारधारा खारज या अथहीन नही हो जाती। इस तथय को वगत समय क लोगो वारा भी कहा-समझा गया और आज क लोगो वारा भी।

साथ ही, अतीत क आदशवादयो वारा व्यत कए गए खयालो का भौतकवादयो वारा कोइ खडन नही कया गया कयोक उनका अभ्युदय बाद क समय म हुआ। अत: यह कहन स कुछ भी साबत नही होता क यह वचार तो पहल भी अभव्यत कया जा चुका ह।

हम इस वव की अनुभू त अपने म स्तषक में करते है, यह कोइ दाशरनक अनुमान मार नहीं है।

पदाथर क बार म वास्त वक तथयो का पता कोइ पहली बार नही लगाया गया ह, हाला क यह सच ह क अतीत म इस वषय पर दाशरनक अनुमान क तहत चचा की जाती थी। परनतु अब तो इस बात क वजा नक र माण भी मल गए ह।

इ तहास क कालर म म अनक वचारको, धा मरक ववानो और वजा नको न इस वषय को सामन लाया ह और यह व्याखया की ह क पदाथर वस्तुत: र ती तयो का समूह ह। उदाहरण क लए, रा चीन रीस क पायथागोरस, इल या वचारधारा एव प लटो (अफलातून) - अपन गुफा वाल दृटात क साथ - न इसी पहलू स इस वषय की परख की ह। जो दस्तावज हमार सामन आए ह, उनस यह पता चलता ह क जोर्ासरयन धमर, बौध धमर, ताओवाद, यहूदी और इसाइ धमो म भी इस वषय का स्पशर कया गया ह। ठीक इसी तरीक स इमाम रबानी, मु ह दन इब्न अल-अरबी और मौलाना जामी जस इस्लाम धमर क ववानो न भी पदाथर क ततव क वषय म अपन वचार सामन रख ह। परनतु इस वषय म आयरलड क दाशरनक बकर्ल क वचारो पर अपष ाकृत वस्तृत चचा   कए जान की आवशयकता ह।

बकर्ल न कहा क पदाथर एक समपूणर अहसास ह। उस समय क भौ तकवा दयो न उनपर भीषण हमल कए कयो क व मानत थ क पदाथर का एक भौ तक अ स्ततव ह। उनहोन अपमानो और आष पो क ज रए बकर्ल को चुप कर दना चाहा। बररसड रसल नामक एक भौ तकवादी न भी ऐसा ही कया। हाला क रसल ऐस वचारको म स रह ह जनपर भौ तकवा दयो की बडी गहरी आस्था रही ह, और हाला क उनह भौ तकवादी दृ टकोण का सबस बडा समथरक माना जाता रहा ह, परनतु बकर्ल न जो कुछ कहा व उसका खडन नही कर सक। अपनी पुस्तक "द रॉब्लमस ऑफ फलॉसफी" म उनहोन स्थ त का वणरन इन शब्दो म कया ह :

... बकर्ले को यह दशा ने का र`य दया जा सकता है क बना हास्यास्पद हुए पदाथर के अ स्ततव से इनकार कया जा सकता है, और यह क अगर ऐसी कोइ चीज है जो हमसे अलग स्वतंर ू प से वयमान है तो वह हमारी संवेदना का आसनन वषय नहीं हो सकता। 52

तथा प, उस समय वजा नक तथयो क अभाव म बकर्ल या कोइ भी अनय वचारक अनुभवगमय र माणो क आधार पर अपन वचारो को सम थरन नही कर सकत थ। प रणामस्वू प, यह सभव नही था क पदाथर क बार म पूणर समझदारी वक सत की जा सकती या उसपर व्यापक वचार- वमशर कया जा सकता।   वरोधी वचारधारा वाल लोगो क दवाब क कारण तो यह और भी क ठन था। उनम स कइ लोगो न तो अपन खोज हुए तथयो का गलत मूल्याकन क या और य द व कभी सतय क करीब भी पहुच सक तो सही नषकषर तक पहुचन म व सफल नही हो सक। दूसर ऐस लोग जनक अपन न हत स्वाथर थ, व इस वषय की पूछ पकडकर कसी और ही जगह पटक दन

का काम कया करत थ।

पदाथर का ततव एक वैजञा नक तथय है:

परनतु आज हम जस कालखड म जी रह ह उसम "म सतषक वारा पदाथर का बोध" कोइ दाशरनक अनुमान का व षय नही रह गया ह ब लक अब यह वजञा नक रमाणो स सम थरत एक तथय क ू प म सु वखयात ह। वजञान -जगत म हुए नए-नए वकासो स मनुषय की जञान्न रयो की कायरपधत क बार म नइ-नइ बात रकट हो चुकी ह। जसा क हमन इस पुसतक क आरभ म दखा, सभी इन रयो की कायरपधत एक समान ह। बाहरी जगत स इन इन रयो को रापत होन वाल सकत हमारी को शकाओ वारा वयुतीय सकतो म बदल दए जात ह और शराओ क ज रय उनह म सतषक क आभास-कनरो तक पहुचा दया जाता ह। तो इस रकार आदमी दखता ह, सुनता ह, सूघ सकता ह, सवाद रहण करता ह और अपन म सतषक क लघुकाय बोध-कनरो म इस वव का सपशर करता ह।

य वजञा नक तथय अब बलकुल ही सपट ह और शरीरशासर की कसी भी पुसतक या हाइ सकूल क जीव- वजञान क पाठयर म म भी दख जा सकत ह। म सतषक म कस रकार बमब और बोध का सृजन होता ह, यह वषय म डकल सकूलो म वसतारपूवरक पढाया जाता ह। हमार जञान क वकास क साथ-साथ, भौ तक वजञान, कवाटम फी जकस, मनो वजञान, सनायु वजञान, जीव वजञान और च कतसा वजञान जसी शाखाओ म इस समसत र र या का वसतृत ववरण द दया गया ह।

उदाहरण क लए, सधा नतक भौ तकी वशषजञ, डॉ. र ड ऍलन वूलफ , जनहोन अपन शोध क माधयम स अपनी ओर लोगो का अच छा-खासा धयान खीचा ह और आठ पुरसकृत पुसतको क लखक रह ह, न बताया ह क कवाटम फी जकस न खास तौर पर यह सा बत कर दया ह क यह ससार एक र म ह:

... कहीं कुछ है जो क समसत पदाथरवाद से कहीं आगे है, इस भौ तक संसार से परे, जसके अनदर से सभी यथाथर और यह समपूणर अ सततव-जगत र षे पत है। इससे पारमप रक 'वैतवाद' की पु ट होती है परनतु मै इस वषय को कसी रहसयवादी के ू प में नहीं ब लक कवांटम फी जकस के एक जञाता के ू प में लेता हूं। मुझे लगता है क इस भौ तक संसार के बारे में हमारा सबसे नवीनतम जञान हमें यह बताता है क कहीं एक अचूक प र ध है, एक रहसयमय दायरा, और उसी के अनदर से उछलकर यह भौ तक जगत बाहर आता है। [जमरन भौ तक वद और कवांटम मेकै नकस के रणेता] वनर आइजेनबगर ने भौ तकशासर के दायरे में चेतना की अवधारणा को लाते हुए जो बताया था क रटा ने ही बस दशरन की र या से द शरन का सृजन कया है ... मै उस यथाथर को एक अलग ढंग से देखता हूं। यथाथर मेरे लए बहुत कुछ सवन से मलता-जुलता है -- मै एक सव नल यथाथर देखता हूं। मै एक स वनरटा या एक महान चेतना की प रकलपना करता हूं हम सब लोग जसके अंगभूत है .. और मुझे लगता है क इस रादशर का उपयोग करके हम वासतव में कुछ नए वैजञा नक बोध रापत कर सकेंगे, बजाय इसके क हर ची ज को सरल से सरलतम

स्तर पर ले आया जाए। 53

इस वज्ञानक न इस तथय को दखा क वज्ञानक शोधो क आलोक म यह पदाथरजगत वास्तव म एक "र म" ह, और इस तथय को दखन वाला वह एकमार वज्ञानक रहा ह। जो कोइ इस रमाणत वज्ञानक तथय स इनकार करता ह वह वचारक कारणो स ऐसा करता ह, न क वज्ञानक कारणो स। ऐसा इसलए क्योक व वज्ञानक इस सचचाइ को कबूल करना नही चाहत क्योक उनह लगता ह क ऐसा करन स उस भौतकवाद का नामो-नशान मट जाएगा जसस व पूर अडयलपन क साथ चपक हुए ह। वस्तुत:, डॉ. वूल्फ इस स्पट करत हुए कहत ह क इस वास्तवकता स पदाथर्वाद की कोइ सभावना बचगी ही नही।

जब हम अबतक रापत वज्ञानक परणामो पर वचार करत ह तो स्पट लगता ह क 'हम बाहरी जगत का बोध अपन मस्तषक क अनदर पात ह' यह तथय कोइ दाशर्नक अनुमान नही रह गया ह बल्क यह ह वज्ञानक खोजो स स्पट ू प म रकट कया गया एक वज्ञानक तथय। यह एक सचचाइ ह क हर कोइ अपन अनदर क वव म रह रहा ह और कोइ भी इस तथय स इनकार नही कर सकता। हर कोइ -- चाह वह धामर्क वचारधारा का हो या ना हो -- इस तथय का नरपष ज्ञान रखता ह और अगर कोइ इसस इनकार कर तो वह व्यथर्का इनकार ह।

आपत: "क्या पदाथरकी वास्तवकता का वषय ठीक वही चीज है जैसे 'अस्ततव की एकता' (वहदात अक-वजूद) का वषय?"

उतर : यह सच ह क 'अस्ततव की एकता' का वषय राय: वही ह जसक बार म अतीत क कइ इस्लामी ववानो न चचा की ह और जसका उल्लख इस पुस्तक म वणर्त कुछ वषयो क सनदभरम भी कया गया ह।

इतहास क कालरम म कइ ववानो और वचारको न इस सधानत का वलषण कया ह। परनतु यह कहना क पदाथरहमार मस्तषक म आकार रहण करन वाला एक र म ह, यह कहन जसा नही ह क "हम जो कुछ दखत ह , उसका अस्तव नही ह।" अथात व तमाम चीज जो हम दखत ह -- पवर्त, चरागाह, फूल-पतया, लोग-बाग समुर इतयाद -- या दूसर शब्दो म हम जो कुछ दखत ह और कुरान म वणर्त व सब वस्तुए जनह इवर न अस्ततव रदान कया ह, उनह रचा गया ह और उनका अस्ततव ह। परनतु य सब चीज महज एक बमब क ू प म अस्ततववान ह।

हम दख या ना दख, इवर की बनाइ हुइ हर वस्तु अपनी जगह वयमान ह। चाह जो भी परस्थत हो, उनह रचा गया ह यह सतय ह, और जसाक हम जान चुक ह इवर की स्मृत क तल वह जब स रचा गया ह तबस लकर अपनी परसमापत तक वयमान रहगा। (और अधक जानकारी क लए दख, *"इटनर्टी हैज ऑलरेडी बगन", लेखक: हारू ं याहया*)

इसक फलस्वरू प, यह तथय क पदाथर हमार म स्तषक म उभरता हुआ एक र म ह का यह अथर नही ह क उसका कोइ अ स्ततव ही नही ह। इस तथय स हम सफर पदाथर की सही-सही र कृ त का ञान मलता ह क वह एक बोध मार ह।

आप त: "यह जान लेने के बाद क कोइ वस्तु एक र म मार है, कोइ उससे पयार कैसे कर सकता है? य द हम यह मान लें क हर वस्तु हमारे म स्तषक में अं कत एक र म है तो हम अपनी मां, अपने पता, दोस्तों या पैगमबरों से कैसे पयार करेंगे?"
उतर: यह र न पूछन वाला क्य त सभवत: यह नही जानता या समझता क वह स्वय भी एक र म ह। परनतु ऐसा लगता ह मानो वह वह दोस्तो और प रवार को तो र म मानता ह और स्वय को पूणर तथा प, अपन अतरग लोगो की तरह वह स्वय भी एक र ती त मार ह। जस शरीर को वह दख और छू रहा होता ह, जनह वह पयार करता ह, वह सब उसक म स्तषक म उभर रह बमब ह।

इसक अ त र त, यह सचचाइ क व लोग, व मरगण और पा रवा रक जन आभास-स्वरू प ह, उनह पयार कए जान क अ धकार स व चत नही करती। य द कोइ अपन प रवार या मरो को उनक भौ तक या शारी रक अ स्ततव क कारण र म करता ह तो वह सचचा र म नही ह। सचचा र म कसी को इस कारण र म करन म न हत ह क उसम उस इव र की र कटत वभू तयो क दशरन होत ह। उदाहरण क लए, हमन पगमबर मुहममद (इव र उनह आशीवा द द और शा त र दान कर) को कभी दखा नही ह, परनतु फर भी हम उनक र त अपार र म और स्नह की भावना स भर हुए ह कयो क हम जानत ह क उनम इव र क कइ सगुणो क दशरन होत थ, जस "परम सहायक" (अल-वाली), "सावरभौम स्वामी" (अल-मा लक), "परम उदार" (अल-करीम), "परमोचच नयासी" (अल-वकील), "सवचच मागरदशरक" (अल-हादी), इतया द। तथा प, पगमबर मुहममद (इव र उनह आशीवा द द और शा त र दान कर) क र त हमार इस र म का एकमार र ोत ह उनक सचच स्वामी, अल्लाह, क र त हमारा र म।

मुसलमान वह ह जो इव र क र त अपन र म क कारण लोगो स पयार करता ह, और साथ ही अनय सभी चीजो स, कयो क वह उनम इव र की झलक दखता ह। उदाहरण क लए, ह रण क कसी बचच को चाहन वाला कोइ मुसलमान उस इस लए चाहता ह कयो क उस ह रण म उस इव र क र म और उसकी कु णा की झलक दखती ह, कयो क उस जीव म इव र वारा रची गइ पयारी वशषताओ को दखकर वह आन नदत होता ह और उस दखकर उसक मन म कु णा की भावना का सचार होता ह । वह महज उस जानवर अथवा अनय कसी भी जीव को उनक अलग-थलग अ स्ततव क कारण पयार नही कर रहा होता।

एक मुसलमान क मन म कसी भी क्य त या वस्तु क लए नरपष र म या मोह नही होता। समस्त र म का उगम इव रीय र म ह। 'कुरान' की एक आयत म कहा गया ह : "..... इव र के सवा तुमहारा कोइ संरष क,

कोइ सहायक नहीं है", और इस बात पर जोर दया गया ह क इवर के सवा मनुषय का अनय कोइ मर नहीं है" (कुरान, 2:107)। एक अनय आयत म पूछा गया ह : "कया इवर अकेला ही अपने सेवक के लए पयापत नहीं है?" (कुरान, 39:36)। इस तथय क आलोक म, व जनह हम पयार करत ह, इवर स सवतर हमार मर या माता-पता नही ह और यह यथाथर क हमार मर और परवार हमार मसतषक म आभासत ह, इस सतय को और भी मजबूत बनाता ह। जब हम अपनी मा स पयार करत ह तो हम वसतुत: उसम रकटत इवर क गुणो स पयार करत ह, जस "दयामय" (अररहीम), "परम कृपालु" (अल-रौफ), "सरषक" (अल-असीम), इतयाद। इसी रकार जब हम कसी धमानुयायी मर क रत रम रकट करत ह तो वासतव म हम उन नतक गुणो क रत रम रकट करत ह जनह इवर न उस वयत म झलकाया ह। चूक हम आशा करत ह क उसका चरर और सवभाव इवर को रय होगा अत: व हम भी रय ह। चूक हम यह दखत ह क उसक मन म इवर क रत रम और भय ह, अत: उसम इवर वारा झलकाइ गइ नठा की छव स हम भी आननद मलता ह। अतएव, जब हम कसी स रम करत ह - चाह उनका अलग शारीरक असततव हो अथवा नही - तो हम वसतुत: इवर क रत अपना रम रकट कर रह होत ह और उस छव क रत हमारा रम और सनह यथाथरूप म रम और सनह क परम रोत इवर क रत होता ह।

जो लोग इवर क असततव स वलग होकर औरो स पयार करत ह और उनह इवर स वयुत एक सवतर सता मानत ह, व बडी भारी चूक कर रह ह। कुरान क अनुसार, रम और समपरण की भावना कवल इवर क रत होनी चाहए। बाकी चीज इसलए चाही जा सकती ह कयोक उनम हम इवर का रतबमब दखता ह। जो कोइ भी इवर स पर एक सवतर असततव क ूप म दूसरो को चाहत ह, उनक बार म इवर की यह वाणी ह :

कुछ लोग इवर के समकषों की रचना कर लेते है और उनके रत इतने आसत हो उठते है जतना उनहें इवर के रत होना चाहए था। परनतु जो आसथावान है उनके मन में इवर के रत उससे कहीं गहन रेम होता है। काश तुम गलत कायरकरने वालों को अपनी सजा भुगतते देख पाते और जान पाते क समसत शत इवर की है और सजा देने में वह अललाह बहुत ही सखत है। (सूरा अल-बकरा : 165)

जसाक इस आयत म कहा गया ह, लोगो या वसतुओ को इवर क असततव स अलग एक वजूद या ताकत समझना उनह इवर क समकष या सहभागी मानना ह। परनतु इवर क सवा असततव क लोक म ऐसा कुछ भी नही ह जो कुछ भी करन या कसी कायरसचालन की शत रखता हो। कुरान की अनक आयतो म इवर क सवा अनय कसी म भी कोइ शत नहत मानन वाल लोगो को चतावनी दी गइ ह:

इवर के सवा वे जनका तुम आवान करते हो, तुमहारी ही तरह दास है। यद तुम सतय कहते हो तो करो उनका आवान और देने दो उनहें रतयुतर। कया उनके पास पैर है क वे चल सकें? कया उनके पास हाथ है कवे थाम सकें? कया उनके पास देखने को आंखें है? कया उनके पास सुनने को कान है? कहो: "पुकारो अपने साझेदार देवताओं को, चल लो अपनी सारी चाल मेरे खलाफ और मत लेने दो मुझे चैन। अललाह है मेरा संरषक

जसने यह प वर रंथ भेजा है। वही सदाचा रयों का धयान रखता है। " इव र के सवा तुम जसका भी आवान करते हो वे तुमहारी सहायता करने में सषम नहीं है। वे तो सवयं अपनी मदद भी नहीं कर सकते। य द तुम उनसे मागदशस चाहते हो तो वे कभी तुमहारी पुकार नहीं सुनेंगे। तुम अनहें अपनी ओर नहारते देखोगे, मगर फर भी वे तुमहें नहीं देख रहे होंगे। (सूर अल-आ'रफ : 194-198)

जसा क उपरोत आयतो म सपट रकट कर दया गया ह, इव र क सवा अनय कसी म यह सामथय नही ह क वह कसी की सहायता कर सक। कसी क माता- पता, बचचो या दोसतो म भी नही, जनक अ सततव का वह ताउर गवाह रहा ह। व सब वसतुत: उसकी कोइ मदद नही कर सकत। मरो और पा रवा रक जनो की मदद भी इ वरचछा स ही रापत होती ह। अललाह की मजी क खलाफ तो कोइ खुद अपनी मदद भी नही कर सकता। य द इ व र की इचछा न हो तो कोइ चलन- फरन, दखन या अनुभव कर पान -- सषप म कह तो अपना अ सततव बचान -- म भी सषम नही हो सकता।

हम यह भी न भूल क मनुषय और पदाथ, जनक बाहरी अ सततव क बार म हम कोइ ञान भी नही हो सकता क नतु फर भी कुछ लोग ब हरग जगत म उनकी भौ तक सता का दावा करत ह, व इस लोक क बाद उनस छीन लए जाएग। जसा क कुरान म रकट कया गया ह, हर कसी को अपना लखा-जोखा दन क लए अलग-अलग बुलाया जाएगा। दूसर शबो म, ठीक उसी तरह जस इस ससार म हर कोइ इव र क साथ अकला खडा ह, मृतयु क बाद भी उस अपन कमो का हसाब दन क लए उसी तरह अकला ही बुलाया जाएगा। एक आयत म इव र न उ ललखत क या ह :

तुम हमारे पास बलकुल अकेले ही आए हो, जैसे हमने रथम-रथम तुमहारी रचना की थी और वे तमाम चीजें जो हमने तुमहें रदान की थीं, तुम पीछे छोड आए हो। कहां देख रहे है हम तुमहारे उन सगे-समब नधयों को जनहें तुम इव र का साझेदार बना बैठे थे! तुमहारे और उनके बीच की वह कडी तोड दी गइ है। जनके लए तुमने वे दावे कएथे, उनहोंने तुमहें तयाग दया है। (सूरा अल-अनाम : 94)

उदाहरण क लए, अपन मर की ओर दखत हुए हर कोइ अपन म सतषक म मर की वह छ व दखता ह जस इ व र न ही र त ब मबत कया ह। य द उसक म सतषक की शराए काट डाली जाए तो मर की वह छ व लुप त हो जाएगी। कवल इव र ही ह जो 'जी वत' ह, अननत ह। तो ऐसी सथ त म कोइ वय त कसी अनय वसतु क र त कस आसत हो सकता ह, जसक मूल सवू प स कभी उसका समपकर सथा पत नही हो सकता और जो कवल उसक म सतषक म र ष पत बमब ह? अत: यह कभी नही भूलना चा हए क कवल इव र ही ह जसस वय त को र म करना चा हए, जसक र त उस सम पस होना चा हए।

आप त : "हर वय त चाहता है क उसके र यजन उसी की तरह वासत वक और सथायी हों।"

उतर : इस वषय पर आप त करन वाल कुछ लोग कहा करत ह: "हर व्यत चाहता ह क उसक रयजन उसी की तरह वास्त वक और स्थायी हो। भला व अलग कस हो सकत ह?" ऐस कथनो स यह पता चलता ह क पदाथर की सचची रकृत क बार म हम जो कहत आय ह उस व नही समझ सक ह या इस बार म उनहोन गहन वचार नही कया ह। जो लोग ऐसा कहत ह व स्वय "वास्त वक और स्थायी" नही ह, तो फर व अपन रयजनो क वास्त वक और स्थायी होन की आशा कस कर सकत ह? जब कोइ इसपर वचार करगा तो वह जान लगा क स्वय उसका शरीर इवर वारा उसकी आतमा को दशा या गया एक र त बमब मार ह।

जब कुछ लोग अपनी काया क अ स्ततव का अनुभव करत ह, अगुली कट जान पर उनह ददर का अहसास होता ह या व अपन शरीर की क तपय भौ तक आवशयकताओ की पू तर करत ह तो उनह लग सकता ह क उनका शरीर एक वास्त वक भौ तक अ स्ततव ह। परनतु अनय सभी चीजो की तरह व्य त की अपनी काया भी वाकइ एक 'बोध' मा र ह और कोइ भी कभी यह नही जान सकता क इस बोध स पर उसक शरीर का कोइ असली र तू प भी ह या नही। अगुली कट जान पर होन वाला ददर भी एक बोध या आभास स बढकर कुछ नही। खाना खा लन क बाद होन वाली सतु ट भी एक आभास ही ह। मानव शरीर स बाहर क कृ र म सकत भी ऐसी अनुभू त जगा सकत ह। परन तु कोइ भी अपन शरीर क भौ तक अ स्ततव का सतयापन नही कर सकता। इव र वारा मनुषय को रदत आतमा ही वह ततव ह जस वदना की अनुभू त होती ह या जो कसी पनन पर लखी तहरीर को समझती ह। अत: व्यत स्वय ही इवर वारा रकट कया गया स्वू प ह। य लोग स्थायी या वास्त वक नही ह, जसा क व समझत ह।

आप त : "यह संसार आभासों का संक लत स्वू प है, इस नषकषर पर पहुंच जाने का मतलब यह हुआ क रमांड की कायरर णाली के बारे में, अथा त वज्ञान के वषय में, हर जज्ञासा तयाग दी जाए।"

उतर : इस रकार की आप त अकसर भौ तकवा दयो वारा उठाइ जाती ह और इसक ज रय यह जताया जाता ह क इस वषय का वज्ञान स घोर वरोध ह और यह वज्ञान को खा रज करन वाला वचार ह। परनतु यह स्पटत: गलत और अमानय ह।

इव र हम अपन अनदर अनुभूत होन वाल जन बमबो क दशस करात ह व कायस्कारण समबनध क एक व्यापक जाल स सयुत ह, और सब क सब नयमो क अधीन एक-दूसर स जुड हुए ह। उदाहरण क लए हमार दमाग म उभरन वाल रात और दन क प रदृशय। रात और दन का बोध हम सूयर तथा पृथवी क प रर मण क सापष होता ह। जब हमार म स्तषक म सूयर का बमब अपन चरम पर होता ह तो हम दोपहर का ज्ञान होता ह और जब सूयर ढलता ह तो हम साधयकाल क साषी बनत ह। ससार क वषय म बोधो को जनम दत हुए इव र न उनह कायस्कारण समबनध म नबध कर दया। सूरज ढल जान क बाद हम कभी दन की र ती त नही होती। इस रकार व ज्ञान इस कायस्कारण समबनध क अनुरीष ण और अध ययन का ष र ह जनह इव र न हमार मनो-

म स्तषक म अ कत कए ह।

च लए एक अनय उदाहरण लत ह: अपन म स्तषक-ज नत बोध क दायर म हम जब कभी एक कलम को अपन हाथ स खसक जान दत ह तो वह जमीन पर आ गरती ह। इस रकार की घटनाओ क कायरकारण समबनध का अध ययन करन क प रणामस्वू प हमन "गु तवाकषरण का नयम" खोज नकाला। हमार म स्तषक म र त ब मबत की गइ छ वयो को इव र नयमो और कसी कारण वशष स जोडकर ही र स्तुत करत ह। इन नयमो और कारणो की रचना क पीछ एक उदशय यह ह क जीवन की सृ ट एक परीषा क ू प म की गइ ह। जब उस व्यवस्था का अधययन कया जाता ह जसक तहत य नयम और "ससार" या र माड नामक यह बोध-समूह अपना कायर करत ह तो व ञान का अभ्युदय होता ह। इसी कारण स वञान और उन नयमो का अधययन करना अतयत महतवपूणर ह जनस इव र वारा र चत असाधारण बमबो का कायरसचालन होता ह।

अत: नषकषर ू प म, भौ तकवा दयो का यह दावा बल्कुल ही यु त सगत नही ह क पदाथर को बोध मान लन का अथर वञान स इनकार करना ह। ब ल्क इसक वपरीत, जो इस तथय को हा दरक ू प स स्वीकार कर लत ह उनह समझ म आ जाता ह क वञान इन बमब-समूहो और उनम न हत रहस्यो को अच छी तरह समझन म हमारा एक महतवपूणर सहायक ह।

वञान की इस अवधारणा और भौ तकवा दयो क वचार म जमीन-आसमान का अनतर ह। बमबो की समर ता का अनुवीष ण करक हमन र कृ त क जन नयमो की खोज की ह व सब इव र क बनाए हुए नयम ह। उसी इव र न इस समर ता की रचना की ह। दूसरी ओर, भौ तकवा दयो वारा वञान को दखन का नज रया यह ह क पदाथर वास्त वक ह और र कृ त क नयम इन पदाथो स ही नस्सृत हुए ह जनस हर चीज की रचना हुइ ह। परनतु यह वचार सतय स पर ह।

हम यह भी नही भूलना चा हए क इव र म वह श त न हत ह क व कसी कारण या नयम क बना भी इन र ती तयो का सृजन कर सक। उदाहरण क लए, इव र बना कसी बीज क गुलाब को जनम द सकत ह, या बना बादल बरसात कर सकत ह और सूयर क बना भी दन-रात और छाया की रचना कर सकत ह। एक आयत म इव र वारा यह सतय उघा टत कया गया ह :

क्या तुम नहीं देखते क कैसे तुमहारा वह र भु छांह पसारता है? य द उसने चाहा होता तो उनहें वह स्थर बना सकता था। और फर हमने सूयर को उनका संकेतक नयुत कया। फर र मश: हमने उनहें अपने अ स्ततव में समेट लया। उस परमेव र ने ही रात की रचना तुमहारी वर ां त के लए एक लबादे के ू प में की ता क तुम सो सको, और उसने ही तुमहारे जागने के लए दन बनाया। (सूरा अल-फुरकान : 45-47)

जसा क हमन उपरोत आयत स समझा, इवर रकट करत ह क पहल उनहोन छाया की रचना की और फर सूयरको उसका कारण मुकरर कया। सवन क उदाहरण स हम इस रचना-ररम को और भी बहतर ढग स समझन म सहायता मल सकती ह। हाला क हमार सवनो का कोइ भी भौतक रतूप नही होता, परनतु फर भी हम सूय की रोशनी और गमी का बोध होता ह। इस वचार-बदु स, सवन इस बात क सकत ह क सूयरक वसतुत: न होन पर भी हमार मसतषक म उसकी रतीत को जनम दया जा सकता ह।

तथा प, जीवन ूपी इस परीषा म इवर न मनुषय क लए हर वसतु का एक कारण भी रदत कया ह। सूयरक कारण दन होता ह और बादलो क कारण वषा। य सब व बमब ह जनह इवर न हमार मनो-मसतषक म वयतश: रचा ह। परणाम क पीछ कारण की रचना करक इवर हम यह सोचन की षमता दत ह क हर वसतु का कायरसचालन एक नयम क दायर म होता ह, और इस रकार हम वजानक जजासा कर पात ह।

आपत : "एक ओर तो इवर के असततव का वणरस रकृत में वयापत रमाणों के आधार पर कया जाता है और दूसरी ओर उनके असततव के साषय बनाए गए भौतक जगत को ही असततवहीन कह दया जाता है। कया इस बात में वरोधाभास नहीं है?"

उतर : कुछ लोग जनहोन पदाथरक ततव को भली-भात नही समझा ह, व यह मान लत ह क "यह भौतक ससार रतीतयो क समूह स बना हुआ ह" इस कथन का अथरमानो यह ह क "कोइ असततव नही ह"। तथा प जब हम यह कहत ह क पदाथरएक समर बोध ह या यह क वह हमार मसतषक म उकरी हुइ एक छव ह तो इस कथन का आशय यह नही होता ह क पदाथरका कोइ असततव ह ही नही। एक भौतक वव ह जूर परनतु वह कवल एक समरता-मूलक बोध म ही परलषत होता ह। ठीक हमार सवनो की तरह यह सफरहमार बोधातमक सतर पर ही मौजूद ह।

इस बोधातमक सतर पर पदाथरका असततव होना इवर क असततव का एक नचयातमक रमाण ह। ऐसा इसलए कयोक (ठीक एक बमब की तरह) बोधातमक सतर पर मौजूद कोइ भी वसतु अपनी रचना खुद-ब-खुद नही कर सकती, अत: यह रमाणत होता ह क उनह असततव-ूप दन वाला कही कोइ "रटा" ह। इसलए यह तथय क यह भौतक रमाड महज एक बमब ह, इवर क असततव और उसकी एकमवता का एक ठोस रमाण ह। अतएव, पदाथरका एक बमब होना और असततव की वसतुओ वारा इवरीय सता की झलक दखाना -- इन दोनो ही बातो म कोइ वरोधाभास नही ह। बलक इसक वपरीत, पहला दूसर की एक ताकरक परणत ह।

इवर न इस समसत असततव-लोक की रचना की ह, परनतु बमबो क ूप म। इन बमब-वसतुओ की वशषताओ की परख और उनका अधययन करन स इवर की सृट की उतकृटता, उनकी कला और असीम जानमयता सध होती ह। अत: पदाथरएक समर आभास ह इस कथन और फर उन आभासो क अधययन और उनक माधयम स इवर की शत और महता को समझन म कही कोइ वरोधाभास नही ह।

यहा हम यह भी सपट कर द क कुछ लोगो क वचार म इवर का असततव तभी तक ह जबतक उनक बार म वचार करन वाल राणयो का असततव ह (नचत ूप स इवर इसस कही अधक पर, महान ह), और इस गभीर भूल क कारण व कइ आपतया पश करत ह। परनतु यद इवर न चाहा होता तो व अपन ही वारा रचतसभी बमबो को समट लत और जो कुछ भी असततव म ह, उनह वनट कर दत और फर भी उनका अपना अपना असततव कायम रहगा कयोक इवर अननत और काल-नरपष ह। कइ आयतो म हमारा धयान इस तथय की ओर खीचा गया ह क इवर जब चाह, जो चाह, वनट कर सकत ह:

हे मनुषय! यद वह चाहता तो इकठे ही तुम सबको उखाड फेंकता और तुमहारी जगह औरों की उतपत करता। नससंदेह इवर के पास ऐसा करने की शत है। (सूर अन-नीस : 133)
हे मनुषय! दरर हो तुम अललाह के समष अपने अभावों के कारण जबक अललाह तुमहारी आवशयकता से परे परम समृध है, सवरशंसत है वह। यद वह चाहे तो तुमसे नबट कर एक नइ सृट रच ले। इवर के लए यह कोइ कठन कायरनहीं है। (सूरा फातर : 15-17)

यह एक बहुत ही महतवपूणरतथय ह क यद इवर असततव की सभी वसतुओ को नट कर द तो भी जो बच जाएगा वह उसी परमवर का असततव होगा। इवर हर असततव स पहल वयमान था और तब भी वयमान रहगा जबक हर वसतु लुपत हो जाएगी। एक आयत म ऐसा ही रकटत ह:

इस धरातल का सवसव समापत हो जाएगा, परनतु तुमहारे रभु का मुखडा उजागर रहेगा, जो गरमा और उदारता का सवामी है। (सूरा अररहमान : 26-27)

आपत : "’अगर हम इस ववरण को मान लें तो फर नैतकता और अनैतकता की धारणा ही समापत हो जाएगी"।

उतर : यह वचार पूणस: अवासतवक ह। यह भौतक ससार हमार बोध म आकार रहण करता ह, इस तथय स जीवन ूपी परीषा का रहसय समापत नही हो जाता। पदाथरएक बोध क ूप म मौजूद हो या हमार मसतषक स बाहर, जो इवर वारा वजस कया गया ह वह वजस ही रहगा जबक जो सवीकायरह वह सवीकायररहगा। उदाहरण क लए, इवर न ’पोकर’ खाना नषध कया ह। यह कहना क "पोकरतो मर मसतषक म एक बमब मार ह" और उसक बाद उसका भषण करना सपट ूप स पाखड और अववक ह। या फर यह कहना क "य लोग तो मर मसतषक म अकत बमब मार ह, अत: म उनस झूठ ही बोल दू तो कया हो जाएगा" -- जस वयत क मन म इवर का भय ह और जो इस वषय की गभीर समझ रखता ह वह ऐसा कभी नही कहगा। इवर वारा रसतावत सभी मयादाओ, आदशो और नषधो क रसग म यही बात लागू होती ह। उदाहरण क लए, हम अभी जस रसग पर चचा कर रह ह उसका यह अथरकदाप नही ह क हम भषा न द। हमार वारा दी गइ भ षा महज मसतषक

म दृशयमान ह, इसका यह मतलब नही ह क हम इस अ नवायर कतरव्य स चूक जाए। इवर न इस समस्त रमाड की रचना एक मुकममल अहसास क ू प म की ह परनतु इस अहसास क दायर म भी हम 'कुरान' म रकटत अपन दा यतवो स बध हुए ह।

बीत हुए समय म कुछ लोगो न न तक और अन तक की अवधारणा स मुत होन क लए इस सचचाइ क अथर का अनथर कर डाला था। परनतु उनका ववास पहल ही स वकृत था और सभव ह क उनहोन इस तथय का उपयोग अपन न हत स्वाथर की पू तर क लए करना चाहा हो। परनतु हम जानना चा हए क व जस नषकषर पर पहुच वह र ामक था।

नषकषरत:, कोइ भी व्य त जो नठापूवरक इस स्थ त पर वचार करगा उस यह साफ रतीत होगा क इवर वारा हमारी अ ग न-परीष ा लन क लए यह ज़ू री नही क पदाथर का वास्त वक अ स्ततव होना ही चा हए। इवर न इस अ ग न-परीष ा की रचना इसी ब मबत वव क दायर म की ह। यह कहना नराधार लगता ह क राथरनाशील होन, न तक और अन तक की पहचान करन जसी बातो क लए पदाथर का अ स्ततव होना नहायत ज़ू री ह। इसक अलावा, जो चीज महतवपूणर ह वह ह आतमा। इस ससार क बाद वह जस पुरस्कृत या द डत कया जाएगा वह ह हमारी आतमा। इस कारण स, पदाथर का हमार म स्तषक म अ कत एक बमब होन स शुभ कमर करन और अशुभ स बचन तथा अपन धा मरक कतरव्यो का नवा ह करन म हमार सामन कोइ ु कावट नही आती।

इस बदु पर आकर हम यह साफ जान लना चा हए क जो लोग बमबो क र त उतरदायी नही होन का ढकोसला करत ह, जब उनह नरक म धकल दया जाएगा तो व कहग: "हमन सोचा था क हमारी कोइ जममवारी नही ह, तभी तो हम यहा ह"। यह समझत हुए क नरक भी इस ससार की तरह ही एक बमबाभास ह, व फर भी अननत यर णा क कुचर म पसग।

आप त: "पेड की तरफ देखकर हर कोइ कहता है क पते हरे है। चूं क हर कोइ उस पेड का समान ू प से वणरन करता है तो इसका अथर यह है क वह केवल मेरे म स्तषक में मौजूद नहीं है"।

उतर: जस रग को हमार आस-पास क लोग हरा कहत ह, उस हम भी हरा कहत ह परनतु व जस रग को हरा कह रह ह, क्या वह वही हरा रग ह जस हम अपन म स्तषक म दख रह ह? या उस 'हर' स हमारा अ भर ाय हम दखन वाल नील रग स ह जस व 'हरा' कहत ह? इस रहस्य को कभी जान पान का हमार पास कोइ तरीका नही ह। जसा क हमन पहल समझा ह, हमार म स्तषक की प र ध स बाहर कोइ रग नही ह। वहा कवल भनन- भनन दीघरनाओ क रकाश-तरग ह। उनह रग म तबदील करन का काम हमारा दमाग करता ह। इस रकार रगो की रचना हमार म स्तषक क अनदर होती ह और कोइ भी यह नही जान सकता क अपन म स्तषक क अनदर हम कौन सा रग दख रह ह।

यह एक ऐसा वषय ह जसपर अनक दाशरनको और वजा नको न चचा की ह। वजा नक इस राय पर पहुच ह क "हम यह कभी नहीं कह सकते क हम जस गुलाब को लाल देख रहे है उसे दूसरा वय त भी उसी तजर पर लाल देख रहा है अथवा यह क जसे हम नीले रंग के ू प में देख रहे है उसे ही वह लाल कहता है"। बोध की समपूणर र र या क साथ यही सच ह, कवल रगो क साथ नही। उदाहरण क लए, डॅ नयल डनट न इस वषय पर अपन वचार और अपनी अ भु च का इजहार इन शबो म कया ह :

"एसे कनस नंरा यूमन अंडसरैडंग" (१९६०) नामक अपने आलेख में लॉके ने इस वषय पर चचा की है, और मेरे बहुत से छारों ने भी ऐसा कहा है क जब वे छोटे बचचे थे तो उन सबके मन में एक समान वचार कौंध जाया करत ा था और वे उससे वमो हत हो उठते थे। यह वचार वलकुल पारदशी ू प से सपट और सुर षत है:

"कुछ तरीके है जनके माधयम से वसतुएं मुझे दखाइ पडती है, धव नत होती है, मुझे उनकी महक मलती है, इतया द .. इतया द। इतना तक तो सपट है। परनतु पता नहीं, जस तरीके से ये पदाथर मुझे रतीत होते है, कया उसी तरीके से औरों को भी?"

दाशरनकों ने इस वषय पर व वध वचारधाराएं वक सत की है परनतु उनका सबसे शासरीय संसकरण है 'अंतवैय त क संसकरण'। हम भला यह कैसे जानते है क कसी वसतु को देखते समय हम और आप दोनों एक ही वषय न ठ रंग को देख रहे होते है? चूं क हम दोनों ने ही रंग समबनधी अपना शबकोष सावरजनीन रंग-पदाथो को देखकर वक सत कया है, अत: सवथा भनन- भनन वषय नठ रंगों की अनुभू त करने के बावजूद हमारी वा चक अ भवयत एक-दूसरे से मेल खाएगी। उदाहरण के लए, तब भी जब क मुझे लाल वसतुएं उसी तरीके से दख रही होती है ज स तरीके से तुमहें हरी वसतुएं। 54

हावडर वव वयालय म मनो वजान क रोफसर यूर वसटन न कहा ह क वजा नक दृ टकोण स हम यह कदा प नही जान सकत क कसी वय त को गुलाब क बार म ठीक वही बोध हो रहा होता ह जसा क हम:

य द बोध एक र यातमक, रचनातमक र र या है तो लोग कस हद तक इस संसार का बोध एक ही ढंग से करते है? कया लाल रंग कसी वय त को वैसा ही दखता है जैसा कसी और को? य द एक वय त को लहसुन पसनद है और दूसरा उससे घृणा करता है तो कया पसनद और घृणा दोनों की एक ही जैसी अनुभू तयां है, या दोनों के लए लहसुन का सवाद अलग-अलग है? बोध की इस रचनातमक रकृ त से इसी बराबरी का एक और उलझाने वाला र न उठ खडा होता है क कया लोग इस संसार को वैसा ही देखते है जैसा क यह सचमुच है, और य द हां तो कस हद तक? अफलातून (पलेटो) ने यह बहस छेडी थी क हम जसका बोध रहण करते है वह कसी गुफा की दीवार पर बनी छायाओं से त नक जयादा है जनहें धुंधले रकाश में कसी अनदेखे यथाथर वारा र षे पत कया गया है। कॉफी का

पयाला गमर है - यह कहने का क्या आशय है? और क्या घास सचमुच हरी है? अगर कोइ क्यत हरे रंग के र त वणा धता से रस्त है, जसकी दृशय-रणाली कुछ खास तरंग-दीघसाओं वाले रकाश का अनतर समझने में सषम नहीं है, उसे घास हरी नहीं दखेगी। तो फर यह हरापन वस्तु (घास) की वशेषता है या बोध करने वाले की, या दृशय और रटा के बीच कसी अभरया की? संवेदना और बोध के केनर में ये कुछ दाशरनक सवाल खडे है। 55

तो जसा क हमन दखा, यह सचचाइ क हम एक ही परभाषाए दत ह, या कसी रग को एक ही नाम स पुकारत ह, इस बात का योतक नही ह क हम एक ही समान चीजो को दख रह होत ह। लोगो को रापत हो रह बोधो की तुलना कर पाना सवथा असभव ह क्योक हर कोइ अपन मस्तषक म एक वशट ससार क दशस कर रहा होता ह -- वह ससार जो सफर उसका ह।

बाद वाली आपत म इस आपत क वषय पर और भी अधक रकाश डाला गया ह।

आपत: "मै अपने दो मरों के साथ एक बगीचे में मौजूद हूं और हम तीनों बलकुल एक जैसी वस्तुओं को देखते है। यद हममें से रतयेक अपने-अपने मस्तषक में एक समान वस्तुओं को देख रहा है तो इसका अथर है क उन वस्तुओं का मूल ू प हमारे मस्तषक से बाहर मौजूद है।"

उतर : आप तथा अनय लोग एक ही वस्तुओ को दख रह होत ह, यह तथय इस बात की पुट नही करता क आप सबलोग जो दख रह ह, उसका भौतक रतूप बाहर मौजूद ह। ऐसा इसलए क्योक आप जन साथयो को दख रह ह व भी आपक मनो-मस्तषक म ही ह। जब आप अपन मरो क साथ कसी बगीच म टहल रह होत ह तो जस तरह सव, खुबानी, रग-बरग फूलो, चडयो की चहक, खुशनुमा हवा तथा फलो और फूलो की सुरभ क बमब आपक मस्तषक म आकार रहण करत ह, ठीक उसी तरह उन मरो और वस्तुओ की छव भी आपक मस्तषक म ही अकत होती ह जनह आप दख रह होत ह। दूसर शबो म कहा जाए तो आपक मर आपक 'मानसक उयान' म टहल रह होत ह, न क कसी बाहरी जगत म। अत: यह तथय क आपक मर उनही वस्तुओ को दख रह होत ह जनह आप, इस बात का रमाण नही ह क आप जो कुछ दख रह ह उनका भौतक रतूप बाहर मौजूद ह।

जब आप लोगो स खचाखच भर कसी स्टडयम म मच दख रह होत ह तो यह तथय क एक ही समय हजारो लोग खलाडी को गोल बनात दखत ह और एक ही समय म अपनी रतरया जाहर करत ह -- यह स्टडयम खलाडयो, रफरी और हजारो लोगो की मौजूदगी का रमाण नही ह। व तमाम खलाडी, व रशसक, व तालया और सबकुछ आपक मस्तषक म परघटत होन वाली वस्तुए ह। गोल करन वाल खलाडी और इसपर अपनी खुशी का इजहार करत रशसक, सब आपक ही मस्तषक क अत:पुर म ह। आप अपन ही मस्तषक क अदर स्कोर कए गए गोल को लकर रसनन ह और अपन ही मस्तषक म नहत भीड क साथ तालया बजा रह होत ह। नषकषर यह क आप अपन साथ-साथ अनय लोगो को दख रह होत ह और व आपक अनुभवो की पुट कर रह होत ह, इसका यह

अथरनही ह क आप जो दख रह ह उसका बाहरी जगत म कोइ भौतक र तू प उपस्थत ह। चाह व जतनी सखया म हो, जन लोगो को आप "ठीक अपन पास" समझत ह व दर-असल आपक मस्तषक म ह।

आपत : "हम इस बाय संसार का बोध ठीक उसी ूप में करते है जस ूप में वह वस्तुत: है और इसी कारण हमारा व्यवहार सामानय बना रहता है। उदाहरण के लए, जब हम कसी चटान के छोर पर आते है तो हम चलते नहीं जाते, बल्क ुक जाते है।"

उतर : आपत स पता चलता ह क रन पूछन वाला बडी उलझन म ह और जो कहा जा रहा ह उस वह ठीक स नही समझ सका ह, क्योक उसकी आपत इस दाव पर आधारत ह : "बाहर एक भौतक वव ह, परनतु हर कोइ उस वव को अपन-अपन मन म अलग-अलग ढग स दखता ह"। यह व्यत सोचता ह क सभवत: उपरोत कसम का कोइ दावा कया जा रहा ह और इसलए वह अपनी यह आपत उठाता ह; और मानो उस दाव का खडन करत हुए कहता ह : "बाहर एक पदाथक जगत ह जसका बोध हम ठीक उसी ूप म करत ह जस ूप म वह वस्तुत: ह और कोइ भी उस अलग ढग स नही दखता। इसका रमाण ह यह क जब हम कसी चटान क आखरी कनार को दखत ह तो हम चलत नही जात, बल्क ुक जात ह।

परनतु यहा जस तथय पर चचा हो रही ह वह उस व्यत वारा परकल्पत वषय स भनन ह। एक वचार यह ह क : "एक बाहरी जगत ह परनतु यह जसा भी ह हम उस उसस भनन ूप म दखत ह।" दूसरा वचार यह ह क : "हम जो भी अनुभव कर रह होत ह, उनकी रतीत हम अपन मस्तषक म होती ह और मौलक स्वतर सतव स हमारा रतयष समपकर कभी नही हो सकता। इसी कारण हम यह कभी नही जान सकत क य मूल स्वूप सचमुच बाहरी जगत म वयमान ह भी या नही।"

हम कसी चटान क छोर पर भी चलत नही चल जात, इस सचचाइ का यह अथरनही ह क हम बाहरी जगत को वह जसा ह वसा ही दख रह ह। जब हम कसी सीध पथ पर चल रह होत ह और फर सहसा चटान का अतम सरा दखकर ुक जात ह तो हम अपन ही मस्तषक म एक पथ पर चल रह होत ह। और यद हम उस चटान क सर स गर भी जाएग तो वह भी मस्तषक की ही एक अनुभूत होगी। जसाक हम पहल जान चुक ह, जब हम कसी बस स टकरात ह या हम कोइ कुता काट खाता ह तो भी यही सतय ह। जब हम चटान क ऊपर स गर पडत ह तो घायल होन या हडया टूटन का ददरहमार मस्तषक म उभरन वाला ही अहसास होता ह।

आपत : "इसमें कोइ सनदेह नहीं क इवर ये बमब हमारी परीषा लेने के लए हमें दखाते है। परनतु समस्तकमो के सजरक इवर ऐसी परीषा क्यों लेते है?"

उतर : हा, यह सच ह क लोगो की रवृत जानन क लए इवर को उनकी परीषा लन की आवशयकता

नही ह कयो क हर घटना, समय और स्थान अल्लाह वारा ही मुकरर कए गए ह। अल्लाह समय और स्थान क बनधन स मुत ह। हमार लए जो अतीत और भ वषय होता ह वह उनकी दृ ट म एक नमष म आन और जान वाली झलक ह। परनतु इव र हम जीवन की इन परीषाओ का अनुभव रापत करन दना चाहत ह ता क हम अपन ही क मो क साषी बन सक और जान सक क हम स्वगर या नरक क पार कयो मान गए ह। अगर कोइ वय त यह मानता ह क इव र हमार मर ह, व अननत ू प स नयाय नठ ह, स्नही और दयालु ह तो वह उनकी इस रचना को स्वीकार करगा।

इव र हमार सामन व घटनाए रकट करत ह जो उनकी नजर म कब क बीत चुक। व लोगो को यह अहसास दत ह क व अपनी स्वतर इचछा का रयोग करक इन कमो को स्वय कर रह ह। ऐस अहसास क दायर म व कुरान क माधयम स हमार सामन यह घो षत करत ह क हम हर कायर क लए उतरदायी ह। हमारा यह उतरदा यतव ह क हम अपन रभु क आदशो पर चल। जबतक इव र न चाह, हम इसस जयादा और कुछ नही जान सकत। य द उस परमव र की इचछा होगी वह इस रहस्य को इस लोक या परलोक म हमार समष रकट कर दग। और य द व न चाह तो कभी नही। जसा क एक आयत म कहा गया ह :

"अल्लाह का कोइ भी ञान उनकी पकड में नहीं आ सकता, सवाय उसकी मजी के।" (सूरा अल-बकरा : 255)

चाह जो भी हो, इव र हमारा स्वामी और सरष क ह। अत: उस परमव र म नठा रखना हमारा कतरवय ह जसन हम अनक कृपाए दी ह और उसन जो भी रचा ह उसस हम खुश रहना चा हए।

अतीत म कुछ लोगो न पदाथर क ततव क समबनध म सतय को समझा था, परनतु अल्लाह म अपनी कमजोर आस्था और कुरान की बातो का समु चत ञान न हो पान क कारण उनहोन दग र मत वचारो को जनम दया। कुछ लोगो का कहना ह : "हर वस्तु एक र म ह, अत: आराधना की कोइ जू रत नही।" इसम कोइ दो मत नही क इस रकार क वचार बड ही वकृत और मूखरतापूणर ह। यह सच ह क हर चीज इव र वारा हमार समष एक आभासी छ व क ू प म दशा इ गइ ह, परनतु यह भी सच ह क इव र न हम कुरान क अनुसार अपना जीवन जीन की हदायत दी ह। अत: हमारा फजर सफर इतना ह क हम सावधानीपूवरक इव र क आदशो और वजरताओ का पालन कर।

कुरान म अल्लाह न यह रकट कया ह क उनहोन आतमा क बार म बहुत ही कम ञान रस्तुत कया ह। मनुष य की परीषा लन का वधान भी अल्लाह वारा कसी खास कारण स ही कया गया ह:

हम एक हद तक भय और भूख तथा जीवन और समपदा की ष त, और फलों से तुमहें परखेंगे। परनतु वे जो दृढ नठ है उनहें शुभ समाचार दे दो। (सूरा अल-बकरा : 155)
तुमहारी धन-समपदा और स्वयं तुमहारी परीषा ली जाएगी और उन लोगों के बहुत से दुवरचन तुमहें सुनने होंगे जनके

पास तुमसे भी पहले यह प वर रंथ भेजा गया था, और उनसे भी जो दूसरों को इव र का साझेदार बनाते है। परनतु य द तुमहारी नठा दृढ है और तुम अपने कतरवय से नहीं चूकते हो तो यही है सवोततम दृढ संकलप का पथ। (सूरा अल -इमरान : 186)

इस परीषा म एक महतवपूणर ववक न हत ह। एक तो यह क हमारी परीषा ली जाती ह और अपन कमो क अनुसार हम अननतकाल तक सवगर या नरक भज दया जाता ह। दूसरा ववक यह न हत हो सकता ह क लोग यह जान सक क अपन जीवन म व कया-कया करत ह, और व न तक मूलय कयो महतवपूणर ह जनक आधार पर "नयाय दवस" म उनह सवगर और नरक की रा पत होती ह। परनतु इव र ही सचची बात जानत ह। हम तो बस इतना कर सकत ह क इव र स राथरना कर क व यह जान हमपर रकट कर।

आप त : "अभीतक हमने जो जाना है उसके आधार पर हम कह सकते है क हमारा यह बोध मृतयु के बाद भी कायम रहेगा। कया वह सदा-सवरदा के लए रहेगा? कया सवगर और नरक भी एक मुकममल अहसास (समर बोध) से जयादा कुछ नहीं?"

उतर : इव र न लोगो की रचना इस रकार की ह क हम इस ससार का बोध अपनी आतमा क समष रसतुत कए गए बमबो क माधयम स ही पा सकत ह। दूसर शबदो म कह तो वासत वक भौ तक जगत क न होत हुए भी हम उन बमबो को दख सकत ह जो हम दखाए जाएग। परनतु मृतयु क बाद इव र वय त की रचना एक अलग ढग स करग, अलबता हम कुछ नही मालूम क वह ू प कसा होगा।

तथा प, य द यह भी मान लया जाए क सवगर और नरक कवल आभासी सतर पर महसूस की जान वाली चीज ह तो भी इसस न तो सवगर क सुख म कोइ कमी आएगी, न ही नरक क उतपीडन म। जस तरह अपना हाथ जला बठन पर इस ससार म वय त को पीडानुभू त होती ह, उसी रकार परलोक म भी उस उस अहसास की हकीकत समझ म आएगी। जसा क पहल ही उ लल खत कया जा चुका ह, ददर जसी अनुभू तया भी म सतषक म ही पदा होती ह परनतु हमार अनय तमाम अहसासो या 'बोधो' की तरह उस अतयत ही वासत वक जसा बनाया गया ह जसका सब अनुभव करत ह। यहातक क वदना की तीरता म लोग मू रछ छत तक हो जाया करत ह। इसी तरह कुछ बमब वय तयो म अतयत बचनी को जनम द सकत ह, भल ही व म सतषक म वयापत बोध मार ही कयो न हो। उदाहरण क लए, कोइ अ चकर दृशय या धव न, या कोइ बदबू हम परशान कर द सकती ह। अत: इस तथय स कुछ भी नही बदलता क हम उनका बोध म सतषक म रापत करग। इस लए, य द नरक हमारी आतमा क समष एक बोध या आभास क ू प म भी रसतुत कया जाएगा तो भी महसूस होन वाली यरणा इसस कम नही हो जाएगी। जस इ वर न इस ससार क जीवन को इतना सपट और अ त-वासत वक बनाया ह क लोग उस "एक नचयातमक तथय" मान लत ह, उसी रकार इस लोक क बाद भी ऐसा ही सृजन करन की व श त रखत ह। कइ आयतो म इव र न यह रकट कया ह क नरक की यरणाए अतयत ही असहनीय ह:

मेरे वारा दी गइ सजा बडी कटरद सजा है। (सूरा अल- हजर : 50)
वे जो अ ववासी है, उनहें हम कठोरतम दंड के भागी बनाएंगे और उनके अधम से अधम कृतयों का भुगतान करेंगे। आग -- यही है इवर के शु ओं का भुगतान। हमारे संकेतों को नकारने के एवज में यही उनका अननत नवास होगा। (सूरा फ ससलात : 27-28)

यही बात सवगर पर लागू होती ह। वयत जस कसी वसतु का आननद उठाता ह, जसस उस खुशी मलती ह, वह सब कुछ उसक म सतषक का एक बोध ह। जस कोइ अपन परम र य मर स वाता लाप का आननद उठा रहा हो तो वह वसतुत: अपन म सतषक म ही ऐसा कर रहा होता ह। या कोइ वयत मग न होकर कसी जलर पात का दृशय नहार रहा हो और पानी का कल-कल ननाद सुन रहा हो तो वह इस दृशय और धव न की अनुभू त अपन मसत षक म ही कर रहा होता ह। इस समबनध म कोइ सनदह नही ह। परनतु ऐसा होत हुए भी उस बमब को दखन-सुनन म उसका आननद बा धत नही होता। यही कारण ह क इवर न कुरान म यह रकट कया ह क सवगर मनुष य की र ठतम उपल ध का प रचायक ह और उसम व सब ततव न हत ह जनस उसकी आतमा आला दत होगी।

परनतु वे जो अपने र भु की बातों पर धयान देते है, उनहें वे सव गरू उयान रा प त होंगे जनके तले न दयां र वा हत हो रही होंगी, जहां वे अननतकाल तक नवास करेंगे, सदा-सवदा इव र के आ तथय में। जो सचमुच अच छे है उनके लए वही र`ठ है जो क इव र के पास है। (सूरा अल-इमरान : 198)
उनका र भु उनहें अपनी कृपा, अपनी कु णा और सव गरू उयानों का सुसमाचार सुनाता है जहां उनहें अननत आलाद की रा प त होगी, जहां वे अननत समय तक नवास करेंगे, सदा-सवदा के लए। (सूरा अत-तौवा : 21-22)
जहांतक उसका सवाल है जसका पलडा भारी है, उसे सवोतम आननदमय जीवन रा प त होगा। (सूरा अल-का रया : 6-7)

इसक अ त र त, वह वयत जो यह जान रहा होता ह क इव र न ही उस इन सुखद प रदृशयो को दखन दया ह, उस इस तथय मार स ही और अ धक आननद की रा प त होन लगगी। उदाहरण क लए, मान ल क कोइ वयत कसी पड पर लटक सव की सुर भ और सुनदरता क वशीभूत उस सव को तोड लता ह और इव र क बार म वचार करता ह जनहोन उस सव की भीनी महक और सुनदरता का सृजन कया ह, तो उस अनय लोगो की तुलना म उस सव की छ व स कही जयादा आननद की रा प त होगी। र तयक आसथावान वयत क लए इव र सवगर क अलग-अलब बमब रचग और उस नठावान रा णी की आतमा जन- जन वसतुओ को पाकर आला दत होगी, व-व वसतुए उस वहा रा प त होगी। इस लोक और परलोक म वयत का एकमार सखा, सरष क और रच यता सफर इव र ही ह। व सार पगमबर, दवदूत, नठावान अनुयायी, प रया और अनय चीज जो उस सवगर म अपन इदर गदर दखगी -- व सब अ सततव की व वसतुए ह जो इव र क मरी-भाव, उनक र म और उनकी घ नठता

क रकट स्व ू प ह।

यह बल्कुल स्पट हो चुका ह क इवर हम जीवन भर यह मुकममल अहसास -- यह समर बोध -- पान दत ह। जो भी क्य त अपनी नठा क दायर म इस बात का अनुभव करता ह उस इवर क नयाय, उनकी नदष सृ ट और इस सनदभर म कोइ सनदह नही होगा क व र ठतम और सुनदरतम कृ तयो क सजरक ह। इवर स्वगर और नरक की रचना भी एक 'बोध' क ू प म कर सकत ह, परनतु इसस इवर वारा कुरान म दए गए वचनो पर कोइ असर नही पडता। एक ओर जहा क्य त को स्वगर म रापत होन वाल सुखो क अननत आस्वादन का वचन दया गया ह वही दूसरी ओर नरक की घोर यरणा भी अननत-अननत काल तक रहगी। इवर की सृ ट म कोइ दोष नही ह और वह अपन वचन का सरषक ह।

ये वे लोग है जनसे हमने वह स्वीकारा है जो उनहोंने सवोत्तम कमो के ू प में कया है और उनके बुरे कमो का प रतयाग कया है। उस वचन की प रपू तर के लए जो हमने उनहें दया था, वे स्व गरक उयान के सहचरों के बीच है। (सूरा अल-अहकाफ : 16)

जसा क आयतो स स्पट होता ह, स्वगर इस षण म भी इवर की दृ ट म मौजूद ह। उनहोन स्वगर और नरक दोनो की रचना की ह और व दोनो ही -- अपन समय और ू पाकार म -- उनकी नगाह क सामन ह।

आप त : "कया नरपेष अ स्ततव का अनुभव हम कभी नहीं कर सकेंगे? मुझे यह जानकर कुछ अच छा नहीं लग रहा क मै बस एक आभासी वव में जी रहा हूं।"

उतर : कवल इवर की सता नरपष ह। बाकी जो कुछ हम दख रह ह वह इवर का राकटय ह। लोग आम तौर पर यह मान लया करत ह क व तथा अनय लोग शारी रक ू प स अ स्ततव म ह और मानो कसी र डयो तरग की तरह इवर उन सबम क्यापत ह। (नस्सदह इवर इन सबस पर महान ह) परनतु सच चाइ इसक ठीक उलटा ह। दूसर शबो म कह तो कवल इवर ही अ स्ततववान ह। हम इस बात स र म म नही पडना चा हए क हम रतयष ू प स उनक अ स्ततव को नही दख सकत। जो कोइ जस दशा म भी मुडता ह, जस कसी क मुखड को नहारता ह -- वह हर चीज जो वह दख रहा ह, उसम इवर की ही झलक ह।

साथ ही, इस तथय को जानकर परशानी अनुभव करन क बजाय इवर म आस्था रखन वाल क्य त को अतयत आननद की भावना स भर उठना चा हए। यह कतन सममान की बात ह क कवल इवर ही अ स्ततववान ह और हम - उनक सवक -- एक र ती त मार ह। यह सतय तो आननद का वषय ह। इसक कारण इवर क र त हमार मन म अनुभूत होन वाल सममान और उनकी असीम श त क र त हमार समपरण की भावना कइ गुणा बढ जाती ह।

यह एक ऐसा महतवपूणर कथन भी ह जसस सहज ही लोग सासारक कामनाओ स मुत हो जाएग और इस तथय क कारण इवर का कोइ समकष या साझदार बनान की गलती कए बना हम उनकी ऐकातक आराधना कर सकग। कयोक जब हम ऐसा कहत ह क "इवर क सवा भी कुछ असतितव म ह" तो वसतुत: हम उनका एक साझदार खडा कर दत ह और मानो यह दावा करत ह क इवर स पर भी कोइ शत ह। परनतु कसी सचच आसथावान वयत क लए ऐसा मानना कदाप सभव नही। ऐस वयत क मन म इवर क सवा अनय कसी का डर नही। जब वह कसी शत या सता क सममुख आता ह तो वह जानता ह क यह शत और सता वसतुत: इवरम ही नहत ह। जब डॉकटर उसकी बीमारी का इलाज कर दता ह तो वह इवर को धनयवाद दता ह कयोक वही ह जसन सचमुच उस रोगमुत कया ह। वह जानता ह क डॉकटर इवर वारा परघटत कए गए उपचार का एक नमत मार ह।

इवर हमशा सुनदरतम और सवतम वसतुओ की रचना करत ह, इस सतय को हमशा याद रखना चाहए। एक आयत म इवर न रकट कया ह :

अपने रभु के पास लौटो, जो आननददाता और आननदमय है। (सूरा अल-फजर : 28)

इवर जो कुछ भी परघटत करत ह, वयत को उसस सतुट रहना चाहए। इस रसग म यह साफ तौर पर समझा जा सकता ह क हम जस सतय पर चचा कर रह ह वह कस रकार लोगो को इवर क नकट ला सकता ह। इसस भी बढकर जब कुरान को इस सतय को धयान म रखत हुए फर स पढा जाता ह तो अनक आयतो म छप रजा-रतनो को सहज ही समझा जा सकता ह।

परनतु यह भी सच ह क यद कोइ इवर म ववास नही करता, जो सासारक मोह-माया क जाल म आबध ह, जस इसक बाद क लोक म ववास ही नही और जो भौतकतावादी खयालो म ही नमगन ह, वह इस परसथत को लकर बड गभीर वषाद स घर उठगा। ऐस लोगो क लए यह सचमुच ही बहुत नराशाजनक और दम तोड दन वाली सथत ह क उनकी सभी मनोवाछत वसतुए और व सभी लोग जनह वह नरपष असतितव क ूप म दखना चाहता ह, व और कुछ नही कवल रम ह। जब व सतय को जानग तो व यह दखग क ताउर व बस सायो क पीछ भागत रह और अपनी ही कामनाओ की मरीचका क पीछ दौडत-दौडत थक गए। व दखग क सतय को नकारत हुए उनकी अपनी ही ऊजा चुक गइ। यह सबकुछ समझकर व उदास ही नही, लजजत भी होग।

इस लोक क बाद भी व घोर वषाद क शकार होग क उनहोन छाया को सच मान लया था।

ये वे लोग है जो अपने ही 'स्व' को खो चुके है। उनहोंने जनहें गढ रखा था, वे उनहें तयाग कर चले गए। इसमें

कोइ संदेह नहीं क इस लोक के बाद वे अपना सवस्व खो चुके लोग होंगे। (सूरा हुद : 21-22)

परनतु जो कोइ भी इवर को अपना एकमार सखा और सरषक मानता ह और जसक दल म उस इवर -- उस अल्लाह -- क र त सचचा रम ह, उसक लए यह तथय परम आननद का रोत ह क हर चीज एक छलावा ह और सता कवल इवर की ह।

आपत : "क्या इस आभासी वव का अनत शूनयता में है? क्या उस शूनयता में लोग रह सकते है?"
उतर : इस वषय पर वचार करन म लोगो को जन अनक बातो स बाधा उतपनन होती ह, उनम स एक ह यह क व 'परम शूनयता' म रहन स डरत ह। जब व इसक अभरायो पर वचार करत ह तो उनह महसूस होता ह क व अपनी समझ स जन चीजो का सपशरकर रह होत ह व मानो वास्तव म कुछ भी नही ह। परनतु इवर की इच छा क सवा ऐसा कुछ भी नही ह जो उनक वारा रचत उन ततवो को समापत कर सक जो उनहोन इस ससार म हमारी अगन-परीषा क लए नयत कए ह। य ततव या कारण हमारी मृतयु क षण तक सृजत कए जात रहग।

ऐसी अगन-परीषाओ का सामना हम उसी रकार करत रहग जस टबुल की कठोरता का सपशर, हाथ कट जात व त बहती रत की धारा, ददर, यातना, डर और बीमारी। हम कुछ भी नही बलक बस एक रतीत क वव म जी रह ह, इस तथय स हमारी अगन-परीषा क इन कारणो स हमारा वास्ता खतम नही हो जाएगा। हमार मर जान क बाद भी "शूनयता" का साराजय नही आएगा। जसाक इवर न कुरान म रकट कया ह, हम एक नए आयाम, एक नए नमत का जीवन फर स रारमभ करग। यह ववास करन का कोइ कारण नही लगता क हमारा अत शूनयता म होगा। चूक इवर न हम एक ऐस वातावरण म जनम दया ह जो हमारी परीषाए लता ह, अत: व आग भी हम 'बोध' रदान करत रहग। वस्तुत: यह वह तथय ह जस इवर न कुरान म रकटत कया ह। जब इस ससार म हमारा बोध समापत हो जाएगा, उस बोध का आरमभ इसक बाद क लोक म होगा। हम कभी भी स्वय को 'शूनयता' म नही पाएग।

आपत : "ऐसा व्यत जो यह समझता है क हर चीज एक रम है, क्या उसकी भी इस संसार में अगन-परीषा ली जाएगी?"

उतर : यह एक बडा ही महतवपूणर वषय ह। कुछ लोगो का मत ह क जब इस सतय को पूरी तरह समझ लया जाएगा तो अगन-परीषा भी समापत हो जाएगी। परनतु यह वचार नठा स पर ह। जसाक कसी अनय रन क उतर म बताया गया ह, हमारी अगन-परीषा मृतयुपयसत होती रहगी।

हालाक इवर न हम एक आभास भर वव म जनम दया ह परनतु इस वव का समबनध उनहोन अनक कारणो और परणामो स भी जोड रखा ह। उदाहरण क लए, जब हम भूख लगती ह तो हम कुछ ना कुछ खात ह। हम ऐसा नही कहत क "यह सब एक छलावा ह, चलो कोइ बात नही"। यद हम न खाए तो कमजोर हो जाए

और अत म मर जाए। इवर जब भी चाह, जस कसी क लए चाह, जस माधयम स चाह, व इन कारणो और रभावो को हटा ल सकत ह, परनतु हम कभी नही जान सकत क व ऐसा कब और कयो करग। परनतु सवा धक महतवपूणर सतय यह ह : पूर कुरान म इवर न हम व ध- वधानो क र त उतरदायी बनाया ह और इसम न हत दवय आदशो क अनुसार रहन क लए हम सतत ूप स कारणो क दायर म रहत ह। उदाहरण क लए, इवर लोगो को आदश दत ह क व अचछ काम कर और बुराइ स परहज कर। उनहोन आदश दया ह क असुर षत म हलाओ और बचचो क साथ नदरयता नही बरती जानी चा हए। कुरान म इवर न सवाल कया ह : "तुम उनक नाम पर लडत कयो नही?" इवर न हमपर य जो दा यतव सौप ह, उनस मुह मोडन की रवृ त भला हम कस दखा सकत ह?

इसक वपरीत, वह वय त जो इस बात को जानता ह क जो कुछ भी घट रहा ह, वह उस इवर ही दखा रह ह तो वह इवर वारा दखाए गए रतयक बमब क र त अपना अ नवायर कतरवय समझगा। अनय लोगो क वपरीतवह हमशा सतय की रषा और बुराइ की रोकथाम क लए रयासरत रहगा। यह दा यतव अप रहायर ह जस कसी और को नही सौपा जा सकता, और इस तरह की कोइ बहानबाजी नही चल सकती : "मन बहुत कर लया, अब जरा औरो को भी करन दो"। जो इस सथ त क सचच बोध स समपनन ह वह तो यही कहगा क "य द इवर मुझ यह रती त द रह ह तो इसका अथर ह क व मुझ कोइ समाधान खोजन की ररणा द रह ह, और ऐसा करना मरा दा यतव ह।"

साराश यह क कुरान म हमार ऊपर सौप गए दा यतवो क पालन क लए हर वय त को यथासभव रयास करना चा हए। पदाथर की सही रकृ त को जान लना और उस रकृ त को जान लन क बाद वव क र त वस ही यथाथर नज रय का वकास करना एक ऐसी बात ह जसस इवर की कृपा रापत करन और दृढसकलप होकर अपना कतरवय करन म हम और भी अ धक श त और समबल रापत होता ह।

आप त : "कया यह सच है क इवर सवर है? कया उनकी सावरभौ मकता सवगर में नहीं है?"

उतर : कुछ लोग सवय अपन अ सततव तथा पदाथर एव अपन आस-पास क दृशयमान वव क अ सततव म ववास करत ह। इसक वपरीत व इवर को ही एक र म या रती त मानकर चलत ह जो कसी तरह इस पदाथर क अ सततव को घर हुए ह। (नससदह इवर इनस पर, महान ह) और चू क व इवर को अपनी आखो स नही दख सकत अत: व यह कहत ह क : "इवर सभवत: हर जगह होगा जो क हम नही दख सकत ह, अत रष म या कही सुदूर आकाश म"। यह एक गभीर भूल ह।

इवर हर जगह ह, कवल सवगर म नही। एकमव अ सततव क ूप म, इवर समपूणर रमाड म वयापत ह, हर वय त, हर सथान म। आप जधर भी उनमुख होत ह, उधर इवर का ही मुखडा ह। कुरान क अनुसार, यह कहना

गलत ह क इवर की सता कवल स्वगर म ह, क्यो क इवर सवर्र व्यापत ह। जसा क हमन इस पुस्तक क आर भक खडो म दखा ह, कुरान की कइ आयतो म यह रकट कया गया ह क इवर हर जगह ह, हमार शरीर स भी अ धक नकट ह और हम जधर भी उनमुख होत ह, उधर इवर का ही मुख होता ह। उदाहरण क लए : "उनके चरणों के आधार तले समस्त स्वगर और धरती परव्यापत है।" (सूरा अल-बकरा : 255)। एक अनय आयत म कहा गया ह क इसम कोइ सनदह नही क लोग जो भी करत ह वह सब रभु क दायर म ह:

".... परनतु मेरा रभु उस सब कुछ को परव्यापत कए हुए है जो तुम करते हो" (सूरा-हुद : 92)

जसा क कुरान म रकट कया गया ह, इवर कवल स्वगर म नही ब ल्क हर जगह मौजूद ह।

पदाथर क पीछ छप रहस्य क वलषण स लोगो को इन आयतो को बहतर ढग स समझन म मदद मलगी। जो लोग यह समझत ह क पदाथर का कोइ नरपष अ स्ततव नही ह, व यह जान जाएग क इवर हर जगह ह, व हर षण हर व्य त को दख रह और उसकी वाणी सुन रह होत ह, व सबकुछ क साषी ह, व उनक शरीर स भी नकटतर ह और वह हर राथर्सा को सुनत ह।

नषकषर: नरक ववाद का घर है

कुरान म इवर न मनुषय की ववादकारी रकृत की ओर धयान दलाया ह : "इस समस्त कुरान में हमने लोगों के लए व वधतापूणर उदाहरण रस्तुत कए है, परनतु और सब चीजों से बढकर मनुषय कहीं जयादा ववादकारी है"। (सूरा अल-काफ : 54) कुछ लोग तो सरल स सरल बात न समझ पान का स्वाग भरत ह, भल ही वह वषय कतना ही स्पट क्यो न हो ... खास तौर पर तब जब उनह यह लगता ह क उन सचचाइयो स उनक अपन स्वाथर भर इराद टकरा रह हो। उनह व्यथर क ववरण चा हए, व ऐस नरथर्क सवाल पूछग जो कभी भी नषकषर तक नही पहुचा सकत और इस रकार ववाद और बखडा खडा करन वाली रवृ त झलकात ह। इसी स्वभावगत वशषता क कारण, इ तहास क पूर कालर म म य लोग इवर वारा चुन हुए अवतारो क साथ भी बहस-मुबाहसा म जुट गए और उनक वारा रकट कए गए बल्कुल सरल सतय क र त भी वरोध जतात हुए अपनी झूठी दलील पश करन लग। उनक ववाद क पीछ सतय जानन की उनकी अ भलाषा नही थी ब ल्क उस सतय की उपषा करन क इराद स सफर् बखडा खडा करना।

नस्सदह, इसम ऐस लोग शा मल नही ह जो सतय को समझन और उसपर वचार कर पान की सचची इचछा क साथ सवाल करत ह। इसम कोइ दो मत नही क इस अ त महतवपूणर वषय क बार म सवाल पूछ जान चा हए और अवशय ही उनकी ओर उनमुख होना चा हए जो इस वषय म जानकारी रखत ह, क्यो क बहुतर लोगो न अपन जीवन म पहली बार इस तथय क बार म जाना होगा और इस जानकर ससार क र त उनका नज रया बदल

जाएगा। यह भी सपट ह क जो लोग वषय को समझन की सचची जञासा क साथ रन पूछत ह व उनस बलकुल भनन होत ह जो कवल ववाद खडा करन और सदहवा दता क कारण दलील दया करत ह। यहा हम जन लोगो की बात कर रह ह, व ऐस लोग ह जनहोन सतय को दखन स इनकार कर दया और जो इनकार और बहस ही करत चल आ रह ह।

एक आयत म इवर न ऐस ववादकारी लोगो क चत की दशा का वणस कया ह :

वे पलट कर जवाब देते है : "तो फर कौन है बेहतर, हमारे देवतागण या वह?" वे केवल बहस करने के लए तुमसे ऐसा कहते है। वे वाकइ बडे ही कलहकारी लोग है। (सूरा अज-जकु फ : 58)

कुरान म अ डयल और ववादकारी लोगो म स एक - फराओ - का उदाहरण दया गया ह। हाला क हजरत मूसा न बड ही सपट शबो म उस सतय की पहचान कराइ, परनतु उसन एक ऐसा सवाल दाग दया जसका पगमबर जो कुछ कह रह थ उसस कतइ ताललुकात नही था, और जसका उतर पा लन स उसका कुछ भी बनन नही जा रहा था। जब इवरदूत मूसा उस इवर क अ सततव क बार म बता रह थ तो फराओ न उनस यह सवाल पूछा :

उसने कहा : " पछली पी ढयों का क्या हुआ?" - (सूरा ता-हा : 51)

सपट ह क फराओ न कवल बहस छडन क लए यह सवाल पूछ दया। उसक रन म कुछ भी सीखन की सचची जञासा नही थी। अपन दुबस म सतषक म उसन यह सोचा क पगमबर मूसा क पास उसका कोइ जवाब नही होगा। परनतु पगमबर उसकी मशा ताड गए और उस यह सपट उतर दया :
उसने कहा: "उनके बारे में समसत ञान मेरे रभु के एक रंथ में है। मेरा सवामी कुछ भी गुम नहीं करता और न ही उसे भूलता है।" (सूरा ता-हा : 52)

सवाभा वक बात ह क ववाद करन वाला और सतय स इनकार करन वाला सवभाव कवल फराओ या अतीत क अनय लोगो का ही नही था। आज भी भारी सखया म ऐस लोग मौजूद ह जो कसी भी वषय क अपन नहत सवाथर स टकरान की सथ त म ववाद करन पर उतारू हो जात ह। धमर क मामल म तो ऐसा अकसर होता ह। कोइ भी व षय, चाह वह नठापूवरक धयान दन पर कतना ही सरल कयो न सध हो, व उस समझना ही नही चाहत। उनकी रवृ त और उनक अटपट सवालो स यह शीर ही सपट हो जाता ह। नय त और पदाथर की रकृ त जस वषय, जनकी चचा इस पुसतक क रसग म की गइ ह, कुछ ऐस वषय ह जनकी लोग उपष ा कर दना चाहत ह। इनही कारणो स इन वषयो पर पूछ गए रन अकसर इस इचछा स उतर रत होत ह क दूसर लोग यह मान ल क य बात सही नही ह। सतय की गहराइ म जाकर जञासा करन की को शश शायद ही की जाती ह। उदाहरण क लए, जो लोग यह पूछत ह क "य द सबकुछ एक बमब या रती त ह तो हम अपन धा मरक कतसयो का पालन करन की कया जू रत ह?", व यह समझ ही नही पात क यह सवाल कतना नरथरक ह। व बस

इतन ही तकर स काम चला लत ह क चूक मनुषय एक बमब ू प म नमस ह अत: उस राथसा करन की जू रत नही ह। या भोजन भी सफर एक बमब ह अत: कुछ अखाय चीजो को खा लना भी व ध- वु ध नही ह। ऐसा कहन का अथर ह बस आप त करन क लए आप त करना और वषय-वस्तु पर पूरी तरह गौर न करना। उनका एकमार उदश य, जसम तकर का सवथा अभाव ह, सतय को स्वीकार करन स मुकरना ह।

परनतु जो धमा नुयायी होत ह, व सतय को दखन-परखन क तुरनत बाद उसक पालन म जुट जात ह। व कहत ह : "हमन सुना और पालन कया", जसा क कुरान म कहा गया ह। जब ववाद करन वाल लोग उनस उलट-सीध सवाल करत ह तो व बस कसी भी खीचातानी म फस बना सरल, सपट उतर द दत ह। इव र न रकट कया ह क जब कोइ वयथर का ववाद करन वाला वय त उनस सवाल कर तो उस बस इस तरह का उतर द द:

कहो : "क्या तुम अल्लाह के बारे में हमसे बहस करते हो जब क वह हमारा और तुमहारा स्वामी है? हमारे कमर हमारे कमर है और तुमहारे कमर तुमहारे कमर है। हम सब उसी के लए कमर करते है।" (सूरा अल-बकरा : 139)

जो लोग नठावान अनुया ययो क साथ बहस करत ह, जो यह समझन स इनकार करत ह क कवल इव र का ही अ स्ततव ह और व स्वय भी इव र क ही अश ह, और जो इस रकार सतय को अस्वीकार करत ह, और जो ऊल -जलूल सवालो क आधार पर स्वगर तथा नरक और इव र की दया तथा कु णा क अ स्ततव को नही मानत ह उनह यह समझ लना चा हए क व अननत काल तक नरक म पड ऐस ही ववाद करत रहग। कुरान की आयतो म नरक का चरण अननतकालीन कलह और ववाद की एक जगह क ू प म कया गया ह:

"इसमें रहकर एक-दूसरे से ववाद करते हुए वे कहेंगे : "इव र की सौगनध! हमें तो बल्कुल भटका दया गया था।" (सूरा अश-शुरा : 96-97)

जब उस नरका ग न में पडे वे एक-दूसरे के साथ मल कोलाहल मचा रहे होंगे तो दुबर्ल लोग उनसे, जो उनहें ब लठ रतीत होते होंगे, कहेंगे : "हम तो तुमहारे अनुयायी थे, तो क्यों नहीं तुम आग के एक कतरे से भी हमें बचा पाते हो?" और तब वे ब लठ-से लगते जन कहेंगे : "हम सब तो इसी में है। सचमुच इव र ने अपने सेवकों के बीच नयाय कर दया है"। (सूरा का फर : 47-48)

जसा क हमन उपरोत आयतो म दखा ह, आस्थाहीन लोग नरका ग न म जलत हुए भी अपनी बहस नही छोडग। अनय कइ आयतो म अल्लाह न उन लोगो क समबनध म जो आस्थावानो को उकसान की को शश करत ह, उनही क शबो का रयोग करत हुए नमन ल खत वाकय रकट कए ह:

वे कहेंगे : "हे रभो! आज जसने यह दन दखाया है, उसे दोजख की इस आग में दुहरी सजा दो!"। वे कहेंगे : भला यह कैसे क हम उन कुछ लोगों को नहीं देख रहे जनकी गनती हम अधम से अधम लोगों में करते थे? क्या

हमने उनहें मजाक का पार बना दया था? कया उनहें देखकर हमारी आंखों में नफरत भर उठती थी?" नससंदेह ये सारी बातें सच है -- नरक के उन बा शनदों का यह शोर!" (सूरा साद : 61-64)

नरक म पडी आतमाए उस गहन अधर, सकीणरस सथान म भी, लोह की छडो क तल पड हुए और ऊपर स खौलत हुए पानी डाल जात हुए, जब क उनकी तवचा उन लपटो की त पश स पघल रही होगी, तब भी ववाद ही करती रहगी। नरथरक ववाद अनवरत चलता रहगा और व एक-दूसर स पूछत रहग क आ खर यह यरणा कस लए? व इव र और आसथावानो क परो पर गरत रहग:

देखो इन दो र तवंदी गुटों को जनहोंने अपने रभु के वषय में ववाद कया। वे जो अ ववासी है, उनहें आग के चीथडों में लपेटा जाएगा और खौलता हुआ पानी उनके सर पर उडेला जाएगा जसके कारण उनकी अंत डयां और तवचा तक बाहर आ जाएगी, और उनहें लोहे की सलाखों से पीटा जाएगा। हर बार जब वे इससे बाहर नकलना चाहेंगे, उनहें घसीट कर वहीं वापस डाल दया जाएगा : "लो, भुगतो यह अ ग नदाह की सजा!" (सूरा अल-हज : 19-22)

परनतु उन ववादो स व कसी नषकषर तक नही पहुच सकग। व, जनहोन इस लोक म सतय पर बहस छड दया, और इस तरह उसकी उपषा कर दी, व नरक की यरणा झलत हुए भी, उन घोर कटो क बीच जनका कभी अत नही होगा, ववाद ही करत रह जाएग।

नरक क सहचरो क बीच इस ववाद का जारी रहना इस बात का सकत ह क नरक की आग को रतयष दखत हुए भी आसथाहीन लोग अपनी बातो की सतयता का ञान नही पा सकग। नरक क उतपीडनो क बीच भी व अ ववासी ही बन रहग:

आग में पडे हुए वे लोग नरक के अ भरष कों से कहेंगे : "जरा पुकारो अपने सवामी को क एक दन के लए ही सही, वे हमारी यह सजा कम कर दें।" तो वे पूछेंगे : "कया तुमहारे इव रीय संदेशवाहकों ने तुमहें 'सपट संकेतों' से प र चत नहीं कराया?" वे कहेंगे : "हां". फर वे कहेंगे : "तो तुम पुकारो!" मगर अ ववा सयों की पुकार बेकार चली जाती है। (सूरा क फर : 49-50)

यह सपट ह क इन लोगो को चाह जतनी वयाखया द दी जाए, जतना समरण दला दया जाए, कोइ लाभ नही होगा, कयो क दोजख की आग म गरकर भी, अ भमान स फूल हुए, व अपन रभु को पुकारन स मना करत रहग। उनह चाह जतन भी उदाहरण द दो, चाह जतन रमाण द दो, मगर व फर भी नही समझग। एक अनय आयत म इव र न यह रकट कया ह क कस कुछ लोग कभी भी ववास नही कर पात :

उनहोंने हृदय की उतकंठा से इवर की शपथ खाइ है क यद उनहें कोइ संकेत मलेगा तो वे ववास कर लेंगे। कहो : "संकेत अकेले इवर के नयंरण में है"। तुम कैसे समझोगे क अगर कोइ संकेत मल भी जाए तो भी वे यकीन नहीं करेंगे?" (सूरा अल-अनाम : 109)

इसी कारण, हम जन बातो पर यहा चचा कर रह ह, उनक सतय को कुछ लोग यद स्वीकार करन स मना कर द - भल ही व कतन भी स्पट और रमाणत कयो न हो - तो हम इस बात पर आचयरनही करना चाहए।

नषकषर: सतय से बचा नहीं जा सकता

काफी बडी सखया म लोग अब इस सतय को स्वीकार करन लग ह -- वह सतय जो लोगो क बुनयादी वचारो को बदल कर रख दता ह और उनह इवर म ववास करन क लए ररत करता ह। इस सतय को स्वीकार करन स लोग कुरान म रकटत उस सुखद नतकता स रम करन और उसकी तमाम वशषताओ का स्वचछापूवरक पालन करन और साथ ही साथ स्पधार, घृणा और शुता जसी बुरी भावनाओ का परतयाग कर उनकी जगह रम, कुणा और वनरता जस गुणो को वकसत करन म सषम बनत ह। यही वस्तु की सही रकृत ह। जयादातर लोग ऐस ह जो यह कहत ह क "ऐस सरल और स्पट सतय का अनुभव रापत करन म मुझ इतना लमबा समय कस लग गया?"

यह बहुत ही महतवपूणरबात ह क जो कोइ भी इस एक सतय को जान लता ह वह दूसरो को भी इसक बार म बताए। यह एक ऐसा वषय ह जसका ञान पा लन स नयत (भागय), समय, मृतयु, पुनजागरण, स्वगरऔर नरक जस कइ अनय कठन वषयो क सही अथरको अचछी तरह समझन म भी मदद मलती ह। जो कोइ भी ऐसा करगा वह एक ओर तो कुरान को बहतर ढग स और जल्दी समझन म लोगो की मदद करगा और दूसरी ओर लोगो को सनमागरकी ओर ल जान वाला एक माधयम भी बनगा।

इवर न यह सुखद समाचार दया ह क जब कसी भी अस्तितव को उनक समकष नही रखा जाएगा, जब अकल उनकी ही आराधना की जाएगी, जब कवल उस एक अल्लाह को ही एकमार ' दव' और एकमव शत क ू प म रतठापत कया जाएगा, तभी कशी जाकर दुनया म कुरान की नतकता का साराजय छाएगा:

तुममें से जो कोइ भी ववास करता है और सही कमर, उसे इवर का यह वचन रापत है क वह उनहें धरती का उताधकारी बनाएगा, जैसेक उसने उनके पूवरवती जनों को उताधकारी बनाया था; और उनके लए वह उस धमरकी दृढ संस्थापना करेगा जोक उसे रय है, और वह उनके मन से डर को मटाकर उनहें सुरषा रदान करेगा।"वे कुछ भी मेरे समकष न लाते हुए मेरी आराधना करते है"। उसके बाद भी अगर कोइ अववास करता है तो ऐसे लोग दगर मत है। (सूरा अन-नूर : 55)

पूर ससार म कुरान की न तकता की लहर फलान क लए सवा धक महतवपूणर शतर यह ह क लोग यह ववास कर क इवर क सवा और कोइ श त नही ह। ऐस बहुदववादी खयालो स छुटकारा पान क लए क पदाथर का अ स्ततव इवर स पर और नरपष ह, क इवर कवल आभासी तौर पर पदाथर म व्यापत हो सकता ह, क इवर बु ध की तरह एक सूषम 'सतव' मार ह, क मनुषय क पास इवर स स्वतर श त ह, क लोग चाह तो अपना भाग य बदल सकत ह, या यह क समय और स्थान नरपष ह, हम इस पुस्तक म व णस वषयो का समर अधययन करना चा हए। जो लोग मुझस यह पूछत ह क पदाथर इतना महतवपूणर क्यो ह और अपनी हर पुस्तक म, यथासभव स्थानो पर, इस वषय को हमन इतनी जगह क्यो दी ह, उनह इस समबनध म थोडा और वचार करना चा हए।

कवल इवर का अ स्ततव ही नरपष ह। जब हम इस पुस्तक को पढ रह या इसपर वचार कर रह ह तब भी वह अल्लाह हम दख-सुन रहा ह। हम हर दशा स इवर वारा प रव्यापत ह। इवर नरपष ू प स अ स्ततववान ह। हम, उसक सवक, उसक अ भव्यत ू प ह। हर कोइ जस इवर स पयार ह और जो महसूस करता ह क वह उसका सवक ह, उसक लए यह तथय परम आननद और सौनदयर का र ोत ह। कसी भी मुसलमान क लए इस सतय की अवहलना करना सही नही होगा, ब ल्क उनह चा हए क अपन दलो-जान स इस सतय को स्वीकार कर और इसकी अवहलना करक इवर की नगाह म अपना दजा कम ना होन द। अपन आस्थावान सवको क लए इवर न कुरान म यह चतावनी दी ह :

सच का झूठ से तालमेल मत बठाओ और न ही जान-बूझकर सतय को छुपाओ (सूरा अल-बकरा : 42)

हम यह नही भूलना चा हए क इस सतय का र कटीकरण वह माधयम होगा जसस भौ तकतावाद को उखाड फका जा सकगा और धरती पर आधया तमकता और सुखद न तकता का सारा ाज्य छाएगा। इस बात को महसूस करन वाल भौ तकवादी दायर क लोग बहुत बचन हो उठत ह, और कही य बात लोगो क कानो तक न पहुच जाए इस भय स बड हास्यास्पद और नराशा-ज नत उपायो म लग जात ह। ऐसा इस लए क्यो क व जानत ह क यह उनक वचार-दशस क पूर आधार को ही लील जाएगा। तथा प, पदाथर समबनधी सतय अब पूर खुलपन और स्पटता क साथ र कट कया जा चुका ह। यह सतय जो वञा नक र माणो क अभाव म कभी महज एक दाशरनक अनुमान माना जाता था, अब पूणस: वञा नक आधार- भ त पर खडा ह। उदाहरण क लए, पदाथर क सतय को र हण करन वाल र ड रक वस्टर का कहना ह :

क तपय वचारकों का यह कहना क "मनुषय एक आभास है, हर अनुभूत वषय ष णक और र मातमक है, और यह संसार एक साया है", अब हमारे युग के वञान वारा र म णत मान लया गया है।

यह समस्त भौ तकतावादी उठापटक अब व्यथर ह। अब पलक झपत ही यह ञान पूर वव भर म र सा रत

कया जा सकता ह। वह सच जस सकडो सालो तक उनहोन लोगो की नगाहो स छुपाकर रखना चाहा, अब हर जगह पढा जा रहा ह, सीखा-समझा और वलषत कया जा रहा ह -- गायना स लकर इगलड तक, अमरका स इडोनशया तक, सगापोर स सवीडन तक और यहा तक क भौतकतावाद क मजबूत गढ ूस, चीन, कयूबा और अलबानया तक। भौतकतावाद अबतक क सबस बड ऐतहासक पतन का गवाह बना हुआ ह। ऐसा इसलए कयोक आज यह महसूस कया जा चुका ह क हम मूल पदाथर का कभी सपशर नही कर सकत। हम नही जान सकत क यह हमार मसतषक क दायर स बाहर ह भी या नही। अत: जस वसतु को हम कभी दख भी नही सकत उस दशरनशासर का वषय बना दना बलकुल ही तकरसगत नही ह। यद पदाथर स हमारा रतयष समबनध कभी बन ही नही सकता तो फर पदाथरवाद का भी कोइ आधार नही ह।

यह वह महतवपूणर तथय ह जो क कुरान की कइ आयतो म नहत कतपय सकतो और वषयो को समझन म हमारी मदद करता ह और भौतकवाद नामक अधामक और अधववासी वचारधारा का खातमा करता ह:

अचछा यह होगा क असतय के खलाफ हम सतय को रषेपत करें और वह (सतय) उसे काट डालता है और वह (असतय) गायब हो जाता है। अननत अफसोस तुमहारे लए, उसके लए जसका तुम चरण करते हो। (सूरा अल-आनबया : 18)

जसा क इस आयत म रकट कया गया ह, जब सतय पदाथर ूपी असतय (जो क भौतकतावाद का मसतषक ह) की जगह ल लता ह तो झूठी वचारधारा भी गायब हो जाती ह। इस तथय को बदलन या तनक भी दर उस रोक रखन का अवसर कसी भी भौतकवादी को नही मल सकता।

जनहोंने पदाथर का रहसय जाना है, वे जबदरसत उतसाह से भर उठे है

नीच दए गए पर उन लोगो स रापत हुए ह जनहोन पूवर रकाशत पुसतको म "द सीरट बहाइड मटर" ("पदाथर क पीछ छुप रहसय") क बार म पढा। उनक परो क य साराश सतय को जान लन क बाद उनक मन स नकल उगार ह।

- हर कोइ जो इस कताब को पढगा वह इस बात को समझ लगा क सचच अथर म पदाथर का कोइ मतलब नही ह और यह वसतुत: एक रम ह। पदाथर एक रम ह, यह सतय इतना रचड ह क इसका वणरन करना लगभग असभव लगता ह। उदाहरण क लए, कया आप कसी ऐस वयकत की उतजना का अहसास कर सकत ह जो मरकर फर जीवत हो उठा हो? या कसी ऐस वयकत वारा महसूस की जान वाली उमग जो हवा म उड रहा हो, दीवार पर चल रहा हो या एक ही समय अनक जगहो पर उपसथत हो? तथाप, पदाथर की तुलना इन चमतकारक सथतयो स भी नही की जा सकती। "असाधारण" शबद भी इस सदभर म बहुत हलका असर का ह। यहातक क यह कहना भी अपयापत लगता ह क यह अनोख ढग स वचर और सनसनीखज ह। यह इवर की गहनतम और उदाततम कला

का अतुलनीय रकटीकरण ह। तथा प म जो नही समझ पाता हू वह यह ह क एक ऐसी चीज जस समझ लना इतना सरल था, इतन सालो तक मनुषय क ञान स छुपी कस रह गइ? इसका अनुभव कर पान म मनुषय असफल कस रहा? या कही ऐसा तो नही क जनहोन इसका अनुभब कया भी, व डर गए और चुप बठ गए? मन इस एकबार पढा और तुरनत समझ गया। सबकुछ बलकुल सपट ह। के.एच.जी., रैकफुतर

- हम तुरनत यह सतय सबको बताना चा हए जो क मनुषय की तकरबु ध को ही चकरा कर रख दता ह। हम इतजार कस बात का ह? कया यह बलकुल सपट नही ह? हम तुरनत ही हर सभव माधयम स सारी दु नया को यह बात बतानी चा हए। इस सतय को जानकर लोग इव र क और करीब आएग। मर वचार स तो यह एक ऐसा सच ह जो ससार की हर वसतु की चूल हलाकर रख दगा। मर पास कहन को और कोइ शब नही ह। आपक र त मरी आदर भावना और इव र आपकी सार-सभाल कर। एफ.इ., अंकारा

- मन "सीर ट बहाइड मटर" नामक अधयाय " द इवॉलयुशन डसीट" क पृठभाग पर पढा। एक बडी बात ह जोक म नही समझ सका। यह बडी अजीबोगरीब बात ह। कया ह यह चीज, यह म, और अपन ही भीतर? कतना बडा रहसय ह यह! आचयर ह मुझ क लोग भला इस कब समझग? यह तो बलकुल साफ ह, जस समझना बहुत क ठन नही। इस समझन म हम भला इतनी दर कयो लग गइ? जब दु नया क सार लोग इस समझ लग तो म समझता हू क वञान क षर म अनको र ा तया आ जाएगी। पता नही इस सथ त को म कया कहू? म आचयर म पड गया। मन परमव र को धनयवाद दया। अब हर चीज मुझ बहतर समझ म आती ह। परनतु फर भी दूसरो क समष इसकी वयाखया करन म मुझ क ठनाइ का अनुभव होता ह। कुछ लोग तो समझ ही नही पात। व कहत ह व मर सामन खड ह परनतु फर भी जब व ऐसा कहत ह तो म उनक म सतषक म मार एक बमब होता हू। उस वय त को लगता ह क म बाहर हू। मुझ बस यह हरानी ह क इस कस एक आचयर की तरह वल षतकू ? म इस वषय क बार म आपकी नइ पुसतक क इतजार म हू। य द सभी उदाहरण द नक जीवन स लए जाए तो दूसरो को समझाना आसान होगा। एस. के., मुग ला

र य र ी या हया! आपकी पुसतको म मन " द सीर ट बहाइड मटर" का कइ बार अधययन कया। मर वचार स पदाथर सचमुच एक र म ह। यह बडी वलष ण बात ह क जीवन एक सवन की तरह ह। इस वषय का मुझपर असाधारण र भाव पडा ह। परनतु फर भी मर मन म पदाथर क अ सततव की छाप और इसक वारा उतपनन अनुभू तया इतनी आव सत कर दन वाली ह क म राय: इस तरह जीता हू मानो पदाथर का सचमुच अ सततव ह। परनतु जब म एक ष ण इसपर वचार करता हू तो तुरनत ही सपट ू प स समझ लता हू क पदाथर कवल एक र म ह और फर भी वह बडा वव सनीय लगता ह। म अपन आप पर हसता हू। कभी-कभी कोइ बात मुझ इतना झुझला दती ह क म चलला पडता हू। फर अपन म सतषक क जस बमब पर म चलला पडता हू उस याद करक म ल जजत हो जाता हू। यह कसी परम आचयरजनक सृ ट ह! पदाथर का अ सततव ह - यह वचार इतना श त शाली ह क जो कोइ भी इस सतय को नही जानता उस कभी भी सदह नही होगा। कभी-कभी म बॉसफोरस पर अपनी नजर

डालता हू। म सोचता हू क उसक उस कनार तक पहुचन म कतना समय लग जाएगा। म दूरी का वचार करता हू। फर म सोचता हू क वह जगह जस म बहुत ही दूर समझता हू, वह भी मर ही अनदर ह, मर मस्तषक म एक बमब की तरह। मनुषय एक वलषण रचना ह। इवर न उस ऐस महान और भव्य ञान क साथ रचा ह क म समझ नही पाता क उसका वणस कस कू ! फर भी मुझ इतना भर कहन दीजए। मुझ आशा ह क आप और आपकी पुस्तक को इस महान ञान का दगदशस करान क लए इवर की कृपा रापत होगी। इ.एम., इस्तांबुल

बहुत ही उमग और उतसाह क साथ मन "द इवॉलयुशन डसीट' क पृठ भाग पर आपक वारा लखत पदाथर क पीछ छुप रहस्य का ववरण पढा। रारभ म मन इस व्यावहारक नही अपतु सधातक स्तर पर समझा। फर जब म इसक बार म सोच रहा था तो उसी जगह गर पडा। म घोर उतजना स आरात हो गया था। मन कहा : "ह इवर! यह तो बडी आचयरजनक बात ह!" यह बात तो कभी मर दमाग म कौधी ही नही थी। लोग कहा करत थ क जीवन एक स्वन की तरह ह परनतु मुझ लगता था क वह बस कहन की एक शली ह। व लोग सचच अथ म ऐसा नही कहत थ, बलक एक उपमा क ूप म। क्या पता यद व जान जात क व जो कह रह ह वह पूरी तरह एक हकीकत ह तो व क्या करत? यह एक अजीब स्थत ह। परनतु फर भी इस पुस्तक को पढन वाला हरक आदमी बस शात रहता ह। मुझ हरत ह, उनहोन इस अचछी तरह इस समझा भी ह या नही। ऐसी परस्थत क समष व भला शात कस रह सकत ह? अब म मृतयु, परलोक, पुनजागरण, स्वगर और ऐसी ही अनय बातो को समझ सका हू। कुरान म इवर न कहा ह : "फर स तुमहारी रचना करना हमार लए सरल ह"। अब यह सब कुछ मर मन म स्पट हो चुका ह। जस कसी स भी म इस वषय पर बात करता हू, उस यह समझन म कठनाइ होती ह। म कस इस और स्पटता और सरलता स समझा सकू? कुछ लोग जनह मन यह बात बताइ, बहुत रोमाचत हुए। म नही जानता क यह बात लोगो को रतयष ूप स बतान म मुझस कोइ चूक तो नही हुइ ह! क्या यह बहतर नही होगा क पहल म उनह इवर क रम क बार म बताऊ, क व कतन कृपालु और दयावत ह और व चाहत ह क हम इस जीवन क सवतम फलो को रापत करक रठतम ढग स जए। आपको क्या लगता ह? एस.यू., ऍडनर

- जब म एक बचचा था तभी स म यह सोचा करता था क पदाथर या वस्तु वह चीज ह जसका हम वास्तवक बोध होता ह और जो स्पट ूप स अस्ततव म ह। परनतु फर भी रायमरी स्कूल क समय स ही मुझ बताया जाता था क सभी ऐनरक बोध मस्तषक क अनदर हुआ करत ह। यह एक ऐसी सचचाइ थी जसस म खूब वाकफ था। जीव वञान की कषाओ म मन कइ बार इसकी स्पट व्याखया की, परनतु फर भी म पदाथर का असली चहरा नही दख सका। म यह कहा करता था क हालाक बमब की रचना हमार मस्तषक म होती ह परनतु पदाथर हमस बाहर वयमान ह। वह बाहर ह और म उस दख रहा हू। मुझ यह थोडा पहलीनुमा लगता था क बमब मरी नजर क पास बनत थ और फर मर मस्तषक म। म यह समझता था क पदाथर नरपष ूप स मौजूद ह, ऐन मरी नजरो क सामन। वाकइ, म इसपर जयादा गहनता स वचार नही कर सकता था। जबक पदाथर एक ही जगह मौजूद ह, तथाप म उस पदाथर और स्थान को एक साथ ससत दखता हू। ऐसा लगता ह मानो म एक झीन-स पदर क सामन

खडा हू, परनतु पता नही दखन का काम कौन कर रहा ह -- एक शूनयता या आतमा। फर भी एक श त ह जो चीजो का बोध रापत करती ह, एक ऐसी शूनयता ह जो कोइ सथान नही रहण करती; और तब भी एक चतना ह जो पाचो इनरयो का बोध रापत करती ह। कया इस वषय पर और वसतार स लखना चाहत ह? साथ ही, आपकी पुसतक मर रात म उपलबध नही ह। कया म रकाशको को यह बात बता सकता हू? आपकी हर सफलता क लए मरी आदर भरी कामनाओ क साथ ..वाइ. सी. कॅसेरी

- मन इस वषय क बार म अपन अनक मरो को बताया। व ववयालय क सनातक ह परनतु फर भी व यह समझन म असमथर ह क इस वषयवसतु म कया कहा जा रहा ह। व कहत ह, "अर छोडो भी .." और मर कधो पर हाथ रखकर कहत ह: "चलो, ठीक ह क बमब मर मसतषक म ह परनतु तुम तो मर सामन खड हो ना।" म वणन करता हू क कस रकार य सारी रयाए और यह वातालाप मसतषक क ही अनदर परघटत हो रही ह। म यह भी बताता हू क अगर मसतषक की ओर जान वाली शराए काट डाली जाए तो व न दख सकग न छू। व फर भी नही समझत। यह न समझ पान की सथत मुझ 'नदानक पराभौतक सतय क आवभाव' की तरह लगती ह, कयोक व इस वषय को समझ ही नही पात। तथाप, मन इस अपन भतीज को समझाया जोक एक रायमरी सकूल का छार ह और उसन इस तुरनत ही समझ लया। म अपन आप स पूछता हू क कही व जान-बूझकर तो नही "नही समझ रह" थ? या उनकी कोइ वयतक पहचान ही नही ह? कया यह सभव ह? कुरान म ऐस लोगो की बात कही गइ ह जनकी आख और जनक कान बनद ह। कया यह सभव ह क कुछ लोगो क पास दखन या सुनन की चतना ही नही ह? कया अपनी पुसतक क अगल ससकरणो म आप इस वषय का सपशरकर सकत ह? आपका अरम धनयवाद! इ.ए., इसतांबुल

रय री हू याहया, मुझ दशनशासर क अधययन म अभु च ह। अत: पदाथरक पीछ छुप सच क बार म मन बड उतसाह क साथ पढा। अतीत म भी कइ बार इस बात की वयाखया की गइ ह क पदाथरएक रम ह। परनतु फर भी सभवत: लोगो क पास उस बोध क बार म वचार करन क लए समय नही था जस बोध स व पदाथरक असतततव को लकर आवसत हो उठत थ, अनयथा व इस रमाणत तथय क अथरको समझ चुक होत। परनतु आज क युग म इस सतय को परखन का उनह पयापत अवसर रापत ह। आख की सरचना, आखो तक बमब को ल जान वाली शराओ, मसतषक क दृशय-कनर इतयाद स समबनधत ववरणो क अधययन स इस सतय को समझन म बहुत ही आसानी हुइ ह। इसक अतरत, वशट पदाथरवजान, र-आयामी फलमो, टलवजन, वीडयो और ऐसी ही अनय चीजो क वकास स हम सपट उदाहरण रापत हो गए ह। मरी समझ स यह वषय इस शताबदी म ससार का सबस जवलत वषय होगा। जसाक आप जानत ही ह, कवाटम फीजकस इस तथय क बार म पहल ही अपना सवर ऊचा कर चुका ह। म समझता हू क यद कुछ लोग इस सतय क डर स एक बचच की तरह कापना छोड द और यद इस ससार क रत रम क महल क ढह जान का ददरबदाशत कया जा सक तो यह काम और भी आसान हो जाएगा। सच स बचकर भागना, शुतुरमुगी नीत अपना लना और तथय की उपषा कर दना मानव की गरमा क अनुकूल कायरनही ह। म और भी बहुत कुछ कहना चाहता हू परनतु आपका समय लना नही चाहता। हादरक

शुभकामनाओ क साथ! टी.इ. रचमौंड

- र डयो, ट ल वजन और समाचार पर लोगो को यह क्यो नही बतात क पदाथरएक र म ह? इस सु न चत सत य क बार म पॅनल शो और ट ल वजन प रचचा क माधयमो स व ञा नको वारा समीषा की जानी चा हए। मुझ नही लगता क कोइ भी व्य त इस तथय का वरोध कर सकता ह। मन ऐस लोगो क बार म सुना ह जो इस सतय को नही समझ सक, और मुझ यह जानकर आचयरहुआ ह क कोइ रौढ व्य त भला कस इस स्पट तथय को समझन स चूक जा सकता ह? ऐस लोग फर कभी इस समझन आएग, परनतु हमारी अपनी अवधारणा ही अ तम नणरय कर सकती ह। अवधारणा न कवल इस तथय स सीख-समझगी वरन उन लोगो की ता कर्कता, या उनकी तर्कहीनता, को भी परखगी जो इस सतय को नही समझ पात। मर वचार स यह वषय इस्लाम धमर म बहुत ही महतवपूणर ह। मरी आशा ह क समय बीतन क साथ इसका महतव बढता ही जाएगा। के. आइ. सॅमसन

- पदाथर क समबनध म कए गए आपक वणर्न न मुझपर बहुत ही गहरा रभाव डाला ह। यह एक ऐसा वषय ह जो मनुषय की तकश् त स पर ह, और ऐसा नही ह क इस पूरी तरह समझा जा सक। यह सोचना बडा क ठन लगता ह क म यह जो पर लख रहा हू, वह भी एक बमब ही ह। म जो लख रहा हू वह बमब ह। बमब बम ब स मलत ह और बात करत ह। यह वाकइ एक बडी ही ज टल स्थ त ह। मर वचार स, जो कोइ भी इस पढगा, इस समझ लगा ....। डब्लू. बी. एफ., इंगलैड

- पदाथर क पीछ छप सतय क बार म लख गए आपकी पुस्तक क अधयाय को पढकर मरी तो जीवन-दृ ट ही बदल गइ। अगल दन, उदाहरण क लए, मुझ कसी पर गुस्सा आया और म चल्लान ही वाला था। फर सहसा मन मससूस कया क हर वस्तु मर म स्तषक क अनदर ही तो ह। म तुरनत शात हो गया और मरा सारा र ोध जाता रहा। मुझ लगा क म एक तुकर फल्म म एक बचार अ भनता पर गुस्सा कर रही बूढी औरत की तरह हू। ऐसी सच चाइया -- जो इतन बड प रवतर्न की सवाहक ह -- व्यापक स व्यापक समुदायो क बीच रसा रत की जानी चा हए। अत: आपको इसपर एक नइ कताब लखनी चा हए। य द आप ऐसी कोइ कताब रका शत कर तो क्या आप मुझ बता सकत ह? एम. वी. आयदीन

- मन "द सीर ट बहाइड द मटर" का अधययन कया ह। क्या सचमुच सब कुछ मर म स्तषक क अनदर घ टत हो रहा ह? क्या मरा म स्तषक भी एक बमब नही ह? यही म नही समझ पाता। हर कसी को -- स्कूलो म और ट ल वजन क ज रय -- इस सच चाइ क बार म बताया जाना चा हए। म इस वषय क बार म और भी अ धक गहराइ स जानना चाहूगा। आपकी क्या राय ह? आपकी सहायता क लए म बहुत ही आभारी रहूगा। के. बी. अंताल्या

- म आखो का डॉक्टर हू। अगल दन एक मरीज न मुझस पूछा क हम कस दखत ह। पहल-पहल तो कुछ

तकनीकी सवाल पूछ गए परनतु बाद म वह ऐसी बात पूछन लगा जनस म सोचन पर ववश हो गया। मुझपर बहुत ही गहरा असर हुआ। हाला क म इवर और आतमा क अ सततव म ववास करता हू परनतु आतमा क अ सततवक समबनध म इतन सपट और वजा नक ढग स समझन-समझान का अवसर मुझ पहल कभी नही मला था, हाला क यह मरा अपना वषय-ष र रहा ह। पदाथर क बार म आपक वचारो को मन आपक इटरनट पज पर पढा। कया और भी कोइ र ोत ह या कोइ कताब जसकी आप अनुशसा कर सक? कोइ वदशीय र ोत हो तो भी कृपया बताइए। म सचमुच महसूस करता हू क यह एक महतवपूणर वषय ह जसक बार म जानना-समझना, सोचना और शोध करना चा हए। मन जो कुछ भी पढा ह वह न कवल लोगो क जान क ष तज का वसतार करता ह ब लक उनह जीवन की कइ बातो क समबनध म जजासा स भर दता ह। यह वाकइ महतवपूणर ह। एफ. एन. जी., इ सकशहर

- कल मन "द सीर ट बयोड मटर" की सीडी दखी। मन इस समझन की पूरी को शश की और मुझ लगता ह म इसम कामयाब हुआ। तथा प इस समय म एक बहुत भारी खालीपन का अनुभव कर रहा हू और ऐस कइ सवाल ह ज नक म उतर चाहता हू। कृपया मरी मदद कर। एम. एच. अजमीर

- जब मन "द सीर ट बयोड मटर" का अधययन कया तो मुझ लगा क हर चीज मानो मर लए लखी गइ एक पटकथा ह। मुझ लगा क म ' मन शो" या "म रकस" जसी कसी फलम क अनदर हू। मुझ लगा क म एक मशीन क अनदर जी रहा हू जो खास मर लए डजाइन की गइ ह। इस रकार वचार करन पर मन अपन आप को कइ सथ तयो म दखा। आप इस वषय म उस गहराइ तक गए ह जतना आजतक कोइ नही गया। इ. एच. - टोरॉनटो

- मन अभी-अभी आपका वी डयो - "द सीर ट बहाइड द मटर" दखा ह। इस वषय की वयाखया बहुत ही अचछ ढग स की गइ ह, हाला क मुझ लगता ह क दूसरो को समझान की सहू लयत क हसाब स हम अभी और भी उदाहरणो की ज़ू रत ह। डॉकयुमरी म दए गए उदाहरण न चत ू प स पया पत ह परनतु खास तौर पर य द रोजमरा क जीवन स कुछ और उदाहरण दए जा सक तो समझन-समझान क लहाज स बहतर होगा। चाह तो एक अनुवती ससकरण भी नकाला जा सकता ह; कयो क लोग इस वषय म जतनी वा छत ह उतनी टप पणी नही द सकत। साथ ही व गलत खयालो को भी पश कर रह ह। इसपर पूणरवराम लगान क लए, मरी समझ स वतरमान उदाहरणो म कुछ और भी सरल उदाहरण जोड जाए। एस. जी., इसतांबुल

- भौ तक वव और जीवन क समबनध म मर वचारो म बु नयादी प रवतरन आ गया ह। यह जीवन, अनय लोग और व सब जो मर इदर गदर ह, अब व नही रह जो पहल थ। जतना ही म इन तथयो को सीख-समझ रहा हू, उतना ही म कुछ खास चीजो स वरत होता जा रहा हू। मन अपन अनदर झाकना और वचार करना शु कर दया ह। पता नही यह ठीक ह या नही परनतु एक तरह स म अपन अनदर अ धक शा त, खुशी और सुरषा का अहसास करन लगा हू। अब लोगो का कुछ भी कहना और करना मर लए सुगम हो गया ह। मुझ उस वय त की तलाश ह

जो मर अनुभवो को सुन-समझ सक। मुझ आशा ह क सदा की तरह आप इस महतवपूणर वषय म मरी मदद करग। म नही चाहता क मरा जीवन बकार चला जाए। के. यू. ट कडरू

पदाथरकी रकृत के बारे में पूछे जाने पर कुछ वैज्ञानकों और वचारकों की राय

आपक इमल और इसकी अत रोचक वषय-सामरी क लए कोटश: धनयवाद! म कोइ वज्ञानक नही हू परनतु आपक रन मुझ बहुत रोचक लग। हालाक म आपक रनो का कोइ वज्ञानक समाधान रस्तुत नही कर सकता, परनतु यह जूर कहूगा क उनस मुझ बहुत कुछ सीखन को मला। पर लखन क लए धनयवाद! म आपक रनो क बार म वज्ञान क षर म कायरत अपन कुछ मरो को बताऊगा ताक व अपन उतर भज सक। शुभकामनाए और एक बार फर पर लखन क लए आपका धनयवाद! कोफी ऑपुकु

आपक सभी सवाल और तथयो की परख अतदृरट स समपनन और सही नशान पर ह। हालाक य रन नए नही ह कनतु आजतक उनका पूरा समाधान नही हो सका ह। वस्तुत:, आधुनक स्नायु वज्ञान और मनोवज्ञान क शोधकता यद ऐस सवालो की ओर जयादा मुखातब होत जस क आपन पूछ ह तो इन षरो म काफी रगत होती। सयोगवश आपका रन स. १३ भी लषत ह। (रन स. 13 : जब इन वषयो पर चचा की जाती ह तो कुछ लोग बहुत ही भयभीत हो उठत ह. आपकी समझ स इसका कया कारण हो सकता ह?) मरा उतर यह ह क जब आप इस वव को सही पररषय म दखत ह, जस तरीक स आप इसका वणस करत ह, वह एक भयावह परदृशय होता ह। परनतु सतय हमशा खोजा जाना चाहए, भल ही यह भयावह सतय कयो न हो। स्टीव लेहर

- आपन ऐस कइ रोचक सवाल पूछ ह जनस कइ सदयो तक दाशरनक लोग परशान रह ह। नचत ूप स सभव हो सकता ह क हम कसी सुपर कपयूटर क अनदर एक आभासी ससार म जी रह हो और हम कोइ फकरमहसूस न हो रहा हो, जसाक "रॉन" अथवा "द मॅरकस" जसी फल्मो म दखाया गया ह; परनतु जबतक "रकृत क नयम" (सभव ह, यह 'रोरामग' का हस्सा हो) नही बदलत और हम कोइ फकरमालूम नही पडता, तबतक कसी परवतस क अनुभव की गुजाइश नही ह। सामानय तौर पर इस रकार क वचारो स बहुत स लोग भयभीत रहत ह क योक य वचार उनक आरामदह वव-परदृशय म खलल डालत ह।जॉन रॉलैंड (वैनगाडर रसचर इंस्टीचयूट के अधयष और मुखय कायरचालन अधकारी)

रोत-सनदभर:

1. रीटा काटर, मपग द माइड, युनवसटी रस, लदन, 1999, पृ. 107
2. आर. एल. रगोरी, द सायकोलॉजी ऑफ सीइग, ऑक्सफोडरयुनवसटी रस इक., नयूयॉकर 1999, पृ. 9
3. हॉयमर वॉन डतफथर डक जीस्ट फायल नशत वॉम हमल (चतना आकाश स नीच नही टपकी), पृ. 256
4. एम. अली याज, सयत ऍकसॉय, फजक 3 (फीजकस 3), सूरत पबलशसर इस्ताबुल, 1997, पृ. 3
5. डॅनयल सी. डनट, रनचलरन, एसज ऑन डजाइनग माइडस, द एम आइ टी रस, क्मरज, 1998, पृ. 142

6. डॅनयल सी. डनट, रन चलर न, एसज ऑन डजाइ नग माइडस, पृ. 142
7. www.hhmi.org/senses/a/a110.htm
8. जॉजस पु लतजर, र सपुलस ए लमटयसर ड फलोसोफी (दशसशासर क ता तवक सधानत), एडीसन सोशल स, प रस, 1950, पृ. 40
9. www.hhmi.org/senses/a/a110.htm
10. माइकल आइ. पोजनर, माकस इ. रशल, इमजज ऑफ माइड, साइ ट फक अम रकन लायररी, नयूयॉकर, 1999, पृ. 88
11. बरसड रसल, एबीसी ऑफ रल ट वटी, जॉजर एलन ऐड अन वन, लदन, 1964, पृ. 161-162
12. जॉजर बकल, अ रयटाइज कस नरा द र सपुलस ऑफ यूमन नॉलज,
1710, वकस ऑफ जॉजर बकल, खड 1, ससकरण ए. र जर, ऑकसफोडर 1871, पृ. 35-36
13. ऑहस हक लसोग लू, डूशयूस ता रही (वचार का इ तहास), इसताबुल : 1987, पृ. 447
14. जॉजर पु लतजर, र सपुलस ए लमटयसर ड फलोसोफी, एडीसन सोशलस, प रस, 1954, पृ. 38-39-44
15. रीटा काटर, म पग द माइड, पृ. 113
16. मु ह दन इब अल-अरबी, फुसूस अल- हकम, पृ. 220
17. व लयम र ॉगर, कली नकल ऐड एकसप रमटल हनॉ सस,
http://www.lucidexperience.com/HypnoPapers/512.html
18. डॉ. ता हर, ओजककस, Gerçeğin Dirilişine Kapı HIPNOZ (यथाथर जागरण की ओर खुलत वार : सममोहन), "Üst Ultrastabilite" (अपर अलरासट ब लटी), स-डा यामलरी, खड 1, रथम ससकरण, पृ. 204-205
19. डॉ. ता हर, ओजककस, Gerçeğin Dirilişine Kapı HIPNOZ (यथाथर जागरण की ओर खुलत वार : सममोहन), ."Üst Ultrastabilite" (अपर अलरासट ब लटी), पृ. 267
20. टरनस वाटस, ऍब रऍकशन, मनोवजा नक प रदृशय जसम सममोहनकता या तो पयार करता ह या घृणा,
http://www.hypnosense.com/abreaction.htm
21. पॉल थॉसस, डी हनोज इन डसट डर मनसयइट, बॉयर-वरलॅग, र बगर हॅसलॅस, 1960, पृ. 52-53
22. रनी सूर , रट ड पॅरासायकोलॉजी, पयॉट, प रस, 1956, पृ. 341
23. डॉ. रसप डॉकसॅट, हनो टजमा (सममोहन), पृ. 106-108
24. डॅनयल सी. डनट, कशसनस एकसप लड, ल टल-र ाउन ऐड कमपनी, नयूयॉकर 1991, पृ. 26-27
25. आर. ल. र गोरी, आइ ऐड र न : द सायकोलॉजी ऑफ सीइग, पृ. 9
26. कन वलबर, होलोर ा फक पॅराडाइम ऐड अदर पॅराडॉकसज, पृ. 20
27. बरसड रसल, एबीसी ऑफ रल ट वटी, जॉजर एलन ऐड अन वन, लदन, 1964, पृ. 161-162
28. हनरी बगसन, मटर ऐड ममोरी, जोन बुकस, नयूयॉकर, 1991
29. जॉन हॉगस, द अन डसकवडर माइड : हाउ द यूमन माइड डफाइज रपलीकशन, म डकशन ऐड एकसप लानशन, नयूयॉकर: र ी रस, 1999, पृ. 258-259

30. जॉन हॉगस, द अन डस्कवडर माइड : हाउ द यूमन माइड डफाइज रपलीकशन, म डकशन ऐड एक्सप लानशन, पृ. 258-259
31. जॉन हॉगस, द अन डस्कवडर माइड : हाउ द यूमन माइड डफाइज रपलीकशन, म डकशन ऐड एक्सप लानशन, पृ. 229
32. हॉयमर वॉन डतफथर, डक जीस्ट फायल नशत वॉम हमल (चतना आकाश स नीच नही टपकी), पृ. 13
33. व लयम ए. डमबस्की, कनव टरा मटर इनटू माइड, 1998, www.arn.org
34. व लयम ए. डमबस्की, कनव टरा मटर इनटू माइड, 1998, www.arn.org
35. कमहू रयत ब लम तकनीक द गसी (कमयू रयट साइस ऐड टक्नोलॉजी जनल), 7 जुलाइ 2001, स. 746, पृ. 18, डर सपयगल, 1/2001
36. फरीद कम, एम. अली आयनी, इब्नी अरबी'द वा लरक दूस्यूससी (इब्न-अरबी म होन का एहसास), पृ. 37
37. मट रय लस्ट फलसफ सोजलुगु (भौ तकवादी दशसशास्र का शबकोश), इस्ताबुल, सोस्याल यामलर, चौथा सस्करण, पृ. 326
38. वी. आइ. ल नन, मट रय लजम ऐड इ प रयो र ट सजम, रोरस प ब्लशसर, मॉस्को, 1970, पृ. 334-335
39. लकन बनट, द यु नवसर ऐड डॉ. आइस्टीन, व लयम स्लोयन ऍसो सएट, नयूयॉकर, 1948, पृ. 84
40. टम फोलार, "र ॉम हयर टू इट नटी", डस्कवर, दसमबर 2000, पृ. 54
41. टम फोलार, "र ॉम हयर टू इट नटी", डस्कवर, दसमबर 2000, पृ. 54
42. र कोइस जॅकब, ल ज्यु डस पॉ सबुल्स, यु नव सटी ऑफ वा शगटन रस, 1982, टम फोलार, "र ॉम हयर टू इट नटी", डस्कवर, दसमबर 2000, पृ. 111
43. लकन बनट, द यु नवसर ऐड डॉ. आइस्टीन, व लयम स्लोयन ऍसो सएट, नयूयॉकर, 1948, पृ. 52-53
44. लकन बनट, द यु नवसर ऐड डॉ. आइस्टीन, व लयम स्लोयन ऍसो सएट, नयूयॉकर, 1948, पृ. 17
45. पॉल स्रथनर, द बग आइ डया : आइस्टीन ऐड रल ट वटी, ऍरो बुक्स, 1997, पृ. 57
46. इमाम रबानी, लटसर ऑफ रबानी, खड 2, 357, लटर, पृ. 163
47. इमाम रबानी, लटसर ऑफ रबानी, खड 2, 470, लटर, पृ. 1432
48. मु ह दन इब्न अल-अरबी, फसूस अल- हकम, पृ. 117-118
49. मु ह दन इब्न अल-अरबी, फसूस अल- हकम, पृ. 120-122
50. इमाम रबानी, लटसर ऑफ रबानी, खड 2, 480, लटर, पृ. 543, 545
51. इमाम रबानी, लटसर ऑफ रबानी, खड 2, 470, लटर, पृ. 517-518
52. बरसड रसल, द रॉब्लमस ऑफ फलॉसोफी, 1992, पृ. 5
53. रॉबटर लॉरस कुन, कलोजर टू ुथ, मॅकरो- हल, नयूयॉकर, 2000, पृ. 8
54. डॅ नयल सी. डनट, कशसनस एक्सप लड, एस. 389
55. यूर वटसन, सायकोलॉजी : माइड, र न, ऐड कल्चर, जॉन वली ऐड सस, नयूयॉकर 1996, पृ. 118
56. र ड रक वस्टर, लनस, वगसन, वीजीए, 1978, पृ. 6

शीषर्क

690

व तमाम घटनाए जो हमार जीवन क अग ह -- लोग-बाग, इमारत, नगर, कार इतया द -- या सष प म कह तो वह हर चीज जस अपन समपूणर जीवन म हम दख सकत ह, पकड या छू सकत ह, जस सूघ सकत ह, स्वाद ल सकत या सुन सकत ह, व सब कुछ वास्तव म ऐस प रदृशय या ऐसी अनुभू तया ह जनका आकार हमार म स्तषक म बना ह।

692

आप कसी पुस्तक क वास्त वक स्वरू प को नही छू सकत

लखक
पज ल-आउट
मुरण र स
जल्दसाजी
पुस्तक की दुकान

पुस्तक

694

कोइ भी व्य त जो झरोख स बाहर कसी प रदृशय को दखता ह, वह वाकइ म अपन स बाहर का कोइ दृशय नही

दख रहा होता ब ल्क उस बमब को दख रहा होता ह जो उसक दमागी प रदृशय स जुडा हुआ ह।

आखो तक पहुचन वाला र काश आखो की को शकाओ वारा पहल वयुतीय सकतो म बदल दया जाता ह और फरउस म स्तषक क पृठ भाग म अव स्थत दृशय कनर म र षत कर दया जाता ह। हमार म स्तषक म न हत "एक चतना" म स्तषक म आन वाल उन वयुतीय सकतो को र हण करती ह और उनह एक दृशय क ू प म दखती ह।
 वयुतीय सकत

र काश

 वयुतीय सकतो स बना दृशय प रदृशय

696

हम अपना समपूणर जीवन अपन म स्तषक क अनदर जीत ह। व लोग जनह हम दख रह होत ह, व फूल जनह हम सूघ रह होत ह, हम जो सगीत सुनत ह, जन फलो को चखत ह, अपन हाथो जस उषमा का अनुभव करत ह ………. यह सब कुछ हमार म स्तषक म ही आकार लता ह। सच चाइ तो यह ह क हमार म स्तषक क अनदर न तो कोइ रग ह, न धव नया, और न ही कोइ बमब। व एकमार वस्तुए जो हमार दमाग म वयमान ह व ह वयुतीय सकत। तो इसका अथर यह हुआ क हम अपन म स्तषक म बनन वाल वयुतीय तरगो की दु नया म जीत ह। यह कोइ वचारधारा या प रकल्पना नही ह ब ल्क इस बात की वजा नक व्याखया ह क हम इस ससार को कस दखत ह.

698

गद स खलत हुए कसी बच च को नहारता हुआ कोइ व्य त वाकइ म उस अपनी आखो स नही दख रहा होता। आखो का काम बस इतना भर ह क व आखो क पछल हस्स म र काश को सर षत कर दती ह। र काश जब र टना म पहुचता ह तो र टना पर उस बच च का एक उलटा और व-आयामी चर बन जाता ह। उसक बाद बच च का यह चर एक वयुत-धारा म बदल जाता ह जो क दमाग क पछल भाग म स्थत दृशय कनर तक पहुचा दया जाता ह। यही वह जगह ह जहा बच च का सुस्पट र-आयामी चर पूरी समर ता स दखा जा सकता ह। तो अबजरा यह बताइए क इस पूरी सुस्पटता क साथ उस बच च का र-आयामी बमब भला दखता कौन ह? बात साफ ह क वह सतव जसक ससगर स हम यह कायर्व्यवहार कर रह होत ह, वह आतमा ह -- हमारी ू ह -- जो क हमार म स्तषक स भी पर अ स्ततववान ह।

699

व तमाम चीज जनह हम दखत ह और जो हमारी ह, वस्तुत: व हमार म स्तषक म रच गए बमब ह

जब कोइ व्यत अपनी आखो को मलता ह तो वह अपनी कार क बमब को ऊपर-नीच हलता-डुलता दखता ह। यह इस बात का रमाण ह क दखन वाला सचमुच की कार को नही ब ल्क दमाग म बन उसक बमब को दख रहा होता ह।

700

हमार म स्तषक स बाहर रकाश, धव न और रग वयमान नही होत, वहा कवल एक ऊजा होती ह

हाला क यह तथय वज्ञा नक ू प स रमा णत हो चुका ह क वषय समबनधी हमार सार बोध और ज्ञान का जनम हमार म स्तषक क अनदर होता ह, फर भी कुछ लोग यह दावा करत ह क हम जन बमबो को दख रह होत ह उनका मूल स्वू प हमार म स्तषक स बाहर वयमान होता ह। तथा प, व अपन इस दाव को कभी भी सा बत नही कर सकग। इसक अलावा, हाला क व मानत ह क वषय उनक म स्तषक स बाहर वयमान ह, जसा क ऊपर कहा गया ह, परनतु रकाश, धव न और रग हमार दमाग स बाहर उप स्थत नही ह। रकाश ऊजा तरगो और ऊजा क पकट क ू प म बाहर उप स्थत होता ह और हम रकाश की अनुभू त सफर तभी होती ह जब यह र टना स टकराता ह। इसी रकार धव न भी नही होती। धव न तभी उतपनन होती ह जब ऊजा तरग हमार कानो म र वट होती ह और ततपचात म स्तषक म भजी जाती ह। बाहर कही कोइ रग भी नही ह। जब हम कहत ह क "कोइ रग नही ह" तो लोग काल, सफद या मटमल की कल्पना करन लग सकत ह। परनतु य भी तो रग ही ह। हमार म स्तषक स बाहर क जगत म काल, सफद या मटमल रगो का भी कोइ अ स्ततव नही ह। कवल अलग-अलग श त और र कवसी की ऊजा तरग हुआ करती ह और य ऊजा तरग ही दमाग और आखो की को शकाओ वारा रगो म बदल दी जाती ह।

कवाटम भौ तकी वज्ञान की एक अनय शाखा ह जो यह बताती ह क पदाथर क अ स्ततव का दावा तकर्सगत नही ह। कवाटम भौ तकी न जस सवा धक महतवपूणर तथय का पता लगाया ह और जसस भौ तकवादी नस्तब्ध रह गए ह, वह यह ह क पदाथर 99.9999999% खाली ह। भौ तकी और मनो वज्ञान क अपन अधययन म पीटर रसल अक्सर मानव चतना क बार म टप पणी कया करत ह। "साइनस टू गॉड" नामक अपनी पुस्तक म रसल न इस सतय की व्याखया इस रकार की ह :

उदाहरण क लए, पदाथर की रकृ त क समबनध म हमार वचारो को ही ल लीजए। दो हजार वषो तक यह माना जाता रहा क अणु ठोस पदाथो क सूषमतम 'बॉल' ह - एक ऐसा रादशर जस हमन अपन द नक जीवन क अनुभव क आधार पर गढ लया था। बाद म जब पदाथर वज्ञा नयो न यह पता लगाया क अणु और भी अ धक ता तवक तथा अणुओ स भी सूषमतर (इलकरॉन, रोटोन, नयूरॉन इतया द जस) कणो स बन ह तो यह रादशर खसक कर एक

क्‍न रक ना भकीय पर आ गया जो क उसका प रर मण करन वाल इलकरोनो स घरा हुआ ह। एकबार फर, यह हमार अनुभव पर आधा रत रादशरथा।

अणु छोटा हो सकता ह -- एक इच का मार खरबवा हससा परनतु य परमा णवक कण तो उनस भी सकडो-हजारो गुणा छोट ह। चावल क दान क आकार म प रव धस कए गए कसी अणु की ना भकीय की कलपना की जए. ऐसी सथ त म समपूणर अणु कसी फुटबॉल सट डयम क आकार का होगा और इलकरॉन होग सतभ क चतु दरक उडत हुए चावल क दानो की तरह। जसा क आर भक बीसवी सदी क र टश शरीर-शासरी सर आथर ए डगटन न कहा ह : "पदाथर जयादातर भूतनुमा खाली सथान ह"। और अ धक सपटता स कह तो 99.9999999 र तशत खाली सथान।

कवाटम सधानत क अभयुदय क साथ यह जात हुआ क यहातक क य परमा णवक कण भी दूर-दूर तक ठोस नही ह। वसतुत: व पदाथर की तरह तो कतइ नही ह या कम स कम उस पदाथर की तरह नही जस हम जानत-समझत ह। व दुभरय और अमापय ह। व सभावी अ सततव क फ नल बादल की तरह ह जनका कोइ सु न चत सथान नही ह। जयादातर समय व कणो स कही अ धक तरग जस दखत ह। (- पीटर रसल, 'द मसरी ऑफ कसशनस ऐड द मी नग ऑफ लाइट", 12 अकटूबर 2000)

http://www.arlingtoninstitute.org/futureedition/From_Science-To-God.htm

इस रकार हम दख सकत ह क हाला क बहुत स लोग यह दावा करत ह क जो कुछ व अपन म सतषक म दख रह होत ह व बाहर उप सथत ह परनतु वजान यह बतलाता ह क हमार म सतषक की सीमा-रखा स पर कवल ऊजा तरग, ऊजा क पकटस ह। हमार म सतषक स आग कोइ रकाश नही ह, कोइ धव न नही, कोइ रग नही। इसक अ त रत, पदाथर की रचना करन वाल अणु एव परमा णवक कण वसतुत: ऊजा क श थल समूह मार ह। प रणामसवू प, हाला क कुछ लोग पदाथर क अ सततव म ववास करत ह परनतु पदाथर सथान- रत ता स बना हुआ ह। यथाथरत:, इव र इन गुणो क दशरन क साथ पदाथर की रचना करत ह।

701

म सतषक म न मरत होन वाली नहायत वासत वक " बमब र त ल पया"

नीच दी गइ तसवीर म आप मानव की आख और एक ऐस हाइ-टक टली वजन की दृ ट क बीच क तुलनातमक अतर को दख रह ह जस हजारो इलकरो नक इजी नयरो न मलकर बनाया ह।

आख की रचना म लगी वषय-सामरी

रोटीनस
 ल पड
पानी

प रणाम:
र खर, र-आयामी, सपट, चकाचौध भरी दृ ट जो क तु हन या धुधलक क बना और पूरी गहराइ स मूल पदाथर का यथाथरू प र स्तुत करती ह

टली वजन नमा ण म र युत होन वाल कुछ कल-पुजर

कॅथोड-र टयूब
करोल पॅनल
टयूनर
कपसीटर
सल नयम रकटीफायर
रासमीटर
मॉड युलटर
ऍमप लीफायर
ऑ सलटर
 पकचर टयूब
सफस अकू सटक वव फल्टर

प रणाम :

ऐसी दृ ट जो कभी धुधली, कभी धारीदार दखती ह और मूल पदाथर स हर बात म मल नही खाती। कइ बार अस्प ट लगती-सी जस कारण गहराइ का पूरा बोध नही हो पाता।

जसा क इस तुलनातमक अतर म भी दखा गया ह, दजसो वषो क र यासो क बावजूद, लोग वसी कृ र म दृ ट नही बना पाए ह जसम उतनी ही तीर ता और उचच गुणवता हो जतनी क आख की दृ ट म होती ह। दूसरी ओर, आपकी आख जो महज रोटीन, ल पड और जल स बनी हुइ ह ऐसा वास्त वक बमब र स्तुत करती ह जस बनान म व कतइ सष म नही हो सक। यह इतनी प रपूणर र खरता ह क हर कोइ यही सोचता ह क उस दखलाइ दन वाला बमब वास्त वक बमब ह। व यह महसूस नही कर पात क व जो कुछ भी दख रह होत ह उसका आकार वस्तुत:

हमार मस्तिषक म बनता ह। वास्तिवक पदाथर को बना दख ही व आवस्त हो जात ह क उनहोन असली तस्बीर दखी ह कयोक मस्तिषक म बनन वाली तस्बीर की गुणवता म कही कोइ कमी नही ह। उस तस्बीर का रटा न तो रोटीन ह, न परमाणु और न ही मस्तिषक क अणु -- बलक वह आतमा जसम इवर न अपनी चतना का उचछ्वास भरकर उस मानवमार को रदान कया ह।

702
मस्तिषक क अदूनी हस्स म घुपप अधरा ह। मस्तिषक क अनदर रकाश का रवश नही होता।

703
बाहरी दुनया म रग नही ह। रगो की रचना कवल रटा की आखो और उसक मस्तिषक म होती ह। बाय ससार म कवल ववध तरग-दीघता वाल ऊजा पकटस मौजूद ह। यह हमारा मस्तिषक ही ह जो इस ऊजा को रगो म बदल दता ह।

704
ऊपर दशाए गए चर म बाइ ओर रदशस हर रग का षर गहरा दख रहा ह जबक दाइ ओर का हरा षर अपषाकृत हलका दख रहा ह। वस्तुत:, जसाक नीच दखाया गया ह, दोनो हर रगो का 'टोन' एक जसा ह। हरी पटयो क पास क लाल और नारगी रग हम यह सोचन को उकसात ह क दोनो हर रग अलग-अलग टोन क ह। एकबार फर, इसस भी यही बात परलषत होती ह क हम वास्तिवक भौतक जगत को नही दखत, हम तो बस अपन मस्तिषक म उसका वही स्वूप दख रह होत ह जसाक हमन अपन मस्तिषक को सुझाव दया ह।

हमार मस्तिषक क दायर स बाहर कही कोइ रकाश या वणर नही ह। रकाश और वणर की रचना हमार मस्तिषक म होती ह।

आख म सथत रटना म सूचयाकार कोशकाओ क तीन समूह हुआ करत ह। इनम स रतयक अलग-अलग तरग-दीघता वाल रकाश पर रतरया करता ह। पहला समूह लाल रकाश क रत सवदनशील ह, दूसरा नील रकाशक रत और तीसरा समूह हर रकाश क रत। इन सूचयाकार कोशकाओ म स रतयक समूह को रापत होन वाल अलग-अलग स्तर क उतररण ही हम यह षमता दत ह क हम असखय और ववध वणरमो वाल एक रगारग ससार को दख पात ह।

705
हमार कान का बाहरी हस्सा धवन-तरगो को रहण करता ह और उनह मधय कणरम भज दता ह। कान का वह बचला हस्सा उन धवनयो को वस्तारत करता और उनह अनत:कणर वाल हस्स म भज दता ह। कान का यह

आत रक हस्सा धव नयो को उनकी गहनता और बारमबारता (र ीकवसी) क आधार पर वयुतीय सकतो म प रव तस करक उनह म स्तषक म सर षत कर दता ह।

706
सभी धव नयो की रचना हमार म स्तषक म होती ह
बाय जगत म धव नया नही ह

707
हमारा म स्तषक धव नु ध और र काशु ध ह। अत: भल ही बाहर का शोर बहुत जयादा हो मगर हमार म स्तषक का अतरग र शात रहता ह। परनतु इस र शा त म व्यापत होती ह एक चतना जो इन वयुतीय सकतो का अनुवाद उस व्य त वशष को र य लगन वाली मधुरता म कर सकती ह, या उस धव न को कसी मर की आवाज या टल फोन की घनघनाहट म बदल सकती ह।

708
घुप प अधर म स्तषक म सुगध का बोध

709

अपन बगीच म गुलाबो को सूघता हुआ कोइ व्य त वास्तव म असली गुलाबो को नही सूघ रहा होता। उस जस सुगध की र ती त हो रही ह वह उसक म स्तषक वारा की गइ वयुतीय सकतो की व्याखया ह। परनतु मजदार बात यह ह क वह सुगध उस इतनी वास्त वक र तीत होती ह क उस व्य त को कभी गुमान भी नही हो सकता क वह असली गुलाब को नही सूघ रहा या रही ह। यह इव र का एक बहुत बडा चमतकार ह।

710
सभी सुगधो का सचार हमार म स्तषक म होता ह
बाय जगत म कोइ सुगध नही ह

हमारी नाक का उदशय ह सुगध सकतो को र हण करना और उनह म स्तषक क पास सचा रत करना। सूप अथवा गुलाब की खुशबू का अहसास म स्तषक म ही होता ह। परनतु कसी वास्त वक गुलाब या सूप क न होत हुए भी स्वन म व्य त उनकी सुगध का अहसास कर सकता ह. इव र न म स्तषक क अनदर स्वाद, सुगध, दृ ट, स्पशर और धव न समबनधी ऐन र क ञानो का ऐसा आव स्तकारी समायोजन कया हुआ ह क कसी भी व्य त को यस समझा पाना या दखा पाना बडा ही क ठन ह क य सार अहसास वाकइ हमार म स्तषक म ही घ टत होत ह और उनका

वास्त वक चीजो स कोइ समबनध नही ह। तो यह ह इवर का परम भव्य ञान।

कोइ भी व्य त चाह तो जरा धयान क्नरत करक अपन म स्तषक म अपनी पतनी की मुखाकृ त क चर बना सकता ह या डजी फूलो की सुर भ की कल्पना कर सकता ह। सवाल यह ह क भौ तक तौर पर कसी वस्तु क आस-पास न होन पर भी, वह कौन ह जो आख की आवशयकता क बना भी दख रहा ह या नाक की आवशयकता न होन पर भी सूघ रहा ह? यह अ स्ततव हमारी आतमा का ह।

713

सभी आस्वादन हमार म स्तषक क अनदर होत ह

715

स्पशर की अनुभू त भी हमार म स्तषक क अनदर ही होती ह

716

आभी आप जस पुस्तक को पढ रह ह उसका आप अनुभव भी कर रह ह, यह तथय इस सचचाइ को नही बदल सकता क पुस्तक को दखन का काम आपक म स्तषक क अनदर हो रहा ह। जस रकार पुस्तक को दखन का कायर म स्तषक म हो रहा ह, उसी रकार पुस्तक को छून की अनुभू त भी आपक म स्तषक म ही घ टत होती ह।

717

कोइ भी व्य त जो कसी खास दृशय को नहार रहा ह, यह मान लता ह क वह उस दृशय को अपनी आखो क सामन दख रहा ह। परनतु उस दृशय का सृजन म स्तषक क पीछ स्थत दृ ट-कनर म होता ह। अत: यह रन समीचीन ह क वह कौन ह जो उस दृशय को दखकर आननद की अनुभू त पा रहा ह? वह म स्तषक तो हो नही सकता जो महज ल पड और रो टन स बना ह।

718

आप अपन जीवन म अपन म स्तषक रकोठ स कभी बाहर नही आ सकत

कल्पना कीजए क आप एक अधर कमर म रवश कर रह ह जसक अनदर टली वजन का एक बडा सा पदा लगा ह। अब य द ऐसा हो क बाहरी जगत को आप सफर इस पदर क माधयम स ही दख सक तो थोडी दर बाद आप बोर हो जाएग और बाहर नकलना चाहग। एक पल क लए वचार कीजए क आप अभी जस जगह ह वह कोइ अ लग रकार की जगह नही ह। एक बक्स की तरह आपकी छोटी सी अधरी खोपडी क अनदर आप ताउर बाहरी दु नया का प रदृशय नहारत रहत ह। इस छोटी सी जगह स बाहर नकल बना ही आप य तमाम तस्बीर दख रह

होत ह और मज की बात यह क आप बोर भी नही होत। और इसक अलावा, आप कभी यह यकीन भी नही करग क यह सब कुछ आप एक दृशयपटल पर दख रह थ। आप जस दृशय को दख रह होत ह वह आपको इतना आवस्त कर दन वाला होता ह क हजारो सालो म खरबो लोग भी इस सचचाइ को नही पकड सक।

719
कार चलाता हुआ कोइ व्यत यही यकीन करता ह क सडक और कनार उसस पीछ छूटत जा रह ह। परनतु वह सबकुछ जो वह दख रहा होता ह, कसी फोटोराफ की तरह उसक मस्तषक क एक ही धरातल पर होता ह।

720

व सभी वस्तुए जनह आप अपन स दूर समझत ह, व आपक मस्तषक म ही ह

721
इस चर म पीछ की रखा सामन की रखा की तुलना म दुहर आकार की रतीत होती ह। परनतु वास्तव म दोनो ही रखाए एक ही आकार की ह। जसा क हम इस उदाहरण स समझ सकत ह, रखाओ, पहलुओ, रकाश और छाया जसी चीजो क रयोग क कारण लोग एक ही वस्तु को अलग-अलग ढग स दखत ह। सचचाइ यह ह क य तमाम वस्तुए एक ही धरातल पर दृशयमान होती ह -- हमार मस्तषक क दृट-कनर पर।

722
गहराइ का बोध करान वाल अनक ततवो म स एक ह ऊतको (टशयूज) का वभदीकरण। व ऊतक जो हमार नकट ह, वस्तृत ूप म दख जा सकत ह और जो दूर ह व कम स्पट दखत ह। उदाहरण क लए, जसा क हम बगल म दए गए चर म दख सकत ह, एक कागज पर एक र-आयामी ऊतक चरत कया गया ह जसस क उसकी गहराइ का बोध कया जा सक। रग, छाया और रकाश क रभावो क कारण वह उभरा हुआ रतीत होता ह। हालाक बाइ ओर क इस चर म सभी बदु सफद ह परनतु ऐसा लगता ह क व काल और सफद दोनो म झलक रह हो।

नीच दाहनी ओर एक भवन की दीवार पर एक र-आयामी बमब दखा जा सकता ह।

723
दो-आयामी सतह पर गहराइ वाल चर का ूपाकन

इन सभी चरो म बडी ही वास्तवकतापूणर गहराइ ह। शड, पहलुओ और रकाश क रयोग स कसी दो-आयामी फलक पर गहराइ वाला र-आयामी परदृशय दखाया जा सकता ह। यथाथीकरण का यह ततव चरकार की षमता

क अनुसार और भी अ धक हो सकता ह। ठीक यही बात दृ ट समबनधी हमार अपन बोध क बार म भी कही जा सकती ह क्यो क हमारी र टना म पहुचन वाला दृशय वस्तुत: व-आयामी होता ह। परनतु हमारी आखो म जो च र उभरता ह वह एक पूरा चर बन जाता ह और इस र कार हमारा म स्तषक उस बमब को एक गहर र-आयामी बमब क ू प म दखता ह।

724
चू क आपका शरीर आपक म स्तषक म र त ब मबत ह, अत: र न यह ह क क्या आप उस कमर क अनदर ह या वह कमरा आपक अनदर ह? उतर स्पट ह : वह कमरा आपक अनदर ह, आपक म स्तषक क दृ ट-कनर म।

725
एक र योग क दौरान कसी यर क ज रय अध लोगो को कुछ प रदृशय दखाए गए। यर क सहार, य अनध लोग कुछ बड ही वास्त वक-जस प रदृशय दख सक जनका बाहरी जगत स कोइ समबनध नही ह ब ल्क उनह कृ र म तरीक स बनाया गया था। उनह लग रहा था क कोइ वस्तु उनकी ओर आ रही ह। इस लए, उसस बचन क लए व पीछ हट।

726
जब कोइ व्य त सपना दखता ह क जाड की एक कडकडाती सुबह वह एक बगीच म ह तो वह ठढ का अनुभव करक सहर जाता ह। परनतु, वह जस जगह पर ह वहा न तो कोइ हवा-बयार ह और न ही ठढ। हो सकता ह वह बड ही गमर और आरामदह कमर म सो रहा हो। फर भी यह सच ह वह पूरी शदत स ठढ का अनुभव कर रहा ह। वास्त वक ससार म अनुभूत शीतलता और स्वन म अनुभव की गइ शीतलता म कोइ फकर नही होता।

727
सभव ह आप अपन जीवन को कसी अनय धरातल स नहार रह हो, ठीक वस ही जस स्वन म

स्वन म कॉफी पी रहा कोइ व्य त शककर, दूध और कॉफी का असली आस्वाद पा सकता ह जब क वहा कही कोइ कॉफी या अनय पय नही ह। य द उस ष ण कोइ उसक पास आकर यह कह क वह तो कवल स्वन दख रहा ह और कॉफी तो ह ही नही तो वह व्य त ऐस कसी वचार को खा रज कर दगा। वह पूछ सकता ह क वह कवल एक प रदृशय कस हो सकता जब क उसन अपनी जीभ पर उस कॉफी की गमा हट का अहसास कया ह और उस पीन स उस तृ प त भी हुइ ह। वह पूछ सकता ह क य द वह कॉफी असली नही थी तो उसस उसकी तृषा कस शात हो सकी? परनतु जब वह स्वय जाग उठता ह तभी वह जान पाता ह क जस कॉफी को पीन की उस र ती त हुइ थी, वह वस्तुत: उसक म स्तषक म सृ जत एक बमब मार थी और गमा हट तथा प यास जसी सवदनाए भी म स्तषक म घ टत होन वाल बोध ही थ।

स्वन और यथाथर जगत समबनधी हमार अनुभव समान तकर पर ही आधा रत ह। स्वन और वास्त वक जगत दोनो की ही अनुभू तया हम अपन म स्तषक क अदर ही पात ह। वह एकमार कारण जसस हम स्वन को स्वन समझत ह वह ह हमार जाग जान की अवस्था, जब हम स्वय को अपनी शयया पर पात ह और मानत ह क हम सो रह थ और जो कुछ भी घ टत हुआ वह एक स्वन था। य द हम कभी जागत नही और सतत स्वन ही दख रह होत तो क्या होता? क्या हम कभी यह महसूस कर पात क स्वन म दखी और भोगी गइ कसी भी वस्तु स यथाथर ू प म हमारा वास्ता नही पडा था? नही, हम हर गज ऐसा महसूस नही कर पात। य द हम जागत नही और यह नही दख पात क हम सोय पड थ तो हम कभी यह अनुभव नही कर पात क हम स्वन दख रह थ। हम तो अपनी पूरी जनदगी बस यही महसूस करत क यही हमारा वास्त वक जीवन ह। तो हम कस सा बत कर सकत ह क हमारा यह वास्त वक जीवन स्वन नही ह? क्या हमार पास ऐसी कोइ जानकारी ह क इस जनदगी को अलव दा कहन क बाद जब हम स्वय को कसी अनय धरातल स अपन वतर्मान जीवन क प रदृशय को नहारत दखग तो फर क्या होगा?

728

अपन घर म आरामदह शयया पर सोया हुआ इनसान यह सपना दख सकता ह क वह कसी युध-ष र म खडा ह। वह युध स उतपनन भय, तनाव और आतक का शकार भी बन रहा होगा मानो वह युध उसक वास्त वक जीवनम हो रहा हो। परनतु अस लयत म वह एक आरामदह बछावन पर सोया पडा ह। व वास्त वक-स रतीत होत स्व नल शोर और दृशय वस्तुत: म स्तषक म घ टत हो रह होत ह।

729

कोइ यह सपना दख सकता ह क सपन म वह अपन कसी मर स बहस कर रहा ह जो उस यह कह रहा ह क यह सबकुछ एक सपना ह। वह व्य त अपन मर क कध पर हाथ रखकर पूछ सकता ह : "क्या म एक स्वन हू? क्या अपन कध पर तुम मर हाथ का स्पशर महसूस नही करत? फर तुम स्वन कस हो सकत हो?"

फर वह अपन मर को अपनी कार म बठन क लए आम रत करता ह : "आओ, हम समुर क कनार घूमन चल। तुम जरा बताना क तुम य सब बात क्योकर सोचन लग?"

अपना स्वन उस इतना वास्त वक रतीत होता ह क वह अपन आप को कार स्टाटर करत, ऍक्सलरटर दबात और कार को लगभग उडात हुए ल जात दखता ह, ठीक वस ही जस क वास्त वक जगत म।

अपनी कार र ाइव करन क र म म उस समुर की महक का भी अहसास होता ह, लहरो का ननाद सुनाइ पडता ह और हवा क थपड भी महसूस होत ह, सबकुछ वस ही जस क वास्त वक जगत म।

तजी स कार चलात हुए वह सडक क कनार पडो को पीछ छूटत हुए दखता ह। स्वन क इन दृशयो का यथाथर स कही कोइ वरोधाभास नही ह।

उसी षण जब वह अपन मर को यह जतान की चटा कर रहा होता ह क यह सबकुछ स्वन नही ह, वह अलामर घडी की आवाज स जाग जाता ह। जग जान पर वह यह सोचता ह क उसन जो कुछ भी दखा था और जसकी वास्त वकता को लकर वह कतना आव स्त था, अस लयत म वह एक सपना था। परनतु कही अगर ऐसा हो क अब वह एक अलग स्वन-लोक म पहुच गया हो जहा स वह फर शीर ही जागगा, तो?

731
आभासी यथाथर क लए र युत ' समयुलटसरं। र योग कए जा रह उपकरण क कारण ऊपर क चर म द शस व्य त यह कल्पना कर रहा ह क वह एक सतत र वा हत होत जल का स्पशर कर रहा ह। नीच क चर म द शस लोग स्वय को उस फल्म का नायक समझ रह ह जस व दख रह ह और अपन ही अनुभवो स व उत जत भी हो रह ह।

732
आभासी प र स्थ तयो म न मस ससार

तजी स वक सत हो रही तकनीको की सहायता स, व भनन ष र ो म ' समयुलटसरं (आभासी यर) का र योग हो रहा ह। काच लग एक हट और दस्तान पहनकर कसी व्य त को भनन र कार क र-आयामी चर दखाए जा सकत ह और वह स्वय को उस चर का अग मान ल सकता ह।

कार डजाइनर कार की नइ मॉडलो का परीष ण आभासी वातावरण म ही करत ह।

733
इस तकनीक का र योग एक और ष र म कया जाता ह और वह ह पायलटो का र शष ण। एक छोट स क बनम बठकर व यह अनुभव करत ह मानो व असली हवाइ जहाज उडा रह हो और नीच उतार रह हो। भला हो इस यर का!

734
आभासी सचालन कष म आभासी सचालन

म शगन वव वयालय म डॉक्टरी करन वाल र शषुओ और खास तौर पर आक स्मक सवा इकाइयो को इसी तकनीक

क सहार कृ र म सचालन कष म र श ष त कया जाता ह। र थम चरण म, सचालन कष क बमबो को एक साधारण स कमर की दीवार पर र ष पत कया जाता ह। इस र कार तयार कए गए सचालन कष म तीन डॉक्टरो को छोडकर (मरीज स हत) आप जो कुछ भी दख रह होत ह, व सब चीज आभासी होती ह। इन आभासी यरो क सहार ही डॉक्टरी सीखन वाल छार आभासी मरीजो पर अपना पहला आभासी ऑपरशन करत ह।

735

फल्मो म पदाथर की वास्त वकता का वषय

पदाथर की वास्त वकता क बार म ससार क लोगो का धयान आक षस करन और व भनन माधयमो स दु नया क लोगो को इसक बार म बतान क कायर म जो महतवपूणर वकास हुए ह, उनम स एक ह हॉलीवुड की व भनन फल्मो क माधयम स इस वषय को ू पा कत करना।

" द थटी नथ फ्लोर" नामक एक फल्म का वषय इस र कार ह : इस फल्म क दो र मुख पारो न कपयूटरो क सहार एक आभासी ससार तयार कया ह। उस आभासी ससार म व सन 1937 को जीवनत बनात ह, हाला क व वस्तुत: सन 2000 म जी रह होत ह।

इस कपयूटर रोराम स जुडा हुआ व्य त एक बड पर सो जाता ह जहा सन 1937 क आभासी जगत म उसकी व्य तगत पहचान और ववरण लोड कर दए गए ह। उदाहरण क लए, डगलस हॉल नाम का एक पार जो क एक कपयूटर कमपनी का अमीर और सफल सी.इ.ओ. होता ह, 1937 म रहन वाल एक बक क कोषाधयष - जॉन फगर्युसन - क बार म अपन म स्तषक म लोड की हुइ सूचना रापत करता ह।

अचानक यह व्य त स्वय को वषर 1937 म पाता ह। सभी कार, भवन और वश-भूषा 1937 क ह। वह बात जसस वह अच भत होता ह, वह यह ह क दोनो ही जीवन पूणस: वास्त वक र तीत होत ह। वह इन दोनो ही जनद गयो म जल का गीलापन और हवा की आरसा का अनुभव कर सकता ह और भय तथा उतजना महसूस कर सकता ह।

बाद म जाकर उस व्य त को पता चलता ह क वह जो जीवन जी रहा था वह एक कपयूटर रोराम स जयादा कुछ नही था। व कार, व इमारत, व दोस्त-अहबाब, जनह वह असली समझ रहा था, व सब स्वन थ। यथाथर म वह उस समय स कही आग जी रहा था, सन 2000 म, और एक आभासी यर क ज रय जीवन को दख रहा था। यह फल्म जस वषय को च र त करना चाहती ह वह यह ह क हम जस असली जनदगी मान बठत ह उस काल्प नक जीवन स अलग करक दखना बहुत ही क ठन ह।

"द मरक्स" नामक फल्म म मुखय अदाकार यह महसूस करता ह क वह अपन मस्तषक को रापत होन वाल वयुतीय सकतो स बन काच क आवरण वाल एक काल्पनक वव म जीता चला आ रहा ह। हालाक वह खुद को एक कपयूटर रोरामर मानता ह कनतु ऊपर दखाए गए एक स्थान म सोया पडा रहता ह। जस वह अपना जीवन मान रहा था उसका अस्ततव कवल उसकी कल्पना म था।

इस मूवी म रमुख भूमका नभा रह व्यत क दमाग म कपयूटर क तार जोड दए गए ह और वयुत तारो क सहार उसक मस्तषक म कुछ रोराम लोड कर दए गए ह।

जब कपयूटर रोराम उसक मस्तषक म लोड कर दया जाता ह तो वह व्यत जो वस्तुत: एक बल्कुल ही अलग जगह पर, एक पुरानी-सी कुसी पर बढग कपड पहन बठा हुआ ह, स्वय को दूसर ढग क कपडो म एक अलग ही स्थान पर पाता ह। उसक मल वस्र बदल चुक ह, उसक बाल बड ह। उसका ूप-रग समयुलटर चयर म बठ हुए ूप-रग स बल्कुल ही जुदा ह।

वह व्यत सतय को स्वीकार करन स हचकता ह क्योक वह इस मुगालत म ह क वह जो कुछ दख रहा ह वह हकीकत क इतना करीब ह क वह स्वन हो ही नही सकता। अपनी आरामकुसी को छूत हुए वह कहता ह : "क्या यह वास्तवक नही ह?" और उस उतर मलता ह : "वास्तवक क्या होता ह? वास्तवक की परभाषा तुम कस दोग?" यद तुम अपनी ऐनरक अनुभूतयो की बात कर रह हो ... उसकी जस तुम महसूस करत हो, जसका आस्वादन करत हो, सूघत और दखत हो तो य सबकुछ बस वयुतीय सकत ह जनका वलषण करता ह तुमहारा मस्तषक।

6 - सरचना इस रकार ह

7 - क्या अभी इस वत हम कसी कपयूटर रोराम म तो नही ह?

8 - हम कुछ भी लोड कर सकत ह -- कपड, हथयार, रशषण की आभासी स्थतया

10- क्या यह वास्तवक नही ह?

11- अद तुम अपनी ऐनरक अनुभूतयो की बात कर रह हो ... उसकी जस तुम महसूस करत हो, जसका आस्वादन करत हो, सूघत और दखत हो ......

12- तो य सबकुछ जनकी तुम बात करत हो बस वयुतीय सकत ह जनका वलषण करता ह तुमहारा म स्तषक

737

फर व उस यह दखात ह क यह सारा वव एक र तभासी कायर म वारा रचा गया ह। उसम व सभी बात शा मल ह जस उसन दखा ह ... कार, शहर क शोर-गुल, यातायात, गगनचुमबी इमारत, समुर, लोग-बाग। जो कुछ भी वह दखता और अनुभव करता ह वह सबकुछ एक कपयूटर रोराम क माधयम स उसक म स्तषक म जीवनत कर दया गया ह।

जो वय त उस तथयो स प र चत करा रहा होता ह वह उस यह भी बताता ह क वह एक आभासी जीवन जी रहा था और फर भी उस सबकुछ वास्त वक लगता रहा. इसक बावजूद उस समय का वास्त वक ससार बलकुल ही जुदा कसम का ह ... एक धवस्त, वनट ससार। शानदार अतयाधु नक इमारत और कार उसक म स्तषक की ही कलपनाए ह।

वह यह जानन लगता ह क जस इ तहास को वह वास्त वक मानता चला आ रहा था वह भी महज एक सपना था और वह एक बलकुल ही अलग कालखड म जी रहा था।

फलम "द मॅ रकस" का एक अनय दृशय। इस दृशय म उप स्थत वय त यह जानता ह क एक कपयूटर रोराम वारा उसक म स्तषक को उसका पूरा जीवन-र म बता दया गया ह। वह कहता ह क जो मास वह खान जा रहा ह वह वास्तव म ह नही कनतु फर भी वह उसका पूरा लुतफ उठाएगा।

13- यह वही शकागो ह जस आप जानत ह

14- यह शकागो कवल एक स्नाय वक-अ भ र यातमक र तभास क अग क ू प म मौजूद ह।

15- आप 'बॉ लयाडर प रदृशय' क अनदर जीत आ रह ह -- नकश क अनदर, वास्त वक ष र म नही।

16- यह वतमान समय का शकागो ह।

17- असली मु भू म

1 - आपको लगता ह क यह वषर 1997 चल रहा ह जब क ....

2 - यह सन 2197 स बहुत कुछ मलता-जुलता सा ह।

3 - म पक्का नही बता सकता क कौन सा वषर चल रहा ह क्यो क साफ कह तो हम मालूम ही नही ह

2 - मुझ मालूम ह यह मास ह ही नही

3 - म जानता हू क जब म इस मुह म रखूगा तो जसा क मॅरक्स मर दमाग को सुझा रहा ह, यह बडा ही रसभरा और स्वा दट होगा।

738

आनल्ड वाजसगर अ भनीत मूवी "टोटल रकॉल" म, आनल्ड वाजसगर को यह अनुभू त होती ह क जस जीवन को वह असली मान रहा था वह उसक म स्तषक म लोड कया हुआ एक कपयूटर रोराम था। परनतु वह असली जीवन और स्व नल जीवन क बीच वभद नही कर पाता।

आपको मरा स्मरण नही होगा या यह क म कभी यहा था ... य द आप स्मरण कर सक तो आपक पस वापस!

उनहोन आपकी 'ब गग' करा दी ह ... आपक कपाल म मॉनीटर र स्था पत कर दया गया ह।

739

सममो हत कर दए जान क बाद यह पार अपन बार म यह कल्पना करती ह क वह 10 सी ढयो क घुमाव तजी स पार कर सकती ह। इस बदु पर आकर उसकी सास उखड जाती ह और वह थक जाती ह। वह सममो हत म हला सममोहन क र तभास स र चत वातावरण म रह रही होती ह और फर भी उस वास्त वक मानकर चलती ह, हालाक सच चाइ यह ह क वह स्थान, व लोग और व घटनाए जनक बार म उस बताया गया ह, वाकइ अ स्ततव म नही ह।

740

यह एक तथय ह क सममोहन क रयोग स कइ चमररोगो का उपचार कया जा सकता ह। बाइ ओर की तसवीर म आप सममोहन वारा उपचार कए जान स पूवररोग को दख रह ह, फर वयत को सममोहत करक रोग को ठीक होत दखाया गया ह । (डी. वकसमन, पृ. 113)

741

आपक मसतषक की गहन नीरवता म आपक सवाद को सुनती ह आपकी आतमा

एक बड कमर म कसी वता क अभकथन को सुनत हुए लोग सोच सकत ह क व वता क मुख स नकली हर धवन का रवण कर रह ह। उसी तरह, वता भी बड ववासपूवरक अपन वचारो की वयखया करत हुए यह सोचता ह क रोता उसकी बात सुन रह ह। परनतु सचचाइ इसस बलकुल पर ह और एक ऐसा असाधारण चमतकार घटत हो रहा ह जसकी जानकारी उस षण कमर म बठ कसी भी वयत को नही ह।

वासतव म, वता अपन मसतषक म बठ रोताओ को अपनी बात सुना रहा ह और रोता भी अपन मसतषक म उस वतवय का रवण कर रह ह। सतय यह ह क कमर म बठा हर आदमी जो आवसत ह क वह वहा मौजूद ह, दर असल इस घटना क सहार अपन-अपन मसतषक म रह रहा ह। और कमर म बठ रतयक वयत क मसतषक म एक ऐसा सतव वयमान ह जो वता की वाणी क ूप म वयुतीय धारा का रवण कर रहा ह और इस सतव को कानो की आवशयकता नही ह।

यह सतव हर वसतु का बोध इतनी यथाथरता क साथ करता ह क लोग कभी यह महसूस नही कर सकत क व सचमुच की धवन नही सुन रह ह। एक वलषण सृट-रचना क माधयम स इवर वारा रचत इस सतव का नाम ह आतमा। मसतषक क अनदर वयापत गहन नीरवता क बावजूद आतमा सबकुछ यथाथर जसी सुसपटता स सुनती ह।

743

कया ऐसी रखर दृट मास क कसी टुकड पर दशरस हो सकती ह?

744

यह बात साफ तय हो जाती ह क कवल कोशकाए कसी वयत को चतना, बुध, वचार और वाकशत तथा रम, दया, कुणा और उतकठा जसी अनुभूतया नही द सकती।

749

अपन बचच को गल लगाता कोइ वय त, अपन रयतम का आ लगन करता इनसान या वह जो अपनी मा स वाता लाप कर रहा ह, सोचता ह क य लोग अनय कसी की तुलना म उसक जयादा अतरग ह। परनतु, इव र कसी वय त क मर, रयतम, बचच और यहातक उसक खुद स भी अ धक करीब ह। जसा क कुरान म रकट कया गया ह, अललाह कसी इनसान की गदस की शराओ स भी उसक जयादा नकट ह। (कुरान, 50:16)

751
वय त वारा कया गया हर कायरइव र का ह। उदाहरण क लए, कसी बचच वारा पढ जा सकन की षमता, कसी वास्तु शलपी वारा काया नवत की गइ कोइ प रयोजना, कसी वञा नक वारा कया गया अनुसधान, रसोइ म पकाया गया भोजन, कलाकार की रचना .... य तमाम बात इव र वारा र चत की गइ ह और उनह अ स्ततव का ू प दया गया ह।

752
वय त वारा कया गया हर कायर, उसक वारा अ जस की गइ हर सफलता, उसकी समस्त र तभा इव र की ह। वह वय त बड स बडा राजन यक हो, दु नया का सबस अमीर इनसान हो, कोइ रमुख खोज करन वाला सबका चहता कलाकार या वञा नक हो ... इसस इस सचचाइ पर कोइ फकर नही पडता। हर कोइ इव र क अधीन ह और वही करता ह जो वह चाहता ह।

753
वह हर चीज जस वय त अपन अ धकार की वस्तु मान लता ह .... उसका घर, कार, प रवार, नौकरी, दोस्त-अहबाब --- य तमाम चीज बमबो और सवगो स बनी हुइ ह जो म स्तषक म प रघ टत होत ह। अगर कोइ वय त इस बात को समझ लता ह तो वह यह भी समझ जाएगा क 'वह' जसन उसक म स्तषक म इन बमबो का सृजन कया ह, इव र ह और हर वस्तु उसी की ह। इसी कारण स जो लोग इस ससार क जीवन स भावनातमक ू प स चपक हुए ह, व इस यथाथर स भय खात ह।

754
भौ तक इपसा म रवा हत हो रह लोगो का सबस बडा डर

एक पल क लए उन लोगो का वचार की जए जो भौ तक लोभ-लालच क बहाव म बह रह ह। उनकी सबस मूलयवान वस्तु कया ह? एक ब ढया घर, वला सता की चीज, चमक-दमक भर जवरात, नए स नए मॉडल की कार, मोटा-तगडा बक एकाउट, सर करन को नौका, वगरह .. वगरह। इसी कारण य लोग इस सचचाइ स बडा भय खात ह क उनक अ धकार की सारी वस्तुए म स्तषक क एक पटल पर च र त ह जनह व दख रह ह और उनह कभी वास्त वक ू प म नही मल सकगी।

परनतु व चाह या न चाह, व अपन म स्तषक म रच गए एक र त लप यातमक वव म जी रह होत ह और बाहरी व व स उनका कभी कोइ सयोग नही हो सकगा। धव न, र काश और सुगनध का र वश हमारी खोपडी क दायर म नही हो सकता। वह जो र वट होता ह, वह ह इन भौ तक पदाथो स आत कवल वयुतीय सवग। तो, जसा क ऊपर क चर म दखाया गया ह, एक शानदार मकान खरीदन क लए पृठभू म म रकम दत हुए क्य त की यही स्थ त ह। वह सोच रहा ह क वह मकान खरीद रहा ह और रकम गन रहा ह परनतु वह अपन म स्तषक म तयार एक छ व का र य कर रहा ह। और अपन सामन खड आदमी को वह सचमुच की रकम भी नही द रहा ह ब ल्क वह द रहा ह रकम का एक बमब। रकम र ापत करता क्य त भी वास्तव म एक छ व र ापत कर रहा ह। दूसर शबो म कह तो यहा "छ वयो का क्यापार" चल रहा ह।

757

कोइ क्य त जो कसी वशाल हो ल्डग कमपनी का मा लक ह, जसक पास घर ह, नइ स नइ कार ह, सममान जतान वाल कायकता ह और ऐसी जो भी चीज ह व वस्तुत: उसक म स्तषक म अ कत छ वया ह। व गभीर कस्म क मसल, व काम जनक लय वह उतना समय बताता ह, सहक मयो क साथ मी टग, उसक फसल -- य सब बात उसक म स्तषक म घ टत हो रही मार छ वया ह।

वह क्य त जो बडी सतु ट स पस गन रहा ह, वास्तव म अपन म स्तषक क अनदर पस गन रहा ह। उस यह महसूस नही होता क जस नौकायन का आननद वह बडी ही ग रमा और गुमान स उठाए जा रहा ह, जन लोगो पर वह अपना ुआब जमान की ताक म ह, और य सारी दृशयाव लया उसक म स्तषक म न हत तस्बीर ह। यह सच चाइ उस बताइ जाती तो वह जोर-जबदस्ती स इस बात स इनकार करता ता क उस इन चीजो स हाथ ना धोना पड, वह इजजत न खोनी पड जो उस मलती आ रही ह। परनतु वह क्य त यह स्वन दख सकता ह क वही इन तमाम चीजो का मा लक-मुखतार ह और उस स्वन म वह इस सच चाइ पर सदह नही करता। य द सपन म कोइ आकर उसस जरा कहता क वह इन चीजो का असली मा लक नही ह तो वह इस तथय को स्वीकार नही करता। कनतु जाग जान क बाद वह समझ सकगा क यह सबकुछ एक फतासी था।

758

उस इनसान की हालत जो इस सच चाइ स वा कफ नही ह क वह तस्वीरो की नुमाइश कर रहा ह

कोइ अमीर आदमी जो अपन सा थयो क सामन अपनी महगी कार की नुमाइश कर रहा हो, वास्तव म अपन म स्तषक म बनी कार की तस्वीर की नुमाइश कर रहा होता ह। उस पल वह अमीर इनसान यह कल्पना भी नही कर सकता क जस कार की इतनी तारीफ हो रही ह, वाकइ उसस उसका कोइ समबनध ही नही ह। सच यह ह क उसक अपन म स्तषक म न मस कार की तस्वीर अलग-अलग उस र तयक क्य त क म स्तषक म न मस हो रही

ह ज स वह अपनी कार दखा रहा ह।

ऐसी स्थ त म, य द वहा पाच लोग मौजूद ह और हर कोइ अपन म स्तषक म कार क बमब को रहण कर रहा ह तो,

* असली कार कहा ह?
* पाचो बमबो म स अमीर व्य त की कार कौन सी ह?
* उनम स कस बमब को अमीर आदमी अपन अ धकार वाली कार का बमब मानगा और अपन सा थयो को दखाएगा?
* अत: क्या वह रतयक आदमी जस वह कार दखा रहा ह, उस अमीर आदमी क दमाग म उपजा हुआ बोध नही ह?

जो लोग अपनी समपदाए, भवन और मोटरगा डया दूसरो क सामन रद शत करत ह, व अपन ही दमाग म उपजी फता सयो को दमाग म उपजी अनय फता सयो को दखा रह होत ह। कुछ लोग इस महतवपूणरतथय स वा कफ भी नही होत। यह वाकइ बडी लजजास्पद स्थ त ह क्यो क व्य त स्वय को जस कार का स्वामी समझ रहा होता ह उस नुमाइश की जान वाली कार क यथाथर स उसका कोइ समबनध ही नही होता और न ही उन लोगो स जनह वह दखाना चाहता ह।

760

अपनी शोहरत क गुमान म डूब कसी लोक र य व्य त को जब यह पता चल क उसकी मनुहार करन वाल, उसम अ भु च दखान वाल लोग वास्तव म उसक म स्तषक म बन बमब मार ह तो उसकी सारी सतु ट जाती रहगी। उस लगगा क उसका अ भमान व्यथरह।

761

कोइ व्य त जस अपनी कसी सफलता पर पुरस्कार रदान कया गया ह, वह अपन म स्तषक म ही यह पुरषकार रापत करता ह और अपन म स्तषक म ही आकार पाए हुए लोगो की छ वयो स रशसा पाता ह।

762

आदमी पर कतनी भी मुसीबत टूट पड, हर बात सफरम स्तषक म ही घ टत होती ह। इसी रकार जब कोइ व्य त अपन अतीत पर वचार करता या उसकी कल्पना कर रहा होता ह, बचपन की गरीबी क बार म सोचता ह तो वह वतसान का पल भी म स्तषक म ही घ टत होता ह।

जन चीजो क कारण कसी व्यक्त को अपन जीवन म चनता और कठनाइ का सामना करना पडता ह, असलयत म उनका जनम-स्थान भी मस्तषक ही ह। जो इस यथाथर को समझगा वह अपन जीवन क घटना-रमो म धयर का परचय दगा। वह यह जान लगा क इवर न हर चीज कसी अचछ उदशय स बनाइ ह और उस परमातमा म आस्थावान बना रहगा।

764

अपन जीवन भर लनन अपन अनुयायियो स यही कहत रह क पदाथर एक नरपष सतय ह। सचचाइ यह ह क अपन परम भावावश भर भाषण उनहोन अपन दमाग म ूपाकार पान वाल लोगो और अनुयायियो क समष दए थ। व लोग जनस उनहोन शत पाइ, व भी उनक मस्तषक म अकत बमब थ।

765

जन लोगो न लनन, माओ और स्टालन जस सामयवादी नताओ का अनुगमन कया उनक लए व बड ही दगगज नता थ। व बडा ही धयान लगाकर और रोमाच क साथ उनका भाषण सुनत थ। व यह सोचत थ क इन लोगो क पास उनकी अपनी शत थी। परनतु हर नता उनक मनो-मस्तषक म समाया एक परकल्पत व्यक्तितव था।

767

उन लोगो की हालत जो इस तथय स अवगत नही ह क व वरम का रदशरन कर रह ह

अभी जस पुस्तक को आपन थाम रखा ह उसका या उसक कनारो या उसकी मोटाइ का अनुभव आपक हाथ को नही होता ह। यह अहसास क आपन कोइ पुस्तक थाम रखी ह, स्नायवक आवगो स बनी हुइ एक अनुभूत ह जस आपक मस्तषक क स्पशरस्कनर म महसूस कया जाता ह।

इस स्पशरबोध को रहण करन वाली चतना न तो स्नायु ह और न ही मस्तषक क बसा ततव। ऐसी स्थत म, मानव मस्तषक म ऐसा कया ह जो, बना हाथो और अगुलयो क, यह बोध कर लता ह क कोइ व्यक्त कसी पुस्तक को थाम हुए ह?

पदाथर स पर वह अस्ततव ह मानव चतना। घोर आचयर ह क इवर न मानव चतना को कसी अवयव का इस्तमाल कए बना ही हर सवदना को रहण कर सकन म सषम बनाया ह। उदाहरण क लए, अगुलयो क बना भी यह चतना महसूस कर सकती ह क कसी पुस्तक, ुइ, पतथर या कसी जानवर क रोए का स्पशर कया जा रहा ह। यह ऐसी सचचाइ ह जसस भौतकवादी बहुत ही भय खात ह। भौतकवादयो क वचार स व तमाम जनदगी पदाथर स चपक हुए ही बता दत ह। परनतु जब व यह वचार करत ह क अपनी पूरी जनदगी म एक मतबा भी उन ह पदाथर की असलयत को छून या अपन दमाग की परध स बाहर आ पान का मौका नही दया गया तो व यह

समझ सकग क व एक गहर सकट म फस हुए ह। इसी कारण स इस असाधारण और उल्लखनीय अचमभ को व लोगो की नजरो स छुपाए फरत ह।

परनतु २१वी सदी क लोगो क लए इवर न एक ऐसा वातावरण नमस कया ह क व उस महतवपूणर तथय को समझ सकत ह जसका अनुभव उनह हर षण होता ह। इवर न उन वञानक वकासो को भी सामन लाया ह जनस इस तथय को समझन म बडी मदद मलती ह।

769
हम यह मानकर चलत ह क टलफोन क घनघनान और जब हम कसी मर की आवाज सुनत ह, उस बीच एक अतराल गुजर गया ह और उसी "अतराल" को हम समय का नाम दत ह। परनतु समय एक बोध ह जसका जनम होता ह वतमान पल और अतीत क षण की हमार वारा तुलना कए जान स।

समय वह बोध ह जो हमार वारा अनुभूत घटनाओ की तुलना क कारण रतीत होता ह। उदाहरण क लए, कोइ एक कमर म जाता ह। बाद म वह सतह पर पडी हुइ एक कलम दखता ह जस उठान क लए वह झुकता ह। फर वह उस कलम को मज क पास ल जाता ह और उसपर रख दता ह। वह वयत इन सारी रयाओ क बीच तुलना करता ह। वह यह समझता ह क रतयक रया क बीच समय का अतराल बीता ह और इस तरह वह समय का बोध रापत करता ह।

770
आदमी का अतीत उसकी समृत म रापत सूचना स बना होता ह। यद उसकी समृत मटाइ जा सक तो अतीत भी सवत: मट जाता ह। भवषय हमार वचारो स बना ह। इन वचारो क अभाव म अनुभव का कवल "वतमान षण" ही बच जाता ह।

772
चूक हमार सामन रतयक घटना एक कडी क ूप म घटत होती ह अत: हम यह सोच लत ह क समय आग की ओर बढता चलता ह। उदाहरण क लए, 'सकीइग' करन वाला हमशा पवत की ढलान की ओर सकीइग करता ह, ऊपर की ओर नही। पानी की बूद जलाशय स ऊपर की ओर नही बढती बलक नीच टपकती ह। ऐस उदाहरण म, सकीइग करन वाल की पवत पर होन की सथत अतीत म ह और पहाड क ढलान की ओर उसक आन की सथत भवषय ह। परनतु कही यद ऐसा होता क हमार जहन म अकत सूचना का रम उलटा होता, मानो कसी फलम की रील 'रवाइड' की गइ हो, तो जस हम भवषय कहत ह वह उलटी सथत बनकर अतीत बन जाएगा और जो अतीत ह वह पहाड पर चढन जसी सथत होकर भवषय कहलान लगगा।

773
दो जुडवा बहनो म स एक लगभग रकाश की ग त स अत रष की सर पर चल पडती ह। तीस साल बाद जब वह लौटकर आती ह तो उसकी वह बहन जो जमीन पर थी, अत रष म गइ अपनी बहन की तुलना म बहुत जयादा उ र की हो चुकी होगी।

30 साल पहल

आज

775
अतीत भ वषय वतसान

776
अतीत वतसान भ वषय

स्मृ त = अतीत
वचार = भ वषय

आदमी का अतीत उसकी स्मृ त म स चत सूचना ह। य द उस आदमी की स्मृ त मटाइ जा सकती तो उसका अतीत भी जाता रहगा। भ वषय मनुषय क खयालो स बना ह। हम भ वषय क लए योजना बनात ह और उसक बार म स ोचत ह। परनतु य द हमार खयाल नट कर दए जात तो भ वषय की भी कोइ अवधारणा नही रह जाएगी। य द हमारी स्मृ त और हमार वचार हमस ल लए जात तो हमार पास कवल अनुभव का षण बचता, बस यह वतसान पल।

777

जस व्य त अपना अतीत नही बदल सकता वस ही वह अपना भ वषय भी नही बदल सकता। इसी कारण, व लोग जो स्वय पर घ टत बातो स चनता और परशानी का अनुभव करत ह उसका कारण ह अपनी नय त क र त उनका सम पस न होना।

778
इस तस्बीर म लोग कार को नही दख रह और न ही कार म बठ लोग उनह दख पा रह ह। परनतु य द कोइ इस

तस्बीर को कसी दूर स्थान स दख तो वह एक ही षण म दोनो तरफ की हर चीज दख सकगा। मानव जीवन म भ ी ऐसा ही होता ह।

हमार पास अतीत और भ वषय की अवधारणाए ह, और चू क हम समय स बध हुए ह, अत: भ वषय को हम तभी दख सकग जब वह समय आएगा। परनतु इवर समय और स्थान स बध हुए नही ह। व हमार अतीत, भ वषय और वतसान को एक ही षण म दख रह होत ह - और वो भी पूरी शदत और स्पटता स। उदाहरण क लए, जब यह राइवर सडक पर लोगो को दखकर अचानक गाडी रोक दगा वह षण इवर की दृ ट म पहल स ही मौजूद ह।

779

कसी कार क नमस होन स भी पहल उसकी नय त म यह अ कत हो चुका रहता ह क उसका रग कौन सा होगा, उस कौन खरीदगा और यहातक क जकयाडरम जाकर उसकी कया अवग त होगी।

780

अ स्ततव की हर वस्तु की रचना उसकी एक नय त क साथ की गइ ह। कसी गुलदस्त क बनन स पहल ही इवर की दृ ट म यह तय हो चुका रहता ह क उस कौन बनाएगा और कस ू पाकार म, उस कौन खरीदगा और कहा स, उस कस घर म जगह दी जाएगी और कस कोन म, कब, कस दन और यह भला कस कारण स गरकर टूट जाएगा।

784

हमार जीवन का हर षण इवर की दृ ट म सुर षत ह .. कुछ भी वनट नही ह .. सबकुछ अ कत ह बल्कुलस्पट

785

चर म आप ततली क वकास क हर चरण को दख रह ह -- तबस जब यह अड क कवच म बनद थी, फर जब वह अपन कोकून म र वट हुइ और तब जाब क वह कोकून स नकलकर बाहर उडान भरती ह और एक दन मर- मट जाती ह। य सार षण इवर की दृ ट म साफ-साफ अ कत होत ह। अल्लाह की नजर म ततली अभी कोकून स बाहर आ रही ह, अभी उडान भर रही ह और इसी षण म काल-कव लत होकर नीच गर रही ह।

786

इवर की स्मृ त म अतीत की घटनाए वतसान घटनाओ की तरह ही साफ और स्पट ू प स अनुभवगमय ह। उदाहरण क लए, परा मडो का नमा ण करन वाल मजदूर नमा ण-सामरी उठाए लए जा रह ह, अभी-अभी थक-थक ह, व पयास ह और अभी इसी षण व पानी पी रह ह।

787
हजरत मूसा (पूह) और उनक सहयारी इसी षण म वभाजत समुर को पार करत भाग रह ह और व बच जात ह। फराओ और उसक सनक इसी षण समुर म डूब रह ह। रभु नोआ (नूह) की नौका और सोलोमन का उपासना गृह अभी-अभी बन रह ह। य सभी चीज इवर की समृत म इसी वत मौजूद ह -- उनस भी कही जयादा सप ट ू प म जतना क हम उनक बार म जानत ह।

788
इवर की समृत म हर षण एक नगूढ षण क ू प म वयमान ह। जब कल क पड स एक बीज धरती पर गरा था, तब स लकर जब कल पड पर स तोड लए गए थ, उनकी पकग की गइ थी और बाजार भज दया गया था जहा उनकी बरी हुइ थी, कोइ उनह घर ल आया था और फलो की डलया म उनह रख दया गया था। वह हर षण परमवर की नगाह म पूवानुभूत ह। कल की कोइ भी सथत इवर की नजर म वनट नही हुइ ह वरन वह हर सथत रचछनन दशा म उपसथत ह।

789
इस भवन क ढह कर गर जान का हर षण इवर की समृत म सथत ह। नीव रख जान स लकर वनट होन तक क सार षण अवनाशी बन रहग।

790
मनुषय रतयक घटत होत षण को वस ही दखता ह जस कसी फलम क फरम को

792-793
एक शरीरशासरी जो समय-शूनयता और अननतता की वयाखया करता ह

"द एड ऑफ टाइम" क लखक और रसध शरीर-वजानी जूलयन बारबर स "डसकवर" परका क लए कए गए एक साषातकार म यह दखाया गया ह क इस हसस म हमन जन वषयो का सपशर कया ह उनकी वजानक ू प स पुट की जा सकती ह। "रॉम हयर टू इटनरटी" नामक आलख म बारबर न जन कुछ वषयो की वयाखया की ह, उनका ववरण 'डसकवर' क एक लखक टम फॉलार वारा दया गया ह:

उनक वचार स, यह षण और इसम नहत तमाम चीज -- जसक सवय बारबर, उनक अमरकी महमान, यह धरती और इसस पर सुदूरतम आकाशगगा तक वयापत सभी वसतुए -- कभी परवतस नही होगी। कही कोइ अतीत नही ह और न ही कोइ भवषय। वसतुत: समय और रवाह एक रम स जयादा कुछ नही। बारबर वारा परकलपत रमाड म रतयक वयत क जीवन का रतयक षण -- जनम, मृतयु और उनक मधय की सारी चीज -- सदा-स वदा क लए

मौजूद ह। बारबर कहत ह : "हमार वारा जया गया हर षण तातवक ू प स अननत ह"।

इस रमाड तथा अतीत, वतसान और भवषय का हर सभव ू प-अनुकूलन पृथक-पृथक और अननतत: असततववान ह। हम कसी एकल रमाड म नही जी रह होत जो समय क साथ गुजरता जाता ह। बलक हम -- और हमार अनको कचत ू पातरत ससकरण -- एक ही समय म असखय सुसथर, सदाबहार ू प स सकुल समुदाय म जी रह होत ह, और इसक अतगस कसी षण वशष म रमाड की तमाम चीज मौजूद ह। बारबर इनम स रतयक सभावत सुसथर जीवन क ू प-अनुकूलन को "अब" का नाम दत ह। रतयक 'अब' एक परपूणर आतम-धनय, समय-शूनय अपरवतसशील रमाड ह। इन 'अबो' को हम भूलवश चलायमान समझ लत ह जबक सचचाइ यह ह क इनम स रतयक सदा-सवदा मौजूद ह। चूक यह 'रमाड' नामक शब इन सभी सभावत 'अबो' को समट पान म अतयत लघु रतीत होता ह, अत: बारबर न इसक लए एक नया शब उछाला : पलटोनया। इस नाम स एक राचीन रीक दाशरनक क रत सममान वयत कया गया ह जनहोन यह बहस छडी थी क वासतवकता अननत और अपरवतसशील ू पो स नमस ह, हालाक अपनी इनरयो क वारा हम जस भौतक जगत का बोध पात ह वह चरनतन ू प स रवाहत होता दृटगोचर होता ह।

वासतवकता समबनधी अपन वचार-दशस की तुलना व मूवी फलम क्सरप स करत ह। रतयक रम एक सभावत 'अब' को रहण करता ह, जसम घास की पतया, नील आकाश क बादल, जूलयन बारबर, 'डसकवर' का एक ऊहापोह म पडा लखक और सुदूर आकाशगगाए शामल हो सकती ह। परनतु कोइ भी चीज कसी एक ही रम म आग बढता या परवतस नही होता। और य रम -- अतीत और भवषय -- लस क पास स गुजरन क बाद खतम नही हो जात।

बारबर कहत ह: "इसीक अनु ू प ह आपक जीवन की रमुख घटनाओ की समृतया। एक झलक की तरह आप कुछ परदृशयो को बडी सपटता स याद रखत ह। मुझ भी याद ह क एकबार, अफसोस! मुझ एक आदमी क पास जाना पडा था जसन खुद को गोली मार ली"।

"और अभी भी वह षण याद करना मर लए मुशकल नही ह जब मन वह दरवाजा खोला था जहा वह नीच क पायदान पर खडा था और मरा उस बनदूक क साथ दखना और उसका वह खून। आज भी वह घटना एक फोटोराफ की तरह मर मनो-मसतषक पर अकत ह। इसी तरह की अनको और याद ह। आदमी क पास बहुत ही उचच कोट की दृशय-समृत होती ह। यद वह कोइ झलक नही तो आपको याद रह गइ कसी मूवी क सथर चर हो सकत ह। अपनी कुछ सुसपट समृतयो क बार म सोचए। आप उनह कुछ ही षण तक टकी रहन वाली याद नही मानत, बलक अपन मसतषक की आखो म समाइ हुइ एक झलक मानत ह, ह न? व समृतया कभी धूमल नही होती। ऐसा नही लगता क उनकी कोइ खास अवध थी। बस व वहा ह, कसी कताब क पनन की तरह। आप यह नही पूछा करत क एक पनन की मयाद कतनी ह। इसकी मयाद एक षण का करोडवा हससा भी नही ह, एक षणभी

नही ह, बस वह 'ह'।

बारबर बडी शा तपूवरक अप रहायरू प स उभर आन वाली आप त का इतजार करत ह।

क्या उसक बाद कसी तरह हम एक 'र म' स दूसर र म म नही पहुच जात?

नही। रमाड क एक सु स्थर व्यवस्थापन स दूसर म कोइ ग त नही होती। रमाड क क तपय ू प-अनुकूलनो म चतना क हल्क नशान होत ह - जस मानव - कुछ ऐसी स्मृ तयो क साथ जनह व अतीत कहत ह और जो 'अब' म न मस हो जात ह। चलायमानता का र म इस लए होता ह क्यो क हमार बहुत सार क चत प रव तस सस्करण -- जनम स कोइ भी ग तमान नही ह - एक ही साथ इन रमाडो म पदाथर क त नक फरबदल क साथ रहा करत ह। हमार अनक सस्करणो म स रतयक एक अलग ही र म को दख रहा होता ह -- एक अनोख, स्थर और अननत 'अब' को. बारबर कहत ह : "मर मत स हम दो अलग-अलग षणो म एक स नही होत"।

बारबर क घर क नकट क पॅरश चचर म इगलड क कुछ दुलभ प नटग स ह। एक प नटग म, जस 1340 म पूरा कया गया था, थॉमस ए बकट की हतया का दृशय च र त कया गया ह। थॉमस बारहवी शताब्दी म एक आकरबशप हुए थ जनकी मानयताओ का कग हनरी वतीय स टकराव हुआ करता था। उस प टनग म वह षण समटा गया ह जब एक 'नाइट' की तलवार बकट की खोपडी को चीर दती ह। खून का फबारा फूट पडता ह। अगर बारबर का सधानत सही ह तो बकट क शहीद होन की घटना एक अननत 'अब' क ू प म अभी भी रमाड क कसी ू प-अनुकू लत स्वू प म अ स्ततव म ह। और यही हाल हमारी मौतो का भी होना चा हए। परनतु बारबर क रमाड म हमारी मृतयु की घडी अ तम षण नही ह। यह एक अबोधगमय ू प स वशाल और जमी हुइ सरचना क असखय घटको म स एक ह। व सभी अनुभव जो हमन पहल कभी रापत कए ह या आग रापत करग, व हमशा क लए नयत ह -- एक असीम, अमतर्य आभूषण म जड हुए स्फ टक रतनो की तरह। हमार मर, हमार माता- पता, हमार बच च -- व सब क सब वहा मौजूद ह।

बारबर कहत ह : "हम हमशा एक 'अब' म प रसी मत ह।" हम समय क साथ र वा हत नही होत, ब ल्क हर नया पल एक बल्कुल ही भनन रमाड ह। इन समस्त रमाडो म, कभी कुछ भी चलायमान नही होता, न ही उसकी उर बीतती ह, क्यो क वहा समय का अ स्ततव ही नही ह। एक रमाड म आप अपनी मा क मुखड को नहारत एक छोट स बच च ह। उस रमाड म आप उस सु स्थर दृशय स आग नही जा सकत। एक और रमाड म आप आप सदा क लए मौत स बस एक ही सास पीछ हो सकत ह। अकल्पनीय ू प स वशाल और व वधतापूणर परमाड म य सभी रमाड, और अननत ू प स अनको और भी, साथ ही साथ स्थायी ू प स अ स्ततव म ह। अत: आप एक अननत 'आप' नही ह ब ल्क आप कइ ह -- एक शशु क ू प म, एक युवक क ू प म, एक अनोख व्य त क ू प म। रासदी -- या सभवत: या वरदान ह -- की बात यह ह क कोइ भी एक सस्करण अपनी स्वय की अमरता का आभास नही

पाता। क्या आप अननतकाल तक 14 साल की उर क रहना चाहग, अपनी नाग रक शास्र की कषा समापत होन तक? (टम फॉग लर, "र ॉम हयर टू इट नर्टी", डस्कवर, दसमबर 2000, पृ. 54)

जू लयन बारबर क सधानतो क वलषण स इस खड म व णस कए गए वञा नक पषो का बखूबी चरण होता ह। इस दृ टकोण स बारबर क सधात इस पुस्तक की वषयवस्तु क समानानतर चलत ह। परनतु वह महतवपूणर बदु जसकी व्याखया की जानी चा हए, वह यह ह: बारबर यह वलषण रस्तुत करत ह क अतीत म जो कुछ भी हो चुका वह कभी वनट नही होगा और यह क हर घटनार म फोटोरा फो की एक रृ खला क ू प म इस षण भी मौजूद ह। नस्सदह, अतीत और वतसान अल्लाह की नगाह म हर ष ण उप स्थत होत ह, परनतु फोटोरा फो की एक रृ खला क ू प म नही वरन इस तरह मानो उन षणो को अभी जया जा रहा हो। उदाहरण क ल ए, जोसफ क भाइ अभी इसी ष ण उस कुए म डाल रह ह। मर क परा मड अभी इसी ष ण खड कए जा रह ह और मजदूर लोग एक-एक पतथर को अपनी जगह पर रख रह ह। ठीक उसी तरह जस हम अपन इस वतसान पल को बल्कुल ठीक और स्पट ू प म महसूस कर रह होत ह, उसी तरह समस्त अतीत और भ वषय इव र की दृ ट म स्पट और वास्त वक ू प म अभी अनुभूत कए जा रह ह।

आधु नक भौ तकी म हुइ र ग त क कारण आज इन तथयो को वञा नक ू प स र मा णत कया जा चुका ह और समय -शूनयता तथा अननतता क बार म उनम तथा 'कुरान' म कही गइ बातो म बहुत ही अनू पता दखती ह। इव र की सृ ट म न हत यह वलष णता इव र की अननत श त और ग रमा का प रचायक ह। यह एक ऐसा सतय ह जसपर धयानपूवर्क वचार कया जाना चा हए और उस समझना चा हए।

793
शरीरशास्री जू लयन बारबर कहत ह क कसी व्य त का कोइ भी ष ण कभी वनट नही होता और उनम स रतयक अनय लोगो क साथ ही साथ सदा अ स्ततववान रहता ह। वह स्थान जहा मनुषय का जीवन-र म सदा चलता रहता ह वह ह इव र की स्मृ त।

796
कुछ लोग यह स्वीकार करत ह क जब व कसी बस को छूत ह तो उसकी ठढी धातु का अनुभव उनह अपन म स्तषक म रापत होता ह। दूसरी ओर, व यह नही मानत क जब बस उनस टकराती ह तो उसस उतपनन ददर भी उनक म स्तषक म ही होता ह। परनतु यह सच ह क य द कोइ व्य त स्वन म स्वय को बस की चपट म आकर गरता दख तो उस वस ही ददर का अहसास होगा।

अगर कसी को कुत न भी काट खाया हो तो भी तथय यही बना बना रहता ह क व्य त इस घटना को अपन म स्तषक म ही दखता ह। इसी घटना को वह व्य त स्वन म भी उसी स्पटता क साथ दख सकता ह और उस

वसी ही उतजना और भय का अनुभव होगा।

798
य द म स्तषक म जान वाली नसो को काट दया जाए तो कोइ भी बमब नही बनगा। ऐसी प र स्थ त म इस कथन का कोइ मतलब ही नही रहता क "बमबो क असली स्वू प बाहर अ स्ततव म ह" कयो क य द व असली स्वू प हो भी तो हम उनह दख नही सकग।

799
जब कोइ म हला (या पु ष) अपन हाथ काट लती ह तो ददर और रत क गीलपन की अनुभू त म स्तषक म ही होती ह। वही म हला सपन म यह दख सकती ह क उसन अपना हाथ काट लया ह और तब उस स्वन म भी उसी सवदना का अनुभव होगा। परनतु स्वन म वह कवल एक 'र म' को दख रही ह जहा न कोइ असली चाकू ह न खून। ऐसा होत हुए भी यह तथय नही बदल जाता क हम अपना समस्त जीवन अपन म स्तषक क अनदर बमबो क ू प म दख रह होत ह।

802
सभी सुनदर वस्तुए इवर की सृ ट की कलाकृ तया ह

सभी सुनदर वस्तुए जो हमार पास और हमार चारो ओर ह, व सवर दाता अल्लाह क वभूषणो क र कटीकरण ह। (अल-वहाब)

805
यह कहना क "इवर न हर चीज की रचना एक बमब क ू प म की ह" और यह कहना क "इन चीजो का अ स्ततव नही ह" - एक समान बात नही ह। इवर वारा र चत हर वस्तु : लोग, भवन, झील, आकाश और सबकुछ वस तुत: अ स्ततव म ह। परनतु व सब की सब चीज एक बमब क ू प म अ स्ततववान ह और हम उनह कवल अपन म स्तषक म ही दख सकत ह।

806
कोइ मुसलमान जो अल्लाह वारा रची गइ वस्तुओ क र त र म, स्नह और ु च की भावनाओ स भरा हुआ ह, वह वस्तुत: अल्लाह की सृ ट क कारण और उन वस्तुओ म समाइ हुइ उसकी कलातमकता और र भुता क कारण इन भावनाओ स आप ला वत होता ह। वह जानता ह क कसी जीवन म न हत सौनदयर यथाथर ू प म अल्लाह का ही सौनदयर ह।

807

जब कोइ मुसलमान कसी को चाहता ह तो वह वस्तुत: अल्लाह क र त अपनी चाहत दशा अ रहा होता ह, जसन उस स्वरू प को पयार कए जान योग य स्वरू प दया ह।

808

सूयर का उगना और डूब जाना -- य ऐस बमब ह जो लोगो क म स्तषक म अपना ू प रहण करत ह। कोइ भी व्य त सूया स्त को अपन म स्तषक म दखता ह और वह आतमा ह जो इस दृशय को दखकर आननदमग न होती ह।

809

इव र अपन वारा र चत बमबो को कारण और रभाव की एक खास कडी क ू प म जोडकर हम दखात ह। उदाहरण क लए, जब पड पर स सव नीच गरता ह तो यह हमशा धरती पर ही टपकता ह। यह न तो ऊपर जाता ह और न ही बीच म लटक कर ु क जाता ह। इव र वारा बनाए गए इन रभावो और नयमो क वचार स वज्ञान क अधययन ष र का सृजन होता ह। प रणामस्वरू प, यह समस्त रमाड एक समर बोध ह इस तथय क कारण वज्ञा नक अनुसधान की आवशयकता को खा रज नही कया जा सकता।

810

परनतु इव र क पास बना कसी कारण क भी रभाव उतपनन कर सकन की सामथ्यर ह। इसका एक रमाण यह ह क वास्त वक सूयर क न होत हुए भी स्वप्न म हम सूयर की ऊषमा की अनुभू त होती ह।

811

कसी घोघ को दखन वाला मनुषय उस अपन म स्तषक म दख रहा होता ह। उसी म स्तषक म वह उसकी वशषताओ का भी अधययन कर रहा होता ह। इस नरीष ण-अनुवीष ण स वह यह सीखता ह क इव र की सृ ट म कही कोइ खामी नही ह और यह क उसकी बु धमता सवतकृट ह।

813

हम यह कभी नही जान सकत क जस रग को हम हरा रग कहत ह वह अनय कसी को भी उसी ू प म दखता ह या नही। उदाहरण क लए, इस पृठ पर अ कत चर दो अलग-अलग म स्तषको को अलग-अलग दख सकता ह। पहला उसम हर रग की आभा दख ल सकता ह और दूसरा नील रग की, भल ही वह भी उस 'हरा रग' ही कहता हो। यह कभी भी नही जाना जा सकता।

हम यह कभी नही जान सकत क टयु लप क लाल फूल को नहारत दो अलग-अलग व्य त लाल रग क एक ही 'टोन' को दख रह ह या अलग-अलग।

814

अपन दोस्तो क साथ गाव म रमण करता कोइ व्यत असलयत म अपन मस्तषक म बमबत मरो क साथ रमण कर रहा होता ह। वह जस ताजी हवा का लुतफ उठा रहा ह, वह भी उसक मनो-मस्तषक म ही ह। कसी रामय रदश म फूलो को नरखत तीन अलग-अलग लोग तीन अलग-अलग बमबो को आकार दत ह।

815

रशसको स भर एक स्टडयम म हर कोइ अपन मस्तषक म अलग-अलग मच दख रहा होता ह

कोइ मच दखन क लए स्टडयम म दाखल होन वाला सखश यह समझता ह क वह भी वही खल दख रहा ह जस सब दख रह ह परनतु वह गलत ह।

ऐसा इसलए कयोक एक अलग कस्म की पच, अलग कस्म क खलाडी, अलग कस्म क रशसक और अनय चीज वहा उपस्थत सभी लोगो क मस्तषक म अलग-अलग बमबो की रचना करती ह। तथाप, वहा मौजूद हजारो लोग यह समझ रह होत ह क बस एक ही मच चल रहा ह जस सब क सब दख रह ह। घर पर बठकर दखन वाल लोग भी ऐसा ही समझत ह क व सब एक ही गम दख रह ह। परनतु जतन दशर्क होत ह उतन ही परदृशय बन जात ह और ऐसा कोइ भी नही जो अपन व्यतगत परदृशय और हकीकत क बीच कोइ वभद कर सक। स्टडयम म बठ रशसक हो या घर पर टलीवजन क पदरक सामन बठकर गम दखन वाल -- इनम स कोइ भी सचच बमब को नही दख सकत। ऐसा इसलए क कोइ भी अपन मस्तषक क दृशयपटल की सीमा-रखा नही लाघ सकता और न ही उसक दायर स बाहर की कसी वस्तु क ससगर म आ सकता ह। कुल मलाकर व जो दख सकत ह वह ह उनक मस्तषक क चर-फलक तक सरषत की गइ सूचनाए। और उन सबका रटा ह हमारी आतमा। वह ह सवगो और धरा का स्वामी परम परमवर जो आतमा को रचता ह और उन बमबो का सृजन करता ह जो रतयक मानव को हकीकत क बल्कुल करीब दखता ह।

817

अननत आननद क रोत क ूप म इवर स्वगर की रचना करग

822

इवर न रकट कया ह क जो सतय स इनकार करग व सदा-सवदा नरकागन म जलत हुए ववाद करत रहग